चतुर्थ अंग

समवायाङ्ग

(सानुवाद सपरिशिष्ट)

सम्पादक

मुनि कन्हैयालाल 'कमल'

प्रकाशक—
आगम अनुयोग प्रकाशन
पोस्ट बाक्स नं० ११४१
दिल्ली ७

प्रथमावृत्ति—
वीर सवत् २४९२
विक्रम सवत् २०२३
ईस्वी सन् १९६६

मूल्य—दो रुपये

मुद्रक —
उद्योग शाला प्रेस
किंग्सवे दिल्ली ९

प्रकाशकीय

आगम अनुयोग प्रकाशन का उद्देश्य आगमों के अभिनव संकलन संपादन पद्धति में प्रस्तुत संस्करण प्रकाशित करने का है क्योंकि इस युग में—विस्तृत विषय सूची शुद्ध मूलपाठ, शब्दानुस्पर्शी सरल संक्षिप्त हिन्दी अनुवाद और सम्यग् ज्ञानवर्धक शास्त्रपूर्ण विशिष्ट परिशिष्टों से युक्त आगम ही उपादेय एवं रुचिवर्धक हो सकते हैं।

पं० मुनि श्री कन्हैयालाल 'कमल' द्वारा संकलित सम्पादित 'समवायांग' हमारे उद्देश्य के अनुरूप है अतः इसका सर्वप्रथम प्रकाशन किया गया है।

इस प्रकाशन के हेतु श्रीमती आशादेवी जैन का उदार आर्थिक सहयोग हमें प्राप्त हुआ है इसके लिए हम उनके चिरकृतज्ञ हैं। आशा है हमारे संकल्पों के अनुरूप यह प्रकाशन श्रद्धालु जिज्ञासुओं की ज्ञानवृद्धि में सहायक सिद्ध हुआ और उनके संतुष्टि की पुष्टि के प्रेरक संदेश हमें प्राप्त हुए तो हम निकट भविष्य में 'स्थानांग' का ऐसा ही संस्करण प्रकाशित करने के इच्छुक हैं।

श्री शान्तिभाई वनमाली सेठ के सक्रिय सहयोग एवं प्रयत्न से यह संस्करण इस रूप में प्रकाशित हो सका है अतः शुद्ध सुन्दर मुद्रण सम्बन्धी सारा श्रेय उन्हें ही है।

— मंत्री

जीवन रेखा

श्री आगान्दी जी सज्जीमडा श्रावक समाज की एक प्रमुख श्राविका हैं। आपका जीवन धर्मश्रद्धा, निर्ग्रन्थ प्रवचन की भक्ति, चतुर्विध संघ के प्रति पूज्य भाव प्रशंसनीय एवं आदरणीय है। आपने धर्म परायण पतिदेव के सहयोग से प्रिय पुत्र पुत्री को भी धार्मिक एवं विवेकी बनाया है। प्रस्तुत संस्करण के प्रकाशन में आपकी स्वाध्याय रुचि ही प्रबल निमित्त रही है। नैतिक जीवन का धरातल उन्नत करने के लिए प्रशस्त धर्माचरण एवं आगम स्वाध्याय का प्रचार प्रसार आपके जीवन का शुभ संकल्प है।

आगम-अनुरक्ता धर्मशीला

श्रीमती आशादेवी जैन
धर्मपत्नी बाबू श्री शिखरचन्द जैन
मातेश्वरी श्री अरिदमन कुमार जैन
एग्जिक्यूटिव इंजीनियर सिंचाई विभाग मेरठ (उ० प्र०)

सकलन-सकेत

प्रकाशकीय
प्रास्ताविक
विषय सूची
समवायाङ्ग मूल
समवायाङ्ग अनुवाद
परिशिष्ट एक
परिशिष्ट दो
परिशिष्ट तीन

प्रास्ताविक

समवायाङ्ग का महत्व

द्वादशाग गणिपिटक म समवायाग का महत्त्वपूण स्थान है। चतुर्विध सघ के धर्मशास्ता आचाय उपाध्याय एव गणावच्छेदक जसे महामहिम पदो की योग्यता का मानदण्ड इस अग क स्वाध्याय म सन्निहित है। इस सम्बध म व्यवहार सूत्र का विधान इस प्रकार है—अट्ठवासपरियाए समणे निग्गथे आयारकुसले सयमकुसले पवयण कुसले पण्णत्तिकुसले सगहकुसले उवग्गहकुसले अक्खयायारे असबलायारे असकिलिट्ठायारचित्त बहुस्सुए बब्भागमे जहण्णेण ठाण-समवायधरे कप्पइ आयरियत्ताए उवज्झायत्ताए गणावच्छेइयत्ताए उद्दिसित्तए। —व्यवहार सूत्र उद्देशा ३।

जो आचार पालन सयम साधना अर्हत् प्रवचन धम प्रज्ञप्ति धर्मोपकरण सग्रह और समस्त प्राणियो पर अनुग्रह करने म कुशल हो जिसका अखण्ड अक्लिष्ट एव निर्दोष चारित्र हो जो चारित्र की आराधना म दत्त चित्त हो बहुश्रुत हो अनेक आगमो का ज्ञाता हो, यदि वह बहश्रुत या अनेक आगमो का ज्ञाता न हो तो कम से कम स्थानाग समवायाग का ज्ञाता अवश्य हो ऐसे आठ वष क दीक्षित श्रमण निग्रथ को आचाय उपाध्याय या गणावच्छेदक का पद देना उचित है।

समवायाङ्ग क स्वाध्याय से सबल स्मरणशक्ति

मानव का सब महती शक्ति स्मरणशक्ति है। मानव का विकास और ह्रास, उन्नति और अवनति तथा असाधारण प्रतिष्ठा की

आधारशिला यह स्मरणशक्ति ही है। स्मरण शक्ति की वृद्धि के लिए अतिचिरन्तन काल से सरल संख्या प्रधान संकलना से स्वाध्याय का प्रयोग होता रहा है। भारतीय साहित्य में स्मरणशक्ति के व्यायाम के लिए समय समय पर संख्या प्रधान संकलना के नये-नये निर्माण हुए हैं। समवायांग भी संख्याप्रधान अंग आगम है। इसमें द्वादशांग के पदों का संचय है। इसके सतत् स्वाध्याय से स्मरणशक्ति का सबल होना सुनिश्चित है। बहुश्रुतों की परम्परागत यह धारणा रही है कि शिथिल स्मरणशक्ति वाले अभिनव साधक साधिकायें यदि सात वर्ष तक उपधान-तपपूर्वक समवायांग का सतत स्वाध्याय करें तो उनकी स्मरण शक्ति जीवन पर्यन्त सुदृढ़ रहती है। समवायांग का श्रद्धापूर्वक स्वाध्याय करने वाले सभी सज्जन स्वकीय सत्कार्यों में असाधारण सफलता प्राप्त करते हैं यह अनुभव सिद्ध है।

समवायाङ्ग में चार अनुयोग

द्वादशांगी में एक चरणकरणानुयोग ही है। यह उल्लेख गणिपिटक वर्णन में अङ्कित "दस अंगपरित्तय" के पाठ से स्पष्ट है किन्तु यह सामान्य कथन है। चरणपडिवत्तीहेउ जेणियरे तिन्नि अणुओगा अर्थात् शेष तीनों अनुयोग [द्रव्यानुयोग गणितानुयोग और धर्मकथानुयोग] चरणानुयोग के साधन हैं। अतः समवायांग में चारों अनुयोग विद्यमान हैं यह कहने में किसी प्रकार की विप्रतिपत्ति नहीं है। किस समवाय में कितने अनुयोग हैं यह जानने के लिए प्रस्तुत संस्करण के प्रथम परिशिष्ट समवायांग का अनुयोग वर्गीकरण देखें।

समवायाङ्ग परिचय का संक्षिप्त और विस्तृत पाठ

गणिपिटक का वर्णन भगवती और अनुयोगद्वार में संक्षिप्त समवायांग और नन्दीसूत्र में विस्तृत है। नन्दीसूत्र के गणिपिटक-वर्णन में समवायांग का परिचय देते हुए कहा है कि—इस अंग में एक

सख्या स आगे एक-एक बढ़ाते हुए सौ शत [सख्या] पर्यन्त समवायों का कथन है किन्तु समवायांग सूत्र के गणितिक वर्णन में एक एक सख्या बढ़ाते हुए एक से सौ पर्यन्त समवायों के पश्चात् एक छागे की विषय-सूची अधिक उपलब्ध है।

विषय-सूचियों का तुलनात्मक अध्ययन

समवायांग के गणितिक वर्णन में समवायांग की विषय-सूची —

(१) एक से सौ स्थान पर्यन्त का कथन।

(२) द्वादशांग का वर्णन।

( ) भगवान् महावीर के समवसरण का वर्णन

(४) जीव अजीव राशि का विस्तृत कथन।

(५) नरक तिर्यंच मनुष्य और देवों के आहार श्वासोच्छ्वास लेश्या आवास सख्या आवासों की लम्बाई का प्रमाण उत्पत्ति च्यवन अवगाहना [शरीर की लम्बाई] अवधिज्ञान वेदना भेद उपयोग योग इन्द्रियाँ कषाय।

(६) जीवों की विविध योनियाँ।

(७) मेरु आदि पर्वतों का विष्कम्भ उत्सेध और परिधि का प्रमाण।

(८) कुलकर तीर्थंकर गणधर चक्रवर्ती, बलदेव वासुदेवों का परिचय।

(९) भरत आदि क्षेत्रों का वर्णन।

(१०) कुछ अन्य पदार्थों का वर्णन [नक्षत्रादि के मत में — धायान-नवधान आदि का वर्णन]।

उपलब्ध समवायांग की प्रतियों में प्राप्त विषयों की विस्तृत सूची प्रस्तुत संस्करण के प्रारम्भ में दी है। दोनों विषय-सूचियों का ध्यान से तुलनात्मक अध्ययन करें।

(ख) इस विषय-सूची में सौ के पश्चात् एक कोटा कोटी पर्यन्त संख्या सूचक सूत्रों का उल्लेख क्यों नहीं हुआ ? अतः सहसा मन में आशङ्का हो जाती है कि—क्या यह अंश परिवर्धित है ? किन्तु टीकाकार के सामने यह अंश था। टीकाकार ने तो इस अंश को 'अनेकोत्तरिका वृद्धि' की संज्ञा भी दी है। संभव है विषय-सूची को संक्षिप्त बनाने के लिए इस अंश का उल्लेख नहीं किया है।

(ख) समवायांग परिचय पाठ में दी हुई विषय-सूची और उपलब्ध समवायांग की प्रतियों के विषय क्रमशः नहीं मिलते हैं। यह व्युत्क्रम क्यों और कब हुआ यह शोध का विषय है।

(ग) समवायांग परिचय पाठ में दी हुई विषय सूची में विक्खंभुस्सेह-परिरयप्पमाणं विहिविसेसा य मंदरादीणं महीधराणं यह कथन है किन्तु उपलब्ध समवायांग की किसी भी प्रति में कुलकर वर्णन से पूर्व मेरु आदि पर्वतों का वर्णन नहीं है। पर्वतों का वर्णन केवल एक से सौ स्थान के मध्य में ही है।

(घ) एए अण्णे य एवमाइ एत्थ वित्थरेण अत्था समाहिज्जंति इस कथन से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि—प्रारम्भ में ये विषय और इस विषय सूची में अनक्त अनेक विषय विस्तृत रूप में संकलित किये गये थे किन्तु संक्षिप्त वाचनाकार आचार्यों ने उन सब विषयों का अति संक्षिप्त बना दिया है।

नन्दीसूत्र और समवायांग के गणिपिटक वर्णन में समवायांग का एक अध्ययन एक श्रुतस्कंध एक उद्देशनकाल एक समुद्देशनकाल और एक लाख चौवालीस हजार पदों का समान रूप से उल्लेख है। इस प्रकार दोनों आगमों के गणिपिटक वर्णन में समवायांग का परिचय संक्षिप्त और विस्तृत रूप में विद्यमान है।

नन्दी सूत्र के संकलनकर्ता ने समवायांग के गणिपिटक वर्णन में

विद्यमान समवायाग के विस्तत परिचय पाठ को नन्दीसूत्र म स्थान न देकर समवायाग परिचय क सक्षिप्त पाठ को स्थान द दिया था। यदि नन्दीसूत्रान्तगत समवायाग परिचय पाठ म "ठाणग सयस्स" के आगे जाव और जोडकर समवायस्स ण परित्ता वायणा पढा जाव तो विस्तत परिचय पाठ का सक्षिप्त रूप स्पष्ट परिलक्षित हो जाता है। सभव है किसी समय प्रतिलिपिकार से जाव शब्द छूट गया और उस प्रतिलिपि की प्रतिलिपिया का पाठ उपलब्ध नन्दी-सूत्र तक चला आया।

आधुनिक शोध विद्वान् नन्दी और समवायाग क गणिपिटक वणन म आये हुए समवायाग क परिचय पाठा से इस निणय पर पहुचे हैं कि वतमान म उपलब्ध समवायाग का शत स्थान स आगे का अश समवायाग क परिवर्द्धित सस्करण की सक्षिप्त वाचना है।

मूल समवायाग एक स सौ स्थान पयन्त ही था जसा कि नन्दी सूत्र म उल्लेख है। यह परिवधन किस युग म और किसके द्वारा सपन्न हुआ यह अभी तक शोध का विषय बना हुआ है।

भारतीय साहित्य के श्रेष्ठरत्न महाभारत आदि का मूल और परिवर्धित विभाग इस युग म शोध की कसौटी पर कसा जा चुका है। भगीरथ प्रयत्न क पश्चात् शोध विद्वान् विश्लेषण के मूल मूल आधारो को अङ्कित करने म सफल हुये हैं। हमारे बहुश्रुत भी यदि ऐसा ही प्रयत्न कर तो शोध-काय सद्य सभव हो सकगा।

समवायाङ्ग की सूत्र सख्या

वतमान म उपलब्ध हस्तलिखित एव मुद्रित आगम प्रतियो की सूत्र सख्या समान नहा है। विभिन्न लेखको की विभिन्न हस्त-लिखित प्रतियो म तथा मुद्रित विभिन्न सस्करणो म सूत्र सख्या की असमानता हमारी आदश आगम भक्ति एव श्रुतिसेवा का तथ्यपूर्ण

ना सौ की वृद्धि करके दो हजार की संख्या वाला एक सूत्र है।
इस हजार पर्यन्त एक एक हजार की वृद्धि करके कुछ सूत्र कहे हैं।
एक लाख से ना लाख तक एक-एक लाख की वृद्धि करके कुछ सूत्र कहे हैं।

नौ लाख की संख्या वाले सूत्र के पश्चात् आठ सौ एक सूत्र नौ हजार की संख्या वाला है जो टीकाकार के युग से लेकर अबतक अखरता चला आ रहा है। क्योंकि चारानवें समवाय में भगवान अजितनाथ के चौरानवें सौ अवधिज्ञानी कहे जा चुके थे फिर यहाँ कुछ अधिक नौ हजार अवधिज्ञानी कहने का विशेष प्रयोजन क्या है यह जिज्ञासा बनी हुई है।

दस लाख के पश्चात् एक करोड और एक करोड के पश्चात एक कोटा कोटी का सूत्र है। टीकाकार ने इस वृद्धि को 'अनेकोत्तरिका वृद्धि" कहा है।

द्वादशांग वर्णक से उपसंहार पर्यन्त जितने विषयों का संकलन है उनका उल्लेख पूर्व किया जा चुका है किन्तु समवायांग के संख्या प्रधान संकलन में इन विषयों का संकलन सर्वथा भिन्न प्रतीत होता है।

संख्या प्रधान इस संकलन में संख्या संकलन की एक स्वतन्त्र पद्धति है। उदाहरण रूप में कतिपय संकेत यहाँ अंकित किये है। एक एक संख्या एक रूप एक कान्ति एक पल्य और एक सागर तक एक की संख्या में ही संकलित है।

एक पूर्ण संख्या से दूसरी पूर्ण संख्या के बीच में जितनी संयुक्त संख्या है वह पूर्व कथित पूर्ण संख्या का ही अंग माना गया है। यथा—

(क) ग्यारहवें समवाय में ग्यारह सौ ग्यारह को तथा ग्यारह सौ इक्कीस को ग्यारह की सीमा में ही स्वीकार कि[illegible]

(ख) सतरहवें समवाय में सतरह सौ इक्वास की मनरह की सीमा में स्वीकार किया है।

(ग) इक्तीसवें समवाय में इक्तीस हजार छ सौ तेईस को तथा इक्तीस हजार आठ सौ इक्तीस का इक्तीस की सीमा में स्वीकार किया है। ऐसे अनेक उदाहरण इस संकलन में हैं। वास्तव में उस युग में यह एक प्रशस्त पद्धति रहा है।

पुनरुक्ति

यदि उपयोगिता हो तो पुनरुक्ति कोई दोष नहीं है किन्तु यहाँ एक समवाय में जबूद्वीप का आयाम विष्कम्भ कहा और एक लाखवें समवाय में भी जबूद्वीप का आयाम विष्कम्भ कहा। इस पुनरावृत्ति का क्या उपयोगिता है यह ज्ञातव्य है।

प्रस्तुत संस्करण की उपादेयता

अन्य प्रान्तों की अपेक्षा आगमस्वाध्याय की अभिरुचि गुजरात के श्रमणी वर्ग तथा श्राविका वर्ग में अधिक है। यही कारण है कि मूल आगमों के स्वाध्याय के लिए जैन सिद्धान्त पाठमाला आदि नामों के अनेक संस्करण गुजरात में ही सर्वप्रथम प्रकाशित हुए हैं। स्वाध्याय के लिए गद्य पाठ की अपेक्षा पद्य पाठ अधिक रुचिकर होता है। इसलिए दशवैकालिक उत्तराध्ययन आदि के अधिक प्रकाशन हुए हैं। गद्य पाठ वाले आगमों में कल्पसूत्र सर्वाधिक लोकप्रिय रहा है।

समवायांग का अधिकाधिक स्वाध्याय हो इस भावना से प्रेरित होकर मैंने प्रस्तुत संस्करण की प्रतिलिपि तैयार की किन्तु आवश्यक उपयुक्त साधनों के अभाव में हार्दिक भावना के अनुरूप संकलन नहीं हो सका। आशा है शरीर स्वस्थ रहा और उपयोगी साहित्य सामग्री का सान्निध्य रहा तो स्वाध्याय प्रमियों के समक्ष निर्दोष

संस्करण और अधिक व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया जा सकेगा।

इस संस्करण की जो विशेषताएँ हैं वे पाठकों के सामने हैं। साधु रुचि और स्वाध्यायप्रेमी इस प्रकाशन की उपादेयता किस रूप में स्वीकार करते हैं यह अभी जिज्ञासा है।

संक्षिप्त वाचना की देन—

समवायांग में यत्र-तत्र अन्य आगमों को देखने के लिए जितने निर्देश दिये गये हैं वे सब संक्षिप्त वाचना की देन हैं। यहाँ उदाहरण रूप में कुछ निर्देश अंकित किये हैं यथा—

जहा नदीए समवाय ८८।
कप्पस्स समोसरण णेयव्व सूत्र १५७।
एवं सव्वं ओहिपय भाणियव्व
एव सव्व वेयणापयं भाणियव्व
एव सव्व लेसापय भाणियव्व
एव सव्व आहारपय भाणियव्व सूत्र १५४।

इसी प्रकार-जाव-का प्रयोग भी प्राय संक्षिप्त वाचनाकारो द्वारा किया गया है।

नन्दीसूत्र प्रज्ञापना और कल्पसूत्र आदि के संकलन के पश्चात् समवायांग का संकलन हुआ है यह मान्यता नितान्त भ्रम भरी है। वास्तव में ये सब निर्देश संक्षिप्त वाचनाकारो के द्वारा हुए हैं।

एव का अर्थ समानता—

समवाय ८८ तथा कुछ अन्य समवायों में एव चउसुवि दिसासु विणेयव्व" यह वाक्य है। इस वाक्य में 'एव' का प्रयोग 'समानता का सूचक है। एक दिशा का वर्णन करने के पश्चात् शेष तीन दिशाएँ रहती हैं किन्तु उपर्युक्त वाक्य में चारों दिशाओं के कहने

का तात्पर्य यह है कि—चारों दिशाओं के चरमान्तों का अन्तर समान है।

सूत्र संकलन में वैविध्य

समवायांग की सूत्र संकलना में जिस वैविध्य का दर्शन होता है उसकी सहेतुकता यदि युक्तिपूर्वक सिद्ध की जाय तो जिज्ञासु जगत पर महान् उपकार होगा। वैविध्य का एक उदाहरण—इस समान संख्याओं के आधार पर अड़सठ चक्रवर्ती विजय और अड़सठ विजयों की राजधानियों के दो सूत्र हो सकते हैं किन्तु यहाँ एक सूत्र है। अड़सठ तीर्थंकरों का एक सूत्र कहने के पश्चात् चक्रवर्ती बलदेव और वासुदेवों का एक भिन्न सूत्र है जबकि पुष्करार्ध द्वीप के अरिहन्त चक्रवर्ती बलदेव और वासुदेवों का एक ही सूत्र है। सम्भव है संक्षिप्तवाचनाकारों का यह उपक्रम परिष्कार की प्रतीक्षा में इस युग तक आ पहुँचा है।

समवायांग के स्वतन्त्र चिन्तन में और अनेक ज्ञातव्य विषयों की चर्चा भी है किन्तु यहाँ स्थानाभाव से संकेत भी दिए हैं।

— मुनि कन्हैयालाल 'कमल'

समवायाङ्ग विषय-सूची

समवाय १ सूत्र ४३

१८ युग्म सूत्र
४ आयाम विष्कम्भ सूत्र
३ नक्षत्र संख्या
१५ स्थिति
३ उच्छ्वासादि

योग ४३

१८ युग्म सूत्र

१ आत्म सूत्र	१ अनात्म सूत्र
१ दण्ड	१ अदण्ड
१ क्रिया	१ अक्रिया
१ लोक	१ अलोक
१ धर्म	१ अधर्म
१ पुण्य	१ पाप
१ बंध	१ मोक्ष
१ आस्रव	१ संवर
१ वेदना	१ निर्जरा

योग १८

४ आयाम विष्कम्भ सूत्र
१ जम्बूद्वीप आयाम विष्कम्भ

१ अप्रतिष्ठान नरकावास आयाम विष्कम्भ
१ पालकविमान आयाम विष्कम्भ
१ सर्वार्थसिद्धविमान आयाम विष्कम्भ

योग ४

३ नक्षत्र सख्यासूत्र
१५ स्थितिसूत्र
३ नरकस्थिति सूत्र
३ असुरकुमार स्थितिसूत्र
१ तिर्यञ्च
१ मनुष्य
१ व्यन्तरेन्द्र
१ ज्योतिषेन्द्र
५ विमानवासीन्द्र

योग १५

३ उच्छ्वासादिसूत्र
१ उच्छ्वास सूत्र
१ आहार सूत्र
१ सिद्धि सूत्र

योग ३

सर्वयोग ४३

समवाय २ सूत्र २३

३ युग्म सूत्र
४ नक्षत्र सख्या सूत्र

१३ स्थिति सूत्र
३ उच्छवासादि सूत्र

याग २३

३ युग्म सूत्र
१ जघन्य सूत्र
१ गति
१ वघन

याग ३

४ नक्षत्र सख्या सूत्र
१३ स्थिति सूत्र
२ नरक स्थिति सूत्र
२ असुरकुमार
१ तियच
१ मनुष्य
७ विमानवासीदेव

याग १३

३ उच्छवासादि सूत्र

सवयाग २३

समवाय ३ सूत्र २४

८ प्रकीणक सूत्र
७ नक्षत्रसख्या सूत्र
६ स्थिति
३ उच्छवासादि

याग २४

५ प्रकीणक सूत्र
१ दन्
१ गुप्ति
१ शल्य
१ गव
१ विराधना

योग ५

७ नक्षत्रसख्या सूत्र
६ स्थिति सूत्र
३ नरक स्थिति सूत्र
१ असुरकुमार
१ तियच
१ मनुष्य
१ विमानवासी
योग ६

३ उच्छवासादि सूत्र

सवयोग १८

समवाय ४ सूत्र १८

६ प्रकीणक सूत्र
३ नक्षत्र सख्या
६ स्थिति
३ उच्छवासादि

योग १८

६ प्रकीणक सूत्र
१ कषाय
१ ध्यान
१ विकथा
१ सज्ञा
१ वध
१ योजन

योग ६

३ नक्षत्रसख्या सूत्र
६ स्थिति सूत्र
२ नरक स्थिति सूत्र
१ असुरकुमार स्थिति सूत्र
३ विमानवासादि

योग ६

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग १८

समवाय ५ सूत्र २२

८ प्रकीणक सूत्र
५ नक्षत्र सख्या
६ स्थिति
३ उच्छ्वासादि

योग २२

८ प्रकीणक सूत्र
१ क्रिया सूत्र
१ महाव्रत
१ कामगुण
१ आश्रव
१ संवर
१ निर्जरास्थान सूत्र
१ समिति
१ अन्तराय
योग ८

५ नक्षत्रसंख्या सूत्र
६ स्थिति सूत्र
२ नरकस्थिति
१ असुरकुमारस्थिति
३ विमानवासीदेवस्थिति
योग ६

३ उच्छ्वासादि सूत्र
सर्वयोग २२

समवाय ६ सूत्र १७

६ प्रकीर्णक सूत्र
२ नक्षत्रसंख्या
६ स्थिति
३ उच्छ्वासादि
योग १७

६ प्रकीणक सूत्र
१ लश्या
१ जीवनिकाय
१ वाह्यतप
१ आभ्यतरतप
१ समुद्घात
१ अवग्रह

याग ६

२ नक्षत्रसख्या सूत्र
६ स्थिति ,,
२ नरकस्थिति
३ विमानवासीदेव स्थिति सूत्र
१ असुरकुमार

याग ६

उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयाग १७

समवाय ७ सूत्र २३

६ प्रकीणक सूत्र
५ नक्षत्रसख्या
९ स्थिति
३ उच्छ्वासादि

याग २३

६ प्रकीणक सूत्र

१ भय सूत्र
१ समुद्घात
१ भगवान् महावीर के शरीर की ऊंचाई
१ जबूद्वीप के वर्षधर पर्वत
१ वर्ष (क्षेत्र)
१ क्षीणमोह गुणस्थान में वेदन योग्य कर्म प्रकृतियां।

योग ६

५ नक्षत्रसंख्या सूत्र
६ स्थिति सूत्र
३ नरक स्थितिसूत्र
१ असुरकुमार स्थितिसूत्र
५ विमानवासीदेव स्थितिसूत्र

योग ६

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग २३

समवाय ८ सूत्र १८

६ प्रकीर्णक सूत्र
६ स्थिति
४ उच्छ्वासादि

योग १८

६ प्रकीर्णक सूत्र
१ मदस्थान सूत्र
१ प्रवचनमाता सूत्र

१ व्यन्तरदेवों के चैत्यवृक्षों की ऊंचाई
१ जम्बूद्वीप के सुदर्शन वृक्ष की ऊंचाई
१ गरुड़ावास के कूटशाल्मली वृक्ष की ऊंचाई
१ जम्बूद्वीप की जगती की ऊंचाई
१ केवली समुद्घात के आठ समयों का वर्णन
१ भगवान् पार्श्वनाथ के गण और गणधर
१ चन्द्र के साथ योग करनेवाले नक्षत्र
योग ६
६ स्थिति सूत्र
२ नरक स्थितिसूत्र
१ असुरकुमार स्थितिसूत्र
३ विमानवासी देव स्थितिसूत्र
योग ६
३ उच्छ्वासादि सूत्र
सर्वयोग १८

समवाय ६ सूत्र २०

४ प्रकीर्णक सूत्र
२ ज्योतिष्क सूत्र
४ प्रकीर्णक सूत्र
६ स्थितिसूत्र
४ उच्छ्वासादि सूत्र
योग २०

४ प्रकीणक सूत्र
१ ब्रह्मगप्तिया
१ अब्रह्मगप्तिया
१ ब्रह्मचय अध्ययन
१ भगवान् पार्श्वनाथ के शरीर की ऊंचाई
योग ८

४ ज्योतिषी देव सूत्र
१ चन्द्र के साथ अभिजित् का योग काल
१ चन्द्र के साथ अभिजित् आदि का उत्तर दिशा म योग
१ तारा चार—(ऊंचाई)
योग ३

४ प्रकीणक सूत्र
१ जम्बूद्वीप म मत्स्य का प्रमाण
१ विजयनगर की प्रत्यक बाजा म भौम नगर
१ व्यन्तरदेवो की सुधर्मा सभा की ऊंचाई
१ दर्शनावरण की उत्तर प्रकृतिया
योग ८

६ स्थिति सूत्र
२ नरक स्थितिसूत्र
१ असुरकुमार स्थितिसूत्र
३ विमानवासी देव स्थितिसूत्र
योग ६

३ उच्छ्वासादि सूत्र
सवयोग २०

समवाय १० सूत्र २५

८ प्रकीर्णक सूत्र
१४ स्थिति
२ उच्छ्वासादि सूत्र

योग २५

८ प्रकीर्णक सूत्र
१ श्रमणधर्म सूत्र
१ चित्तसमाधिस्थान सूत्र
१ मन्दरपर्वत के मूल का विष्कम्भ
१ भगवान् अरिष्टनेमि की ऊंचाई
१ कृष्ण वासुदेव की ऊंचाई
१ राम बलदेव की ऊंचाई
१ ज्ञानवृद्धि के नक्षत्र
१ कल्पवृक्ष

योग ८

१४ स्थिति सूत्र
४ नरक स्थिति सूत्र
२ असुरकुमार स्थितिसूत्र
१ बादर वनस्पति काय की उत्कृष्ट स्थिति
१ व्यन्तरदेव की
४ विमानवासादेव की

योग १४

२ उच्छ्वासादि सूत्र

समवाय २५

समवाय ११ सूत्र १६

७ प्रकीर्णक सूत्र
६ स्थिति
३ उच्छ्वासादि
योग १६

७ प्रकीर्णक सूत्र
१ श्रावक प्रतिमा
१ लोकान्त से ज्योतिषचक्र का अन्तर
१ जंबूद्वीप में मेरु से ज्योतिषचक्र का अन्तर
१ भगवान् महावीर के गणधर
१ नक्षत्र संख्या सूत्र
१ नीचे के तीन ग्रैवेयक के विमान
१ मन्दरपर्वत के शिखर का विष्कम्भ
योग ७

६ स्थिति सूत्र
२ नरक स्थिति सूत्र
१ असुरकुमार स्थिति सूत्र
३ विमानवासी देव स्थिति सूत्र
योग ६

३ उच्छ्वासादि सूत्र
सर्वयोग १६

समवाय १२ सूत्र २०

११ प्रकीर्णक सूत्र

६ स्थिति सूत्र
८ उत्पातादि सूत्र

योग ०

११ प्रकाशक सूत्र
१ भिक्षु प्रतिमा
१ श्रमण व्यवहार [विभाग]
१ वस्त्र व आसन
१ विजया राजधानी का विष्कम्भ
१ राम बलदेव का पूर्णायु
१ मन्दरपर्वत की चूलिका का विष्कम्भ
१ जम्बूद्वीप की जगती व मूल का विष्कम्भ
१ जघन्य रात्री के मुहूर्त[1]
१ जघन्य दिन के मुहूर्त[2]
१ सर्वार्थसिद्ध से ईषत्प्राग्भारा का अन्तर
१ ईषत् प्राग्भारा के नाम

योग ११

६ स्थिति सूत्र
२ नरक स्थिति सूत्र
१ असुरकुमार स्थिति सूत्र
३ विमानवासीदेव स्थिति सूत्र

योग ६

---

१ २ जघन्य रात्री के मुहूर्तों का तथा जघन्य दिन के मुहूर्तों का भिन्न भिन्न मत है।

३ उच्छवासादि सूत्र

योग २०

समवाय १३ सूत्र १७

८ प्रकीणक सूत्र

६ स्थिति सूत्र

३ उच्छवासादि सूत्र

योग १७

८ प्रकीणक सूत्र

१ क्रियास्थाना के नाम

१ सौधम और ईशान देवलोक के विमान प्रस्तर

१ सौधर्मावतसक विमान का आयाम विष्कम्भ

१ ईशानावतसक

१ जलचर तियच पञ्चेन्द्रिय की कुल कोटि

१ प्राणायु पूर्व की वस्तु

१ गभज तियच पचेन्द्रिय के योग

१ सूय मण्डल का परिमाण

योग ८

६ स्थिति सूत्र

२ नरक स्थितिसूत्र

१ असुरकुमार स्थितिसूत्र

३ विमानवासी देव स्थितिसूत्र

योग ६

३ उच्छवासादिक सूत्र

सर्वयोग १७

समवाय १४ सूत्र १८

८ प्रकीर्णक सूत्र
७ स्थिति सूत्र
३ उच्छवासादि सूत्र

भाग १८

८ प्रकीर्णक सूत्र
१ भूतग्राम सूत्र
१ पूर्वों का सूत्र
१ आग्रायणी पूर्व की वस्तु
१ भगवान् महावीर की श्रमण सम्पदा
१ गुणस्थान सूत्र
१ भरत और ऐरवत क्षेत्र की जीवा का आयाम
१ चक्रवर्ती के रत्न
१ जम्बूद्वीप की महा नदियां

भाग ८

७ स्थिति सूत्र
२ नरकस्थिति सूत्र
१ असुरकुमार स्थिति सूत्र
४ विमानवासादि स्थिति सूत्र

भाग ३

३ उच्छ्वासादि सूत्र

समवाय १८

समवाय १५ सूत्र १६

७ प्रकीणक सूत्र
६ स्थिति सूत्र
१ उच्छ्वासादि सूत्र

योग १६

७ प्रकीणक सूत्र
१ परमाधार्मिक देव
१ भगवान् नमिनाथ की ऊचाई सूत्र — गाथा
१ कृष्णपक्ष म ध्रुव राहुद्वारा प्रतिदिन चन्द्रकला का आवरण*
१ शुक्लपक्ष म अनावरण*
१ दान,भपादि ६ न क्षत्रो का चन्द्र के साथ योगकाल
१ चैत्र तथा आश्विन म दिन के मुहूर्त *
१ चैत्र तथा गात्रा के
१ विद्यानुप्रवादपूर्व के वस्तु
१ मनुष्य के योग

योग ७

६ स्थिति सूत्र
२ नरक स्थिति सूत्र
१ असुरकुमार स्थिति सूत्र

*मूल म दो सूत्र माने हैं।
*टीका मे एक सूत्र माना है।
*चैत्र तथा आश्विन के दिन और रात्रि के मुहूर्तों का एक सूत्र है।

३ विमानवासी देव स्थिति सूत्र

योग ६

१ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग १८

समवाय १९ सूत्र १६

७ प्रकीर्णक सूत्र
६ स्थिति सूत्र
३ उच्छ्वासादि सूत्र

योग १६

७ सात प्रकीर्णक सूत्र
१ सूत्रकृताग के अध्ययन
१ कषाय सूत्र
१ मेरु पर्वत के नाम
१ भगवान् पार्श्वनाथ की श्रमण सम्पदा
१ आत्मप्रवाद पूर्व की वस्तु
१ चमरेन्द्र और बलीन्द्र के स्थना का आयाम विष्कम्भ
१ लवण समुद्र के ऊहरा की ऊंचाई

योग ७

६ स्थिति सूत्र
२ नरक स्थिति सूत्र
१ असुरकुमार स्थिति सूत्र
३ विमानवासी देव स्थिति सूत्र

योग ६

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सवयाग १६

समवाय १७ सूत्र २१

१० प्रकीणक सूत्र
८ स्थिति सूत्र
३ उच्छवासादि सूत्र

याग २१

१० प्रकीणक सूत्र
१ असयम सूत्र
१ सयम
१ मानपात्तर पवत की ऊचाई
१ वलधर और अनवलधर आदि नागराज क सब आवास पवता की ऊचाई
१ लवण समुद्र के पद स ऊपर की ऊचाई
१ जघाचारण और विद्याचारण मुनिया का तिरछी गति
१ चमरेन्द्र के तिगिच्छ कूट उत्पातपवता की ऊचाई
१ बलेन्द्र और रुचकेन्द्र
१ मरण क प्रकार
१ दसवें गणस्थानवर्ती आत्मा की कम प्रकृतियाँ

याग १

८ स्थिति सूत्र
३ नरक स्थितिसूत्र
१ असुरकुमार दव स्थिति सूत्र

४ विमानवासी देव स्थिति सूत्र

योग ८

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग २१

समवाय १८ सूत्र १८

८ प्रकीर्णक सूत्र

७ स्थिति

उच्छ्वासादि सूत्र

योग १८

८ प्रकीर्णक सूत्र

१ ब्रह्मचर्य सूत्र

१ भगवान् नेमनाथ की श्रमण सम्पदा

१ सब साधुओं के आचार स्थान

१ चूलिका सहित आचारांग के पद

१ लिपि सूत्र

१ अस्तिनास्ति प्रवाद का वस्तु

१ धूमप्रभा का बाहल्य (चौड़ाई)

१ पौष और आषाढ़ मास में दिन और रात का उत्कृष्ट परिमाण

योग ८

७ स्थिति सूत्र

१ नरक स्थिति सूत्र

१ असुरेन्द्र स्थिति सूत्र

४ विमानवासी देव स्थिति सूत्र

योग ७

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग १८

समवाय १९ सूत्र १५

५ प्रकीर्णक सूत्र

७ स्थिति

३ उच्छ्वासादि सूत्र

योग १५

५ प्रकीर्णक सूत्र

१ ज्ञाता के अध्ययन

१ सूर्य का ताप क्षेत्र

१ शुक्र महाग्रह का उदयास्त

१ कला परिमाण

१ विवाहित होने के पश्चात् दीक्षित होनेवाले तीर्थंकर

योग ५

७ स्थिति सूत्र

२ नरक स्थिति सूत्र

१ असुरेन्द्र स्थिति सूत्र

४ विमानवासीदेव स्थिति सूत्र

योग ७

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग १५

समवाय २० सूत्र १७

७ प्रकीर्णक सूत्र
७ स्थिति
३ उच्छ्वासादि सूत्र

योग १७

७ प्रकीर्णक सूत्र
१ असमाधिस्थान सूत्र
१ भगवान् मुनिसुव्रत की ऊंचाई
१ सब घनोदधि का बाहल्य (चौड़ाई)
१ प्राणत देवेन्द्र के सामानिक देव
१ नपुंसक वेदनीय की बंध स्थिति
१ प्रत्याख्यान पूर्व की वस्तु
१ उत्सर्पिणी अवसर्पिणी का काल परिमाण

योग ७

७ स्थिति सूत्र
२ नरक स्थिति सूत्र
१ अमरत्व स्थिति सूत्र
४ विमानवासीदेव स्थिति सूत्र

योग ७

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग १७

समवाय २१ सूत्र १४

८ प्रकीर्णक सूत्र
७ स्थिति

१ पुद्गल सूत्र

योग ६

८ स्थिति सूत्र

३ नरक स्थिति सूत्र

१ असुरत्व स्थिति सूत्र

४ विमानवासी त्व स्थिति सूत्र

योग ८

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सवयोग १७

समवाय २३ सूत्र १३

४ प्रकीणक सूत्र

६ स्थिति सूत्र

३ उच्छ्वासादि सूत्र

योग १३

४ प्रकीणक सूत्र

१ सूत्रकृताग के अध्ययन

१ तीर्थङ्कर केवलज्ञानोत्पत्ति सूत्र

१ तीर्थङ्करो का पूर्वभव म आगमज्ञान सूत्र

१ मडलीकराजा ,

योग ४

६ स्थिति सूत्र

२ नरक स्थिति सूत्र

१ असुरत्व स्थिति सूत्र

३ विमानवासीदेव स्थिति सूत्र

योग ६

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सवयोग ११

समवाय २४ सूत्र १५

६ प्रकीणक सूत्र
६ स्थिति सूत्र
३ उच्छवासादि सूत्र

याग १५

६ प्रकीणक सूत्र
१ देवाधिदेव
१ चुल्लहिमवत और शिखरी पवत की जीवा का परिमाण
१ ==
१ पौरुषीप्रमाण
१ गगा सिन्धु प्रवाह विस्तार
१ रक्ता रक्तवती

योग ६

६ स्थिति सूत्र
२ नरक स्थिति सूत्र
१ असुरदेव स्थिति सूत्र
३ विमानवासीदेव स्थिति सूत्र

योग ६

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सवयाग १५

समवाय २५ सूत्र १८

२ प्रकीर्णक सूत्र
६ स्थिति
१ उच्छ्वासादि

योग १८

९ प्रकीर्णक सूत्र
१ पञ्चमहाव्रत भावना
१ भगवान् मल्लीनाथ की ऊंचाई
१ वैताढ्य पर्वत की ऊंचाई तथा गहराई
१ नरकावास
१ आचारांग के अध्ययन
१ अपर्याप्त मिथ्यादृष्टि विकलेन्द्रिय के कर्म की प्रकृतियों का बंध
१ गंगा सिन्धु का प्रपात
१ रक्ता रक्तवती का प्रपात
१ लोकबिन्दुसार पूर्व की वस्तु

योग ६

६ स्थिति सूत्र
२ नरक स्थिति सूत्र
१ असुरकुमार स्थिति सूत्र
३ विमानवासादेव

योग ६

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग १८

समवाय २६ सूत्र ११

२ प्रकीर्णक सूत्र
६ स्थिति
३ उच्छ्वासादि सूत्र

योग ११

२ प्रकीर्णक सूत्र
१ दशाश्रुतस्कंध, बृहत्कल्प और व्यवहार के उद्देशन काल
१ अभवसिद्धिक जीव के कर्म प्रकृतियों की सत्ता

योग २

६ स्थिति सूत्र
२ नरक स्थिति सूत्र
१ असुरेन्द्र स्थितिसूत्र
३ विमानवासीन्द्र स्थिति सूत्र

योग ६

३ उच्छ्वासादिक सूत्र

सर्वयोग ११

समवाय २७ सूत्र १५

६ प्रकीर्णक सूत्र
६ स्थिति सूत्र
३ उच्छ्वासादि सूत्र

योग १५

६ प्रकीर्णक सूत्र
१ अणगार सूत्र

१ वध्यमान देवगति में कम प्रकृतियाँ
वध्यमान नरकगति में कम प्रकृतियाँ

योग ५

६ स्थिति सूत्र
२ नरक स्थिति सूत्र
१ असुरेन्द्र
३ विमानवासीन्द्र

योग ६

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग १४

समवाय २६ सूत्र १८

६ प्रकीर्णक सूत्र
६ स्थिति
३ उच्छ्वासादि

योग १८

६ प्रकीर्णक सूत्र
१ पापश्रुत
१ आषाढ़ महिना का परिमाण
१ भाद्रपद
१ कार्तिक
१ पौष
१ फाल्गुन
१ वसाख

१ रत्नप्रभा के नरकावास

योग ८

५ स्थिति सूत्र

२ नरक स्थिति सूत्र

१ असुरत्व

२ विमानवासात्व

योग ५

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सवयोग १६

समवाय ३१ सूत्र १४

५ प्रकीर्णक सूत्र

६ स्थिति सूत्र

३ उच्छ्वासादि सूत्र

योग १४

५ प्रकीर्णक सूत्र

१ सिद्ध गुण सूत्र

१ मरु पर्वत परिधि सूत्र

१ सूर्य दर्शन अवधि सूत्र

१ अधिकमास परिमाण सूत्र

१ आदित्यमास परिमाण सूत्र

योग ५

६ स्थिति सूत्र

२ नरक स्थितिसूत्र

१ असुरेन्द्र स्थितिसूत्र
३ विमानवासी देव स्थितिसूत्र

योग ६

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वयोग १४

समवाय ३२ सूत्र १४

६ प्रकीर्णक सूत्र
४ स्थितिसूत्र
४ उच्छ्वासादि सूत्र

योग १४

६ प्रकीर्णक सूत्र
१ योग संग्रह
१ देवेन्द्र
१ भगवान् कुंथुनाथ की केवली संपदा
१ सौधर्म कल्प के विमान
१ रेवति नक्षत्र के तारे
१ नाट्य

योग ६

५ स्थिति सूत्र
१ नरकस्थिति सूत्र
१ असुरेन्द्र स्थिति सूत्र
२ विमानवासीदेव स्थिति सूत्र

योग ५

३ उच्छ्वासादि सूत्र

सर्वमाग १४

समवाय ३३ सूत्र १४

८ प्रज्ञापक सूत्र
७ स्थिति सूत्र
३ उच्छ्वासादि सूत्र

याग १४

४ प्रकीर्णक सूत्र
१ आशातना
१ चमरचंचा के भौमनगर
१ महाविदेह विष्कम्भ
१ सूर्य स्थान

याग ४

७ स्थिति सूत्र
३ नरक स्थिति सूत्र

१ जम्बूद्वीप में चक्रवर्ती विजय
१ ,, दीर्घ वैताढ्य
१ ,, तीर्थङ्कर
१ चमरेन्द्र के भवनावास
१ नरकावास

योग ६

समवाय ३५ सूत्र ६

१ वचनातिशय
१ भगवान् कुंथुनाथ की ऊंचाई
१ दत्त वासुदेव की ऊंचाई
१ नन्दन बलदेव की ऊंचाई
१ जिन दाढा
१ नरकावास

योग ६

समवाय ३६ सूत्र ४

१ उत्तराध्ययन के अध्ययन
१ चमरेन्द्र सभा की ऊंचाई
१ भगवान् महावीर की श्रमणी सम्पदा
१ पौरुषी प्रमाण

योग ४

समवाय ३७ सूत्र ५

१ भगवान् कुंथुनाथ के गणधर

१ हेमवय हैरण्यवय की जीवा का आयाम
१ विजयादि राजधानियों के प्राकारों की ऊंचाई
१ क्षुद्रिका विमान प्रविभक्ति के उद्देशन काल
१ पौरुषी प्रमाण

योग ५

समवाय ३८ सूत्र ४

१ भगवान् पारवनाथ की श्रमणी सम्पदा
१ हेमवय हैरण्यवय की जीवा धनुपृष्ठ और परिधि
१ मन्दर पर्वत के द्वितीय काण्ड की ऊंचाई
१ क्षुद्रिका विमान प्रविभक्ति के उद्देशन काल

योग ४

समवाय ३९ सूत्र ४

१ भगवान् नमिनाथ के अवधि ज्ञानी मुनि
१ कुल पर्वत
१ नरकावास
१ कर्म प्रकृतियाँ

योग ४

समवाय ४० सूत्र ८

१ भगवान् अरिष्टनेमि की श्रमणी सम्पदा
१ मन्दर चूलिका की ऊंचाई
१ भगवान् शान्तिनाथ की ऊंचाई

१ भूतानन्द नागकुमार भवनावास
१ क्षुल्लिका विमान प्रविभक्ति के उद्देशन काल
२ पौरुषी प्रमाण
१ महाशुक्र कल्प के विमानावास

योग ८

समवाय ४१ सूत्र ३

१ भगवान् नमिनाथ की श्रमणी सम्पदा
१ नरकावास
१ महालिया विमान प्रविभक्ति के उद्देशन काल

योग ३

समवाय ४२ सूत्र १०

१ भगवान् महावीर का श्रमण पर्याय
१ जम्बूद्वीप के चरमान्त से गोस्तूभ आवास पर्वत के पश्चिम चरमान्त का अन्तर
१ शेष तीन दिशाओं के अंतर का सूचक सूत्र
१ कालोद समुद्र के चन्द्र सूर्य
१ सम्मूर्छिम भुजपरिसर्प की स्थिति
१ नामकर्म की प्रकृतियाँ
१ लवण समुद्र वेला
१ महालिका विमान प्रविभक्ति के उद्देशन काल
१ पञ्चम षष्ठ आरा परिमाण
१ प्रथम द्वितीय

योग १०

समवाय ४३ सूत्र ५

१ कर्मविपाक के अध्ययन
१ नरकावास
२ जम्बूद्वीप चरमान्त से गोस्तूभ चरमान्त का अन्तर
१ महालिका विमान प्रविभक्ति के उद्देशनकाल

योग ५

समवाय ४४ सूत्र ४

१ ऋषि भाषित के अध्ययन
१ भगवान् विमलनाथ की युगान्तकृत् भूमि
१ धरणेन्द्र के भवनावास
१ महालिका विमान प्रविभक्ति के उद्देशन काल

योग ४

समवाय ४५ सूत्र ८

१ समयक्षेत्र का आयाम विष्कम्भ
१ सीमन्त नरकावास का आयाम विष्कम्भ
१ उडु विमान का आयाम विष्कम्भ
१ ईषत्प्राग्भारा का आयाम विष्कम्भ
१ भगवान् धर्मनाथ की ऊंचाई
१ मेरु पर्वत से चारों दिशाओं का अन्तर
१ नक्षत्र चन्द्रयोग
१ महालिका विमान प्रविभक्ति के उद्देशन काल

योग ८

समवाय ४६ सूत्र ३

१ घंटीवाल के मातृका पद
१ ब्राह्मी लिपि के मातृकाक्षर
१ प्रभंजन के भवनावास

योग ३

समवाय ४७ सूत्र २

१ सूर्यस्थान
१ अग्निभूति का गृहवास

योग २

समवाय ४८ सूत्र ३

१ चक्रवर्ती के पत्तन
१ भगवान् धर्मनाथ के गणधर
१ सूर्यमण्डल का विष्कम्भ

योग ३

समवाय ४९ सूत्र ३

१ सप्त सप्तमिका भिक्षु पडिमा
१ देवकुरु उत्तरकुरु के युगलियों [illegible]
१ इन्द्रिय की उत्कृष्ट स्थिति

योग ३

समवाय ५० सूत्र ७

१ भगवान् मुनिसुव्रत की श्रमणी सम्पदा
१ भगवान् अनन्तनाथ की ऊचाई
१ पुरुषोत्तम वासुदेव की ऊचाई
१ सव दीर्घ वैताढ्यों का विष्कम्भ
१ लातक कल्प के विमानावास
१ सव तमिस्र गुफा और खड प्रपात गुफा का आयाम
१ सव कचनग पर्वतो की चूलिका का विष्कम्भ

योग ७

समवाय ५१ सूत्र ५

१ ब्रह्मचर्य अध्ययन के उद्देशन काल
१ चमरेन्द्र की सुधर्मा सभा का स्तम्भ
१ बलेन्द्र की सभा का स्तम्भ
१ सुप्रभ बलदेव का आयु
१ दर्शनावरण और नाम कर्म की उत्तर कर्म प्रकृतियाँ

योग ५

समवाय ५२ सूत्र ५

१ मोहनीय कर्म के नाम
१ गोथूभ आवास पर्वत के पूर्व चरमान्त का और वलयामुख पाताल-कलश के पर्वत के पश्चिम चरमान्त का अतर
१ पाप तीन क्रियाओ का सूचक सूत्र
१ कर्म प्रकृतियाँ

१ विमानावास

योग ८

समवाय ५३ सूत्र ४

१ देवकुरु-उत्तरकुरु की जीवा का आयाम
१ महाहिमवत रुक्मी वर्षधर की जीवा का आयाम
१ भगवान् महावीर के एक वर्ष पर्याय वाले श्रमणों की सम्पदा
१ सम्मूर्छिम उरपरिसर्प की स्थिति

योग ४

समवाय ५४ सूत्र ४

१ भरत ऐरवत में उत्तम पुरुष
१ भगवान् अरिष्टनेमि का छद्मस्थ पर्याय
१ भगवान् महावीर के एक दिवसीय प्रश्नोत्तर
१ भगवान् अनंतनाथ के गणधर

योग ४

समवाय ५५ सूत्र ६

१ भगवान् मल्लिनाथ का परमायु
१ मंदर पर्वत के पश्चिम चरमान्त से विजय द्वार के पश्चिम चरमांत का अन्तर
१ शेष तीन दिशाओं का सूचक सूत्र
१ भगवान् महावीर उपदिष्ट पुण्य पाप फल विपाक के अध्ययन

१ नरकावास
१ कर्म प्रकृतियां

योग ६

समवाय ५६ सूत्र २

१ नक्षत्र चन्द्र योग
१ भगवान् विमलनाथ के गण और गणधर

योग २

समवाय ५७ सूत्र ५

१ आचारांग सूत्रकृतांग और स्थानांग के अध्ययन
१ गोस्तूभ आवास पर्वत के पूर्व चरमान्त से वलयामुख पाताल कलश के मध्य भाग का अन्तर सूचक सूत्र
१ गण तीन दिशाओं का सूचक सूत्र
१ भगवान् मल्लिनाथ की मन पर्यवज्ञानी मुनि संपदा
१ महाहिमवन्त और रुक्मी वर्षधर पर्वत की जीवा के धनुपृष्ठ की परिधि का सूत्र

योग ५

समवाय ५८ सूत्र ६

१ नरकावास
१ कर्मप्रकृतियाँ
१ गोस्तूभ आवास पर्वत के पश्चिम चरमान्त से वलयामुख पाताल कलश के मध्य भाग का अन्तर

१ नेष तीन निकाओं का सूचक सूत्र

योग ६

समवाय ५९ सूत्र ३

१ चन्द्र संवत्सर के ऋतु

१ भगवान् संभवनाथ की छद्मस्थ पर्याय

१ भगवान् मल्लिनाथ के अवधिज्ञानी मुनियों की सम्पदा

योग ३

समवाय ६० सूत्र ६

१ सूर्य मण्डल

१ लवण समुद्र अग्रोदक

१ भगवान् विमलनाथ की ऊंचाई

१ वैरोचनेन्द्र के सामानिक देव

१ ब्रह्मेन्द्र के सामानिक देव

१ विमानावास

योग ६

समवाय ६१ सूत्र ४

१ पंचसंवत्सरीय युग के ऋतुमास

१ मंदर पर्वत के प्रथम काण्ड की ऊंचाई

१ चन्द्र मण्डल का समांश

१ सूर्य मण्डल का समांश

योग ४

समवाय ६२ सूत्र ५

१ पञ्चसंवत्सरीय युग की पूर्णिमा और अमावस्या
१ भगवान् वासुपूज्य के गणधर
१ शुक्ल और कृष्ण पक्ष में चन्द्र की वृद्धि हानि
१ सौधर्म और ईशान में प्रथम प्रस्तर के विमान
१ सब विमान प्रस्तर

योग ५

समवाय ६३ सूत्र ४

१ भगवान् ऋषभदेव का राज्यकाल
१ हरिवर्ष और रम्यक वर्ष के युगलिक जनों का यौवन काल
१ निषध पर्वत पर सूर्य मण्डल
१ नीलवंत पर्वत पर सूर्य मण्डल

योग ४

समवाय ६४ सूत्र ६

१ अष्ट अष्टमिका भिक्षु प्रतिमा
१ असुर कुमारावास
१ चमरेन्द्र के सामानिक देव
१ सब दधिमुख पर्वतों का संस्थान (आकार) विष्कम्भ और ऊंचाई
१ विमानावास
१ चक्रवर्ती के हार का परिमाण

योग ६

समवाय ६५ सूत्र ३

१ सूर्य मण्डल
१ मौर्यपुत्र गणधर का गृहवास काल
१ सौधर्मावतंसक के भौम नगर

योग ३

समवाय ६६ सूत्र ६

१ दक्षिणार्ध के चन्द्र
१ दक्षिणार्ध के सूर्य
१ उत्तरार्ध के चन्द्र
१ उत्तरार्ध के सूर्य
१ भगवान् श्रेयांसनाथ के गणधर
१ आभिनिबोधिक ज्ञान की स्थिति

योग ६

समवाय ६७ सूत्र ४

१ पंचसंवत्सरीय युग के नक्षत्रमास
१ हैमवत और हैरण्यवत की बाहाओं का आयाम
१ मन्दर पर्वत के पूर्व चरमान्त से गौतम द्वीप के पूर्व चरमान्त का अन्तर
१ सब नक्षत्रों के सीमा विष्कम्भ का समांश

योग ४

समवाय ६८ सूत्र ५

१ धातकी खड के चक्रवर्ती विजय और राजधानियां
१ धातकी खण्ड के उत्कृष्ट अरिहन्त
१ चक्रवर्ती
बलदेव
वासुदेव
१ इसी प्रकार पुष्कराध द्वीप के अर्हन्त
चक्रवर्ती
बलदेव
वासुदेव
१ भगवान् विमलनाथ की उत्कृष्ट श्रमण सम्पदा

योग ५

समवाय ६९ सूत्र ३

१ समय क्षेत्र के वर्ष और वर्षधर पर्वत
१ मन्दर पर्वत के पश्चिम चरमान्त से गौतमद्वीप के पश्चिम चरमान्त का अन्तर
१ कर्म प्रकृतियां

योग ३

समवाय ७० सूत्र ५

१ भगवान् महावीर के पर्युषण
१ भगवान् पार्श्वनाथ का श्रामण्य पर्याय
१ भगवान् वासुपूज्य की ऊंचाई

१ मोहनीय कर्म की स्थिति
१ महेन्द्र के सामानिक देव

योग ५

समवाय ७१ सूत्र ४

१ चतुर्थ चन्द्र संवत्सर में सूर्य की आवृत्ति
१ वीर्यप्रवाद पूर्व के प्राभृत
१ भगवान् अजितनाथ का गृहवास काल
१ सगर चक्रवर्ती का गृहवास काल

योग ४

समवाय ७२ सूत्र ८

१ सुवर्ण कुमारावास
१ लवण समुद्र की बाह्य वेला
१ भगवान् महावीर का पूर्णायु
१ अचल भ्राता गणधर का सर्वायु
१ पुष्करार्ध में चन्द्र
सूर्य
१ चक्रवर्ती के नगर
१ कला
१ सम्मूर्छिम खेचर की स्थिति

योग ८

समवाय ७३ सूत्र २

१ हरिवर्ष और रम्यक वर्ष की जीवा का आयाम
१ विजय बलदेव का सर्वायु

भाग २

समवाय ७४ सूत्र ४

१ अग्निभूती गणधर का सर्वायु
१ सीतोदा महानदी का उत्तराभिमुख प्रवाह
१ सीता ,, दक्षिणाभिमुख प्रवाह
१ नरकावास

भाग ४

समवाय ७५ सूत्र ३

१ भगवान् सुविधिनाथ (पुष्पदन्त) का केवली मुनि परिवार
१ भगवान् शीतलनाथ का गृहवास काल
१ भगवान् शान्तिनाथ का ,,

भाग

समवाय ७६ सूत्र २

१ विद्युत् कुमारावास
१ द्वीप कुमार आदि ६ के भवनावास

भाग २

समवाय ७७ सूत्र ४

१ भरत चक्रवर्ती का कौमार्य काल

१ अग वश के दीक्षित होने वाले राजा
१ गर्दतोय और तुषित देवों का देव परिवार
१ मुहूर्त प्रमाण

योग ४

समवाय ७८ सूत्र ४

१ वैश्रमण के आधिपत्य में भवनावास
१ अकम्पित गणधर का सर्वायु
१ उत्तरायन में सूर्य की गति
१ दक्षिणायन में

योग ४

समवाय ७९ सूत्र ४

१ वडवामुख पाताल कलश और रत्नप्रभा का अंतर
१ केतु यूप ईश्वर पाताल कलश और रत्न प्रभा का अंतर
१ तम प्रभा और घनोदधि का अन्तर
१ जम्बूद्वीप के एक द्वार से दूसरे द्वार का अन्तर

योग ४

समवाय ८० सूत्र ७

१ भगवान् श्रेयांसनाथ की ऊंचाई
१ त्रिपिष्ठ वासुदेव की
१ अचल बलदेव की
१ त्रिपिष्ठ वासुदेव का राज्यकाल

१ अप् वरुण काण्ड का बाहल्य
१ [illegible] के सामानिक देव
१ सूर्योन्य
योग ७

समवाय ८१ सूत्र ३

१ नव नवमिका भिक्षु प्रतिमा
१ भगवान् कुन्थुनाथ के मन पर्यवज्ञानियों की संख्या
१ विवाह प्रज्ञप्ति के महायुग्म शतक
योग ३

समवाय ८२ सूत्र ४

१ जम्बूद्वीप के सूर्य मण्डल में सूर्य का निष्क्रमण प्रवेश
१ भगवान् महावीर का गर्भ संहरण काल
१ महाहिमवत वर्षधर पर्वत के उपरि चरमात से सौगंधिक काण्ड के नीचे के चरमात का अन्तर
१ इसी प्रकार रुक्मी पर्वत का अन्तर
योग ४

समवाय ८३ सूत्र ५

१ भगवान् महावीर का संहरण काल
१ भगवान् शीतलनाथ के गणधर
१ मडितपुत्र का सर्वायु
१ भगवान् ऋषभदेव का गृहवास काल

१ भरत चक्रवर्ती का गृहवास काल

योग ५

समवाय ८४ सूत्र १७

१ नरकावास
१ भगवान् ऋषभदेव का सर्वायु
१ भरत बाहुबली, ब्राह्मी सुन्दरी का सर्वायु
१ भगवान् श्रेयासनाथ का सर्वायु
१ त्रिपृष्ठ वासुदेव का सर्वायु
१ शक्रेन्द्र के सामानिक देव
१ अढाई द्वीप के बाहर के सब मन्दर पर्वतों की ऊचाई
१ सब अजनग पर्वतों की ऊचाई
१ हरिवर्ष और रम्यक वर्ष की जीवा के धनुपृष्ठ का आयाम
१ पकबहुल काड के उपरी चरमात से नीचे के चरमान्त का अतर
१ व्याख्या प्रज्ञप्ति (भगवती) के पद
१ नागकुमारावास
१ प्रकीर्णक
१ जीव योनिया
१ पूर्व से शीर्ष प्रहेलिका पर्यन्त गुणाकार
१ भगवान् ऋषभदेव की श्रमण सपदा
१ सर्व विमान

योग १७

समवाय ८५ सूत्र ४

१ आचारांग के उद्देशन काल
१ धातकी खण्ड के मन्दर पर्वतों की ऊंचाई
१ रुचक माण्डलिक पर्वतों की ऊंचाई
१ नंदन वन के नीचे के चरमान्त से सौगंधिक काण्ड के नीचे के चरमान्त का अन्तर

योग ४

समवाय ८६ सूत्र ३

१ भगवान् सुविधिनाथ (पुष्पदन्त) के गण और गणधर
१ भगवान् सुपार्श्वनाथ की वादी मुनिसम्पदा
१ शर्कराप्रभा और घनोदधि का अन्तर

योग ३

समवाय ८७ सूत्र ७

१ मन्दर पर्वत के पूर्वी चरमान्त से गोस्तूभ आवास पर्वत के पश्चिमी चरमान्त का अन्तर
१ मन्दर पर्वत के दक्षिणी चरमान्त से दकभास आवास पर्वत के उत्तरी चरमान्त का अन्तर
१ मन्दर पर्वत के पश्चिमी चरमान्त से शंख आवास पर्वत के पूर्वी चरमान्त का अन्तर
१ मन्दर पर्वत के उत्तरी चरमान्त से दकसीम आवास पर्वत के दक्षिणी चरमान्त का अन्तर
१ कर्म प्रकृतियां

१ महाहिमवत कूट के उपरि भाग म सौगधिक काण्ड के नीचे के भाग का अन्तर
१ इसी प्रकार रुक्मी पवन का अन्तर

योग ७

समवाय ८८ सूत्र ६

१ चन्द्र सूय का ग्रह परिवार
१ दृष्टिवाद के सूत्र
१ मन्दर पवत के पूर्वी चरमान्त म गोस्तूभ आवास पवत के पूर्वी चरमान्त का अन्तर
१ शेष तीन दिशाओं का अन्तर
१ उत्तरायण म सूय की गति
१ दक्षिणायन म

योग ६

समवाय ८९ सूत्र ४

१ भगवान् ऋषभदेव का निर्वाण काल
१ भगवान् महावीर का
१ हरिषेण चक्रवर्ती का राज्यकाल
१ भगवान् शान्तिनाथ की श्रमणी सम्पदा

योग ४

समवाय ९० सूत्र ५

१ भगवान् शीतलनाथ की ऊंचाई

१ भगवान् अजितनाथ के गण और गणधर
१ भगवान् शांतिनाथ के ,,
१ स्वयभु वासुदेव का दिग्विजयकाल
१ सवव९ वलाढय पवनाक निषरस सौगधिकाण्ड के तलिये का अन्तर

योग ४

समवाय ९१ सूत्र ४

१ वयावृत्य पडिमा
१ कालोद समुद्र की परिधि
१ भगवान् कुन्थुनाथ की अवधि ज्ञानी मुनि सम्पदा
१ कर्म प्रकृतियां

योग ४

समवाय ९२ सूत्र ४

१ सव पडिमा
१ इन्द्रभूति गणधर का सर्वायु
१ मेरु पर्वत के मध्यभाग से गोस्तूभ आवास पर्वत के पश्चिमी चरमान्त का अन्तर
१ इसी प्रकार शेष आवास पर्वतों का अन्तर

योग ४

समवाय ९३ सूत्र ३

१ भगवान् चन्द्रप्रभ के गण और गणधर

१ भगवान् शांतिनाथ के चौदहपूर्वी मुनियों की सम्पदा
१ निरात की विषमता

योग २

समवाय ९४ सूत्र २

१ निषध और नीलवंत पर्वत की जीवा का आयाम
१ भगवान् अजितनाथ की अवधिज्ञानी मुनि सम्पदा

योग २

समवाय ९५ सूत्र ५

१ भगवान् सुपार्श्वनाथ के गण और गणधर
१ पाताल कलश
१ लवण समुद्र की गहराई और ऊंचाई
१ भगवान् कुंथुनाथ की सर्वायु
१ मोयपुत्र गणधर का सर्वायु

योग ५

समवाय ९६ सूत्र ५

१ चक्रवर्ती के ग्राम
१ वायुकुमार के भवनावास
१ दण्ड परिमाण
१ धनु नालिका युग अक्ष और मूसल का परिमाण
१ मुहूर्त छाया परिमाण

योग ५

१ रत्नप्रभा के अंजन काड के तलिये के चरमान्त से वाणव्यन्तरों के भौमेय विहारों का अन्तर

योग ७

समवाय १०० सूत्र ८

१ दश दशमिका भिक्षु पडिमा
१ नक्षत्र तारा
१ भगवान् सुविधिनाथ (पुष्पदन्त) की ऊंचाई
१ भगवान् पार्श्वनाथ की सर्वायु
१ आर्य सुधर्मा की
१ सब दीर्घ वैताढ्य पर्वतों की ऊंचाई
१ सब चुल्लहिमवन्त और शिखरी वर्षधर पर्वतों की ऊंचाई
१ सब कांचनग पर्वतों की ऊंचाई ऊंडाई और विष्कम्भ

योग ८

समवाय १५० सूत्र ३

१ भगवान् चन्द्रप्रभ की ऊंचाई
२ विमानावास

योग ३

समवाय २०० सूत्र ३

१ भगवान् सुपार्श्वनाथ की ऊंचाई
१ सर्व महा हिमवन्त और रुक्मी वर्षधर पर्वतों की ऊंचाई और ऊंडाई

१ जम्बूद्वीप के कंचनगिरि

योग ३

समवाय २५० सूत्र २

१ भगवान् पद्मप्रभ की ऊंचाई

१ असुर कुमारों के प्रासादों की ऊंचाई

योग २

समवाय ३०० सूत्र ५

१ भगवान् सुमतिनाथ की ऊंचाई

१ भगवान् अरिष्टनेमि का गृहवास काल

१ विमानों के प्राकारों की ऊंचाई

१ भगवान् महावीर की चौदह पूर्वी मुनियों की संपदा

१ सिद्धों की अवगाहना

योग ५

समवाय ३५० सूत्र २

१ भगवान् पार्श्वनाथ के चौदह पूर्वी मुनियों की सम्पदा

१ भगवान् अभिनन्दन की ऊंचाई

योग २

समवाय ४०० सूत्र ५

१ भगवान् संभवनाथ की ऊंचाई

१ सब निषध और नीलवंत वर्षधर पर्वतों की ऊंचाई और उंडाई

१ सब वक्षस्कार पर्वतों की ऊंचाई और ऊंडाई
१ विमानावास
१ भगवान् महावीर के वादी मुनियों की सम्पदा

योग ५

समवाय ४५० सूत्र २

१ भगवान् अजितनाथ की ऊंचाई
१ सगर चक्रवर्ती की

योग २

समवाय ५०० सूत्र ८

१ सीता सीतोदा के पास सब वक्षस्कार पर्वतों का तथा मेरु पर्वत के पास गजदन्तों की ऊंचाई और ऊंडाई
१ सब वर्षधर पर्वतों की ऊंचाई तथा सब वर्षधर पर्वतों के मूल का विष्कम्भ
१ भगवान् ऋषभदेव की ऊंचाई
१ भरत चक्रवर्ती की
१ मेरु पर्वत के समीप सोमनस गंधमादन विद्युत्प्रभ माल्यवन्त वक्षस्कार पर्वतों की ऊंचाई और ऊंडाई
१ हरि-हरिस्सहकूट पर्वतों को छोड़कर सब वक्षस्कार कूट पर्वतों की ऊंचाई और सब वक्षस्कार पर्वतों के मूल का विष्कम्भ
१ बलकूट पर्वत को छोड़कर सब नन्दन कूट पर्वतों की ऊंचाई और उन पर्वतों के मूल का आयाम

१ सौधम और ईशान कल्प के विमाना की ऊचाई

योग ८

समवाय ६०० सूत्र ६

१ सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्प के विमाना की ऊचाई
१ चुल्लहिमवत कूट के उपरि भाग व चरमान्त से चुल्लहिमवन पवत की उपत्यका का अन्तर
१ इसी प्रकार शिखरी कूट पवत के उपरी चरमान्त से शिखरी वषधर पवत की उपत्यका का अन्तर
१ भगवान् पाश्वनाथ की वादी मुनियो की सम्पदा
१ अभिचन्द्र कुलकर की ऊचाई
१ भगवान् वासुपूज्य के साथ दीक्षित होनेवाले

योग ६

समवाय ७०० सूत्र ६

१ ब्रह्म और लान्तक कल्प के विमाना की ऊचाई
१ भगवान् महावीर की केवली मुनियो की सम्पदा
१ भगवान् महावीर की वैक्रियलब्धि वाले मुनियो की सम्पदा
१ भगवान् नेमनाथ का केवली पर्याय
१ महाहिमवन कूटपवत के उपरि चरमान्त से महाहिमवत वषधर की उपत्यका का अन्तर
१ इसी प्रकार रुक्मीकूट पवत के उपरि चरमान्त से रुक्मी वषधर पवत की उपत्यका का अन्तर

योग ६

समवाय १००० सूत्र १०

१ सव ग्रवेयक विमानो की ऊचाई
१ सव यमक पवतो की ऊचाई ऊडाई और मूल का आयाम विष्कम्भ
१ इसी प्रकार सव चित्र विचित्र कूटपवतो की ऊचाई ऊडाई और आयाम विष्कम्भ
१ सव वृत्त वताढ्य पवतो की ऊचाई ऊडाई और मूल का विष्कम्भ
१ सव हरिकूट और हरिस्सहकूटो की ऊचाई तथा मूल का विष्कम्भ
१ इसी प्रकार नन्दनकूट पवत को छोडकर सव बलकूट पवतो की ऊचाई ऊडाई और उनके मूल का विष्कम्भ
१ भगवान् अरिष्टनेमीनाथ का सर्वायु
१ भगवान् पार्श्वनाथ की केवली मुनियो की सम्पदा
१ के सिद्ध होने वाले शिष्य
१ पद्मद्रह और पुण्डरीकद्रह का आयाम
योग १०

समवाय ११०० सूत्र २

१ अनुत्तर विमानो की ऊचाई
१ भ० पार्श्वनाथ की वैक्रियलब्धि सम्पन्न मुनियो की सम्पदा
योग २

समवाय २००० सूत्र १

१ महापद्म और महापुण्डरीक द्रहो का आयाम

समवाय ३००० सूत्र १

१ रत्नप्रभा के वज्रकाण्ड के उपरि भाग से लोहिताक्ष के अधोभाग का अन्तर

समवाय ४००० सूत्र १

१ तिगिच्छ और केसरीद्रह का आयाम

समवाय ५००० सूत्र १

१ मेरु के मध्य भाग से मेरु के अन्तिम भाग का अन्तर

समवाय ६००० सूत्र १

१ विमानावास

समवाय ७००० सूत्र १

१ रत्नकाण्ड के उपरि भाग से पुलक काण्ड का अन्तर

समवाय ८००० सूत्र १

१ हरिवर्ष और रम्यकवर्ष का विस्तार

समवाय ९००० सूत्र १

१ दक्षिणार्ध भरत की जीवा का आयाम

समवाय १०००० सूत्र १

१ मन्दरपर्वत के मूल का विष्कम्भ

समवाय १ लाख सूत्र १

१ जम्बूद्वीप का आयाम विष्कम्भ

समवाय २ लाख सूत्र १

१ लवण समुद्र का विष्कम्भ

समवाय ३ लाख सूत्र १

१ भगवान् पार्श्वनाथ की वार्ती मुनिया की सम्पदा

समवाय ४ लाख सूत्र १

१ धातकी खण्ड का विष्कम्भ

समवाय ५ लाख सूत्र १

१ लवण समुद्र के पूर्व भाग से पश्चिम भाग का अंतर

समवाय ६ लाख सूत्र १

१ भरत चक्रवर्ती का राज्यकाल

समवाय ७ लाख सूत्र १

१ जम्बूद्वीप के पूर्वी भाग से धातकी खण्ड के पश्चिमी भाग का अन्तर

समवाय ८ लाख सूत्र १

१ विमानावास सूत्र

समवाय ९ हजार सूत्र १

१ भगवान् अजितनाथ की अवधिज्ञानी मुनियों की सम्पदा

समवाय १० लाख सूत्र १

१ पुरुषसिंह वासुदेव का सर्वायु

समवाय १ करोड सूत्र १

१ भगवान् महावीरके पूर्वभव में पोटिलक भव का श्रामण्य पर्याय

समवाय १ करोडा करोड सूत्र १

१ भगवान् ऋषभदेव और भगवान् महावीर का अन्तर

सूत्र १३६ से १४८ तक द्वादशाङ्गी का परिचय।

सूत्र १४९ १५०

१ राशि

१ चौवीस दण्डकों में पर्याप्त और अपर्याप्त

१ चौवीस दण्डकों के आवास

सूत्र १५१

१ चौवीस दण्डकों की स्थिति

सूत्र १५२

१ चौवीस दण्डकों के शरीर और शरीरों की अवगाहना प्रमाण

सूत्र १५३

१ अवधी ज्ञान का वर्णन

१ चौवीस दण्डकों में वेदना

१ लेश्या

१ आहार

सूत्र १५४

१ चौबीस दण्डको म आयुष्यबन्ध
१ उपपात विरह
१ उद्वतन विरह
१ आयुष्य वे आकष

सूत्र १५५

१ चौबीस दण्डको म सघयण
१ सठाण

सूत्र १५६

१ चौबीस दण्डको म वेद

सूत्र १५७

१ समवसरण वणन
१ अतीत उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी क कुलकरो वे नाम
१ वतमान अवसर्पिणी व
१ वतमान अवसर्पिणी व कुलकरो की भार्याओ के नाम
१ वतमान अवसर्पिणी व तीथकरो के पिताओ वे नाम
१ की माताओ के नाम
१ के पूवभव वे नाम
१ की शिविकाओ व नाम
१ के दीक्षास्थल
१ का देवदुष्य
१ क साथ म दीक्षित होने-वाले

१ वर्तमान अवसर्पिणी के तीर्थकरों की दीक्षाकाल का तप
१ के प्रथम भिक्षा दाता
१ के प्रथम भिक्षा काल
१ के प्रथम भिक्षा में प्राप्त पदार्थ
१ के प्रथम भिक्षा के समय में हुई दिव्य वृष्टि
१ के चैत्य वृक्ष
१ के प्रथम शिष्य
१ की प्रथम शिष्या

सूत्र १५८

१ वर्तमान अवसर्पिणी के बारह चक्रवर्तियों के पिताओं के नाम
१ की माताओं के नाम
१ के नाम
१ के स्त्री रत्न
१ वर्तमान अवसर्पिणी के नव बलदेव और नव वासुदेव के पिताओं के नाम
१ वर्तमान अवसर्पिणी के नव बलदेव और नव वासुदेवों की माताओं के नाम
१ वर्तमान अवसर्पिणी के नव बलदेव और नव वासुदेव के नाम
१ वर्तमान अवसर्पिणी के नव बलदेव और नव वासुदेव के पूर्व भव के नाम
१ वर्तमान अवसर्पिणी के नव बलदेव और नव वासुदेव के पूर्वभव के धर्माचार्य

१ वतमान अवसर्पिणी के नव वासुदेवकी पूवभव की निदान भूमिया और निदान के कारण
१ वतमान अवसर्पिणी के नव बलदेव और नव वासुदेव तथा नव वासुदेव के प्रति शत्रुओ के नाम
१ वतमान अवसर्पिणी के नव बलदेव और नव वासुदेव की गति

सूत्र १५६

१ वतमान अवसर्पिणी म एरवत क्षेत्र के चौबीस तीथकरों के नाम
१ आगामी उत्सर्पिणी में जबूद्वीप म होने वाले कुलकरो के नाम
१ आगामी उत्सर्पिणी म एरवत क्षेत्र म होने वाले कुलकरो के नाम
१ आगामी उत्सर्पिणी म जबूद्वीप म होने वाले तीथकरो के नाम
१ आगामी उत्सर्पिणी म जबूद्वीप म होने वाले तीथकरो के पूवभव के नाम
१ आगामी उत्सर्पिणी में जबूद्वीप म होने वाले तीथकरो के पिता होगे
१ आगामी उत्सर्पिणी म जबूद्वीप म होने वाले तीथकरो की माताए होगी
१ आगामी उत्सर्पिणी म जबूद्वीप म होने वाले तीथकरो के प्रथम शिष्य होगे

१ आगामी उत्सर्पिणी में जम्बूद्वीप में होने वाले तीर्थंकरों की प्रथम निर्याण होगा

१ आगामी उत्सर्पिणी में जम्बूद्वीप में होने वाले तीर्थंकरों को प्रथम भिक्षा देने वाले होंगे

१ आगामी उत्सर्पिणी में इस जम्बूद्वीप में होने वाले बारह चक्रवर्तियों के नाम

१ आगामी उत्सर्पिणी में इस जम्बूद्वीप में होने वाले बारह चक्रवर्तियों के पिता

१ आगामी उत्सर्पिणी में इस जम्बूद्वीप में होने वाले बारह चक्रवर्तियों की माता

१ आगामी उत्सर्पिणी में इस जम्बूद्वीप में होने वाले बारह चक्रवर्तियों के स्त्री रत्न

१ आगामी उत्सर्पिणी में इस जम्बूद्वीप में होने वाले नव बलदेव वासुदेवों के पिता

१ आगामी उत्सर्पिणी में इस जम्बूद्वीप में होने वाले नव बलदेवों की माता

१ आगामी उत्सर्पिणी में इस जम्बूद्वीप में होने वाले नव वासुदेवों की माता

१ आगामी उत्सर्पिणी में इस जम्बूद्वीप में होने वाले नव बलदेव तथा नव वासुदेवों के नाम

१ आगामी उत्सर्पिणी में इस जम्बूद्वीप में होने वाले नव बलदेव और नव वासुदेवों के पूर्वभव के नाम

१ आगामी उत्सर्पिणी में इस जम्बूद्वीप में होने वाले बलदेव नव वासुदेवों के धर्माचार्य

१ आगामी उत्सर्पिणी म इस जम्बूद्वीप म होने वाले नव वासुदेवा की निदान भूमिया

१ आगामी उत्सर्पिणी म इस जम्बूद्वीप म होने वाले नव वासुदेवा के निदान कारण

१ आगामी उत्सर्पिणी म इस जम्बूद्वीप म होने वाले नव वासुदेवा के प्रतिशत्रु

१ आगामी उत्सर्पिणी म जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र म चौबीस तीर्थकर होगे

१ आगामी उत्सर्पिणी म जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र म बारह चक्रवर्ती होग

१ आगामी उत्सर्पिणी म जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र म बारह चक्रवर्तियो के पिता होगे

१ आगामी उत्सर्पिणी म जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र म बारह चक्रवर्तियो की माताए होगी

१ आगामी उत्सर्पिणी म जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र म बारह चक्रवर्तियो के स्त्रीरत्न होग

१ आगामी उत्सर्पिणी म जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र म नव बलदेव और वासुदेव के पिता होगे

१ आगामी उत्सर्पिणी म जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र म नव वासुदेवो की माताए होगी

१ आगामी उत्सर्पिणी म जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र म नव बलदेवो की माताए होगी

१ आगामी उत्सर्पिणी म जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र म नव वासुदेव होग नव प्रतिवासुदेव होगे

१ आगामी उत्सर्पिणी में जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र में नव बलदेव वासुदेवों के पूर्वभव के नाम

१ आगामी उत्सर्पिणी में जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र में नव बलदेव और वासुदेवों के धर्माचार्य द्वार

१ आगामी उत्सर्पिणी में जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र में नव वासुदेवों की निदान भूमियां

१ आगामी उत्सर्पिणी में जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र में नव वासुदेवों के निदान कारण

सूत्र १६०

१ इस अंग में वर्णित विषयों का सूचक सूत्र

*

नन्दीसूत्र में वर्णित समवायाग परिचय

से किं त समवाए ?

समवाए ण जीवा समासिज्जति अजीवा समासिज्जति, जीवा जीवा समासिज्जति,

ससमए समासिज्जइ, परसमए समासिज्जइ ससमय परसमए समासिज्जइ,

लोए समासिज्जइ, अलोए समासिज्जइ, लोयालोए समासिज्जइ।

समवाए ण एगाइयाण एगुत्तरियाण ठाण-सय विवड्ढियाणं भावाण परूवणा आघविज्जइ, दुवालस विहस्स य गणिपिडगस्स पल्लवग्गो समासिज्जइ।

समवाए ण परित्ता वायणा, सखिज्जा अणुओगदारा, सखिज्जा वेढा सखिज्जा सिलोगा, सखिज्जाओ निज्जुत्तिओ, सखिज्जाओ सगहणिओ सखिज्जाओ पडिवत्तिओ।

से ण अगट्ठयाए चउत्थे अगे एगे सुयक्खधे एगे अज्झयणे, एगे उद्देसणकाले एगे समुद्देसणकाले एगे चोयाले सय सहस्स पयग्गेण सखेज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा अणता थावरा सासय-कड निबद्ध निकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति पण्णविज्जति, परूविज्जति, दसिज्जति, निदसिज्जति उवदसिज्जति।

से एव आया, एव नाया, एवं विण्णाया, एव चरण-करण परूवणा आघविज्जइ। सेत्त समवाए।

समवायाग मे वर्णित समवायाग परिचय

से किं त समवाए ?

समवाए ण ससमया सूइज्जति, परसमया-सूइज्जति ससमय परसमया सूइज्जति जीवा सूइज्जति अजीवा सूइज्जति जीवा जीवा

सूइज्जंति, लोगा सूइज्जंति, अलोगा सूइज्जंति लोगालोगा सूइज्जंति।

समवाए णं एगाइयाणं एगट्ठाणं एगुत्तरिय परिवुड्ढीय दुवालसंगस्स य गणिपिडगस्स पल्लवग्गे समणुगाइज्जइ ठाणगसयस्स, बारसविहवित्थरस्स सुयणाणस्स जगजीवहियस्स भगवओ समासेणं समोयारे आहिज्जति।

तत्थ य णाणा विहप्पगारा जीवा जीवा य वण्णिया वित्थरेण

अवरे वि अ बहुविहा विसेसा नरग तिरिय-मणुअ-सुरगणाणं आहारुस्सास-लेसा-आवास-संख आययप्पमाण-उववाय चवण ओगाहणोहि-वेयण विहाण उवओग जोग-इंदिय-कसाय विविहा य जीवजोणी। विक्खंभुस्सेह-परिरयप्पमाणं विहिविसेसा य मंदरादीणं महीधराणं।

कुलगर तित्थगर-गणहराणं, सम्मत्त भरहाहिवाणं चक्कीण चेव चक्कहर हलहराण य वासाण य निगमा य समाए।

एए अण्णे य एवमाइ एत्थ वित्थरेण अत्था समाहिज्जंति।

समवायस्स णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा, संखिज्जाओ पडिवत्तिओ संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ संगहणीओ।

से णं अंगट्ठयाए चउत्थे अंगे एगे अज्झयणे एगे सुयक्खंधे, एगे उद्देसणकाले, एगे समुद्देसणकाले एगे चउयाले पद-सय-सहस्स पयग्गेणं पण्णत्ते। संखेज्जाणि अक्खराणि अणंता गमा अणंता पज्जवा, परित्ता तसा अणंता थावरा सासया, कडा णिबद्धा निकाइया, जिण-पण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति निवदंसिज्जंति।

से एवं आया एवं णाया एवं विण्णाया, एवं चरण-करण परूवणया आघविज्जति। सेत्तं समवाए।

समवाअंग-माहप्प

अट्ठवासपरियाए समणे निग्गंथे आयारकुसले, संजमकुसले, पवयणकुसले, पण्णत्तिकुसले, संगहकुसले, उवग्गहकुसले, अक्खयायारे, अभिन्नायारे, असबलायारे असंकिलिट्ठायारचित्ते बहुस्सुए बब्भागमे जहण्णेण "ठाण-समवाय धरे" कप्पइ आयरियत्ताए उवज्झायत्ताए गणावच्छेइयत्ताए उद्दिसित्तए। —व्यवहार सूत्र उद्दे० ३ सू० ६८।

इमे दुवालसगे गणि पिडगे पण्णत्त तजहा
आयारे १ सूयगडे २ ठाणे ३, समवाए ४, विवाहपन्नत्ति ५, नायाधम्मकहाओ ६, उवासग दसाओ ७, अतगड-दसाओ ८, अणुत्तरोववाइअ-दसाओ ६ पण्हावागरण १० विवागसुए ११, दिट्ठिवाए १२। तत्थण जे से चउत्थे अगे समवाएत्ति आहिते तस्स ण अयमट्ठ पण्णत्त, तजहा

सुय मे आउस तेण भगवया एवमक्खाय —

१ एगे आया। २ एगे अणाया।
३ एगे दडे। ४ एगे अदडे।
५ एगा किरिआ। ६ एगा अकिरिआ।
७ एगे लोए। ८ एगे अलोए।
६ एगे धम्मे। १० एगे अधम्मे।
११ एगे पुण्णे। १२ एगे पाव।
१३ एगे बधे। १४ एगे मोक्खे।
१५ एगे आसवे। १६ एगे सवरे।
१७ एगा वयणा। १८ एगा निज्जरा।

१६ जबुद्दीवे दीवे एग जोयण सय-सहस्स आयाम विक्खभेण पण्णत्त।
२० अप्पइट्ठाणे नरए एग जोयण सय-सहस्स आयाम विक्खभेण पण्णत्त।
२१ पालए जाणविमाणे एग जोयण-सय-सहस्स आयाम विक्ख भेण पण्णत्ते।
२२ सव्वट्ठसिद्ध महाविमाणे एग जोयण सय सहस्स आयाम विक्ख भेण पण्णत्त।
२३ अद्दानक्खत्त एगतारे पण्णत्त।

२४ चित्तानक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते ।

२५ सातिनक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते ।

२६ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ।

२७ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं एगं सागरोवमं ठिई पण्णत्ता ।

२८ दोच्चाए पुढवीए नेरइयाणं जहन्नेणं एगं सागरोवमं ठिई पण्णत्ता ।

२९ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ।

३० असुरकुमाराणं देवाणं उक्कोसेणं एगं साहियं सागरोवमं ठिई पण्णत्ता ।

३१ असुरकुमारिंदवज्जियाणं भोमिज्जाणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ।

३२ असंखिज्ज-वासाउय सन्नि-पंचिंदिय तिरिक्ख-जोणियाणं अत्थेगइयाणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ।

३३ असंखिज्ज-वासाउय-गब्भवक्कंतिय सन्नि मणुयाणं अत्थेगइयाणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ।

३४ वाणमंतराणं देवाणं उक्कोसेणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ।

३५ जोइसियाणं देवाणं उक्कोसेणं एगं पलिओवमं वास-सय-सहस्समब्भहियं ठिई पण्णत्ता ।

३६ सोहम्मे कप्पे देवाणं जहन्नेणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ।

३७ सोहम्मे कप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं एगं सागरोवमं ठिई पण्णत्ता ।

३८ ईसाणे कप्पे देवाण जहन्नेण साइरेग एग पलिओवम ठिई पण्णत्ता ।

३९ ईसाणेकप्प देवाण अत्थेगइयाण एग सागरोवम ठिई पण्णत्ता ।

४० जे देवा सागर सुसागर सागरकत भव मणु माणुसोत्तर लोग हिय विमाण देवत्ताए उववन्ना, तेसि ण देवाण उक्कोसेण एग सागरोवम ठिई पण्णत्ता ।

४१ ते ण देवा एगस्स अद्धमासस्स आणमति वा, पाणमति वा उस्ससति वा नीससति वा ।

४२ तेसि ण देवाण एगस्स वास सहस्सस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

४३ सतेगइया भवसिद्धिया जे जीवा ते एगेण भवग्गहणेण सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।

बीओ समवाओ

१ दो दडा पण्णत्ता तजहा–अट्ठादडे चेव अणट्ठादडे चेव ।

२ दुवे रासी पण्णत्ता, तजहा–जीवरासी चेव, अजीवरासी चेव ।

३ दुविहे बधणे पण्णत्ते तजहा–रागबधणे चेव दोसबधणे चेव ।

४ पुव्वाफग्गुणी नक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते ।

५ उत्तराफग्गुणी नक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते ।

६ पुव्वाभद्दवया नक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते ।

७ उत्तराभद्दवया नक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते ।

८ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण दो पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

९ दुच्चाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११ असुरकुमारिंदवज्जियाणं भोमिज्जाणं देवाणं उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१२ असंखिज्ज-वासाउय-सन्नि पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिआणं अत्थेगइयाणं दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१३ असंखिज्ज-वासाउय गब्भवक्कंतिय सन्नि पंचिंदिय मणुस्साणं अत्थेगइयाणं दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१४ सोहम्मे कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१५ ईसाणे कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१६ सोहम्मे कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१७ ईसाणे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं साहियाइं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१८ सणंकुमारे कप्पे देवाणं जहण्णेणं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१९ माहिंदे कप्पे देवाणं जहण्णेणं साहियाइं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

२० जे देवा सुभं सुभकंतं सुभवण्णं सुभगंधं सुभलेसं सुभफासं सोहम्मवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

२१ ते ण देवा दोण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा, पाणमंति वा, उस्ससंति वा नीससंति वा ।
२२ तेसि ण देवाणं दोहिं वास सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।
२३ अत्थेगइया भवसिद्धिया जीवा जे दोहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव-सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

तंतिओ समवाओ

१ तओ दंडा पण्णत्ता, तंजहा–मणदंडे वयदंडे कायदंडे ।
२ तओ गुत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा–मणगुत्ती, वयगुत्ती, कायगुत्ती ।
३ तओ सल्ला पण्णत्ता तंजहा–मायासल्ले ण नियाणसल्ले ण, मिच्छादंसणसल्ले ण ।
४ तओ गारवा पण्णत्ता तंजहा–इड्ढीगारवे ण रसगारवे ण सायागारवे ण ।
५ तओ विराहणा पण्णत्ता तंजहा–नाणविराहणा दंसणविराहणा, चरित्तविराहणा ।
६ मिगसिरनक्खत्त तितारे पण्णत्त ।
७ पुस्सनक्खत्त तितारे पण्णत्त ।
८ जट्ठानक्खत्त तितारे पण्णत्त ।
९ अभीइनक्खत्त तितारे पण्णत्त ।
१० सवणनक्खत्त तितारे पण्णत्त ।
११ अस्सिणिनक्खत्त तितारे पण्णत्त ।
१२ भरणीनक्खत्त तितारे पण्णत्ते ।

१३ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण तिण्णि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१४ दोच्चाए ण पुढवीए नेरइयाण उक्कोसेण तिण्णि सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१५ तच्चाए ण पुढवीए नेरइयाण जहण्णेण तिण्णि सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१६ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण तिण्णि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१७ असखिज्ज वासाउय-सन्नि-पचिंदिय तिरिक्ख जोणियाण उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१८ असखिज्ज-वासाउय-सन्नि-गब्भवक्कतिय-मणुस्साण उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१९ साहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण तिण्णि पलिओव माइ ठिई पण्णत्ता ।

२० सणकुमार-माहिन्देसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण तिण्णि सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

२१ जे देवा आभकर पभकर आभकर-पभकर चद चदावत्त चद प्पभ चदकत चदवण्ण चन्दलेस चदज्झय चदसिंग चदसिट्ठ चदकूड-चदुत्तरवडिसग विमाण देवत्ताए उववण्णा— तेसि ण देवाण उक्कोसेण तिण्णि सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

२२ ते ण देवा तिण्ह अद्धमासाण आणमति वा, पाणमति वा, उस्ससति वा नीससति वा ।

२३ तेसि ण देवाण तिहि वाससहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

२४ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे तिहि भवग्गहणेहि सिज्झि-स्सति-जाव-सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।

चउत्थो समवाओ

१ चत्तारि कसाया पण्णत्ता तजहा
कोहकसाए, माणकसाए मायाकसाए, लोभकसाए ।

२ चत्तारि झाणा पण्णत्ता, तजहा
अट्टज्झाणे, रुद्दज्झाणे धम्मज्झाणे सुक्कज्झाणे ।

३ चत्तारि विगहाओ पण्णत्ता तजहा
इत्थिकहा भत्तकहा रायकहा देसकहा ।

४ चत्तारि सण्णा पण्णत्ता तजहा
आहारसण्णा भयसण्णा मेहुणसण्णा परिग्गहसण्णा ।

५ चउव्विहे बधे पण्णत्ते, तजहा
पगइबधे ठिइबध अणुभावबधे पएसबधे ।

६ चउगाउए जोयणे पण्णत्त ।

७ अणुराहानक्खत्त चउतारे पण्णत्त ।

८ पुव्वासाढानक्खत्त चउतारे पण्णत्त ।

९ उत्तरासाढानक्खत्त चउतारे पण्णत्त ।

१० इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

११ तच्चाए ण पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण चत्तारि सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१२ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१३ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१४ सणकुमार माहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण चत्तारि

सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१५ जे देवा किट्ठि सुकिट्ठि किट्ठियावत्त किट्ठिप्पभ किट्ठिजुत्त किट्ठि वण्ण किट्ठिलेस किट्ठिज्झय किट्ठिसिग किट्ठिसिट्ठ किट्ठिकूड किट्ठुत्तरवडिसग विमाण देवत्ताए उववण्णा–
तेसि ण देवाण उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१६ ते ण देवा चउण्ह अद्धमासाण आणमति या पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।

१७ तेसि देवाण चउहि वास सहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१८ अत्थेगइया भवसिद्धिया जीवा जे चउहि भवग्गहणेहि सिज्झिस्सति-जाव सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।

पचमो समवाओ

१ पच किरिया पण्णत्ता तजहा-काइया अहिगरणिया पाउसिया, पारितावणिया पाणाइवायकिरिया ।

२ पच महव्वया पण्णत्ता तजहा-सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमण सव्वाओ मेहुणाओ वेरमण सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमण ।

३ पच कामगुणा पण्णत्ता तजहा सद्दा रुवा रसा गधा फासा।

४ पच आसवदारा पण्णत्ता तजहा मिच्छत्त अविरई, पमाया कसाया जोगा ।

५ पच सवरदारा पण्णत्ता तजहा सम्मत्त विरई, अप्पमत्तया अकसाया अजोगया ।

६ पच निज्जरट्ठाणा पण्णत्ता तजहा

सुरसिट्ठ सूरकूड सुरुत्तरवडिसग विमाण देवत्ताए उववण्णा-
तेसि ण देवाण उक्कोसेण पच सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

२० ते ण देवा पचण्ह अद्धमासाण आणमति वा, पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।

२१ तेसि ण देवाण पर्चाहि वाससहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

२२ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे पर्चाहि भवग्गहणेहि सिज्झि-स्सति जाव-सव्व दुक्खाणमतकरिस्सति ।

छट्ठो समवाओ

१ छ लेसाओ पण्णत्ताओ, तजहा कण्हलेसा नीललेसा काउ-लेसा तेउलेसा पम्हलेसा सुक्कलेसा ।

२ छ जीव-नीकाया पण्णत्ता तजहा पुढवीकाए, आऊकाए, तेउकाए वाउकाए वणस्सइकाए तसकाए ।

३ छव्विहे बाहिरे तवोकम्मे पण्णत्ते तजहा अणसण, ऊणा-यरिया वित्तीसखेवो रसपरिच्चाओ, कायकिलेसो सलीणया ।

४ छव्विहे अब्भितरे तवोकम्मे पण्णत्ते, तजहा पायच्छित्त विणओ वेयावच्च, सज्झाओ झाण उस्सग्गो ।

५ छ छाउमत्थिया समुग्घाया पण्णत्ता तजहा वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए, मारणातियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए तेयसमुग्घाए आहारसमुग्घाए ।

६ छव्विहे अत्थुग्गहे पण्णत्ते, तजहा
सोइदियअत्थुग्गहे चक्खुइदियअत्थुग्गहे घाणिदियअत्थुग्गहे
जिब्भिदियअत्थुग्गहे फासिदियअत्थुग्गहे

७ कत्तियानक्खत्ते छतारे पण्णत्ते।

८ असिलेसानक्खत्ते छतारे पण्णत्ते।

९ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१० तच्चाए णं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

११ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं छ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१२ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं छ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१३ सणंकुमार-माहिंदेसु अत्थेगइयाणं देवाणं छ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१४ जे देवा सयंभुं सयंभूरमणं घोसं सुघोसं महाघोसं किट्ठिघोसं वीरं सुवीरं वीरगतं वीरसेणियं वीरावत्तं वीरप्पभं वीरकंतं वीरवण्णं वीरलेसं वीरज्झयं वीरसिंगं वीरसिट्ठं वीरकूडं वीरुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा

१५ ते णं देवा छण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा, ऊससंति वा नीससंति वा।

१६ तेसि णं देवाणं छहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

१७ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे छहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

सत्तमो समवाओ

१ सत्त भयट्ठाणा पण्णत्ता तंजहा इहलोगभए परलोगभए आदाणभए अकम्हाए आजीवभए मरणभए, असिलोगभए ।

२ सत्त समुग्घाया पण्णत्ता तंजहा वेयणा-समुग्घाए कसाय-समुग्घाए मारणंतिय-समुग्घाए वेउव्विय-समुग्घाए, तेय-समुग्घाए, आहार समुग्घाए केवलि-समुग्घाए ।

३ समणे भगवं महावीरे सत्त रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेण होत्था ।

४ इहेव जंबुद्दीवे दीवे सत्त वासहरपव्वया पण्णत्ता तंजहा-चुल्लहिमवंत, महाहिमवंते निसढे नीलवंते रुप्पी सिहरी मंदरे।

५ इहेव जम्बुद्दीवे दीवे सत्त वासा पण्णत्ता, तंजहा-भरहे हेमवत हरिवास, महाविदेहे रम्मए, एरण्णवए, एरवए ।

६ खीणमोहेणं भगवया मोहणिज्जवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ वेएई ।

७ महानक्खत्ते सत्ततारे पण्णत्ते ।

८ कत्तिआइआ सत्त नक्खत्ता पुव्वदारिआ पण्णत्ता ।

९ महाइआ सत्त नक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता ।

१० अणुराहाइआ सत्त नक्खत्ता अवरदारिआ पण्णत्ता ।

११ धणिट्ठाइआ सत्त नक्खत्ता उत्तरदारिआ पण्णत्ता ।

१२ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्त पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१३ तच्चाए णं पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१४ चउत्थीए णं पुढवीए नेरइयाणं जहण्णेणं सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१५ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सत्त पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१६ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सत्त पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१७ सणकुमारे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१८ माहिंदे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं साइरेगाइं सत्त-सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१९ बम्भलोए कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं सत्त साहिय-सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

२० जे देवा सम समप्पभ महापभ पभास भासुर विमल कंचणकूड सणंकुमार वडिंसग विमाणं देवत्ताए उववण्णा-तसिं णं देवाणं उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

२१ ते णं देवा सत्तण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा नीससंति वा ।

२२ तेसि णं देवाणं सत्तहिं वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

२३ संतगइया भवसिद्धिया जीवा जे णं सत्तहिं भवग्गहणेहिं सिज्झस्संति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

अट्ठमो समवाओ

१ अट्ठ मयट्ठाणा पण्णत्ता तंजहा जातिमए कुलमए, बलमए रूवमए, तवमए सुयमए, लाभमए इस्सरियमए ।

२ अट्ठ पवयणमायाओ पण्णत्ताओ, तंजहा ईरियासमिई, भासासमिई,

एसणासमिई, आयाण भड मत्त निक्खेवणासमिई उच्चार पासवण खेल जल्ल सिंघाण पारिट्ठावणियासमिई, मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती ।

३ वाणमतराण देवाण चेइयरुक्खा अट्ठ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तण पण्णत्ता ।

४ जबू सुदसणा अट्ठ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तण पण्णत्ता ।

५ कूडसामली ण गरुलावासे अट्ठ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता।

६ जबुद्दीवस्स ण जगई अट्ठ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तण पण्णत्ता ।

७ अट्ठसामइए केवलिसमुग्घाए पण्णत्ता तजहा–पढमे समए दड करेई बीए समए कवाड करेइ तइए समए मथ करेइ चउत्थे समए मथतराइं पूरेइ पचमे समए मथतराई पडिसाहरइ, छट्ठे समए दड पडिसाहरइ, सत्तमे समए कवाड पडिसाहरइ अट्ठमे समए दडं पडिसाहरइ ततो पच्छा सरीरत्थे भवइ ।

८ पासस्स ण अरहओ पुरिसादाणिअस्स अट्ठ गणा अट्ठ गणहरा होत्था तजहा गाहा

सुभे य सुभघोसे य वसिट्ठे बमयारि य ।
सोमे सिरिधरे चेव, वीरभद्दे जसे इ य ॥१॥

९ अट्ठ नक्खत्ता चदेण सद्धिं पमद्द जोग जोएति तजहा कत्तिया १ रोहिणी २ पुणव्वसू ३, महा ४, चित्ता ५ विसाहा ५ अणुराहा ७, जेट्ठा ८ ।

१० इमीसे ण रयणप्पहाए पुत्वीए अत्थेगइयाण नेरयाण अट्ठ पलिओवमाइ ठिइ पण्णत्ता ।

११ चउत्थीए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण अट्ठ सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१२ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।
१३ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं अट्ठ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।
१४ बम्भलोए कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं अट्ठ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।
१५ जे देवा अच्चि अच्चिमालिं वइरोयणं पभंकरं चंदाभं सूराभं सुपइट्ठाभं अग्गिच्चाभं रिट्ठाभं अरुणाभं अरुणुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा–
तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं अट्ठ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।
१६ ते णं देवा अट्ठण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा नीससंति वा।
१७ तेसि णं देवाणं अट्ठहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जई।
१८ संते गइया भवसिद्धिया जीवा जे अट्ठहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति जाव-सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

नवमो समवाओ

१ नव बम्भचेरगुत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा–
   १ नो इत्थी-पसु-पण्डग-संसत्ताणि सिज्जासणाणि सेवित्ता भवइ।
   २ नो इत्थीणं कहं कहित्ता भवइ।
   ३ नो इत्थीणं गणाइं सेवित्ता भवइ।
   ४ नो इत्थीणं इंदियाणि मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता भवइ।

५ नो पणीयरसभोई ।
६ नो पाण भोयणस्स अइमायाए आहारइत्ता भवइ ।
७ नो इत्थीण पुव्वरयाइ पुव्वकीलिआइ समरइत्ता भवइ ।
८ नो सद्दाणुवाई नो रुवाणुवाई नो गधाणुवाई नो रसाणु वाई नो फासाणवाई नो सिलोगाणुवाई ।
९ नो सायासुक्ख-पडिवद्धे यावि भवइ ।

२ नव बभचर-अगुत्तीओ पण्णत्ताओ तजहा–
इत्थी-पसु-पडग-ससत्ताण सिज्जासणाण सेवणया जाव-साया सुक्ख पडिबद्ध यावि भवइ ।

३ नव बभचेरा पण्णत्ता तजहा–
सत्थपरिण्णा, लोगविजओ सीओसणिज्ज, सम्मत्त ।
आवति धुत विमोहा उवहाणसुय महपरिण्णा ।।

४ पासे ण अरहा पुरिसादाणीए नव रयणीओ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था।

५ अभीजि नक्खत्त साइरेगे नव मुहुत्त चदेण सद्धि जोग जोएइ।

६ अभीजि आइया नव नक्खत्ता चदस्स उत्तरेण जोग जोएति तजहा–अभीजि सवणो जाव भरणी ।

७ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ नव जोयणसए उड्ढ अवाहाए उवरिल्लेतारारूवे चार चरइ ।

८ जबूद्दीवे ण दीवे नवजोयणिआ मच्छा पविसिसु वा पविसति वा पविसिस्सति वा ।

९ विजयस्स ण दारस्स एगमेगाए बाहाए नव नव भोमा पण्णत्ता।

१० वाणमतराण देवाण सभाओ सुहम्माओ नव जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ।

११ दसणावरणिज्जस्स ण कम्मस्स नव उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ तजहा निद्दा पयला निद्दानिद्दा, पयला-पयला थीणद्धी

चक्खुदंसणावरणे अचक्खुदंसणावरणे ओहिदंसणावरणे, केवलदंसणावरणे।

१२ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं नव पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१३ चउत्थीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं नव सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१४ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं नव पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१५ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं नव पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१६ बंभलोए कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं नव सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१७ जे देवा पम्हं सुपम्हं पम्हावत्तं पम्हप्पभं पम्हकंतं पम्हवण्णं पम्हलेसं पम्हज्झयं पम्हसिंगं पम्हसिट्ठं पम्हकूडं पम्हुत्तरवडिंसगं सुज्जं सुसुज्जं सुज्जावत्तं सुज्जपभं सुज्जकंतं सुज्जवण्णं सुज्जलेसं सुज्जज्झयं सुज्जसिंगं सुज्जसिट्ठं सुज्जकूडं सुज्जुत्तरवडिंसगं रुइल्लं रुइल्लावत्तं रुइल्लप्पभं रुइल्लकंतं रुइल्लवण्णं रुइल्ललेसं रुइल्लज्झयं रुइल्लसिंगं रुइल्लसिट्ठं रुइल्लकूडं रुइल्लुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसिं णं देवाणं नव सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१८ ते णं देवा नवण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा, पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा।

१९ तेसिं णं देवाणं नवहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

२० संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे नवहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव-सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

दसमो समवाओ

१ दसविहे समणधम्मे पण्णत्ते, तंजहा
खंती १ मुत्ती २ अज्जवे ३ मद्दवे ४ लाघवे ५
सच्चे ६, संजमे ७ तवे ८ चियाए ९, बंभचेरवासे १०।

२ दस चित्तसमाहिट्ठाणा पण्णत्ता तंजहा
धम्मचिंता वा से असमुप्पण्णपुव्वा समुप्पज्जिज्जा सव्वं धम्मं जाणित्तए १।
सुमिणदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा अहातच्चं सुमिणं पासित्तए २।
सण्णिणाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा पुव्वभवे सुमरित्तए ३।
देवदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा दिव्वं देवड्ढिं दिव्वं देवजुई दिव्वं देवाणुभावं पासित्तए ४।
ओहिणाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा ओहिणा लोगं जाणित्तए ५।
ओहिदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा ओहिणा लोगं पासित्तए ६।
मणपज्जवनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा जाव मणोगए भावे जाणित्तए ७।
केवलनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा केवलं लोगं जाणित्तए ८।
केवलदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा केवलं लोगं पासित्तए ९।
केवलिमरणं वा मरिज्जा सव्वदुक्खप्पहीणाए १०।

३ मंदरे ण पव्वए मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेण पण्णत्ते।
४ अरिहा ण अरिट्ठनेमी दस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेण होत्था।
५ कण्हे ण वासुदेवे दस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेण होत्था।
६ रामे ण बलदेवे दस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेण होत्था।
७ दस नक्खत्ता नाणवुड्ढिकरा पण्णत्ता, तंजहा
मिगसिर अद्दा पुस्सो तिण्णि अ पुव्वा य मूलमस्सेसा।
हत्थो चित्तो य तहा दस वुड्ढिकराइं नाणस्स ॥१॥
८ अकम्मभूमियाण मणुआण दसविहा रुक्खा उवभोगत्ताए उवत्थिया पण्णत्ता, तंजहा
मत्तंगया य भिंगा तुडिअंगा दीव जोई चित्तंगा।
चित्तरसा मणिअंगा गेहागारा अनिगिणा य ॥१॥
९ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए नेरइयाण जहण्णेण दस वास-सहस्साइं ठिई पण्णत्ता।
१० इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरयाण दस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।
११ चउत्थीए पुढवीए दस निरयावास सय सहस्साइं पण्णत्ताइं।
१२ चउत्थीए पुढवीए उक्कोसेण दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।
१३ पंचमीए पुढवीए नेरइयाण जहण्णेण दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।
१४ असुरकुमाराण देवाण जहण्णेण दस वास-सहस्साइं ठिई पण्णत्ता।
१५ असुरिंदवज्जाण भोमिज्जाण देवाण जहण्णेण दस वास सहस्साइं ठिई पण्णत्ता।

वाराणिरए ४ दिया बमयारी रत्ति परिमाणकडे ५ दिया वि राओवि बमयारी असिणाई विअडमोई मालिकड ६ सचित्त परिण्णाए ७ आरंभपरिण्णाए ८ पेसपरिण्णाए ९, उद्दिट्ठ भत्तपरिण्णाए १० समणभूए ११ आवि भवई समणाउसो !

२ लोगताओ इक्कार सएहिं एक्कारेहिं जोयणसएहिं अबाहाए जोइसते पण्णत्ते ।

३ जबूद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स एक्कारसहिं एक्कवीसहिं जोयणसएहिं अबाहाए जोइसे चार चरइ ।

४ समणस्स ण भगवओ महावीरस्स एक्कारस गणहरा होत्था तजहा–
इदभूई अग्गिभूई वायभूई विअत्त सोहम्मे मडिए मोरिय पुत्त अकपिए अयलभाए मेअज्जे पभासे ।

५ मूले नक्खत्त एक्कारस तारे पण्णत्त ।

६ हिट्ठिम गेविज्जयाण देवाण एक्कारसयमुत्तर गेविज्जविमाणसत भवइत्तिमक्खाय ।

७ मदरे ण पव्वए धरणितलाओ सिहरतले एक्कारस भागपरि हीणे उच्चत्तण पण्णत्त ।

८ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण एक्का रस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

९ पचमीए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण एक्कारस सागरोव माइ ठिई पण्णत्ता ।

१० असुरकुमाण देवाण अत्थेगइयाण एक्कारस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

११ सोहम्मीसाणेसु कप्पसु अत्थेगइयाण देवाण एक्कारस पलिओ वमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१२ लंतए कप्पे अत्थेगइयाण देवाण एक्कारस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१३ जे देवा बभ सुबभ बभावत्त बभप्पभ बभकत बभवण्ण बभलेस बभज्झय बभसिग बभसिट्ठ बभकूड बभुत्तरवडिसग विमाण देवत्ताए उववण्णा—
तेसि ण देवाण उक्कोसेण एक्कारस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१४ ते ण देवा एक्कारसण्ह अद्धमासाण आणमति वा, पाणमति वा उस्ससति वा नीससति वा।

१५ तेसि ण देवाण एक्कारसहि वास-सहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

१६ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे एक्कारसेहि भवग्गहणेहि सिज्झिस्संति जाव-सव्वदुक्खाणमंत करिस्संति।

दुवालसमो समवाओ

१ बारस भिक्खुपडिमाओ पण्णत्ताओ तंजहा—
मासिआ भिक्खुपडिमा दोमासिआ भिक्खुपडिमा तिमासिआ भिक्खुपडिमा चउमासिआ भिक्खुपडिमा पंचमासिआ भिक्खुपडिमा छमासिआ भिक्खुपडिमा सत्तमासिआ भिक्खुपडिमा पढमा सत्तराइंदिआ भिक्खुपडिमा दोच्चा सत्तराइंदिआ भिक्खुपडिमा तच्चा सत्तराइंदिआ भिक्खुपडिमा अहोराइआ भिक्खुपडिमा एगराइया भिक्खुपडिमा।

२ दुवालसविहे संभोगे पण्णत्ते तंजहा—
उवही-सुअ भत्त-पाणे अंजलीपग्गहेत्ति य।
दायणे य निकाए अ अब्भुट्ठाणेत्ति आवरे ॥१

किइकम्मस्स य करणे, वेयावच्चकरणे इ अ ।
समोसरण सनिसिज्जा य, कहाए अ पबधणे ॥२॥

३ दुवालसावत्त कितिकम्मे पण्णत्ते, तजहा–
दुओणय जहाजाय कितिकम्म बारसावय ।
चउसिर तिगुत्त च दुपवेस एगनिक्खमण ॥१॥

४ विजया ण रायहाणी दुवालस जोयण सय सहस्साइ आयाम विक्खभेण पण्णत्ता ।

५ रामे ण बलदवे दुवालस वास-सयाइ सव्वाउय पालित्ता दवत्त गए ।

६ मदरस्स ण पव्वयस्स चूलिया मूले दुवालस जोयणाइ विक्ख भेण पण्णत्ता ।

७ जबदीवस्स ण दीवस्स वेइआ मूले दुवालस जोयणाइ विक्ख भेण पण्णत्ता ।

८ सव्वजहण्णिआ राई दुवालस-मुहुत्तिआ पण्णत्ता ।

९ एव दिवसोऽवि नायव्वो ।

१० सव्वट्ठसिद्धस्स ण महा विमाणस्स उवरिल्लाओ थूभिअग्गाओ दुवालस जोयणाइ उड्ढ उप्पइआ ईसिपब्भारा नाम पुढवीए पण्णत्ता ।

११ ईसिपब्भाराए ण पुढवीए दुवालस नामधेज्जा पण्णत्ता, तजहा ईसित्ति वा ईसिपब्भाराति वा, तणूइ वा तणूयतत्ति वा, सिद्धित्ति वा सिद्धालएत्ति वा मुत्तित्ति वा, मुत्तालएत्ति वा, बभेत्ति वा बभवडिंसएत्ति वा, लोकपरिपूरणे त्ति वा, लोगग्गचूलियाइ वा ।

१२ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइआण नेरइयाण बारस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

३ सोहम्मवडिसगे ण विमाणे ण अद्धतेरस जोयण सय-सहस्साइ आयाम विक्खभेण पण्णत्त ।

४ एव ईसाणवडिसगे वि ।

५ जलयर-पचिन्दिय तिरिक्ख जोणिआण अद्धतेरस जाइ कुल कोडी जोणी पमुह सय सहस्साइ पण्णत्ता ।

६ पाणाउस्स ण पुव्वस्स तेरस वत्थू पण्णत्ता ।

७ गब्भ-वक्कतिअ पचेंदिअ तिरिक्ख जोणिआण तेरसविहे पओगे पण्णत्त तजहा–

सच्च मणपओगे मोस मणपओगे सच्चामोस मणपओग असच्चामोस मणपओगे–

सच्च वइपओग मोस वइपओगे सच्चामोस वइपओगे असच्चामोस वइपओग–

ओरालिअ-सरीर कायपओगे ओरालिअ मीस सरीर-कायपओगे-वेउव्विअ सरीर कायपओगे वउव्विअ मीस सरीर कायपओगे कम्म सरीर-कायपओगे ।

८ सूरमडल जोयणेण तेरसेहि एगसट्ठिभागेहि जोयणस्स ऊण पण्णत्त ।

९ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण तेरस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१० पचमीए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण तेरस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

११ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण तेरस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१२ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण तेरस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१३ लतए कप्पे अत्थेगइयाण देवाण तेरस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।
१४ जे देवा वज्ज सुवज्ज वज्जावत्त वज्जप्पम वज्जकत वज्जवण्ण वज्जलेस वज्जज्झय वज्जसिंग वज्जसिट्ठ वज्जकूड वज्जुत्तर-वडिसग ।
वइर वइरावत्त वइरप्पभ वइरकत वइरवण्ण वइरलेस वइर ज्झय वइरसिंग वइरसिट्ठ वइरकूड वइरुत्तरवडिसग ।
लाग लोगावत्त लोगप्पभ लोगकत लोगवण्ण लोगलेस लोगज्झय लोगसिंग लोगसिट्ठ लोगकूड लोगुत्तरवडिसग विमाण देवत्ताए उववण्णा–
तेसि ण देवाण उक्कोसेण तेरस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।
१५ ते ण देवा तेरसहि अद्धमासेहि आणमति वा पाणमति वा, उस्ससति वा नीससति वा ।
१६ तेसि ण देवाण तेरसहि वाससहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।
१७ सतगइआ भवसिद्धिआ जीवा जे तेरसहि भवग्गहणेहि सिज्झिस्सति जाव-सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।

चउद्दसमो समवाओ

१ चउद्दस भूअग्गामा पण्णत्ता तजहा–
सुहुमा अपज्जत्तया, सुहुमा पज्जत्तया,
बादरा अपज्जत्तया बादरा पज्जत्तया,
बेइंदिआ अपज्जत्तया बेइंदिआ पज्जत्तया,
तेइंदिआ अपज्जत्तया तेइंदिआ पज्जत्तया
चउरिंदिआ अपज्जत्तया चउरिंदिआ पज्जत्तया
पंचिंदिआ असन्नि अपज्जत्तया पंचिंदिआ असन्नि

पचिंदिआ सन्नि अपज्जत्तया पचेंदिआ सन्नि पज्जत्तया ।

२ चउद्दस पुव्वा पण्णत्ता तंजहा—

गाहाओ —

उप्पायपुव्वमग्गणिय च तइयं च वीरीयं पुव्वं ।
अत्थीनत्थिपवायं, तत्तो नाणप्पवायं च ॥१॥
सच्चप्पवायपुव्वं तत्तो आयप्पवायपुव्वं च ।
कम्मप्पवायपुव्वं, पच्चक्खाणं भवे नवमं ॥२॥
विज्जाअणुप्पवायं अवझ पाणाउ बारसं पुव्वं ।
तत्तो किरियविसालं, पुव्वं तह बिंदुसारं च ॥३॥

३ अग्गेणीअस्स णं पुव्वस्स चउद्दस वत्थू पण्णत्ता ।

४ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स चउद्दस समणसाहस्सीओ उक्कोसिआ समणसंपया होत्था ।

५ कम्मविसोहिमग्गणं पडुच्च चउद्दस जीवट्ठाणा पण्णत्ता, तंजहा मिच्छदिट्ठी सासायणसम्मदिट्ठी सम्मामिच्छदिट्ठी अविरय सम्मद्दिट्ठी विरयाविरए, पमत्तसंजए अप्पमत्तसंजए निअट्टि बायरे अनिअट्टिबायरे सुहुमसंपराए उवसामए वा खवए वा, उवसंतमोहे खीणमोहे सजोगी केवली अजोगी केवली ।

६ भरहेरवयाओ णं जीवाओ चउद्दस चउद्दस जोयणसहस्साइं चत्तारि अ एगुत्तरे जोयणसए छच्च एगूणवीसे भागे जोयणस्स आयामेणं पण्णत्ता ।

७ एगमेगस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स चउद्दस रयणा पण्णत्ता तंजहा—

इत्थीरयणे सेणावइरयणे, गाहावइरयणे पुरोहियरयणे, वड्ढइरयणे आसरयणे, हत्थिरयणे ।

असिरयणे, दंडरयणे चक्करयणे, छत्तरयणे, चम्मरयणे

मणिरयणे कागिणीरयणे ।

८ जंबुद्दीवे णं दीवे चउद्दस महानईओ पुव्वावरेण लवणसमुद्द समप्पंति, तंजहा-
गंगा सिंधू रोहिआ रोहिअंसा हरी हरिकंता सीआ सीओदा नरकंता नारिकंता सुवण्णकूला रुप्पकूला रत्ता रत्तवई ।

९ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउद्दस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१० पंचमीए णं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउद्दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं चउद्दस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१२ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं चउद्दस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१३ लंतए कप्पे देवाणं उक्कोसेणं चउद्दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१४ महासुक्के कप्पे देवाणं जहण्णेणं चउद्दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१५ जे देवा सिरिकंतं सिरिमहिअं सिरिसोमनसं लंतयं काविट्ठं महिंदं महिंदकंतं महिंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा-
तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं चउद्दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१६ ते णं देवा चउद्दसहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा, पाणमंति वा उस्ससंति वा नीससंति वा ।

१७ तेसि णं देवाणं चउद्दसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१८ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे चउद्दसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

पन्नरसमो समवाओ

१ पन्नरस परमाहम्मिआ पण्णत्ता तंजहा—
अंबे अंबरिसी चेव सामे सबलेत्ति आवरे ।
रुद्दोवरुद्दकाले अ महाकालेत्ति आवरे ॥१॥
असिपत्ते धणु कुंभे वालुए वेअरणी ति अ ।
खरस्सरे महाघोसे एते पन्नरसाहिआ ॥२॥
२ णमी णं अरहा पन्नरस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।
३ धुवराहू णं बहुलपक्खस्स पाडिवयं पन्नरसभागं पन्नरसभागेणं चंदस्स लेसं आवरेत्ताणं चिट्ठति तंजहा—
पढमाए पढमं भागं बीआए दुभागं तइआए तिभागं, चउत्थीए चउभागं पंचमीए पंचभागं छट्ठीए छभागं, सत्तमाए सत्तभागं अट्ठमीए अट्ठभागं, नवमीए नवभागं, दसमीए दसभागं, एक्कारसीए एक्कारसभागं, बारसीए बारसभागं तेरसीए तेरसभागं चउद्दसीए चउद्दसभागं, पन्नरससु पन्नरसभागं ।
तं चेव सुक्कपक्खस्स य उवदंसेमाणे उवदंसेमाणे चिट्ठति तंजहा
पढमाए पढमं भागं-जाव पन्नरससु पन्नरसभागं ।
४ छ णक्खत्ता पन्नरस मुहुत्त-संजुत्ता पण्णत्ता तंजहा—
सतभिसय भरणि अद्दा असलेसा साई तहा जेट्ठा ।
एते छ णक्खत्ता पन्नरस मुहुत्त संजुत्ता ॥१॥
५ चेत्तासोएसु णं मासेसु पन्नरसमुहुत्तो दिवसो भवति
एवं चेत्तासोएसु मासेसु पन्नरसमुहुत्ता राई भवति ।
६ विज्जाणुप्पवायस्स णं पुव्वस्स पन्नरस वत्थू पण्णत्ता ।
७ मणूसाणं पन्नरसविहे पओगे पण्णत्ते तंजहा—

सच्च मण-पओगे मोस मण-पओगे सच्च-मोस-मण-पओगे असच्चा मोस मण पओगे—
सच्च वइ-पओगे, मोस-वइ पओगे सच्च मोसा-वइ-पओगे, असच्चा मोस-वइ-पओगे,
ओरालिअ-सरीर-काय-पओगे ओरालिअ मीस-सरीर काय पओगे, वेउव्विय-सरीर काय-पओगे वेउव्विय मीस-सरीर-काय पओगे आहारय-सरीर-काय पओगे आहारय मीस सरीर-काय-पओगे, कम्मय सरीर काय-पओगे।

८ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण पण्णरस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

९ पचमीए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण पण्णरस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१० असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण पण्णरस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

११ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण पण्णरस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१२ महासुक्के कप्पे अत्थेगइयाण देवाण पण्णरस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१३ जे देवा णद सुणद णदावत्त णदप्पभ णदकत णदवण्ण णदलेस णदज्झय णदसिग णदसिट्ठ णदकूड णदुत्तरवडिसग विमाण देवत्ताए उववण्णा—
तेसि ण देवाण उक्कोसेण पण्णरस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१४ ते ण देवा पण्णरसण्ह अद्धमासाण आणमति वा, पाणमति वा, उस्ससति वा, नीससति वा।

१५ तेसि ण देवाण पन्नरसहि वास सहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

१६ सतगइया भवसिद्धिया जीवा जे पन्नरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति-जाव सव्वदुक्खाणमतं करिस्सति ।

सोलसमो समवाओ

१ सोलस य गाहा सोलसगा पण्णत्ता तजहा–
समए, वेयालिए उवसग्गपरिण्णा इत्थीपरिण्णा निरयविभत्ती महावीरथुई कुसीलपरिभासिए वीरिए धम्मे समाही, मग्गे समोसरणे आहत्तहिए गथे जमईए गाहासोलसमे सोलसगे ।

२ सोलस कसाया पण्णत्ता तजहा–
अणताणुबधी कोहे अणताणुबधी माणे
अणताणुबधी माया अणताणुबधी लोभे
अपच्चक्खाणकसाए कोहे, अपच्चक्खाणकसाए माणे,
अपच्चक्खाणकसाए माया अपच्चक्खाणकसाए लोभे,
पच्चक्खाणावरणे कोहे पच्चक्खाणावरणे माणे
पच्चक्खाणावरणा माया पच्चक्खाणावरणे लोभे
सजलणे कोहे सजलणे माणे सजलणे माया सजलण लोभे ।

३ मदरस्स ण पव्वयस्स सोलस नामधेया पण्णत्ता तजहा–
मदर मेरु मणोरम सुदसण सयपभे य गिरिराया ।
रयणुच्चय पियदसण मज्झे लोगस्स नाभी य ॥१॥
अत्थे अ सूरिआवत्ते, सूरिआवरणत्ति अ ।
उत्तरे अ दिसाई अ वडिसे इ अ सोलसमे ॥२॥

४ पासस्स ण अरहतो पुरिसादाणीयस्स सोलस समणसाहस्सीओ उक्कोसिआ समण-सपदा होत्था ।

सत्तरसमो समवाओ

१ सत्तरसविहे असजमे पण्णत्ते तजहा–
पुढवीकाय असंजमे आउकाय असजमे तेउकाय असजमे
वाउकाय असजमे वणस्सइकाय असजमे ।
बेन्दिय असजमे तेइंदिय असजमे चउरिंदिय असजमे
पंचिंदिय असजमे ।
अजीवकाय असजमे पेहा असजमे उवेहा असजमे
अवहट्टु असजमे अप्पमज्जणा असजमे ।
मण असजमे वइ असजमे काय असंजमे ।

२ सत्तरसविहे सजमे पण्णत्ते तजहा–
पुढवीकायसजमे आउकायसजमे तेउकायसजमे वाउकायसजमे
वणस्सइकायसजमे ।
बेइदिअसजमे तेइदिअसजमे चउरिदिअसजमे पचिदिअसजमे
अजीवकायसजमे पेहासजमे उवेहासजमे अवहट्टुसजमे
पमज्जणासजमे ।
मणसजमे वइसजमे कायसजमे ।

३ माणुसुत्तर ण पव्वए सत्तरस एक्कवीसे जोयणसए उड्ढ
उच्चत्तेण पण्णत्ते ।

४ सव्वेसिं पि ण वेलधर अणुवेलधर णागराईण आवासपव्वया
सत्तरस एक्कवीसा२ जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ।

५ लवणे ण समुद्दे सत्तरस जोयणसहस्साइ सव्वग्गेण पण्णत्ते ।

६ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमि
भागाओ सातिरेगाइ सत्तरस जोयणसहस्साइ उड्ढ उप्पतित्ता
ततो पच्छा चारणाण तिरिआ गती पवत्तति ।

७ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुररण्णो तिगिंछिकूडे उप्पायपव्वए सत्तरस एक्कवीसाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते।

८ बलिस्स णं असुरिंदस्स रुयगिंदे उप्पायपव्वए सत्तरस एक्कवीसाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते।

९ सत्तरसविहे मरणे पण्णत्ते तंजहा–
आवीई मरणे ओहि मरणे आयंतिय मरणे वलाय-मरणे
वसट्ट-मरणे अंतोसल्ल मरणे तब्भव-मरणे बाल मरणे
पंडित-मरणे बाल-पंडित मरणे छउमत्थ मरणे केवलि मरणे
वेहाणस मरणे गिद्धपिट्ठ-मरणे भत्त पच्चक्खाण-मरणे
इंगिणि-मरणे पाओवगमण-मरणे।

१० सुहुमसंपराए णं भगवं सुहुमसंपरायभावे वट्टमाणे सत्तरस कम्मपगडीओ णिबंधति तंजहा–
आभिणिबोहियणाणावरणे सुयणाणावरणे ओहिणाणावरणे
मणपज्जवणाणावरणे केवलणाणावरणे।
चक्खुदंसणावरणे अचक्खुदंसणावरणे ओहिदंसणावरणे
केवलदंसणावरणे।
सायावेयणिज्जं जसोकित्तिनामं उच्चागोयं दाणंतरायं
लाभंतरायं भोगंतरायं उवभोगंतरायं वीरिअंतरायं।

११ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्तरस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१२ पंचमीए पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१३ छट्ठीए पुढवीए नेरइयाणं जहण्णेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१४ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सत्तरस पलिओवमाइं ठिई

पण्णत्ता ।

१५ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण सत्तरस पलिओव माइ ठिई पण्णत्ता ।

१६ महासुक्क कप्पे देवाण उक्कोसेण सत्तरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१७ सहस्सारे कप्पे देवाण जहण्णेण सत्तरस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१८ जे देवा सामाण सुसामाण महासामाण पउम महापउम कुमुद महाकुमुद नलिण महानलिण पोंडरीअ महापोंडरीअ सुक्क महासुक्क सीह सीहकत सीहवीअ भाविअ विमाण देवत्ताए उववण्णा–

तेसि ण देवाण उक्कोसेण सत्तरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१९ ते ण देवा सत्तरसहिं अद्धमासेहिं आणमति वा, पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।

२० तेसि ण देवाण सत्तरसहिं वास सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

२१ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे सत्तरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति जाव सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।

अट्ठारसमो समवाओ

१ अट्ठारसविहे बभे पण्णत्ते तजहा–
ओरालिए काममोगे णेव सय मणेण सेवइ ।

णोवि अण्णं मणेणं सेवावेइ ।
मणेणं सेवंतं पि अण्णं न समणुजाणाइ ।
ओरालिए कामभोगे णेव सयं वायाए सेवइ ।
णोवि अण्णं वायाए सेवावेइ ।
वायाए सेवंतं पि अण्णं न समणुजाणाइ ।
ओरालिए कामभोगे णेव सयं काएणं सेवइ ।
णोवि य अण्णं काएणं सेवावेइ ।
काएणं सेवंतं पि अण्णं न समणुजाणाइ ।
दिव्वे कामभोगे णेव सयं मणेणं सेवइ ।
णोवि अण्णं मणेणं सेवावेइ ।
मणेणं सेवंतं पि अण्णं न समणुजाणाइ ।
दिव्वे कामभोगे णेव सयं वायाए सेवइ ।
णोवि अण्णं वायाए सेवावेइ ।
वायाए सेवंतं पि अण्णं न समणुजाणाइ ।
दिव्वे कामभोगे णेव सयं काएणं सेवइ ।
णोवि अण्णं काएणं सेवावेइ ।
काएणं सेवंतं पि अण्णं न समणुजाणाइ ।

२ अरहतो णं अरिट्ठनेमिस्स अट्ठारस समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपया होत्था ।

३ समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं निग्गंथाणं सखुड्डयवियत्ताणं अट्ठारस ठाणा पण्णत्ता तंजहा—
वयछक्कं ६ कायछक्कं १२, अकप्पो १३ गिहिभायणं १४ ।
पलियंक १५ निसिज्जा १६ य सिणाणं १७ सोभवज्जणं १८ ॥

४ आयारस्स णं भगवओ

५ बंभीए णं लिवीए अट्ठारसविहे लेखविहाणे पण्णत्ता तंजहा–
बंभी जवणी लिवी दोसाऊरिआ, खरोट्ठिआ, खरसाविआ
पहाराइया उच्चत्तरिआ, अक्खरपुट्ठिया भोगवयता वेणतिया
णिण्हइया।
अंकलिवी गणिअलिवी गंधव्वलिवी [भूयलिवी] आदंसलिवी
माहेसरीलिवी दामिलिवी बोलिंदिलिवी।

६ अत्थिनत्थिप्पवायस्स णं पुव्वस्स अट्ठारस वत्थू पण्णत्ता।

७ धूमप्पहाए णं पुढवीए अट्ठारसुत्तरं जोयणसयसहस्सं बाहल्लेणं
पण्णत्ते।

८ पोसाऽसाढेसु णं मासेसु सइ उक्कोसेणं अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे
भवइ सइ उक्कोसेणं अट्ठारस मुहुत्ता राई भवइ।

९ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं
अट्ठारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१० छट्ठिए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठारस सागरोवमाइं
ठिई पण्णत्ता।

११ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठारस पलिओवमाइं
ठिई पण्णत्ता।

१२ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं अट्ठारस पलिओव
माइं ठिई पण्णत्ता।

१३ सहस्सारे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई
पण्णत्ता।

१४ आणए कप्पे देवाणं जहण्णेणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई
पण्णत्ता।

१५ जे देवा कालं सुकालं महाकालं अंजणं रिट्ठं सालं समाणं दुमं
महादुमं विसालं सुसालं पउमं पउमगुम्मं कुमुदं कुमुदगुम्मं

नलिण नलिणगुम्म पुंडरीअ पुंडरीयगुम्म सहस्सारवडिंसग विमाण देवत्ताए उववण्णा

तेसि ण देवाण अट्ठारस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१६ ते ण देवा ण अट्ठारसेहिं अद्धमासेण आणमति वा पाणमति वा ऊसमति वा नीससति वा ।

१७ तेसि ण देवाण अट्ठारस-वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१८ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे अट्ठारसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति जाव-सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।

एगूणवीसइमो समवाओ

१ एगूणवीस णायज्झयणा पण्णत्ता तजहा
उक्खित्तणाए सघाडे अडे कुम्मे अ सेलए ।
तुबे य रोहिणी मल्ली मायदी चन्दिमाति अ ॥१॥
दावद्दवे उदगणाए मडुक्के तेतली इअ ।
नदिफले अवरकका आइण्णे सुसमा इअ ॥२॥
अवरे अ पोडरीए णाए एगूणवीसमे ।

२ जबूद्दीवे ण दीवे सूरिआ उक्कोसेण एगूणवीस जोयणसयाइ उड्ढमहो तवयति ।

३ सुक्केण महग्गहे अवरेण उदिए समाणे एगूणवीस णक्खताइ सम चार चरित्ता अवरेण अत्थमण उवागच्छइ ।

४ जबूद्दीवस्स ण दीवस्स कलाओ एगूणवीस छेअणाओ पण्णत्ता।

५ एगूणवीस तित्थयरा अगारवासमज्झे वसित्ता मुडे भवित्ता ण अगाराओ अणगारिअ पव्वइआ ।

६ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण एग

वीस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

७ छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणवीस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

८ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणवीस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

९ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एगूणवीस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१० आणयकप्पे देवाणं उक्कोसेणं एगूणवीस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११ पाणए कप्पे देवाणं जहण्णेणं एगूणवीस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१२ जे देवा आणतं पाणतं णतं विणतं घणं सुसिरं इंदं इंदोकंतं इंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा
तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एगूणवीस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१३ ते णं देवा एगूणवीसेहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा नीससंति वा ।

१४ तेसि णं देवाणं एगूणवीसेहिं वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१५ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे एगूणवीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

वीसइमो समवाओ

१ वीसं असमाहिठाणा पण्णत्ता तंजहा

दवदवचारि यावि भवइ, अपमज्जियचारि यावि भवई, दुप्प मज्जियचारि यावि भवई अतिरित्तसिज्जासणिए रातिणि अपरिभासी, थेरोवघाइए भूओवघाइए, संजलणे, कोहणे पिट्ठिमसिए अभिक्खण अभिक्खण ओहारइत्ता भवई णवाण अधिकरणाण अणुप्पण्णाण उप्पाएत्ता भवइ पोराणाण अधिकराण खामिअ विउसविआण पुणोदिरेत्ता भवइ
ससरक्ख पाणि-पाए अकाल-सज्झायकारए यावि भवइ कलहकरे सद्दकरे झझकरे सूरप्पमाणभोई, एसणा समिते यावि भवइ ।

२ मुणिसुव्वए ण अरहा वीस धणूइ उड्ढ उच्चत्तण होत्था ।
३ सव्वेवि अ ण धणोदही वीस जोयण सहस्साइ बाहल्लेण । पण्णत्ता ।
४ पाणयस्स ण देविंदस्स देवरण्णो वीस सामाणिअ साहस्सीओ पण्णत्ताओ ।
५ णपुसय-वेयणिज्जस्स ण कम्मस्स वीस सागरोवम कोडा कोडीओ बधओ बधठिई पण्णत्ता ।
६ पच्चक्खाणस्स ण पुव्वस्स वीस वत्थू पण्णत्ता ।
७ उस्सप्पिणि ओसप्पिणिमडले वीस सागरोवमकोडाकोडीओ कालो पण्णत्तो ।
८ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण वीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।
९ छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण वीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।
१० असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाणं वीस पलिओवमाइ ठिई

पण्णत्ता ।

११ सोहम्मीसाणेसु कप्पसु अत्येगइयाण देवाण वीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१२ पाणते कप्पे देवाण उक्कोसेण वीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१३ आरणे कप्पे देवाण जहण्णेण वीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१४ जे देवा साय विसाय सुविसाय सिद्धत्थ उप्पल भित्तिस तिगिंछ दिसासोवत्थिय पलंब रुइल ।
पुप्फ सुपुप्फ पुप्फावत्त पुप्फपभ पुप्फकत पुप्फवण्ण पुप्फलेस पुप्फज्झय पुप्फसिंग पुप्फसिद्ध पुप्फुत्तरवडिसग विमाण देवत्ताए उववण्णा--
तेसि ण देवाण उक्कोसेण वीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१५ ते ण देवा वीसेहिं अद्धमासेहि आणमति वा पाणमति वा, उस्ससति वा नीससति वा ।

१६ तेसि ण देवाण वीसाहिं वास सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१७ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे वीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति-जाव सव्व दुक्खाणमत करिस्सति ।

एकवीसइमो समवाओ

१ एक्कवीस सबला पण्णत्ता तजहा
हत्थकम्म करेमाणे सबले
मेहुण पडिसेवमाणे सबले

राइभोअण भुजमाणे सवल
आहाकम्म भुजमाणे सवल
सागारिय पिंड भुजमाणे सबले
उद्दसिय कीयं आहट्टु िज्जमाण भुजमाणे सबले,
अभिक्खण अभिक्खण पडियाइक्खेत्ता ण भुजमाणे सवले,
अतो छण्ह मासाण गणाओ गण सकममाणे सबले
अतो मासस्स तओ दग-व करेमाण सबले,
अतो मासस्स तओ माईठाणे सेवमाणे सबले,
रायपिंड भुजमाणे सवल
आउट्टिआए पाणाइवाय करेमाणे सवले
आउट्टिआए मुसावाय वदमाणे सवल
आउट्टिआए अदिण्णादाण गिण्हमाणे सबले,
आउट्टिआए अन्तरहिआए पुढवीए ठाण वा निसीहिय वा चेतेमाणे सबले,
एव आउट्टिआ चित्तमत्ताए पुढवीए
एव आउट्टिआ चित्तमत्ताए सिलाए
कोलावासंसि वा दारुए ठाण वा सिज्ज वा निसीहिय वा चेतेमाणे सबले,
जीवपइट्ठिए सपाणे सबीए सहरिए सउत्तिगे पणग-दग मट्टी मक्कडा-सताणए तहप्पगारे ठाण वा, सिज्ज वा निसीहिय वा चेतेमाणे सबले ।
आउट्टिआए मूलभोयण वा कदभोयण वा तयाभोयण वा पवालभोयण वा पुप्फभोयण वा, फलभोयण वा हरियभोयण वा भुजमाणे सबल,
अतो सवच्छरस्स दस दगलेव करमाणे सबले

अन्तो संवच्छरस्स दस माइट्ठाणाइ सेवमाणे सबले,
अभिक्खणं अभिक्खणं सीतोदयं वियड-वग्घारियपाणिणा
असणं वा, पाणं वा खाइमं वा, साइमं वा, पडिगाहित्ता
भुंजमाणे सबले ।

२ णिअट्टिबादरस्स णं खवितसत्तयस्स मोहणीज्जस्स कम्मस्स
एक्कवीसं कम्मसा संतकम्मा पण्णत्ता तंजहा
अपच्चक्खाणकसाए कोहे, अपच्चक्खाणकसाए माणे,
अपच्चक्खाणकसाए माया अपच्चक्खाणकसाए लोभे,
पच्चक्खाणावरणकसाए कोहे, पच्चक्खाणावरणकसाए माणे,
पच्चक्खाणावरणकसाए माया पच्चक्खाणावरणकसाए लोभे,
संजलणकसाए कोहे संजलणकसाए माणे,
संजलणकसाए माया संजलणकसाए लोभे ।
इत्थिवेदे पुंवेदे णपुंवेदे हासे अरति रति भय सोग दुगुंछा ।

३ एक्कमेक्काए णं ओसप्पिणीए पंचम-छट्ठाओ समाओ एक्कवीसं
एक्कवीसं वास-सहस्साइं कालेणं पण्णत्ताओ तंजहा
दूसमा दूसमदूसमा य ।

४ एगमेगाए णं उस्सप्पिणीए पढम बितिआओ समाओ एक्कवीसं
एक्कवीसं वास सहस्साइं कालेणं पण्णत्ताओ, तंजहा
दूसमदूसमा दूसमा य ।

५ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्क
वीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

६ छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगवीसं सागरोवमाइं
ठिई पण्णत्ता,

७ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगवीसं पलिओवमाइं
ठिई पण्णत्ता ।

८ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण एक्कवीस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

९ आरणे कप्पे देवाण उक्कोसेण एक्कवीस-सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१० अच्चुते कप्पे देवाण जहण्णेण एक्कवीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

११ जे देवा सिरिवच्छ सिरिदामगड मल्ल किट्ठ चावोण्णत अरण्णवडिसग विमाण देवत्ताए उववण्णा--
तेसि ण देवाण उक्कोसेण एक्कवीसं सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१२ ते ण देवा एक्कवीसेहिं अद्धमासेहिं आणमति वा पाणमति वा, ऊससति वा नीससति वा ।

१३ तेसि ण देवाण एक्कवीसेहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१४ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे एक्कवीसेहिं भवग्गहणेण सिज्झस्सति जाव सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।

बावीसइमो समवाओ

१ बावीस परीसहा पण्णत्ता तजहा
दिगिछा-परीसहे पिवासा-परीसहे सीत परीसहे उसिण-परीसहे दसमसग परीसहे अचेल-परीसहे अरइ परीसहे इत्थी-परीसहे चरिआ परीसहे निसीहिया-परीसहे सिज्जा-परीसहे अक्कोस-परीसहे वह परीसहे जायणा-परीसहे अलाभ-परीसहे रोग-परीसहे तणफास परीसहे जल्ल-परीसहे सक्कारपुरक्कार-

परीसह पण्णा परीसहे अण्णाण परीसहे दसण-परीसहे ।

२ दिट्ठिवायस्स ण –
बावीस सुत्ताइं छिन्नछेय णन्याइ ससमय सुत्तपरिवाडीए
३ बावीस सुत्ताइ अछिन्नछेय णन्याइ आजीविय-सुत्तपरिवाडीए
४ बावीस सुत्ताइ तिर णइयाइं तेरासिअ सुत्तपरिवाडीए
५ बावीस सुत्ताइ चउक्क णइयाइ ससमय सुत्तपरिवाडीए ।

६ बावीसविहे पोग्गलपरिणामे पण्णत्त तजहा
काल-वण्ण परिणामे नील वण्ण परिणामे लोहिय-वण्ण परिणामे
हालिद्दवण्ण-परिणामे सुक्किल्ल वण्ण-परिणामे
सुब्भि गध परिणामे दुब्भिगध-परिणामे
तित्त रस-परिणाम कडुय रस परिणामे कसाय रस परिणामे
अबिल रस परिणामे महुर रस परिणामे
कक्खड फास-परिणाम मउय फास परिणामे गुरु फास-परिणामे
लहु फास परिणाम सीत फास परिणामे उसिण फास परिणामे
णिद्ध फास परिणामे लुक्ख फास परिणामे अगुरुलहु फास
परिणामे गुरुलहु फास परिणामे ।

७ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरयाण बावीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

८ छट्ठीए पुढवीए नेरइआण उक्कोसेण बावीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

९ अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइयाण जहण्णेण बावीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१० असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण बावीसं पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

११ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण बावीसं पलिओव

११ हेट्ठिम उवरिम-गेवेज्जगाणं देवाणं जहण्णेणं चउवीसं सागरोव माइं ठिई पण्णत्ता ।

१२ जे देवा हेट्ठिम मज्झिम-गेवेज्जय विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१३ ते णं देवा चउवीसेहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा ।

१४ तेसि णं देवाणं चउवीसेहिं वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१५ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे चउवीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति-जाव सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

पणवीसइमो समवाओ

१ पुरिम पच्छिमगाणं तित्थगराणं पंच जामस्स पणवीसं भावणाओ पण्णत्ता तंजहा–

ईरियासमिई मणगुत्ती वयगुत्ती, आलोय भायण भोयणं, आदाण भंड मत्त निक्खेवणा समिई ।५

अणुवीतिभासणया कोहविवेगे, लोभविवेगे, भयविवेगे हास विवेगे ।५

उग्गह अणुण्णवणया, उग्गहसीम जाणणया सयमेव उग्गहं अणु गिण्हणया साहम्मिय उग्गहं अणुण्णविय परिभुंजणया, साहार णभत्तपाणं अणुण्णविय पडिभुंजणया ।५

इत्थी-पसु-पंडग-संसत्तग-सयणासण वज्जणया, इत्थीकहविव

ज्जणया इत्थीण इंदियाणमालोयणवज्जणया, पुव्वरय-पुव्व कीलिआण अणणुसरणया पणीताहारविवज्जणया ।५

सोइन्दिय रागोवरई चक्खिदिय रागोवरई घाणिंदिय रागोवरई, जिब्भिदिय रागोवरई फासिंदिय रागोवरई ।५

२ मल्ली ण अरहा पणवीस धणुइ उड्ढ उच्चत्तण होत्था ।

३ सव्व वि दीह-वेयड्ढ-पव्वया पणवीस जोयणाणि उड्ढ उच्चत्तण पण्णत्ता ।

पणवीस पणवीस गाऊआणि उब्विद्धेण पण्णत्ता ।

४ दोच्चाए ण पुढवीए पणवीस णिरयावास-सय-सहस्सा पण्णत्ता ।

५ आयारस्स ण भगवओ सचूलियायस्स पणवीस अज्झयणा पण्णत्ता तजहा–

सत्थपरिण्णा लोगविजओ सीओसणीअ सम्मत्त ।
आवति धुयविमोह उवहाणसुय महापरिण्णा ॥१॥
पिडेसण सिज्ज रिआ भासज्झयणा य वत्थ पाएसा ।
उग्गहपडिमा सत्तिक्कसत्तया भावण विमुत्ती ॥२॥
निसीहज्झयण पणवीसइम ।

६ मिच्छादिट्ठिविगलिदिए ण अपज्जत्तए ण सकिलिट्ठपरिणामे णामस्स कम्मस्स पणवीस उत्तरपयडीओ णिबधति–

तिरियगतिनाम विगलिदियजातिनाम ओरालिअसरीरनाम तअगसरीरणाम कम्मणसरीरनाम हुडसठाणनाम ओरालिअ सरीरगोवगनाम छेवट्ठसघयणनाम वण्णनाम गधनाम रस नाम फासनाम तिरिआणुपुव्विनाम अगुरुलहुनाम उवघाय नाम तसनाम बादरनाम अपज्जत्तयणाम पत्तेयसरीरणाम अथिरणाम असुभणाम दुभगनाम अणाएज्जनाम अजसोकित्ति

णामं निम्माणनामं २५ ।

७ गंगासिंधूओ णं महाणईओ पणवीसं गाउयाणि पहुत्तेणं दुहओ घडमुह-पवित्तिएणं मुत्तावलिहार-संठिएणं पवातेणं पडंति ।

८ रत्तारत्तवईओ णं महाणईओ पणवीसं गाऊयाणि पुहुत्तेणं मकरमुह-पवित्तिएणं मुत्तावलिहार-संठिएणं पवातेणं पडंति ।

९ लोगबिंदुसारस्स णं पुव्वस्स पणवीसं वत्थू पण्णत्ता ।

१० इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पणवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११ अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१२ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं पणवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१३ सोहम्मीसाणे णं देवाणं अत्थेगइयाणं पणवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१४ मज्झिम हेट्ठिम गेवेज्जाणं देवाणं जहण्णेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१५ जे देवा हेट्ठिम उवरिम गेवेज्जय विमाणेसु उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१६ ते णं देवा पणवीसेहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा, ऊससंति वा नीससंति वा ।

१७ तेसि णं देवाणं पणवीसा-वास सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१८ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे पणवीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

छव्वीसइमो समवाओ

१ छव्वीस दसा-कप्प ववहाराण उद्देसणकाला पण्णत्ता, तजहा–
दस दसाण छ कप्पस्स दस ववहारस्स ।

२ अभवसिद्धियाण जीवाण मोहणिज्जस्स कम्मस्स छव्वीस कम्मसा सतकम्मा पण्णत्ता, तजहा
मिच्छत्तमोहणिज्ज सोलस कसाया इत्थीवेदे पुरिसवेदे नपु सगवेदे हास अरति रति भय सोग दुगुछा ।

३ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण छव्वीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

४ अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण छव्वीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

५ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण छव्वीस पलिओवम ठिई पण्णत्ता ।

६ सोहम्मीसाणाण देवाण अत्थेगइयाण छव्वीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

७ मज्झिम मज्झिम-गेवेज्जयाण देवाण जहण्णेण छव्वीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

८ जे देवा मज्झिम हेट्ठिम-गेवेज्जविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा–
तेसि ण देवाण उक्कोसेण छव्वीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

९ ते ण देवा छव्वीसेहि अद्धमासेहि आणमति वा, पाणमति वा, ऊससति वा, नीससति वा ।

१० तेसि ण देवाण छव्वीस वास सहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

११ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे छव्वीसेहि भवग्गहणेहि

सिज्झिस्सति जाव सव्वदुक्खाणमंत करिस्सति ।

सत्तवीसइमो समवाओ

१ सत्तावीसं अणगारगुणा पण्णत्ता तंजहा
पाणाइवायाओ वेरमणं मुसावायाओ वेरमणं अदिन्नादाणाओ
वेरमणं मेहुणाओ वेरमणं परिग्गहाओ वेरमणं
सोइंदियनिग्गहे चक्खिंदियनिग्गहे घाणिंदियनिग्गहे
जिब्भिंदियनिग्गहे फासिंदियनिग्गहे
कोहविवेगे माणविवेगे मायाविवेगे लोभविवेगे
भावसच्चे करणसच्चे जोगसच्चे खमा विरागया
मणसमाहरणया वयसमाहरणया कायसमाहरणया
णाणसंपण्णया दंसणसंपण्णया चरित्तसंपण्णया
वेयणअहियासणया मारणंतियअहियासणया ।

२ जंबुद्दीवे दीवे अभिइवज्जेहिं सत्तावीसाए णक्खत्तेहिं संववहारे वट्टति ।

३ एगमेगे णं णक्खत्तमासे सत्तावीसाहिं राइंदियाहिं राइंदियग्गेणं पण्णत्ते ।

४ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणपुढवी सत्तावीसं जोयणसयाइं बाहल्लेणं पण्णत्ता ।

५ वेयगसम्मत्तबंधोवरयस्स णं मोहणिज्जस्स कम्मस्स सत्तावीसं उत्तरपयडीओ संतकम्मंसा पण्णत्ताओ ।

६ सावणसुद्धसत्तमीसु णं सूरिए सत्तावीसंगुलियं पोरिसिच्छायं णिव्वत्तइत्ता णं दिवसखेत्तं नियट्टेमाणे रयणिखेत्तं अभिणिवट्टमाणे चारं चरई ।

७ इमीसे ण रयणप्पहाए पुन्वीए अत्येगइयाण नेरइयाण सत्ता वीस पलिओवम ठिई पण्णत्ता ।

८ अहसत्तमाए पुढवीए अत्येगइयाण नेरइयाण सत्तावीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

६ असुरकुमाराण देवाण अत्येगइयाण सत्तावीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्येगइयाण देवाण सत्तावीस पलिओ वमाइ ठिई पण्णत्ता ।

११ मज्झिम उवरिम-गेवेज्जयाण देवाण जहण्णेण सत्तावीस सागरो वमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१२ जे देवा मज्झिम-गेवेज्जय विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण सत्तावीस सागरोमाई ठिई पण्णत्ता ।

१३ ते ण देवा सत्तावीसेहिं अद्धमासेहिं आणमति वा पाणमति वा उस्ससति वा नीससति वा ।

१४ तेसि ण देवाण सत्तावीस वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१५ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे सत्तावीसहि भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति-जाव-सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।

अट्ठवीसइमो समवाओ

१ अट्ठावीसविहे आयारपकप्प पण्णत्ते तजहा
मासिआ आरोवणा, सपचराई-मासिआ आरोवणा
[illegible] राइ मासिआ आरोवणा
राइ मासिआ [illegible] वीसराइ मासिआ ।
एव [illegible]

एग तिमासिआ आरोवणा, चउमासिआ आरोवणा, उवघाइया आरोवणा अणुवघाइया आरोवणा, कसिणा आरोवणा, अकसिणा आरोवणा ।

एतावता आयारपकप्पे एताव ताव आयरियव्वे ।

२ भवसिद्धियाण जीवाण अत्थेगइयाण मोहणिज्जस्स कम्मस्स अट्ठावीस कम्मसा सतकम्मा पण्णत्ता तजहा
सम्मत्तवेअणिज्ज मिच्छत्तवेयणिज्ज, सम्मामिच्छत्तवेयणिज्ज सोलस कसाया, णव णोकसाया ।

३ आभिणिबोहियणाणे अट्ठावीसइविहे पण्णत्ते तजहा
सोइदिय अत्थावग्गहे चक्खिदिय-अत्थावग्गहे घाणिदिय अत्थावग्गहे जिब्भिदिय अत्थावग्गहे फासिदिय-अत्थावग्गहे णोइदिय अत्थावग्गहे
सोइदिय वजणावग्गहे घाणिदिय वजणोवग्गहे जिब्भिदिय वजणोवग्गहे फासिदिय वजणावग्गहे
सोइदिय ईहा चक्खिदिय ईहा घाणिदिय ईहा जिब्भिदिय ईहा फासिदिय ईहा णोइदिय ईहा
सोइन्दियावाए चक्खिदियावाए घाणिदियावाए जिब्भिदियावाए फासिदियावाए णोइदियावाए
सोइदिय धारणा चक्खिदिअ धारणा घाणिदिय धारणा जिब्भिदिय धारणा फासिदिअ धारणा णोइदिअ धारणा ।

४ ईसाण ण कप्पे अट्ठावीस विमाणस-सय-सहस्सा पण्णत्ता ।

५ जीवे ण देवगइम्मि बधमाणे नामस्स कम्मस्स अट्ठावीस उत्तरपगडीओ णिबधति, तजहा–
देवगतिनाम, पचिदियजातिनाम, वउव्वियसरीरनाम, तेयग सरीरनाम, कम्मणसरीरनामं समचउरससठाणनाम, वेउ

छियसरीरगोवगनाम, वण्णनाम, गधनाम, रसनाम फास नाम दवाणुपुव्विनाम, अगुरुलहुनाम, उवघायनाम, पराघाय नाम, उस्सासनाम पसत्थविहायोगइनाम, तसनाम, बायर नाम पज्जत्तनाम पत्तेयसरीरनाम, सुभगनाम, सुस्सरनाम थिराथिराण सुभासुभाण आएज्जाणाए जाण एण्ह अण्णयर एग नाम णिवधइ–जसोकित्तिनाम, निम्माणनाम।

एव चेव नेरइआ वि–

णाणत्त – अप्पसत्थविहायोगइनाम हुडसठाणनाम अथिरनाम दुभगनाम असुभनाम दुस्सरनाम अणादिज्जनाम अजसो कित्तीनाम निम्माणनाम।

६ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइआण नेरइयाण अट्ठा वीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

७ अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण अट्ठावीस सागरोवमाई ठिई पण्णत्ता।

८ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण अट्ठावीस पलिओवमाइ *ठिई पण्णत्ता।*

९ सोहम्मीसाणसु कप्पेसु देवाण अत्थेगइयाण अट्ठावीस पलिओ वमाइ ठिई पण्णत्ता।

१० उवरिम हेट्ठिम-गेवेज्जयाण देवाण जहण्णेण अट्ठावीस सागरो वमाइ ठिई पण्णत्ता।

११ जे देवा मज्झिम-उवरिम-गेवेज्जएसु विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा तेसि ण देवाण उक्कोसेण अट्ठावीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१२ ते ण देवा अट्ठावीसाए अद्धमासेहि आणमति वा, पाणमति वा ऊससति वा, नीससति वा।

१३ तेसि ण देवाण अट्ठावीसेहिं वास सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्प ज्जइ ।

१४ सतेगइयाण भवसिद्धिया जीवा जे अट्ठावीसेहिं भवगहणेहिं सिज्झिस्सति जाव सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।

एगूणतीसइमो समवाओ

१ एगूणतीसइविहे पावसुयपसगे ण पण्णत्त, तजहा–
भोमे उप्पाए सुमिणे अतलिक्खे अगे सरे वजणे लक्खणे ।
भोमे तिविहे पण्णत्त तजहा–सुत्ते वित्ती वत्तिए ।
एव एक्केक्क तिविह
विकहाणुजोगे विज्जाणुजोगे मताणुजोगे जोगाणुजोगे अण्णति त्थियपवत्ताणुजोगे ।

२ आसाढ ण मासे एगूणतीसराइदिआइ राइदियग्गेण पण्णत्ताइ एव चेव––

३ भद्दवए ण मासे ४ कत्तिए ण मासे ५ पोसे ण मासे

६ फग्गुए ण मासे, ७ वइसाहे ण मासे

८ चददिणे ण एगूणतीस मुहुत्त सातिरेगे मुहुत्तग्गेण पण्णत्त ।

९ जीवे ण पसत्थज्झवसाणजुत्त भविए सम्मद्दिट्ठी तित्थकरनाम सहिआओ णामस्स नियमा एगूणतीस उत्तरपगडीओ निबधित्त वेमाणिएसु देवेसु देवत्ताए उववज्जइ ।

१० इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण एगूण तीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

११ अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण एगूणतीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१२ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणतीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।
१३ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणतीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।
१४ उवरिम-मज्झिम-गेवज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।
१५ जे देवा उवरिम-हेट्ठिम-गेवेज्जय विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा—तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।
१६ ते णं देवा एगूणतीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।
१७ तेसि णं देवाणं एगूणतीसं-वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।
१८ संतेगइयाणं भवसिद्धिया जीवा जे एगूणतीसं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति-जाव-सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

तीसइमो समवाओ

१ तीसं मोहणीयठाणा पण्णत्ता तंजहा

१ जे यावि तसे पाणे, वारिमज्झे विगाहिआ ।
उदएण क्कम्मा मारइ, महामोहं पकुव्वइ ॥१॥
२ सीसावेढेण जे केई, आवेढइ अभिक्खणं ।
तिव्वासुभसमायारे, महामोहं पकुव्वइ ॥२॥
३ पाणिणा संपिहित्ताणं, सोयमावरिय पाणिणं ।
अंतोनदंतं मारेई, महामोहं पकुव्वइ ॥३॥

४ आयनेव समारब्भ बहुं ओरंभिया जणं ।
अतोधूमेण मारेई महामोह पकुव्वइ ॥४॥

५ सिस्सम्मि जे पहणइ उत्तमंगम्मि चेयसा ।
विभज्ज मत्थयं फाले, महामोहं पकुव्वइ ॥५॥

६ पुणो पुणो पणिधिए हणित्ता उवहसे जणं ।
फलेण अदुवा दंडेणं, महामोह पकुव्वइ ॥६॥

७ गूढायारी निगूहिज्जा मायं मायाए छायए ।
असच्चवाई णिण्हाई, महामोह पकुव्वइ ॥७॥

८ धंसेइ जो अभूएणं अकम्मं अत्तकम्मुणा ।
अदुवा तुम कासित्ति महामोह पकुव्वइ ॥८॥

९ जाणमाणो परिसओ सच्चामोसाणि भासइ ।
अक्खीणझंझे पुरिसे, महामोह पकुव्वइ ॥९॥

१० अणायगस्स नयवं, दारे तस्सेव धंसिया ।
विउलं विक्खोभइत्ता णं, किच्चा णं पडिबाहिरं ॥१०॥
उवगसंतंपि झंपित्ता पडिलोमाहिं वग्गुहिं ।
भोगभोगे वियारेइ, महामोह पकुव्वइ ॥११॥

११ अकुमारभूए जे केई कुमारभूएत्ति हं वए ।
इत्थीहिं गिद्धे वसए, महामोह पकुव्वइ ॥१२॥

१२ अबंभयारी जे केई, बंभयारीत्ति हं वए ।
गद्दहे व्व गवां मज्झे, विस्सरं नयई नदं ॥१३॥
अप्पणो अहिए बाले मायामोसं बहुं भसे ।
इत्थीविसयगेहीए महामोह पकुव्वइ ॥१४॥

१३ जं निस्सिए उव्वहइ, जससाहिगमेण वा ।
तस्स लुब्भइ वित्तम्मि महामोह पकुव्वइ ॥१५॥

१४ ईसरेण अदुवा गामेण, अणिसरे ईसराए ।

तस्स सपयहीणस्स सिरी अतुलमागया ॥१६॥
ईसादोसेण आविट्ठे, कलुसाविलचेयसे ।
जे अंतराअं चेएइ महामोहं पकुव्वइ ॥१७॥

१५ सप्पी जहा अंडउडं भत्तारं जो विहिंसइ ।
सेणावइं पसत्थारं, महामोहं पकुव्वइ ॥१८॥

१६ जे नायगं व रट्ठस्स, नेयारं निगमस्स वा ।
सेट्ठिं बहुरवं हंता, महामोहं पकुव्वइ ॥१९॥

१७ बहुजणस्स णेयारं, दीवं ताणं च पाणिणं ।
एयारिसं नरं हंता महामोहं पकुव्वइ ॥२०॥

१८ उवट्ठियं पडिविरयं, संजयं सुतवस्सियं ।
वुक्कम्म धम्माओ भंसेइ महामोहं पकुव्वइ ॥२१॥

१९ तहेवाणंतणाणीणं, जिणाणं वरदंसिणं ।
तेसिं अवण्णवं बाले महामोहं पकुव्वइ ॥२२॥

२० नेयाइअस्स मग्गस्स दुट्ठे अवयरई बहुं ।
तं तिप्पयंतो भावेइ, महामोहं पकुव्वइ ॥२३॥

२१ आयरिय उवज्झाएहिं, सुयं विणयं च गाहिए ।
ते चेव खिंसई बाले महामोहं पकुव्वइ ॥२४॥

२२ आयरिय-उवज्झायाणं, सम्मं नो पडितप्पइ ।
अप्पडिपूयए थद्धे, महामोहं पकुव्वइ ॥२५॥

२३ अबहुस्सुए य जे केइ, सुएण पविकत्थई ।
सज्झायवायं वयइ, महामोहं पकुव्वइ ॥२६॥

२४ अतवस्सीए य जे केई तवेण पविकत्थइ ।
सव्वलोयपरे तेणे महामोहं पकुव्वइ ॥२७॥

२५ साहारणट्ठा जे केई, गिलाणम्मि उवट्ठिए ।
पभू ण कुणई किच्चं, मज्झंपि से न कुव्वइ ॥२८॥

सढे नियडीपण्णाणे कलुसाउलचेयसे ।
अप्पणो य अबोहीय महामोहं पकुव्वइ ॥२९॥
२६ जे कहाहिगरणाइं, संपउंजे पुणो पुणो ।
सव्वतित्थाण भेयाण महामोहं पकुव्वइ ॥३०॥
२७ जे अ आहम्मिए जोए, संपओजे पुणो पुणो ।
सिलाहहेउ सहीहेउ, महामोहं पकुव्वइ ॥३१॥
२८ जे अ माणुस्सए भोए, अदुवा पारलोइए ।
तेऽतिप्पयंतो आसयइ महामोहं पकुव्वइ ॥३२॥
२९ इड्ढी जुई जसो वण्णो देवाणं बलवीरियं ।
तेसिं अवण्णवं बाले महामोहं पकुव्वइ ॥३३॥
३० अपस्समाणो पस्सामि देवे जक्खे य गुज्झगे ।
अण्णाणी जिणपूयट्ठी, महामोहं पकुव्वइ ॥३४॥

२ थेरे णं मंडियपुत्ते तीसं वासाइं सामण्णपरियायं पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।

३ एगमेगे णं अहोरत्ते तीसमुहुत्ते मुहुत्तग्गेणं पण्णत्ता एएसि णं तीसाए मुहुत्ताणं तीसं नामधेज्जा पण्णत्ता तंजहा–
रोद्दे सत्ते मित्ते वाऊ सुपीए ५।
अभिचंदे माहिंदे पलंबे बंभे सच्चे १०।
आणंदे विजए विस्ससेणे पायावच्चे उवसमे १५।
ईसाणे तट्ठे भाविअप्पा वेसमणे वरुणे २०।
सतरिसभे गंधव्वे अग्गिवेसायणे आतवे आवत्त २५।
तट्ठवे भूमहे रिसभे सव्वट्ठसिद्धे रक्खसे ३०।

४ अरे णं अरहा तीसं धणुइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।
सहस्सारस्स णं देविंदस्स देवरण्णो तीसं सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ता ।

६ पासे ण अरहा तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ।

७ समणे भगवं महावीरे तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ।

८ रयणप्पहाए णं पुढवीए तीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

९ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगयाणं नेरइयाणं तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१२ उवरिम-उवरिम-गेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१३ जे देवा उवरिम-मज्झिम-गेवेज्जएसु विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा—
तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१४ ते णं देवा तीसेहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा उस्ससंति वा नीससंति वा ।

१५ तेसि णं देवाणं तीसेहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१६ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे तीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

एगतीसइमो समवाओ

१ एक्कतीसं सिद्धाइगुणा पण्णत्ता तंजहा—

खीणे आभिणिबोहियणाणावरणे, खीणे सुयणाणावरणे,
खीणे ओहिणाणावरणे खीणे मणपज्जवणाणावरणे,
खीणे केवलणाणावरणे ५
खीणे चक्खुदंसणावरणे खीणे अचक्खुदंसणावरणे
खीणे ओहिदंसणावरणे खीणे केवलदंसणावरणे ४।
खीणे निद्दा खीणे णिद्दा णिद्दा, खीणे पयला,
खीणे पयला पयला, खीणे थीणद्धी ५।
खीणे सायावेयणिज्जे खीणे असायावेयणिज्जे
खीणे दसणमोहणिज्जे खीणे चरित्तमोहणिज्जे ४।
खीणे नेरइआउए, खीणे तिरिआउए, खीणे मणुस्साउए,
खीणे देवाउए ४।
खीणे उच्चागोए खीणे निच्चागोए खीणे सुभनामे
खीणे असुभनामे ४।
खीणे दाणंतराए खीणे लाभंतराए, खीणे भोगंतराए
खीणे उवभोगंतराए, खीणे वीरिअअंतराए ५।३१

२ मंदरे पव्वए धरणितले एक्कतीसं जोयणसहस्साइं छच्चेव तेवीसे जोयणसए किंचिदेसूणा परिक्खेवेण पण्णत्ता।

३ जया णं सूरिए सव्वबाहिरियं मंडलं उवसंकमित्ता णं चारं चरइ तया णं इहगयस्स मणुस्सस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं अट्ठहि अ एक्कतीसेहिं जोयणसएहिं तीसाए सट्ठिभागे जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ।

४ अभिवड्ढिए णं मासे एक्कतीसं सातिरेगाइं राइंदियाइं राइंदियग्गेणं पण्णत्ते।

५ आइच्चे णं मासे एक्कतीसं राइंदियाइं किंचि विसेसूणाइं राइंदियग्गेणं पण्णत्ते।

६ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण एक्कतीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

७ अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण एक्कतीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

८ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण एक्कतीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

९ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण एक्कतीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१० विजय वेजयत-जयत-अपराजिआण देवाण जहण्णेण एक्कतीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

११ जे देवा उवरिम उवरिम-गेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा तेसि ण देवाण उक्कोसेण एक्कतीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१२ ते ण देवा एक्कतीसहि अद्धमासेहि आणमति वा, पाणमति वा उस्ससति वा, नीससति वा ।

१३ तेसि ण देवाण एक्कतीसेहि वाससहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१४ सतेगइआ भवसिद्धिआ जीवा जे एक्कतीसेहि भवग्गहणेहि सिज्झिस्सति-जाव-सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।

बत्तीसइमो समवाओ

१ बत्तीस जोगसंगहा पण्णत्ता तंजहा–

आलोयण १ निरवलावे २, आवईसु दढधम्मया ३।
अणिस्सिओवहाणे ४ य सिक्खा ५ निप्पडिकम्मया ६॥१॥
अण्णायया ७ अलोभे ८ य तितिक्खा ९ अज्जवे १० सुई ११।
सम्मदिट्ठी १२ समाही १३ य आयारे १४ विणओवए १५॥२॥
धिईमई १६ य संवेगे १७ पणिही १८ सुविहि १९ संवरे २०।
अत्तदोसोवसंहारे २१ सव्वकामविरत्तया २२॥३॥
पच्चक्खाणे[१] २३ २४ विउस्सग्गे २५ अप्पमादे २६ लवालवे २७।
झाणसंवरजोगे २८ य उदए मारणंतिए २९॥४॥
संगाणं च परिण्णाया ३० पायच्छित्तकरणे वि य ३१।
आराहणा य मरणंते ३२, बत्तीसं जोगसंगहा ॥५॥

२ बत्तीसं देविंदा पण्णत्ता तंजहा–
चमरे बली धरणे भूआणंद जाव घोसे।
चंदे सूरे सक्के ईसाणे सणंकुमारे जाव पाणए अच्चुए।

३ कुंथुस्स णं अरहओ बत्तीसहिया बत्तीसं जिणसया होत्था।

४ सोहम्मे कप्पे बत्तीसं विमाणावाससहस्सा प० पण्णत्ता।

५ रेवइ णक्खत्ते बत्तीसइ तारे पण्णत्ते।

६ बत्तीसइविहे णट्टे पण्णत्ते।

७ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइआणं नेरइयाणं बत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

८ अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बत्तीसं सागरो

---

१ मूलगुणपच्चक्खाणं उत्तरगुणपच्चक्खाणं।

वमाइं ठिई पण्णत्ता ।

९ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं बत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं बत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११ जे देवा विजय वेजयंत जयंत-अपराजियविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा—
तेसि णं देवाणं अत्थेगइयाणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१२ ते णं देवा बत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा उस्ससंति वा, नीससंति वा ।

१३ तेसि णं देवाणं बत्तीसं-वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१४ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे बत्तीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति-जाव-सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

तेत्तीसइमो समवाओ

१ तेत्तीसं आसायणाओ पण्णत्ता तं जहा—

१ सेहे रायणियस्स पुरओ गंता भवइ आसायणा सेहस्स ।
२ सेहे रायणियस्स सपक्खं गंता भवइ आसायणा सेहस्स ।
३ सेहे रायणियस्स आसन्नं गंता भवइ आसायणा सेहस्स ।
४ सेहे रायणियस्स पुरओ चिट्ठित्ता भवइ आसायणा सेहस्स ।
५ सेहे रायणियस्स सपक्खं चिट्ठित्ता भवइ आसायणा सेहस्स ।
६ सेहे रायणियस्स आसन्नं चिट्ठित्ता भवइ आसायणा सेहस्स ।

७ सेहे रायणियस्स पुरओ निसीइत्ता भवइ आसायणा सेहस्स
८ सेहे रायणियस्स सपक्खं निसीइत्ता भवइ आसायणा सेहस्स
६ सेहे रायणियस्स आसन्न निसीइत्ता भवइ आसायणा सेहस्स
१० सेहे रायणियस्स सद्धिं बहिया वियार भूमिं वा निक्खं समाणे तत्थ सेहे पुव्वतरागं आयमइ पच्छा रायणिए, भव आसायणा सेहस्स ।
११ सेहे रायणिएण सद्धिं बहिया वियार भूमिं वा विहार भूमिं वा निक्खते समाणे तत्थ सेहे पुव्वतरागं आलोए पच्छा रायणीए भवइ आसायणा सेहस्स ।
१२ सेहे रायणियस्स पुव्व-सलवित्तए सिया, त सेहे पुव्वतरा आलवइ पच्छा रायणिए भवइ आसायणा सेहस्स ।
१३ सेहे रायणिअस्स राओ वा वियाले वा, वाहरमाणस्स अज्जो ! के सुत्ता ? के जागरा ? तत्थ सेहे जागरमा रायणियस्स अपडिसुणेत्ता भवइ आसायणा सेहस्स ।
१४ सेहे असण वा पाण वा खाइम वा साइमं वा पडिग्गाहित्त त पुव्वमेव सेहतरागस्स आलोएइ पच्छा रायणियस्स भवइ आसायणा सेहस्स ।
१५ सेहे असण वा जाव साइमं वा पडिग्गाहित्ता त पुव्व सेहतरागस्स उवदसेइ पच्छा रायणियस्स भवइ आसा सेहस्स ।
१६ सेहे असण वा जाव साइम वा पडिग्गाहित्ता त पुव्वमेव तरागं उवणिमतइ पच्छा रायणिए भवइ आसायणा सेहस
१७ सेहे रायणिएण सद्धिं असणं वा जाव-साइमं वा पडि हित्ता त रायणियं अणापुच्छित्ता जस्स जस्स इच्छइ त तस्स खद्ध खद्ध दलयति भवइ आसायणा सेहस्स ।

१८ सेहे असणं वा-जाव-साइमं वा-पडिगाहित्ता रायणिएण सद्धिं भुंजमाणे तत्थ सेहे खद्धं खद्धं, डागं डागं, ऊसढं ऊसढं रसियं रसियं मणुन्नं मणुन्नं मणामं मणामं, निद्धं निद्धं लुक्खं लुक्खं, आहारित्ता भवइ आसायणा सेहस्स ।

१९ सेहे रायणियस्स वाहरमाणस्स अपडिसुणित्ता भवइ आसायणा सेहस्स ।

२० सेहे रायणियस्स वाहरमाणस्स तत्थ गए चेव पडिसुणित्ता भवइ आसायणा सेहस्स ।

२१ सेहे रायणियस्स किं ति वत्ता भवइ आसायणा सेहस्स ।

२२ सेहे रायणियं तुमं ति वत्ता भवइ आसायणा सेहस्स ।

२३ सेहे रायणियं खद्धं खद्धं वत्ता भवइ आसायणा सेहस्स ।

२४ सेहे रायणियं तज्जाएणं तज्जाएणं पडिहणित्ता भवइ आसायणा सेहस्स ।

२५ सेहे रायणियस्स कहं कहेमाणस्स इति एवं वत्ता भवइ आसायणा सेहस्स ।

२६ सेहे रायणियस्स कहं कहेमाणस्स नो सुमरसीति वत्ता भवइ आसायणा सेहस्स ।

२७ सेहे रायणियस्स कहं कहेमाणस्स णो सुमणसे भवइ आसायणा सेहस्स ।

२८ सेहे रायणियस्स कहं कहेमाणस्स परिसं भेत्ता भवइ आसायणा सेहस्स ।

२९ सेहे रायणियस्स कहं कहेमाणस्स कहं अच्छिदित्ता भवइ आसायणा सेहस्स ।

३० सेहे रायणियस्स कहं कहेमाणस्स तीसे परिसाए अणुट्ठियाए अभिन्नाए अवुच्छिन्नाए अवोगडाए दोच्चंपि तच्चंपि तमेव

पट्ट भवित्ता भवइ आसायणा सेहस्स ।

३१ सेह रायणियस्स सिज्जा संथारग पाएण संघट्टित्ता हत्थेण अणणुतावित्ता (अणणुवित्ता) गच्छइ भवइ आसायणा सेहस्स ।

३२ सेह रायणियस्स सिज्जा-संथारए चिट्ठित्ता वा, निसीइत्ता वा तुयट्टित्ता वा भवइ आसायणा सेहस्स ।

३३ सेहे रायणियस्स उच्चासणंसि वा, समासणंसि वा चिट्ठित्ता वा निसाइत्ता वा तुयट्टित्ता वा भवइ आसायणा सेहस्स ।

२ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुररण्णो चमरचंचाए रायहाणीए एक्कमेक्कबाराए तेत्तीसं तेत्तीसं भोमा पण्णत्ता ।

३ महाविदेहे णं वासे तेत्तीसं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता ।

४ जया णं सूरिए बाहिराणंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता णं चारं चरइ तया णं इह गयस्स पुरिसस्स तेत्तीसाए जोयणसह स्सेहिं किंचि विसेसूणेहिं चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ ।

५ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

६ अहे सत्तमाए पुढवीए काल महाकाल रोरुय महारोरुएसु नेरइयाणं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

७ अप्पइट्ठाणनरए नेरइयाणं अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

८ असुरकुमाराणं अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

९ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिई

१० आगासगओ कुडभीसहस्सपरिमंडिआभिरामो इंदज्झओ पुरओ गच्छइ,

११ जत्थ जत्थवि य णं अरहंता भगवंतो चिट्ठंति वा निसीयंति वा, तत्थ तत्थवि य णं जक्खा देवा सच्छन्न-पत्त-पुप्फ-पल्लव समाउलो सच्छत्तो सज्झओ सघंटो सपडागो असोगवर पायवो अभिसंजायइ,

१२ ईसिं पिट्ठओ मउडठाणंमि तेय मंडल अभिसंजायइ अंधकारे विय णं दस दिसाओ पभासेइ,

१३ बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे,

१४ अहोसिरा कंटया जायंति

१५ उऊविवरीया सुहफासा भवंति

१६ सीयलेणं सुहफासेणं सुरभिणा मारुएणं जोयणपरिमंडलं सव्वओ समंता संपमज्जिज्जइ

१७ जुत्तफुसिएणं मेहेण य निहयरयरेणूयं किज्जइ,

१८ जल थलयभासुरपभूतेणं बिंटट्ठाइणा दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं जाणुस्सेहप्पमाणमित्ते पुप्फोवयारे किज्जइ

१९ अमणुण्णाणं सद्द फरिस रस रूव-गंधाणं अवकरिसो भवइ

२० मणुण्णाणं सद्द-फरिस रस रूव-गंधाणं पाउब्भावो भवइ

२१ पच्चाहरओवि य णं हिययगमणीओ जोयणनीहारी सरो,

२२ भगवं च णं अद्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ

२३ सावि य णं अद्धमागही भासा भासिज्जमाणी तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाणं दुप्पय-चउप्पय मिय-पसु पक्खि-सरी सिवाणं अप्पणो हिय सिव-सुहयभासत्ताए परिणामइ,

२४ पुव्वबद्धवेरावि य णं देवासुर नाग-सुवण्ण जक्ख रक्खस किंनर किंपुरिस गरुल गंधव्व महोरगा अरहओ पायमूले

पसतचित्तमाणसा धम्मं निसामंति
२५ अण्णउत्थियपावयणिया वि य णं मागया वंदंति
२६ आगया समाणा अरहओ पायमूले निप्पडिवयणा हवंति,
२७ जओ जओ वि य णं अरहंतो भगवंतो विहरंति
तओ तओ वि य णं जोयणपणवीसेणं णं ईती न भवइ
२८ मारी न भवइ
२९ सचक्कं न भवइ
३० परचक्कं न भवइ,
३१ अइवुट्ठी न भवइ,
३२ अणावुट्ठी न भवइ,
३३ दुब्भिक्खं न भवइ
३४ पुव्वुप्पण्णावि य णं उप्पाइया वाही खिप्पमिव उवसमंति।
२ जंबुद्दीवे णं दीवे चउत्तीसं चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता तंजहा—
बत्तीसं महाविदेहे दो भरहे एरवए।
३ जंबुद्दीवे णं दीवे चोत्तीसं दीहवेयड्ढा पण्णत्ता।
४ जंबुद्दीवे णं दीवे उक्कोसपए चोत्तीसं तित्थयरा समुप्पज्जंति।
५ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुररण्णो चोत्तीसं भवणावाससहस्सा पण्णत्ता।
६ पढम-पंचम छट्ठी-सत्तमासु चउसु पुढवीसु चोत्तीसं निरयावास सय सहस्सा पण्णत्ता।

पणतीसइमो समवाओ

पणतीसं सच्चवयणाइसेसा पण्णत्ता।
कुंथू णं अरहा पणतीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

३ दत्त ण वासुदेवे पणतीस धणूइ उड्ड उच्चत्तेण होत्था ।
४ नदणे ण बलदेवे पणतीस धणूइ उड्ड उच्चत्तेण होत्था ।
५ सोहम्मे कप्पे सभाए सुहम्माए माणवए चेइयखंभे हेट्ठा उवरिं च अद्धतेरस अद्धतेरस जोयणाणि वज्जेत्ता मज्झे पणतीस जोयणेसु वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु जिणसकहाओ पण्णत्ता ।
६ बितिय चउत्थीसु दोसु पुढवीसु पणतीस निरयावास-सय सहस्सा पण्णत्ता ।

छत्तीसइमो समवाओ

१ छत्तीस उत्तरज्झयणा पण्णत्ता त जहा–
विणयसुय १ परीसहो २ चाउरगिज्ज ३ असखय ४ अकाममरणिज्ज ५ पुरिसविज्जा ६, उरब्भिज्ज ७, काविलिय ८ नमिपव्वज्जा ९ दुमपत्तय १० बहुसुयपूया ११, हरिएसिज्ज १२ चित्तसभूय १३, उसुयारिज्ज १४, सभिक्खुग १५ समाहिठाणाइ १६, पावसमणिज्ज १७, सजइज्ज १८, मियचारिया १९ अणाहपव्वज्जा २० समुद्दपालिज्ज २१, रहनेमिज्ज २२ गोयमकेसिज्ज २३, समितीओ २४ जन्नतिज्ज २५ सामायारी २६, खलुकिज्ज २७ मोक्खमग्गगई २८ अप्पमाओ २९ तवोमग्गो ३०, चरणविही ३१, पमायठाणाइ ३२ कम्मपयडी ३३, लेसज्झयण ३४ अणगारमग्गे ३५ जीवाजीवविभत्ती य ३६ ।
२ चमरस्स ण असुरिदस्स असुररण्णो सभा सुहम्मा छत्तीस जोयणाइ उड्ड उच्चत्तेण होत्था ।

३ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स छत्तीसं अज्जाण साहस्सीओ होत्था ।

४ चेत्तासोएसु णं मासेसु सइ छत्तीसंगुलियं सूरिए पोरिसीछायं निव्वत्तइ ।

सत्ततीसइमो समवाओ

१ कुंथुस्स णं अरहओ सत्ततीसं गणा, सत्ततीसं गणहरा होत्था ।

२ हेमवय-हेरण्णवयाओ णं जीवाओ सत्ततीसं जोयणसहस्साइं छच्च चउसत्तरे जोयणसए सोलस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स किंचि विसेसूणाओ आयामेणं पण्णत्ता ।

३ सव्वासु णं विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियासु रायहाणीसु पागारा सत्ततीसं सत्ततीसं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।

४ खुड्डियाए णं विमाणपविभत्तीए पढमे वग्गे सत्ततीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता ।

५ कत्तिय बहुल सत्तमीए णं सूरिए सत्ततीसंगुलियं पोरिसीछायं निव्वत्तइत्ता णं चारं चरइ ।

अट्ठतीसइमो समवाओ

१ पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अट्ठतीसं अज्जियासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासंपया होत्था ।

२ हेमवए-हेरण्णवईयाणं जीवाणं धणुपिट्ठे अट्ठतीसं जोयणसहस्साइं सत्त य चत्ताले जोयण-सए दस एगूणवीसइभागे जोयणस्स

किंचि विसेसूणा परिक्खेवेणं पण्णत्ता ।

३ अत्थस्स णं पव्वयरण्णो बितिए कंडे अट्ठतीसं जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

४ खुड्डियाए णं विमाणपविभत्तीए बितिए वग्गे अट्ठतीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता ।

एगूणचत्तालीसइमो समवाओ

१ नमिस्स णं अरहओ एगूणचत्तालीसं आहोहियसया होत्था ।

२ समयखेत्ते एगूणचत्तालीसं कुलपव्वया पण्णत्ता तंजहा— तीसं वासहरा पंच मंदरा चत्तारि उसुकारा ।

३ दोच्च-चउत्थ-पंचम-छट्ठ-सत्तमासु णं पंचसु पुढवीसु एगूणचत्तालीसं निरयावास सय-सहस्सा पण्णत्ता ।

४ नाणावरणिज्जस्स मोहणिज्जस्स गोत्तस्स आउयस्स एयासि णं चउण्हं कम्मपगडीणं एगूणचत्तालीसं उत्तरपगडीओ पण्णत्ता ।

चत्तालीसइमो समवाओ

१ अरहओ णं अरिट्ठनेमिस्स चत्तालीसं अज्जियासाहस्सीओ होत्था ।

२ मंदरचूलियाणं चत्तालीसं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।

३ संती अरहा चत्तालीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

४ भूयाणंदस्स णं नागकुमारस्स नागरण्णो चत्तालीसं भवणावास सय-सहस्सा पण्णत्ता ।

४ कालोए णं समुद्दे बायालीसं चंदा जोइंसु वा जोइंति वा, जोइस्संति वा, बायालीसं सूरिया पभासिंसु वा, पभासिंति वा, पभासिस्संति वा।

५ संमुच्छिम भुयपरिसप्पाणं उक्कोसेणं बायालीसं वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता।

६ नामकम्मे बायालीसविहे पण्णत्ते तंजहा—
गइनामे जाइनामे सरीरनामे सरीरंगोवंगनामे
सरीरबंधणनामे सरीरसंघायणनामे संघयणनामे संठाणनामे
वण्णनामे गंधनामे रसनामे फासनामे
अगुरुलहुयनामे उवघायनामे पराघायनामे आणुपुव्वीनामे
उस्सासनामे आयवनामे उज्जोयनामे विहगगइनामे
तसनामे थावरनामे सुहुमनामे बायरनामे
पज्जत्तनामे अपज्जत्तनामे साहारणसरीरनामे पत्तेयसरीरनामे
थिरनामे अथिरनामे सुभनामे असुभनामे
सुभगनामे दुब्भगनामे सुसरनामे दुस्सरनामे
आएज्जनामे अणाएज्जनामे जसोकित्तिनामे अजसोकित्तिनामे
निम्माणनामे तित्थकरनामे।

७ लवणे णं समुद्दे बायालीसं नागसाहस्सीओ अब्भितरियं वेलं धारेंति।

८ महालियाए णं विमाणपविभत्तीए बिइए वग्गे बायालीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता।

९ एगमेगाए ओसप्पिणीए पंचम छट्ठीओ समाओ बायालीसं वाससहस्साइं कालेणं पण्णत्ता।

१० एगमेगाए उस्सप्पिणीए पढम बीयाओ समाओ बायालीसं वाससहस्साइं कालेणं पण्णत्ता।

तेयालीसइमो समवाओ

१ तेयालीस कम्मविवागज्झयणा पण्णत्ता ।

२ पढम चउत्थ पचमासु तेयालीस निरयावास-सय सहस्सा पण्णत्ता ।

३ जबुद्दीवस्स ण दीवस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरमताओ गोथूभस्स ण आवासपव्वयस्स पुरच्छिमिल्ले चरमते एस ण तेयालीस जोयणसहस्साइ अबाहाए अतर पण्णत्ते

४ एव चउद्दिसि पि दगभासे सखे दयसीमे य ।

५ महालियाए ण विमाणपविभत्तीए तइए वग्गे तेयालीस उद्देसण काला पण्णत्ता ।

चोयालीसइमो समवाओ

१ चोयालीस अज्झयणा इसिभासिया दियलोगचुयाभासिया पण्णत्ता ।

२ विमलस्स ण अरहओ ण चउआलीस पुरिसजुगाइ अणुपिट्ठि सिद्धाइ जाव-प्पहीणाइ ।

३ धरणस्स ण नागिदस्स नागरण्णो चोयालीस भवणावास-सय सहस्सा पण्णत्ता ।

४ महालियाए ण विमाणपविभत्तीए चउत्थे वग्गे चोयालीस उद्देसणकाला पण्णत्ता ।

पणयालीसइमो समवाओ

१ समयखेत्त ण पणयालीस जोयण-सय-सहस्साइं आयाम विक्खंभेण पण्णत्ता ।

२ सीमतए ण नरए पणयालीस जोयण-सय-सहस्साइं आयाम विक्खभेण पण्णत्ता ।

३ एव उडुविमाणे वि ।

४ ईसिपब्भारा ण पुढवी एव चेव ।

५ धम्मे णं अरहा पणयालीस धणूइं उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।

६ मदरस्स ण पव्वयस्स चउद्दिसि वि पणयालीस २ जोयणसहस्साइं अबाहाए अतरे पण्णत्ते ।

७ सव्वेवि ण दिवड्ढखेत्तिया नक्खत्ता पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धि जोगं जोइसु वा जोइति वा, जोइस्सति वा ।
तिन्नेव उत्तराइं, पुणव्वसू रोहिणी विसाहा य ।
एए छ नक्खत्ता, पणयालमुहुत्तसजोगा ॥१॥

८ महालियाए णं विमाणपविभत्तीए पचमे वग्गे पणयालीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता ।

छायालीसइमो समवाओ

१ दिट्ठिवायस्स णं छायालीस माउयापया ।

२ बंभिए ण लिवीए छायालीस माउयक्खरा पण्णत्ता ।

३ पभजणस्स ण वाउकुमारिदस्स छायालीस भवणावास सयसहस्सा पण्णत्ता ।

सत्तचत्तालीसइमो समवाओ

१ जया णं सूरिए सव्वब्भितरमंडलं उवसंकमित्ता णं चारं चरइ तया णं इह गयस्स मणूसस्स सत्तचत्तालीसं जोयणसहस्सेहिं दोहि य तेवट्ठेहिं जोयण-सएहिं एक्कवीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुफासं हव्वमागच्छइ ।

२ थेरे णं अग्गिभूई सत्तचत्तालीसं वासाइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ।

अडयालीसइमो समवाओ

१ एगमेगस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अडयालीसं पट्टण सहस्सा पण्णत्ता ।

२ धम्मस्स णं अरहओ अडयालीसं गणा अडयालीसं गणहरा होत्था ।

३ सूरमंडले णं अडयालीसं एकसट्ठि भागे जोयणस्स विक्खंभेणं पण्णत्ता ।

एगूणपन्नासइमो समवाओ

१ सत्त सत्तमियाए णं भिक्खुपडिमाए राइंदिएहिं छन्नउइ भिक्खा सएणं अहासुत्तं जाव आराहिया भवइ ।

२ देवकुरु उत्तरकुरुएसु णं मणुया एगूणपन्ना राइंदिएहिं संपन्न जाव्वणा भवंति ।

३ तेइंदियाणं उक्कोसेणं एगूणपन्ना राइंदिया ठिई पण्णत्ता ।

पण्णासइमो समवाओ

१ मुणिसुव्वयस्स णं अरहओ पण्णासं अज्जियासाहस्सीओ होत्था ।
२ अणते णं अरहा पन्नास धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।
३ पुरिसुत्तमे णं वासुदेवे पन्नास धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।
४ सव्वेवि णं दीहवेयड्ढा मूले पन्नास २ जोयणाणि विक्खंभेणं पण्णत्ता ।
५ लंतए कप्पे पन्नास विमाणावाससहस्सा पण्णत्ता ।
६ सव्वाओ णं तिमिसगुहा-खंडगप्पवायगुहाओ पन्नास २ जोयणाइं आयामेणं पण्णत्ता ।
७ सव्वेवि णं कंचणगपव्वया सिहरतले पन्नासं २ जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता ।

एगपण्णाइसमो समवाओ

१ नवण्हं बंभचेराणं एकावन्नं उद्देसणकाला पण्णत्ता ।
२ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुररन्नो सभा सुधम्मा एकावन्न-खंभसय सनिविट्ठा पण्णत्ता ।
३ एवं चेव बलिस्स वि ।
४ सुप्पभे णं बलदेवे एकावन्नं वास सय-सहस्साइं परमाउं पालइत्ता सिद्धे जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।
५ दसणावरण-नामाणं दोण्हं कम्माणं एकावन्नं उत्तरकम्म-पगडीओ पण्णत्ता ।

बावन्नइमो समवाओ

१ मोहणिज्जस्स ण कम्मस्स बावन्न नामधेज्जा पण्णत्ता तजहा—कोहे कोवे रोसे दोसे अखमा सजलणे कलहे चडिक्के भडणे विवाए ।१०
माणे मदे दप्पे थभे अत्तक्कोसे गव्वे परपरिवाए अक्कोसे अवक्कोसे [परिभवे] उन्नए ।२०
उन्नामे माया उवही नियडी वलए गहणे णूम कक्के कुरुए दभे ।३०
कूडे जिम्हे किब्बिसे अणायरणया गूहणया वचणया पलिकुचणया सातिजोगे लोभे इच्छा ।४०
मुच्छा कखा गेही तिण्हा भिज्जा अभिज्जा कामासा भोगासा जीवियासा मरणासा ।५० नदी रागे ।५२ ।

२ गोथूमस्स ण आवासपव्वयस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरमताओ वलयामुहस्स महापायालस्स पच्चच्छिमिल्ले चरमते एस ण बावन्न जोयणसहस्साइ अबाहाउ अतरे पण्णत्त ।

३ एव दगभासस्स कउगस्स सखस्स जूयगस्स दगसीमस्स ईसरस्स ।

४ नाणावरणिज्जस्स नामस्स अतरायस्स एतेसि ण तिण्ह कम्म पगडीण बावन्न उत्तरपयडीओ पण्णत्ता ।

५ सोहम्म सणकुमार माहिंदेसु तिसु कप्पसु बावन्नं विमाणावास सयसहस्सा पण्णत्ता ।

तेवन्नइमो समवाओ

१ देवकुरु उत्तरकुरियाओ णं जीवाओ तेवन्न २ जोयणसहस्साइं साइरेगाइं आयामेण पण्णत्ताओ।

२ महाहिमवंत रुप्पीणं वासहरपव्वयाणं जीवाओ तेवन्न जोयणसहस्साइं नव य एगतीसे जोयणसए छच्च एगूणवीसइ भाए जोयणस्स आयामेण पण्णत्ताओ।

३ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तेवन्नं अणगारा संवच्छर परियाया पंचसु अणुत्तरेसु महइमहालएसु महाविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना।

४ सम्मुच्छिम उरपरिसप्पाणं उक्कोसेणं तेवन्नं वाससहस्सा ठिई पण्णत्ता।

चउवन्नइमो समवाओ

१ भरहेरवएसु णं वासेसु एगमेगाए उस्सप्पिणीए ओसप्पिणीए चउवन्न २ उत्तमपुरिसा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा, तंजहा—
चउवीसं तित्थकरा, बारस चक्कवट्टी, नव बलदेवा, नव वासुदेवा।

२ अरहा णं अरिट्ठनेमी चउवन्नं राइंदियाइं छउमत्थपरियाय पाउणित्ता जिणे जाए केवली सव्वन्नू सव्वभावदरिसी।

३ समणे भगवं महावीरे एग दिवसेणं एगनिसिज्जाए चउप्पन्नाइं वागरणाइं वागरित्था।

पणवन्नइमो समवाओ

१ मल्लिस्स णं अरहओ पण्णपन्न-वास सहस्साइं परमाउं पालइत्ता सिद्धे जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे।

२ मदरस्स णं पव्वयस्स पच्चच्छिमिल्लाओ चरमंताओ विजय दारस्स पच्चच्छिमिल्ले चरमंते एस णं पणपन्न-जोयण सहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

३ एवं चउद्दिसिपि वेजयंत-जयंत अपराजियं ति ।

४ समणे भगवं महावीरे रतिमराइयंसि पणपन्नं अज्झयणाइं कल्लाणफलविवागाइं पणपन्नं अज्झयणाइं पावफलविवागाइं वागरित्ता सिद्धे जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।

५ पढम बिइयासु दोसु पुढवीसु पणपन्नं निरयावास-सय सहस्सा पण्णत्ता ।

६ दसणावरणिज्ज नामाउयाणं तिण्हं कम्मपगडीणं पणपन्नं उत्तर पगडीओ पण्णत्ताओ।

छप्पन्नइमो समवाओ

१ जबुद्दीवे णं दीवे छप्पन्नं नक्खत्ता चदेण सद्धिं जोगं जोइंसु वा जोइंति वा, जोइस्संति वा ।

२ विमलस्स णं अरहओ छप्पन्नं गणा छप्पन्नं गणहरा होत्था ।

सत्तावन्नइमो समवाओ

१ तिण्हं गणिपिडगाणं आयारचूलियावज्जाणं सत्तावन्न अज्झयणा पण्णत्ता तंजहा–आयारे सूयगडे ठाणे।

२ गोथुभस्स णं आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरमंताओ वलयामुहस्स महापायालस्स बहुमज्झदेसभाए एस णं सत्तावन्न जोयण सहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

३ एवं दगभासस्स केउयस्स य संखस्स जूयस्स य, दयसीमस्स ईसरस्स य।

४ मल्लिस्स णं अरहओ सत्तावन्न मणपज्जवनाणिसया होत्था।

५ महाहिमवंत रुप्पीणं वासहरपव्वयाणं जीवाणं धणुपिट्ठं सत्तावन्न २ जोयण सहस्साइं दोन्नि य तेणउए जोयण-सए दस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं पण्णत्ता।

अट्ठावन्नइमो समवाओ

१ पढम दोच्च पंचमासु तिसु पुढवीसु अट्ठावन्नं निरयावास सय सहस्सा पण्णत्ता।

२ नाणावरणिज्जस्स वेयणिय-आउय नाम-अंतराइयस्स एएसि णं पंचण्हं कम्मपगडीणं अट्ठावन्नं उत्तरपगडीओ पण्णत्ता।

३ गोथुभस्स णं आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरमंताओ वलयामुहस्स महापायालस्स बहुमज्झदेसभाए एस णं अट्ठावन्नं जोयण-सहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

४ ६ एवं चउद्दिसिं पि नेयव्वं।

२ मंदरस्स णं पव्वयस्स पढमे कंडे एगसट्ठि-जोयण-सहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते।
३ चंदमंडलेणं एगसट्ठि विभाग विभाइए समंसे पण्णत्ते।
४ एवं सूरस्सवि।

बावट्ठिइमो समवाओ

१ पंचसंवच्छरिए णं जुगे बावट्ठि पुन्निमाओ, बावट्ठिं अमावसाओ पण्णत्ताओ।
२ वासुपुज्जस्स णं अरहओ बावट्ठिं गणा, बावट्ठिं गणहरा होत्था।
३ सुक्कपक्खस्स णं चंदे बावट्ठिं भागे दिवसे दिवसे परिवड्ढइ, ते चेव बहुलपक्खे दिवसे दिवसे परिहायइ।
४ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु पढमे पत्थडे पढमावलियाए एगमेगाए दिसाए बावट्ठि विमाणा पण्णत्ता।
५ सव्वे वेमाणियाणं बावट्ठिं विमाणपत्थडा पत्थडग्गेणं पण्णत्ता।

तेसट्ठिइमो समवाओ

१ उसभे णं अरहा कोसलिए तेसट्ठिं पुव्व सय सहस्साइं महाराय मज्झे वसित्ता मुंडे जाव पव्वइए।
२ हरिवास रम्मयवासेसु मणुस्सा तेवट्ठिएहिं राइदिएहिं संपत्त-जोव्वणा भवंति।
३ निसढे णं पव्वए तेवट्ठिं सूरोदया पण्णत्ता।

चउसट्ठिइमो समवाओ

१ अट्ठट्ठमिया णं भिक्खुपडिमा चउसट्ठीए राइदिएहिं दोहि य अट्ठासीएहिं भिक्खा-सएहिं अहासुत्त-जाव भवइ।
२ चउसट्ठिं असुरकुमारावास-सय-सहस्सा पण्णत्ता।
३ चमरस्स णं रन्नो चउसट्ठिं सामाणिय साहस्सीओ पण्णत्ताओ।
४ सव्वेवि णं दधिमुहा पव्वया पल्ला-सठाण-सठिया सव्वत्थ समा विक्खभुस्सेहेण चउसट्ठिं जोयण सहस्साइं पण्णत्ता।
५ सोहम्मीसाणेसु बभलोए य तिसु कप्पेसु चउसट्ठिं विमाणावास सय-सहस्सा पण्णत्ता।
६ सव्वस्स वि य णं रन्नो चाउरत चक्कवट्टिस्स चउसट्ठि-लट्ठीए महग्घे मुत्ता मणिहारे पण्णत्ता।

पणसट्ठिइमो समवाओ

१ जबुद्दीवे णं दीवे पणसट्ठिं सूरमडला पण्णत्ता।
२ थेरे णं मोरियपुत्ते पणसट्ठिं वासाइं अगारमज्झे वसित्ता मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए।
३ सोहम्मवर्डिसयस्स णं विमाणस्स एगमेगाए बाहाए पणसट्ठिं पणसट्ठिं भोमा पण्णत्ता।

छावट्ठिइमो समवाओ

१ दाहिणड्ढ माणुस्स-खेत्ताण छावट्ठिं चदा पभासिसु वा

४ मोहणिज्जस्स णं कम्मस्स सत्तरिं सागरोवमकोडाकोडीओ अबाहूणिया कम्मट्ठिई कम्मनिसेगे पण्णत्ता ।

५ माहिंदस्स णं देविन्दस्स देवरण्णो सत्तरिं सामाणिय साहस्सीओ पण्णत्ताओ ।

एगसत्तरिइमो समवाओ

१ चउत्थस्स णं चंदसंवच्छरस्स हेमंताणं एक्कसत्तरीए राइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं सव्वबाहिराओ मंडलाओ सूरिए आउट्टिं करेइ ।

२ वीरियप्पवायस्स णं पुव्वस्स एक्कसत्तरिं पाहुडा पण्णत्ता ।

३ अजिते णं अरहा एक्कसत्तरिं पुव्व सय-सहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता जाव पव्वइएत्ति ।

४ एवं सगरो वि राया चाउरंत-चक्कवट्टी एक्कसत्तरिं पुव्व सय सहस्साइं आगारमज्झे वसित्ता मुंडे-जाव पव्वइएत्ति ।

बावत्तरिइमो समवाओ

१ बावत्तरिं सुवण्णकुमारावास सय सहस्सा पण्णत्ता ।

२ लवणस्स समुद्दस्स बावत्तरिं नागसाहस्सीओ बाहिरियं वेलं धारेन्ति ।

३ समणे भगवं महावीरे बावत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे -जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।

४ थेरे णं अयलभाया बावत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।

पत्तछेज्ज कडग छेज्ज ७०, सजीव निज्जीव ७१, सउणरु ७२ ।

८ समुच्छिम खहयर पंचिदिय तिरिक्ख जोणियाण उक्कोसेण बावत्तरि वास सहस्साइ ठिई पण्णत्ता ।

तेवत्तरिइमो समवाओ

१ हरिवास रम्मयवासयाओ ण जीवाओ तेवत्तरि २ जोयण सहस्साइ नव य एगुत्तरे जोयण-सए सत्तरस य एगूणवीसइभागे जोयणस्स अद्धभाग च आयामेण पण्णत्ता ।

२ विजए ण बलदेव तेवत्तरि वास सय-सहस्साइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्ध जाव सव्वदुक्खप्पहीणे ।

चोवत्तरिइमो समवाओ

१ थेरे ण अग्गिभूई गणहरे चोवत्तरि वासाइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्ध जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।

२ निसहाओ ण वासहर पव्वयाओ तिगिच्छिओ ण दहाओ सीतो या महानदीओ चोवत्तरि जोयण सयाइ साहियाइ उत्तराहिमुही पवहित्ता वइरामयाए जिब्भियाए चउजोयणायामाए पन्नास जोयण विक्खभाए वइरतले कुडे महया घडमुहपवत्तिएण मुत्ता वलिहारसठिएण पवाएण महया महया सद्दण पवडइ ।

३ एव सीतावि दक्खिणाहिमुही भाणियव्वा ।

४ चउत्थवज्जासु छसु पुढवीसु चोवत्तरि नरयावास सय-सहस्सा पण्णत्ता ।

पण्णहत्तरिइमो समवाओ

१ सुविहिस्स णं पुप्फदंतस्स अरहओ पन्नहत्तरिं जिणसया होत्था ।
२ सीतले णं अरहा पन्नहत्तरिं पुव्व-सहस्साइं अगारवासमज्झे वसित्ता मुंडे जाव-पव्वइए ।
३ संती णं अरहा पन्नहत्तरि-वास-सहस्साइं अगारवासमज्झे वसित्ता मुंडे जाव-पव्वइए ।

छावत्तरिइमो समवाओ

१ छावत्तरिं विज्जुकुमारावास-सय-सहस्सा पण्णत्ता ।
२ एवं-दीव-दिसा-उदहीणं विज्जुकुमारिंद-थणियमग्गीणं छण्हंपि जुगल्याणं छावत्तरिं सय-सहस्साइं ।

सत्तहत्तरिइमो समवाओ

१ भरहे राया चाउरंत चक्कवट्टी सत्तहत्तरिं पुव्व-सय-सहस्साइं कुमारवासमज्झे वसित्ता महारायाभिसेयं संपत्ते ।
२ अंगवंसाओ णं सत्तहत्तरिं रायाणो मुंडे-जाव-पव्वइया ।
३ गद्दतोय-तुसियाणं देवाणं सत्तहत्तरिं देव-सहस्स परिवारा पण्णत्ता ।
४ एगमेगे णं मुहुत्ते सत्तहत्तरिं लवे लवग्गेणं पण्णत्ते ।

अट्ठहत्तरिइमो समवाओ

१ सक्कस्स ण देविंदस्स देवरन्नो वेसमणे महाराया अट्ठहत्तरीए सुवण्णकुमार दीव-कुमारा वास-सय-सहस्साण आहेवच्च पोरेवच्च सामित्त भट्टित्त महारायत्त आणा ईसर सेणावच्च कारेमाणे पालेमाणे विहरइ ।

२ थेरे ण अकपिए अट्ठहत्तरि वासाइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे ।

३ उत्तरायणनियट्टे ण सूरिए पढमाओ मडलाओ एगूणचत्तालीस-इमे मडले अट्ठहत्तरि एगसट्ठिभाए दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता ण चार चरइ,

४ एव दक्खिणायणनियट्टे वि ।

एगूणासिइमो समवाओ

१ वलयामुहस्स ण पायालस्स हिट्ठिल्लाओ चरमताओ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए हेट्ठिल्ले चरमते एस ण एगूणासि जोयण-सहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते

२ एव केउस्सवि, जूयस्सवि ईसरस्सवि ।

३ छट्ठीए पुढवीए बहुमज्झदेसभायाओ छट्ठस्स घणोदहिस्स हेट्ठिल्ले चरमते एस ण एगूणासीति जोयण सहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ।

४ जबुद्दीवस्स ण दीवस्स बारस्स य बारस्स य एस ण एगूणा-सीइ जोयण सहस्साइ [illegible]

असीइमो समवाओ

१ सेज्जंसे णं अरहा असीइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेण होत्था।
२ तिविट्ठे णं वासुदेवे असीइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेण होत्था।
३ अयले णं बलदेवे असीइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेण होत्था।
४ तिविट्ठे णं वासुदेवे असीइं वास-सय-सहस्साइं महाराया होत्था।
५ आउबहुले णं कंडे असीइं जोयण-सहस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ते।
६ ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो असीई सामाणिय-साहस्सीओ पण्णत्ताओ।
७ जंबुद्दीवे णं दीवे असीउत्तरं जोयण-सयं ओगाहेत्ता सूरिए उत्तरकट्ठोवगए पढमं उदयं करेइ।

एक्कासीइमो समवाओ

१ नव-नवमिया णं भिक्खुपडिमा एक्कासीइ राइंदिएहिं चउहि य पंचुत्तरेहिं भिक्खासतेहिं अहासुत्तं जाव आराहिया।
२ कुंथुस्स णं अरहओ एक्कासीतिं मणपज्जवनाणि-सया होत्था।
३ विवाहपन्नत्तीए एक्कासीतिं महाजुम्म सया पण्णत्ता।

बासीइमो समवाओ

१ जंबुद्दीवे दीवे बासीयं मंडलसयं जं सूरिए दुक्खुत्तो संकमित्ता णं चारं चरइ तंजहा—
निक्खममाणे य पविसमाणे य।

२ समणे भगव महावीरे बासीए राइदिएहिं वीइक्कतेहिं गब्भाओ गब्भ साहरिए ।
३ महाहिमवयस्स ण वासहर पव्वयस्स उवरिल्लाओ चरमताओ सोगधियस्स कडस्स हेट्ठिल्ले चरमते एस ण बासीइ जोयण सयाइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ।
४ एव रुप्पिस्सवि ।

तेआसीइमो समवाओ

१ समणे भगव महावीरे बासीइ राइदिएहिं वीइक्कतेहिं तयासीइमे राइदिए वट्टमाणे गब्भाओ गब्भ साहरिए ।
२ सीयलस्स ण अरहओ तेसीई गणा तेसीई गणहरा होत्था ।
३ थरे ण मडियपुत्ते तेसीइ वासाइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्ध जाव सव्वदुक्खप्पहीणे ।
४ उसभे ण अरहा कोसलिए तेसीइ पुव्व सय-सहस्साइ अगारमज्झे वसित्ता मुडे-जाव-पव्वइए ।
५ भरहे ण राया चाउरतचक्कवट्टी तसीई पुव्वसयसहस्साइ अगारमज्झे वसित्ता जिणे जाए केवली सव्वण्णू सव्वभाव दरिसी ।

चउरासीइमो समवाओ

१ चउरासोइ निरयावास-सय-सहस्सा पण्णत्ता ।
२ उसभे ण अरहा कोसलिए चउरासीइ पुव्व सय सहस्साइ

१५ उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स चउरासीइं गणा, चउरासीइं गणहरा होत्था।

१६ उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स उसभसेण-पामोक्खाओ चउरासीइं समण-साहस्सीओ होत्था।

१७ सव्वेवि चउरासीइं विमाणावास सय-सहस्सा सत्ताणउइं च सहस्सा तेवीसं च विमाणा भवंतीति मक्खायं।

पचासीइमो समवाओ

१ आयारस्स णं भगवओ सचूलियागस्स पचासीइं उद्देसणकाला पण्णत्ता।

२ धायइसडस्स णं मदरा पचासीइं जोयण-सहस्साइं सव्वग्गेणं पण्णत्ता।

३ रुयए णं मडलियपव्वए पचासीइं जोयण सहस्साइं सव्वग्गेणं पण्णत्ते।

४ नदणवणस्स णं हेट्ठिल्लाओ चरमंताओ सोगंधियस्स कडस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं पचासीइं जोयण सहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

छलसीइमो समवाओ

१ सुविहिस्स णं पुप्फदतस्स अरहओ छलसीइं गणा छलसीइं गणहरा होत्था।

२ सुपासस्स णं अरहओ छलसीईं वाइ सया होत्था।

३ वोच्चाए ण पुढवीए बहुमज्झदेसभागाओ दो-चस्स घणोदहिस्स हेट्ठिल्ले चरमते एस ण छलसीइ जोयण-सहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्त ।

सत्तासीइमो समवाओ

१ मदरस्स ण पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरमताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमत एस ण सत्तासीइ जोयण-सहस्साई अबाहाए अतरे पण्णत्त ।

२ मदरस्स ण पव्वयस्स दक्खिणिल्लाओ चरमताओ दगभासस्स आवासपव्वयस्स उत्तरिल्ले चरमते एस ण सत्तासीई जोयण सहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्त ।

३ एव मदरस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरमताओ सखस्स आवास पव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरमते एस ण सत्तासीई जोयण सहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्त ।

४ एव चेव मदरस्स उत्तरिल्लाओ चरमताओ दगसीमस्स आवा सपव्वयस्स दाहिणिल्ले चरमते एस ण सत्तासीई जोयण सहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्त ।

५ छण्ह कम्मपगडीण आइम उवरिल्लवज्जाण सत्तासीई उत्तर पगडीओ पण्णत्ताओ ।

६ महाहिमवतकूडस्स ण उवरिमताओ सोगधियस्स कडस्स हेट्ठिले चरमते एस ण सत्तासीइ जोयणसयाइ अबाहाए अतरे पण्णत्त ।

७ एवं रुप्पिकूडस्सवि ।

अट्ठासीइमो समवाओ

१ एगमेगस्स णं चंदिमसूरियस्स अट्ठासीइ अट्ठासीइ महग्गहा परिवारो पण्णत्तो।

२ दिट्ठिवायस्स णं अट्ठासीइ सुत्ताइं पण्णत्ताइं तंजहा—उज्जुसुयं परिणयापरिणयं

३ एवं अट्ठासीइ सुत्ताणि भाणियव्वाणि जहा नंदीए।

४ मंदरस्स णं पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरमंताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एस णं अट्ठासीइ जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

५ एवं चउसु वि दिसासु नेयव्वं।

६ बाहिराओ उत्तराओ णं कट्ठाओ सूरिए पढमं छम्मासं अयमाणे चोयालीसइमे मंडलगते अट्ठासीति इगसट्ठिभागे मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता सूरिए चारं चरइ।

दक्खिणकट्ठाओ णं सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे चोयालीसतिमे मंडलगते अट्ठासीई इगसट्ठिभागे मुहुत्तस्स रयणिखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिनिवुड्ढित्ता णं सूरिए चारं चरइ।

एगूणणउइइमो समवाओ

१ उसभे णं अरहा कोसलिए इमीसे ओसप्पिणीए ततियाए सुसमदूसमाए समाए पच्छिमे भागे एगूणणउए अद्धमासेहिं सेसेहिं कालगए जाव सव्वदुक्खप्पहीणे।

२ समणे भगवं महावीरे इमीसे ओसप्पिणीए चउत्थाए दूसमसुसमाए समाए पच्छिमे भागे एगूणनउइए अद्धमासेहिं सेसेहिं कालगए जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे।

३ हरिसेणे णं राया चाउरंत चक्कवट्टी एगूणनउइं वास-सयाइं महाराया होत्था।

४ संतिस्स णं अरहओ एगूणनउइं अज्जा-साहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासंपया होत्था।

णउइइमो समवाओ

१ सीयले णं अरहा नउइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

२ अजियस्स णं अरहओ नउइं गणा नउइं गणहरा होत्था।

३ एवं संतिस्सवि।

४ सयंभुस्स णं वासुदेवस्स णउइवासाइं विजए होत्था।

५ सव्वेसि णं वट्टवेयड्ढपव्वयाणं उवरिल्लाओ सिहरतलाओ सोगंधियकंडस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं नउइजोयण सयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

एक्काणउइइमो समवाओ

१ एक्काणउइं परवेयावच्चकम्मपडिमाओ पण्णत्ताओ।

२ कालोए णं समुद्दे एक्काणउइं जोयण सय-सहस्साइं साहियाइं परिक्खेवेणं पण्णत्ते।

३ कुंथुस्स णं अरहओ एक्काणउइं आहोहिय-सया होत्था।

४ आउय गोयवज्जाण छण्ह कम्मपगडीण एकाणउई उत्तर पगडीओ पण्णत्ताओ ।

बाणउइइमो समवाओ

१ बाणउई पडिमाओ पण्णत्ताओ ।
२ थेरे ण इदभूती बाणउइ वासाइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे ।
३ मदरस्स ण पव्वयस्स बहुमज्झदेसभागाओ गोथुभस्स आवास पव्वयस्स पच्चच्छिमिल्ले चरमते एस ण बाणउई जोयण सहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते
४ एव चउण्ह पि आवासपव्वयाण ।

तेणउइइमो समवाओ

१ चदप्पहस्स ण अरहओ तेणउई गणा, तेणउई गणहरा होत्था ।
२ सतिस्स ण अरहओ तेणउई चउद्दसपुव्वि सया होत्था ।
३ तेणउईमडलगते ण सूरिए अतिवट्टमाणे वा निवट्टमाणे वा सम अहोरत्त विसम करेइ ।

चउणउइइमो समवाओ

१ निसह-नीलवतियाओ ण जीवाओ चउणउइ जोयण-सहस्साइ एवक छप्पन्न जोयणसय दोन्नि य एगूणवीसइभागे जोयणस्स

५ उत्तराओ णं कट्ठाओ सूरिए पढमं छम्मासं अयमाणे एगूणपन्नासइमे मंडलगते अट्ठाणउइ एकसट्ठिभागे मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढित्ता णं सूरिए चारं चरइ।

६ दक्खिणाओ णं कट्ठाओ सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे एगूणपन्नासइमे मंडलगते अट्ठाणउइ एकसट्ठिभाए मुहुत्तस्स रयणिखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिनिवुड्ढित्ता णं सूरिए चारं चरइ।

७ रेवई-पढम-जेट्ठा-पज्जवसाणाणं एगूणवीसाए नक्खत्ताणं अट्ठाणउइ ताराओ तारग्गेणं पण्णत्ताओ।

णवणउइमो समवाओ

१ मंदरे णं पव्वए णवणउइ जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते।

२ नंदणवणस्स णं पुरत्थिमिल्लाओ चरमंताओ पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एस णं नवनउइ जोयण-सयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

३ एवं दक्खिणिल्लाओ चरमंताओ उत्तरिल्ले चरमंते एस णं णवणउइ जोयण-सयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

४ उत्तरे पढमे सूरियमंडले नवनउइ जोयण-सहस्साइं साइरेगाइं आयाम विक्खंभेणं पण्णत्ते।

५ दोच्चे सूरियमंडले नवनउइ-जोयण-सहस्साइं साहियाइं आया-
[illegible]

४ एव धणू नालिया जुगे, अक्खे मुसलेवि हु ।
५ अभिजरओ आइमुहुत्त छप्पणउइ अगुलछाए पण्णत्ते ।

सत्ताणउइइमो समवाओ

१ मन्दरस्स ण पव्वयस्स पच्चच्छिमिल्लाओ चरमताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पच्चच्छिमिल्ले चरमते एस ण सत्ताणउइ जोयण-सहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ।
२ एव चउद्दिसि पि ।
३ अट्ठण्ह कम्मपगडीण सत्ताणउइ उत्तरपयडीओ पण्णत्ताओ ।
४ हरिसेणे ण राया चाउरत चक्कवट्टी देसूणाइ सत्ताणउइ वाससयाइ अगारमज्झे वसित्ता मुडे-जाव पव्वइए ।

अट्ठाणउइइमो समवाओ

१ नदणवणस्स ण उवरिल्लाओ चरमताओ पडुयवणस्स हेट्ठिल्ले चरमते एस ण अट्ठाणउइ जोयण-सहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ।
२ मदरस्स ण पव्वयस्स पच्चच्छिमिल्लाओ चरमताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पुरच्छिमिल्ले चरमते एस ण अट्ठाणउइ जोयण सहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ।
३ एव चउद्दिसिपि ।
४ दाहिणभरहद्धस्स धणुप्पिट्ठे जोयण सयाइ किंचूणाइ आयामेण पण्णत्ते ।

५ उत्तराओ णं कट्ठाओ सूरिए पढमं छम्मासं अयमाणे एगूणपन्नासइमे मंडलगते अट्ठाणउइ एकसट्ठिभाए मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता णं सूरिए चारं चरइ।

६ दक्खिणाओ णं कट्ठाओ सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे एगूणपन्नासइमे मंडलगते अट्ठाणउइ एकसट्ठिभाए मुहुत्तस्स रयणिखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता णं सूरिए चारं चरइ।

७ रेवईपढमजेट्ठापज्जवसाणाणं एगूणवीसाए नक्खत्ताणं अट्ठाणउइ ताराओ तारग्गेणं पण्णत्ताओ।

णवणउइइमो समवाओ

१ मंदरे णं पव्वए णवणउइ जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते।

२ नंदणवणस्स णं पुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एस णं णवणउइ जोयण-सयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

३ एवं दक्खिणिल्लाओ चरमंताओ उत्तरिल्ले चरमंते एस णं णवणउइ जोयण-सयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

४ उत्तरे पढमे सूरियमंडले णवणउइ जोयण-सहस्साइं साइरेगाइं आयाम-विक्खंभेणं पण्णत्ते।

५ दोच्चे सूरियमंडले णवणउइ जोयण-सहस्साइं साहियाइं आयाम-विक्खंभेणं पण्णत्ते।

६ तइए सूरियमंडले णवणउइ जोयण-सहस्साइं साहियाइं आयाम-

थमित्ता मुडे जाव-पव्वइए।

३ वेमाणियाण देवाण विमाणपागारा तिण्णि तिण्णि जोयण सयाइ उड्ढ उच्चत्तण पण्णत्ता।

४ समणस्स भगवओ महावीरस्स तिन्नि सयाणि चोद्दसपुव्वीण होत्था।

५ पचधणु-सयस्स ण अतिमसारीरियस्स सिद्धिगयस्स सातिरेगाणि तिण्णि धणु-सयाणि जीवप्पदेसोगाहणा पण्णत्ता। सूत्र १०४।

अध्दुट्ठसययमो समवाओ

१ पासस्स ण अरहओ पुरिसादाणीयस्स अद्धट्ठसयाइ चोद्दस पुव्वीण सपया होत्था।

२ अभिनदणे ण अरहा अधुट्ठाइ धणु सयाइ उड्ढ उच्चत्तण होत्था। सूत्र १०५।

चउ सययमो समवाओ

१ समवे ण अरहा चत्तारि धणुसयाइ उड्ढ उच्चत्तण होत्था।

२ सव्वेवि ण णिसढ नीलवता वासहरपव्वया-
चत्तारि चत्तारि जोयण सयाइ उड्ढ उच्चत्तण पण्णत्ता।
चत्तारि चत्तारि गाउय सयाइ उव्वेहण पण्णत्ता।

३ सव्वेवि ण वक्खारपव्वया णिसढ-नीलवत-वासहरपव्वयए ण चत्तारि चत्तारि जोयण-सयाइ उड्ढ उच्चत्तण पण्णत्ता।

चत्तारि चत्तारि गाउय-सयाइ उव्वेहेण पण्णत्ता ।

४ आणय-पाणएसु दोसु कप्पसु चत्तारि विमाण सया पण्णत्ता ।

५ समणस्स ण भगवओ महावीरस्स चत्तारि सया वाईण सदेव मणुयासुरम्मि लोगम्मि वाए अपराजियाण उक्कोसिआ वाइसपया होत्था । सूत्र १०६ ।

अद्धपचमसययमो समवाओ

१ अजिते ण अरहा अद्धपचमाइ धणु-सयाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।

२ सगरे ण राया चाउरत चक्कवट्टी अद्धपचमाइ धण-सयाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था । सूत्र १०७ ।

पच सययमो समवाओ

१ सव्वेवि ण वक्खारपव्वया सीआ सीआओ महानईओ मदर पव्वयतेण पच पच जोयण सयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, पच पच गाउय-सयाइ उव्वेहेण पण्णत्ता ।

२ सव्वेवि ण वासहरकूडा पच पच जोयण-सयाइ उड्ढ उच्चत्तेण मूले पच पच जोयण-सयाइ विक्खभेण पण्णत्ता ।

३ उसभे ण अरहा कोसलिए पच धणु-सयाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।

४ भरहे ण राया चाउरत चक्कवट्टी पच धणु-सयाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।

५ सामणस गधमादण वि-जुप्पभ मालवताण वक्खारपव्वयाण मदरपव्वयतेण–
पच पच जोयण-सयाइ उड्ढ उच्चत्तण पण्णत्ता ।
पच पच गाउ-सयाइ उव्वेहेण पण्णत्ता ।

६ सव्वेवि ण वक्खारपव्वयकूडा हरिहरिस्सहकूडवज्जा–
पच पच जोयण सयाइ उड्ढ उच्चत्तण पण्णत्ता ।
मूले पच पच जोयण-सयाइ आयाम विक्खभेण पण्णत्ता ।

७ सव्वेवि ण नदणकूडा बलकूडवज्जा–
पच पच जोयण सयाइ उड्ढ उच्चत्तण
मूले पच पच जोयण-सयाइ आयाम विक्खभेण पण्णत्ता ।

८ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणा पच पच जोयण-सयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता । सूत्र १०८ ।

छ-सययमो समवाओ

१ सणक्कुमार-माहिंदेसु कप्पेसु विमाणा छ जोयण-सयाइं उड्ढ उच्चत्तण पण्णत्ता ।

२ चुल्लहिमवतकूडस्स उवरिल्लाओ चरमताओ चुल्लहिमवतस्स वासहरपव्वयस्स समधरणितल एस ण छ जोयण-सयाइं अबा हाए अतरे पण्णत्त

३ एव सिहरीकूडस्स वि ।

४ पासस्स ण अरहओ छ सया वाईण सदेवमणुयासुरे लोए वाए अपराजियाण उक्कोसिया वाईसपया होत्या ।

५ अभिवद्दे ण कुलगर छ धणु-सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।
६ वासुपुज्जे णं अरहा छहिं पुरिस सएहिं सद्धिं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए । सूत्र १०९ ।

सत्त-सययमो समवाओ

१ बम-लतएसु कप्पेसु विमाणा सत्त सत्त जोयण-सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।
२ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स सत्त जिण सया होत्था ।
३ समणस्स भगवओ महावीरस्स सत्त वउव्विय सया होत्था ।
४ अरिट्ठनेमी णं अरहा सत्त वास सयाइं देसूणाइं केवलपरियागं पाउणित्ता सिद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे ।
५ महाहिमवतकूडस्स णं उवरिल्लाओ चरमंताओ महाहिमवतस्स वासहरपव्वयस्स समधरणितले एस णं सत्त जोयण-सयाइं अवाहाए अंतरे पण्णत्ते ।
६ एवं रुप्पिकूडस्स वि । सूत्र ११० ।

अट्ठ-सययमो समवाओ

१ महासुक्क-सहस्सारेसु दोसु कप्पेसु विमाणा अट्ठ जोयण-सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।
२ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए पढम कंडे अट्ठसु जोयण सएसु वाणमंतर भोमेज्जविहारा पण्णत्ता ।
३ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अट्ठ-सया अणुत्तरोववाइयाण

दयाण गइकल्लाणाण ठिइकल्लाणाण आगमेसिभद्दाण उक्को सिया अणुत्तरोववाइयसपया होत्था ।

४ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमि भागाओ अट्ठहि जोयण-सएहिं सूरिए चार चरइ ।

५ अरहओ ण अरिट्ठनेमिस्स अट्ठ-सयाइ वाईण सदेवमणुयासुरमि लोगमि वाए अपराजियाण उक्कोसिया वाई-सपया होत्था । सूत्र १११ ।

नव-सययमो समवाओ

१ आणय-पाणय-आरण-अच्चुएसु कप्पेसु विमाणा नव नव जोयण सयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ।

२ निसढकूडस्स ण उवरिल्लाओ सिहरतलाओ णिसढस्स वास हरपव्वयस्स समे धरणितले एस ण नव जोयण-सयाइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ।

३ एव नीलवतकूडस्स वि ।

४ विमलवाहणे ण कुलगरे ण नव धणु-सयाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।

५ इमीसे ण रयणप्पहाए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ नवहिं जोयण-सएहिं सव्वुवरिमे तारारूवे चार चरइ ।

६ निसढस्स ण वासहरपव्वयस्स उवरि[illegible]ओ सिहरतलाओ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवी[illegible] एस ण नव [illegible]

७

सहस्सइमो समवाओ

१ सव्वे वि ण गवज्जविमाणे दस दस जायण-सयाइ उड्ढ उच्चत्तण पण्णत्त ।

२ सव्वे वि ण जमगपव्वया–
दस दस जोयण-सयाइ उड्ढ उच्चत्तण पण्णत्ता ।
दस दस गाउय सयाइ उव्वेहेण पण्णत्ता ।
मूले दस दस जोयण-सयाइ आयाम विक्खभेण पण्णत्ता ।

३ एव चित्त विचित्तकूडा वि भाणियव्वा ।

४ सव्वे वि ण वट्टवेयड्ढपव्वया–
दस दस जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तण पण्णत्ता ।
दस दस गाउयसयाइ उव्वेहेण पण्णत्ता ।
मूले दस दस जोयणसयाइ विक्खभेण पण्णत्ता ।
सव्वत्थ समा पल्लगसठाणसठिया पण्णत्ता ।

५ सव्वे वि ण हरि हरिस्सहकूडा वक्खारकूडवज्जा–
दस दस जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तण पण्णत्ता ।
मूले दस जोयणसयाइ विक्खभेण

६ एव बलकूडा वि नन्दणकूडवज्जा ।

७ अरहा वि अरिट्ठनेमी दस-वास-सयाइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे ।

८ पासस्स ण अरहओ दस-सयाइ जिणाण होत्था ।

९ पासस्स ण अरहओ दस अतेवासी-सयाइ कालगयाइ जाव-सव्व दुक्खप्पहीणाइ ।

१० पउमद्दह पुडरीयद्दहा य दस दस जोयण-सयाइ आयामेण पण्णत्ता । सूत्र ११३ ।

एक्कारस-सयइमो समवाओ

१ अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं विमाणे एक्कारस-जोयण-सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

२ पासस्स णं अरहओ इक्कारस-सयाइं वेउव्वियाणं होत्था। सूत्र ११४।

बि-सहस्सइमो समवाओ

१ महापउम महापुंडरीयद्दहाणं दो दो जोयण सहस्साइं आयामेणं पण्णत्ता। सूत्र ११५।

ति सहस्सइमो समवाओ

१ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए वइरकंडस्स उवरिल्लाओ चरमंताओ लोहियक्खकंडस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं तिण्णि जोयण-सहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। सूत्र ११६।

चउ-सहस्सइमो समवाओ

१ तिगिच्छि केसरिद्दहाणं चत्तारि चत्तारि जोयण सहस्साइं आयामेणं पण्णत्ताइं। सूत्र ११७।

पच्च-सहस्सइमो समवाओ

१ धरणितले मंदरस्स णं पव्वयस्स बहुमज्झदेसभाए रुयग नाभीओ चउद्दिसिं पंच पंच जोयण सहस्साइं अबाहाए अंतरे मंदर-पव्वए पण्णत्ते । सूत्र ११८ ।

छ-सहस्सइमो समवाओ

१ सहस्सारे णं कप्पे छ विमाणावास-सहस्सा पण्णत्ता। सूत्र ११९।

सत्त-सहस्सइमो समवाओ

१ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए रयणस्स कंडस्स उवरिल्लाओ चरमंताओ पुलगस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं सत्त जोयण-सहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते । सूत्र १२० ।

अट्ठ-सहस्सइमो समवाओ

१ हरिवास रम्मयाणं वासा अट्ठ जोयण-सहस्साइं साइरेगाइं वित्थरेणं पण्णत्ता। सूत्र १२१ ।

नव-सहस्सइमो समवाओ

१ दाहिणड्ढ भरहस्स णं जीवा पाईण पडीणायया दुहओ समुद्दं पुट्ठा नव जोयण-सहस्साइं आयामेणं पण्णत्ता । सूत्र १२२ ।

दस-सहस्सइमो समवाओ

१ मंदरे ण पव्वए धरणितले दस जोयणसहस्साइं विक्खभेण पण्णत्ते । सूत्र १२३ ।

एग-सयसहस्सइमो समवाओ

१ जबुद्दीवेण दीवे एग जोयण-सय-सहस्स आयाम विक्खभेण पण्णत्ता सूत्र १२४ ।

वि-सयसहस्सइमो समवाओ

१ लवणे ण समुद्द दो जोयण-सय सहस्साइ चक्कवालविक्खभेण पण्णत्ते । सूत्र १२५ ।

ति-सयसहस्सइमो समवाओ

१ पासस्स ण अरहओ तिन्नि सय-साहस्सीओ सत्तावीस च सहस्साइ उक्कोसिया सावियासपया होत्था । सूत्र १२६ ।

चउ-सयसहस्सइमो समवाओ

१ धायइखडे ण दीवे चत्तारि जोयण-सय सहस्साइ चक्कवाल विक्खभेण पण्णत्ते । सूत्र १२७ ।

पच सयसहस्सइमो समवाओ

१ लवणस्स ण समुद्दस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरमताओ पच्चच्छि

मिल्ल धरमने एस ण पच ओयण-सय-सहस्साइं अबाहाए अन्तरे पण्णत्ते । सूत्र १२८ ।

छ सयसहस्सइमो समवाओ

१ भरहे ण राया चाउरत-चक्कवट्टी छ पुव्व-सय-सहस्साइं रायमज्झ वसित्ता मुडे-जाव-पव्वइए । सूत्र १२६ ।

सत्त सयसहस्सइमो समवाओ

१ जबुदीवस्स ण दीवस्स पुरच्छिमिल्लाओ वेइयताओ धायइसड चक्कवालस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमते एसण सत्त-जोयण-सय सहस्साइं अबाहाए अतरे पण्णत्ते । सूत्र १३० ।

अट्ठ-सयसहस्सइमो समवाओ

१ माहिंदे ण कप्पे अट्ठ विमाणावास-सय-सहस्साइं पण्णत्ताइं । सूत्र १३१ ।

नव-सहस्सइमो समवाओ

१ अजियस्स ण अरहओ साइरेगाइं नव-ओहिनाणि-सहस्साइं होत्था । सूत्र १३२ ।

दस-सयसहस्सइमो समवाओ

१ पुरिससीहे ण वासुदेवे दस-वास सय-सहस्साइं सव्वाउय पालइत्ता पचमाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने । सूत्र १३३ ।

एग-कोड़िइमो समवाओ

१ समणे भगवं महावीरे तित्थगरभवग्गहणाओ छट्ठे पोट्टिल भवग्गहणे एगं वासकोडि सामण्णपरियाग पाउणित्ता सहस्सारे कप्पे सव्वट्ठविमाणे देवत्ताए उववन्ने । सूत्र १३४ ।

एग कोडाकोडिइमो समवाओ

१ उसभसिरिस्स भगवओ चरिमस्स य महावीरवद्धमाणस्स एगा सागरोवमकोडाकोडी अबाहाए अंतरे पण्णत्ते । सूत्र १३५ ।

दुवालसंगे गणिपिडगे पन्नत्ते तजहा–
आयारे सूयगडे, ठाणे, समवाए, विवाहपन्नत्ती णायाधम्म कहाओ उवासगदसाओ अंतगडदसाओ अणुत्तरोववाइय दसाओ पण्हावागरणाइ विवागसुए दिट्ठिवाए ।

प्र० से कि त आयारे ?

उ० आयारे ण समणाण निग्गंथाण आयार गोयर विणय वेणइय ट्ठाण गमण चकमण पमाण जोग-जुजण भासासमिति गुत्ती सज्जोवहि भत्त-पाण उग्गम उप्पायण एसणा विसोहि-सुद्धा सुद्धग्गहण वय णियम तवोवहाण सुप्पसत्थमाहिज्जइ ।
से समासओ पचविहे पन्नत्ते, तजहा–
णाणायारे, दंसणायारे, चरित्तायारे तवायारे विरियारे ।
आयारस्स ण परित्ता वायणा सखेज्जा अणुओगदारा, सखेज्जाओ पडिवत्तीओ सखेज्जा वेढा, सखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ ।

पुरुषवर तित्थगर गणहराण सम्मत्तभरहाहिवाण चक्कीण चेव चक्कहर हलहराण य, वासाण य निगमा य समाए एए अण्णे य एवमाइ एत्य वित्थरेण अत्था समाहिज्जति समवायस्स ण परित्ता वायणा-जाव से ण अगट्ठयाए चउ अगे एगे अज्झयणे एगे सुयक्खधे, एगे उद्देसणकाले एगे समु सणकाले एगे चउयाले पदसयसहस्से पदग्गेण पण्णत्ते ।

सखेज्जाणि अक्खराणि जाव चरण करण परूवणया आ विज्जति । से त्त समवाए । सूत्र १३६ ।

प्र० से कि त वियाहे ?

उ० वियाहेण ससमया विआहिज्जति परसमया विआहिज्जा ससमय परसमया विआहिज्जति ।

जावा विआहिज्जति अजीवा विआहिज्जति, जीवाजीव विआहिज्जति ।

लोगे विआहिज्जइ अलोगे विआहिज्जइ लोगालो विआहिज्जइ ।

वियाहेण नाणाविह सुर-नरिंद रायरिसि विविह ससइअपुच्छि याण, जिणेण वित्थरेण भासियाण दव्व गुण खेत्त काल पज्जव पदेस परिणाम जहच्छिय भाव अणुगम निक्खेव णयप्पमाण सुनिउणोवक्कम विविहप्पकार पगड पयासियाण लोगालोग पयासियाण ससारसमुद्द रुद उत्तरण समत्थाण, सुरवइ सपूजियाण भविय-जण-पयहिययाभिनदियाण तमरय विद्धसणाण सुदिट्ठ दीवभूय ईहा-मति-बुद्धि-वद्धणाण, छत्तीस सहस्स-मणूणयाण वागरणाण दसणाओ सुयत्थ बहुविहप्पगारा सीसहियत्था य गुणमहत्था ।

वियाहस्स ण परित्ता वायणा सखेज्जा अणुओगदारा

संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ।

से णं अंगट्ठयाए पंचमे अंगे एगे सुयक्खंधे एगे साइरेगे अज्झयणसए दस उद्देसग-सहस्साइं दस समुद्देसग-सहस्साइं, छत्तीसं वागरण-सहस्साइं चउरासीइं पय-सहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ताइं।

संखेज्जाइं अक्खराइं अणंता गमा, अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति।

से एवं आया से एवं णाया, से एवं विण्णाया, एवं चरण करण-परूवणया आघविज्जति। से त्तं वियाहे। सूत्र १४०।

प्र० से किं तं णायाधम्मकहाओ ?

उ० णायाधम्मकहासु णं णायाणं नगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वण-संडा रायाणो अम्मा पियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्म कहाओ इहलोइय-परलोइय इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्व ज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं परियागा संलेहणाओ भत्त पच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चाइ याइं पुणबोहिलाभा अंतकिरियाओ य आघविज्जंति जाव णाया धम्मकहासु णं पव्वइयाणं विणय करण जिण सामि सासणवरे संजम-पइण्ण पालण धिइ मइ-ववसाय दुब्बलाणं तव नियम-तवोवहाण रण दुद्धर भर भग्गय णिसह णिसि ट्ठाणं घोर परीसह-पराजियसहपारद्ध रुद्ध सिद्धालय मग्ग निग्गयाणं, विसय सुहतुच्छ-आसावस दोस-मुच्छियाणं विराहिय चरित्त-नाण-दंसण जइ-गुण विविहप्पयार निस्सार

सुनयाण संसार अपारदुक्ख-दुग्गइ भवविविहपरंपरापवंचा ।
धीराण य जिय परिसह-कसाय-सेण्ण धिय धणिय-संजम
उच्छाह निच्छियाणं आराहिय-नाण दसण चरित्त जोग
सुक्खाइ अणोवमाइ निस्सल्ल-सुद्ध सिद्धालय मग्गमभिमहाण
सुर भवण विमाण भुत्तूण चिरच भोगभोगाणि ताणि दिव्वाणि
महरिहाणि ततो य कालक्कमचुयाण जह य पुणोलद्धसिद्धि
मग्गाण अंतकिरिया । चलियाण य सदेव माणुस्स धीर-करण
कारणाणि बोधण-अणुसासणाणि गुण दोस दरिसणाणि दिट्ठ ते
पच्चये य सोऊण लोगमुणिणो जहट्ठिय सासणम्मि जर मरण
नासणकरे आराहिय संजमा य सुरलोगपडिनियत्ता ओवेंति
जह सासयं सिव सव्वदुक्खमोक्खं । एए अण्णे य एवमाइ
यत्था वित्थरेण य ।
णायाधम्मकहासु ण परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा
जाव संखेज्जाओ संगहणीओ ।
से ण अगट्ठयाए छट्ठ अंगे दो सुअक्खंधा, एगूणवीस
अज्झयणा, ते समासओ दुविहा पन्नत्ता तजहा—
चरित्ता य कप्पिया य, दस धम्मकहाणं वग्गा, तत्थ ण
एगमेगाए धम्मकहाए पच पच अक्खाइया सयाइं
एगमेगाए अक्खाइयाए पच पच उवक्खाइया सयाइ,
एगमेगाए उवक्खाइयाए पच पच अक्खाइय उवक्खाइया
सयाइं,
एवमेव सपुव्वावरेण अद्धुट्ठाओ अक्खाइयाकोडीओ भवतीति
मक्खायाओ,
एगूणतीस उद्देसणकाला एगूणतीसं समुद्देसणकाला संखेज्जाइ
पयसहस्साइ पयग्गेण पण्णत्ता

सखेज्जा अक्खरा जाव-चरण-करण-परूवणया आघविज्जंति ।
से त्त णायाधम्मकहाओ । सूत्र १४१ ।

प्र० से किं त उवासगदसाओ ?

उ० उवासगदसासु ण उवासयाण णगराइ उज्जाणाइ चेइयाइ वणखडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइ धम्मायरिया, धम्मकहाओ इहलोइय-परलोइय इड्ढिविसेसा, उवासयाण सीलव्वय वेरमण-गुण पच्चक्खाण-पोसहोववास पडिवज्जण याओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणा पडिमाओ उवसग्गा सलेहणाओ भत्त-पच्चक्खाणाइ पाओवगमणाइ देवलोग-गमणाइ सुकुल पच्चायायाइ पुण बोहिलाभा अतकिरियाओ आघविज्जति । उवासगदसासु ण उवासयाण रिद्धिविसेसा परिसा वित्थर धम्म-सवणाणि बोहिलाभ-अभिगम सम्मत्त विसुद्धया थिरत्त मूलगुणउत्तरगुणाइयारा ठिई वसेसा य बहुविसेसा, पडिमा भिग्गहग्गहणपालणा उवसग्गाहियासणा, णिरवसग्गा य तवा य विचित्ता सील्व्वय-गुण-वेरमण पच्चक्खाणपोसहोववासा, अपच्छिममारणतिया य सलेहणाझोसणाहि अप्पाण जह य भावइत्ता बहूणि भत्ताणि अणसणाए य छेअइत्ता उववण्णा कप्पवरविमाणत्तमेसु जह अणभवति सुरवर विमाणवर पोंड रीएसु सोक्खाइ अणोवमाइ कमेण भुत्तूण उत्तमाइ तओ *आउक्खएण चुया समाणा जह जिणमयमि बोहि लद्धूण य* सजमुत्तम तमरयोघविप्पमुक्का उवेंति जह अक्खय सव्वदुक्ख मोक्ख । एए अन्ने य एवमाइअत्था वित्थरेण य । उवासयदसासु ण परित्ता वायणा, सखेज्जा अणुओगदारा *-जाव-सखेज्जाओ सगहणीओ ।*

से णं अंगट्ठयाए सत्तमे अंगे एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा, दस उद्देसणकाला दस समुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ता ।

से त्तं उवासगदसाओ । सूत्र १४२ ।

प्र० से किं तं अंतगडदसाओ ?

उ० अंतगडदसासु णं अंतगडाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणाइं रायाअम्मापियरो समोसरणा धम्मायरिया, धम्मकहा, इहलोइय-परलोइय इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं पडिमाओ बहुविहाओ खमा अज्जवं मद्दवं च सोअं च सच्चसहियं सत्तरसविहो य संजमो उत्तमं च बंभं आकिंचणया तवो चियाओ समिइगुत्तीओ चेव तह अप्पमायजोगो सज्झायज्झाणेण य उत्तमाणं दोण्हं पि लक्खणाइं पत्ताण य संजमुत्तमं जियपरीसहाणं चउव्विहकम्मक्खयम्मि जह केवलस्स लंभो परियाओ जत्तिओ य जह पालिओ मुणिहिं पायोवगओ य जो जहिं जत्तियाणि भत्ताणि छेअइत्ता अंतगडो मुनिवरो तमरयोघविप्पमुक्को मोक्खसुहमणुत्तरं च पत्ता । एए अन्ने य एवमाइअत्था वित्थारेण परूवेई ।

अंतगडदसासु णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा जाव संखेज्जाओ संगहणीओ जाव से णं अंगट्ठयाए अट्ठमे अंगे एगे सुयक्खंधे दस अज्झयणा सत्त वग्गा दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ता संखेज्जा अक्खरा जाव एवं चरण-करण परूवणया आघविज्जंति । से त्तं अंतगडदसाओ । सूत्र १४३ ।

प्र० से किं तं अणुत्तरोववाइयदसाओ ?

उ० अणुत्तरोववाइयदसासु ण अणत्तरोववाइयाण नगराइ उज्जाणाइ चेइयाइ वणखडा रायाणो अम्मापियरो, समोसरणाइ धम्मायरिया धम्ममहाओ इहलोग-परलोग इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइ परियागो पडिमाओ सलेहणाओ भत्त-पाण-पच्चक्खाणाइ पाओवगमणाइ अणुत्तरोववाओ सुकुलपच्चायाया पुणो बोहिलाभो अतकिरियाओ य आघविज्जति ।

अणुत्तरोववाइयदसासु ण तित्थकरसमोसरणाइ परममगलजगहियाणि जिणातिसेसा य बहुविसेसा जिणसीसाण चेव समणगणपवरगधहत्थीण थिरजसाण परिसहसेण्णरिउबलपमद्दणाण तव दित्त चरित्त णाण-सम्मत्त-सार विविहप्पगार वित्थर-पसत्थगुणसजुयाण अणगारमहरिसीण अणगारगुणाण वण्णओ उत्तम वर-तव विसिट्ठ णाण जोगजुत्ताण जह य जगहिय भगवओ जारिसा इड्ढिविसेसा देवासुरमाणसाण परिसाण पाउब्भावा य जिणसमीव जह य उवासति, जिणवर जह य परिकहति धम्म लोगगुरु अमरन्नर सुर-गणाण सोऊण य तस्स भासिय अवसेस-कम्म विसय विरत्ता नरा जहा अब्भुवेंति धम्ममुराल सजम तव चावि बहुविहप्पगार जह बहूणि वासाणि अणुचरित्ता आराहियनाणदसणचरित्तजोगा जिणवयणमणुगय महियभासिया जिणवराण हियएणमणुण्णेत्ता जे य जहि जत्तियाणि भत्ताणि छेअइत्ता लद्धूण य समाहिमुत्तमज्झाणजोगजुत्ता उववन्ना मुणिवरोत्तमा जह अणत्तरेसु पावति, जह अणुत्तर तत्थ विसयसोक्ख तओ य चुआ कमण काहिंति सजया जहा य अतकिरिय एए अन्ने य एवमाइ अत्था वित्थरेण ।

अणुत्तरोववाइयदसासु ण परित्ता वायणा सखेज्जा अणुओग दारा सखेज्जाओ सगहणीओ ।

से ण अगट्ठयाए नवमे अगे, एगे सुयक्खधे दस अज्झयणा, तिन्नि वग्गा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, सखेज्जाइ पयसयसहस्साइ पयग्गेण पण्णत्ता ।

सखेज्जाणि अक्खराणि-जाव एव चरण करण-परूवणया आघविज्जति । से त्त अणुत्तरोववाइयदसाओ । सूत्र १४४ ।

प्र० से किं त पण्हावागरणाणि ?

उ० पण्हावागरणेसु णअट्ठुत्तर पसिणसय, अट्ठुत्तर पसिणापसिण सय विज्जाइसया नागसुवण्णेहिं सद्धि दिव्वा सवाया आघ विज्जति ।

पण्हावागरणदसासु ण ससमय-परसमय पण्णवय-पत्तेअबुद्ध विविहत्थभासा भासियाण, अइसय-गुण-उवसम णाणप्पगार आयरियभासियाण वित्थरेण वीरमहेसीहिं विविहवित्थरभासि याण च जगहियाण, अद्दागगुट्ठ-बाहु असि मणि-खोमआइच्च माइयाण विविह महापसिण विज्जा मणपसिणविज्जा देव यपयोग पहाणगुणप्पगासियाण, सब्भूय-दुगुणप्पभाव नरगण मइविम्हयकराण अईसयमईयकाल-समय-दम सम तित्थकरुत्त मस्स ठिइकरणकारणाण, दुरहिगम दुरवगाहस्स सव्वसव्वन्नु सम्मअस्स अबुहजणविबोहणकरस्स पच्चक्खयपच्चयकराण पण्हाण विविहगुणमहत्था जिणवरप्पणीया आघविज्जति ।

पण्हावागरणेसु ण परित्ता वायणा सखेज्जा अणुओगदारा जाव-सखेज्जाओ सगहणीओ ।

से ण अगट्ठयाए दसमे अगे एगे सुयक्खधे पणयालीस उद्दे सणकाला, पणयालीस समुद्देसणकाला सखेज्जाणि पयसय

सहस्साणि पयग्गेणं पण्णत्ता।
संखेज्जा अक्खरा अणंता गमा-जाव चरण-करण-परूवणया आघविज्जति। से त्तं पण्हावागरणाइं। सूत्र १४५।

प्र० से किं तं विवागसुयं ?

उ० विवागसुए णं सुकडदुक्कडाणं कम्माणं फलविवागे आघविज्जति, से समासओ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा–
दुहविवागे चेव सुहविवागे चेव।
तत्थ णं दस दुहविवागाणि, दस सुहविवागाणि।

प्र० से किं तं दुहविवागाणि ?

उ० दुहविवागेसु णं दुहविवागाणं नगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणसंडा रायाणो अम्मापियरो, समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ नगरगमणाइं संसारपबंधे दुहपरंपराओ य आघविज्जंति। से त्तं दुहविवागाणि।

प्र० से किं तं सुहविवागाइं ?

उ० सुहविवागेसु सुहविवागाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणसंडा रायाणो अम्मापियरो, समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइय परलोइय इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं परियागा पडिमाओ संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाती पुण बोहिलाभो अंतकिरियाओ य आघविज्जंति।

दुहविवागेसु णं पाणाइवाय अलियवयण-चोरिक्ककरण-परदारमेहुणससंगयाए महतिव्वकसाय इंदियप्पमाय पावप्पओय असुहज्झवसाण-संचियाणं कम्माणं पावगाणं पावअणुभागफलविवागा णिरय-गति तिरिक्खजोणिबहुविह-वसणसय

परपरापबद्धाण, मणयत्त वि आगयाण जहा पावकम्मसेसेण पावगा होंति फलविवागा, वह वसण विणास-नासा कन्नुट्ठ गुट्ठ कर चरण नहच्छेयण जिब्मच्छेयण अजण-कडग्गिदाह गय चलण मलण फालण उल्लबण सूल लया लउड लट्ठि भजण तउ-सीसग-तत्त तेल्ल कलकल अहिसिचण कुभिपाग कपण थिरबधण वेह-वज्झ-कत्तण पतिभय-करकरपल्लीवणादिदारु णाणि दुक्खाणि अणोवमाणि ।

बहुविविहपरपराणुबद्धा ण मुच्चति पावकम्मवल्लीए, अवेयइत्ता हु णत्थि मोक्खो तवेण धिइधणियबद्धकच्छेण सोहण तस्स वावि हुज्जा ।

एत्तो य सुहविवागेसु ण सील सजम णियम-गुण तवोवहाणेसु साहूसु सुविहिएसु अणुकपासयपओगतिकालमइ विसुद्ध भत्त पाणाइ पययमणसा हिय सुह नीसेस तिव्व परिणाम निच्छयमई पयच्छिऊण पयोगसुद्धाइ जह य निव्वत्तेंति उ बोहिलाभ जह य परित्तीकरेंति । नर नरय तिरिय सुर-गमण विपुल-परि यट्ट-अरति भय विसाय-सोग मिच्छत्त सल-सकड, अन्नाण तमधकार चिक्खिल्लसुदुत्तार जर मरण जोणि-सखुभिय चक्कवाल सोलसकसाय सावयपयडचड अणाइअ अणवदग्ग ससार सागरमिण । जह य णिबधति आउग सुरगणेसु जह य अणभवति सुरगणविमाणसोक्खाणि अणोवमाणि ततो य कालतरे चुआण इहेव नरलोगमागयाण आउ वपु पुण्ण-रूव जाति कुल जम्म आरोग्ग बुद्धि मेहा विसेसा, मित्त जण सयण धण धण्ण विभव समिद्ध सार समुदय विसेसा बहुविह काम भोगुब्भवाण सोक्खाण सुहविवागोत्तमेसु अणुवरयपर पराणुबद्धा असुभाण सुभाण चेव कम्माण भासिआ बहुविहा

विवागा विवागसुयम्मि भगवया जिणवरेण संवेगकारणत्था अन्ने वि य एवमाइया बहुविहा वित्थरेण अत्थपरूवणया आघविज्जति।

विवागसुयस्स णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा जाव-संखेज्जाओ संगहणीओ।

से णं अंगट्ठयाए एक्कारसमे अंगे वीसं अज्झयणा, वीसं उद्देसणकाला वीसं समुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ता। संखेज्जाणि अक्खराणि अणंता गमा अणंता पज्जवा जाव एवं चरण-करण-परूवणया आघविज्जति।

से त्तं विवागसुए। सूत्र १४६।

प्र० से किं तं दिट्ठिवाए ?

उ० दिट्ठिवाए णं सव्वभावपरूवणया आघविज्जति।
से समासओ पंचविहे पण्णत्ते तंजहा—
परिकम्मं सुत्ताइं पुव्वगयं अणुओगो चूलिया।

प्र० से किं तं परिकम्मे ?

उ० परिकम्मे सत्तविहे पण्णत्ते तंजहा—
सिद्धसेणियापरिकम्मे मणुस्ससेणियापरिकम्मे पुट्ठसेणियापरिकम्मे ओगाहणसेणियापरिकम्मे उवसंपज्जसेणियापरिकम्मे विप्पजहणसेणियापरिकम्मे चुआचुअसेणियापरिकम्मे।

प्र० से किं तं सिद्धसेणियापरिकम्मे ?

उ० सिद्धसेणियापरिकम्मे चोद्दसविहे पण्णत्ते तंजहा—
माउयापयाणि, एगट्ठियपयाणि पाढोट्ठपयाणि, आगासपयाणि केउभूयं रासिबद्धं एगगुणं दुगुणं तिगुणं केउभूयं पडिग्गहो संसारपडिग्गहो नंदावत्तं, सिद्धबद्धं।

से त्तं सिद्ध-सेणियापरिकम्मे।

प्र० से किं तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे ?

उ० मणुस्ससेणियापरिकम्मे चोद्दसविहे पण्णत्ते, तं जहा—
ताइं चेव माउयापयाणि जाव-नंदावत्तं मणुस्सबद्धं ।
से त्तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे ।
अवसेसा परिकम्माइं पुट्ठाइयाइं एक्कारसविहाइं पण्णत्ताइं ।
इच्चेयाइं सत्त परिकम्माइं, छ ससमइयाइं, सत्त आजीवियाइं
छ चउक्कणइयाइं सत्त तेरासियाइं
एवामेव सपुव्वावरेण सत्त परिकम्माइं तेसीति भवंतीति
मक्खायाइं । से त्तं परिकम्माइं । १ ।

प्र० से किं तं सुत्ताइं ?

उ० सुत्ताइं अट्ठासीति भवंतीतिमक्खायाइं, तं जहा—
उजुगं परिणयापरिणयं बहुभंगियं विप्पच्चइयं विनयचरियं
अणंतरं परंपरं समाणं संजूहं संभिन्नं अहाच्चयं सोवत्थि
यं णंदावत्तं बहुलं पुट्ठापुट्ठं वियावत्तं एवंभूयं दुयावत्तं
वत्तमाणपयं समभिरूढं सव्वओभद्दं पणामं दुपडिग्गहं ।
इच्चेयाइं बावीसं सुत्ताइं छिण्णछेअणइआइं ससमयसुत्तपरि
वाडीए ।
इच्चेयाइं बावीसं सुत्ताइं अछिन्नछेअणइआइं आजीवियसुत्त
परिवाडीए ।
इच्चेयाइं बावीसं सुत्ताइं तिकणइयाइं तेरासियसुत्तपरिवाडीए ।
इच्चेयाइं बावीसं सुत्ताइं चउक्कणइयाइं ससमयसुत्तपरि
वाडीए । एवामेव सपुव्वावरेण अट्ठासीति सुत्ताइं भवंतीति
मक्खायाइं । से त्तं सुत्ताइं । २ ।

प्र० से किं तं पुव्वगयं ?

७० पुव्वगयं चउद्दसविहं पण्णत्तं, तं जहा—
उप्पायपुव्वं अग्गेणीयं वीरियं अत्थिणत्थिप्पवायं नाणप्पवायं सच्चप्पवायं आयप्पवायं कम्मप्पवायं, पच्चक्खाणप्पवायं विज्जाणुप्पवायं अवंझं पाणाऊ, किरियाविसाल, लोगबिंदुसारं।

१ उप्पायपुव्वस्स णं दसवत्थू पण्णत्ता
चत्तारि चूलियावत्थू पण्णत्ता।
२ अग्गेणियस्स णं पुव्वस्स चोद्दसवत्थू पण्णत्ता
बारस चूलियावत्थू पण्णत्ता।
३ वीरियप्पवायस्स णं पुव्वस्स अट्ठ वत्थू पण्णत्ता
अट्ठ चूलियावत्थू पण्णत्ता।
४ अत्थि णत्थिप्पवायस्स णं पुव्वस्स अट्ठारस वत्थू पण्णत्ता
दस चूलियावत्थू पण्णत्ता।
५ नाणप्पवायस्स णं पुव्वस्स बारस वत्थू पण्णत्ता।
६ सच्चप्पवायस्स णं पुव्वस्स दो वत्थू पण्णत्ता।
७ आयप्पवायस्स णं पुव्वस्स सोलस वत्थू पण्णत्ता।
८ कम्मप्पवायपुव्वस्स णं तीसं वत्थू पण्णत्ता।
९ पच्चक्खाणस्स णं पुव्वस्स वीसं वत्थू पण्णत्ता।
१० विज्जाणुप्पवायस्स णं पुव्वस्स पनरस वत्थू पण्णत्ता।
११ अवंझस्स णं पुव्वस्स बारस वत्थू पण्णत्ता।
१२ पाणाउस्स णं पुव्वस्स तेरस वत्थू पण्णत्ता।
१३ किरियाविसालस्स णं पुव्वस्स तीसं वत्थू पण्णत्ता।
१४ लोगबिंदुसारस्स णं पुव्वस्स पणवीसं वत्थू पण्णत्ता॥

गाहाओ–

दस चोद्दस अट्ठट्ठारसे य बारस दुवे य वत्थूणि ।
सोलस तीसा वीसा, पन्नरस अणुप्पवायम्मि ॥
बारस एक्कारसमे बारसमे तेरसेवे वत्थूणि ।
तीसा पुण तेरसमे, चउदसमे पन्नवीसाओ ॥
चत्तारि दुवालस अट्ठ चेव दस चेव चूलवत्थूणि ।
आइल्लाण चउण्ह सेसाण चूलिया णत्थि ॥

से त्त पुव्वगय । ३ ।

प्र० से किं त अणुओगे ?

उ० अणओगे दविहे पण्णत्ते त जहा
मूलपढमाणुओगे य गडियाणुओगे य ।

प्र० से किं त मूलपढमाणुओगे ?

उ० एत्थ ण अरहताण भगवताण पुव्वभवा, देवलोगगमणाणि, आउ चवणाणि जम्मणाणि अ अभिसेया रायवरसिरीओ सीयाओ पव्वज्जाओ तवा य भत्ता केवलणाणुप्पाया अ तित्थपवत्तणाणि अ । सघयण सठाण उच्चत्त आउ वन्न विभागो सीसा गणा गणहरा य अज्जा पवत्तणीओ सघस्स चउव्विहस्स ज वावि परिमाण जिणमणपज्जवओहिनाण सम्मत्तसुयनाणिणो य । वाई अणुत्तरगई य जत्तिया सिद्धा पाओवगया य, जे जहिं जत्तियाइ भत्ताइ छेअइत्ता, अतगडा, मुणिवरुत्तमा तमरओघविप्पमुक्का सिद्धिपहमणुत्तर च पत्ता । एए अन्ने य एवमाइया भावा मूलपढमाणुओगे कहिआ आघविज्जति पण्णविज्जति, परूविज्जति ।

से त्त मूलपढमाणुओगे ।

प्र० से किं त गडियाणुओगे ?

उ० गंडियाणुओगे अणेगविहे पण्णत्ते तंजहा—
कुलगरगंडियाओ तित्थगरगंडियाओ गणहरगंडियाओ चक्कहरगंडियाओ दसारगंडियाओ बलदेवगंडियाओ वासुदेवगंडियाओ हरिवंसगंडियाओ, भद्दबाहुगंडियाओ तवोकम्मगंडियाओ चित्तंतरगंडियाओ, उस्सप्पिणीगंडियाओ ओसप्पिणीगंडियाओ अमर-नर तिरिय निरयगइ-गमण विविहपरियट्टणाणुओगे एवमाइयाओ गंडियाओ, आघविज्जंति, पण्णविज्जंति परूविज्जंति।

से त्तं गंडियाणुओगे। ४।

प्र० से किं तं चूलियाओ ?

उ० अण्ण आइल्लाणं चउण्हं पुव्वाणं चूलियाओ सेसाइं पुव्वाइं अचूलियाइं। से त्तं चूलियाओ। ५।

दिट्ठिवायस्स णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ संगहणीओ।

से णं अंगट्ठयाए बारसमे अंगे एगे सुयक्खंधे चउद्दस पुव्वाइं, संखेज्जा वत्थू संखेज्जा चूलवत्थू संखेज्जा पाहुडा संखेज्जा पाहुडपाहुडा संखेज्जाओ पाहुडियाओ संखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ संखेज्जाणि पय पय सहस्साणि पयग्गेण पण्णत्ता संखेज्जा अक्खरा अणंता गमा, अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा, णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति। एवं णाया एवं विण्णाया, एवं चरण-करण-परूवणया आघविज्जंति

से त्तं दिट्ठिवाए। से त्तं दुवालसंगे गणिपिडगे। सूत्र १४७।

इच्चेइय दुवालसंग गणिपिडगं अतीतकाले अणता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरत ससार कतार अणुपरियट्टिसु।
इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग पडुप्पण्णे काले परित्ता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरतससारकतार अणुपरियट्टति।
इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग अणागए काल अणता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरत-ससार कतार अणुपरियट्टिस्सति।
इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग अतीतकाल अणता-जीवा आणाए आराहित्ता चाउरत ससार-कतार वीईवइसु।
एव पडुप्पण्णेवि एव अणागएवि।

दुवालसगे ण गणिपिडगे ण कयावि णत्थि ण कयाइ णासी, ण कयाइ ण भविस्सइ।
भुवि च भवति य भविस्सति य अयले धुवे णितिए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे।
से जहा णामए पच अत्थिकाया ण कयाइ ण आसि, ण कयाइ णत्थि ण कयाइ ण भविस्सति।
भुवि च भवति य भविस्सति य अयला धुवा णितिया सासया अक्खया अव्वया अवट्ठिया णिच्चा।
एवामेव दुवालसगे गणिपिडगे ण कयाइ ण आसि, ण कयाइ णत्थि ण कयाइ ण भविस्सइ।
भुवि च भवति य भविस्सइ य अयले धुवे जाव अवट्ठिए णिच्चे।
एत्थ ण दुवालसगे गणिपिडगे अणता भावा, अणता अभावा अणता हेऊ अणंता अहेऊ, अणता कारणा अणता अकारणा अणता जीवा अणता अजीवा अणता भवसिद्धिया, अणता अभवसिद्धिया अणता सिद्धा अणता असिद्धा आघविज्जति

पणवि जति पडविं जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति । एव दुवालसग गणिपिडगं इति । सूत्र १४८ ।

१ दुवे रासी, पण्णत्ता तजहा-जीवरासी अजीवरासी य ।
एव ग व प नवणा पम्मपयाणमारेण भाणिय न ।

२ दुविहा णेरइया पण्णत्ता तजहा-प जत्ताय अपज्जत्ता य ।
एव दडओ भाणियव्वो जाव वेमाणियत्ति । सूत्र १४९ ।

१ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए केवइय खेत्त ओगाहेत्ता केवइया णिरयावासा पण्णत्ता ? एव स व ठाणपयाणमारेण भाणियव्व। सूत्र १५० ।

१ प्र० नेरइयाण भते ! केवइय काल ठिई पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! जहन्नेण दस वाससहस्साइ उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता । एव स व ठिइपय भाणिय न। सूत्र १५१ ।

१ प्र० कइ ण भते ! सरीरा पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! पच सरीरा पण्णत्ता तजहा-ओरालिए, वेउव्विए आहारए तेयए कम्मए । एव स व ओगाहणापय भाणि यन । सूत्र १५२ ।

भेय विसय-सठाणे अभितर-बाहिरे य देसोही ।
ओहिस्स वड्ढि हाणी, पडिवाई चेव अपडिवाई ।।

१ प्र० कइविहे ण भते ! ओही पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता- भवपच्चइए य खओवसमिए य । एव स व ओहिपय भाणियव्व ।

सीया य दव्व सारीर साता तह वेयणा भवे दुक्खा।
अब्भुवगमुवक्कमिया णीयाए चेव अणियाए ।।

२ प्र० नेरइया णं भंते ! किं सीत वेयण वेयति, उसिण वेयण वेयति सीतोसिण वेयण वेयति ?

उ० गोयमा ! नेरइया सिय पि वेयण वेयति उसिण पि वेयण वेयति नो सिओसिण वेयण वेयति । एव सव्व वेयणापय भाणियव्व ।

३ प्र० कइ ण भते ! लेसाओ पण्णत्ताओ ?

उ० गोयमा ! छ लसाओ पण्णत्ताओ, तजहा–किण्हा नीला काऊ तेऊ पम्हा सुक्का । एव सव्व लसापय भाणियव्व ।

अणतरा य आहारे आहाराभोगणा इ य ।
पोग्गला ने व जाणति अज्झवसाणे य सम्मत्त ।।

४ प्र० नेरइया ण भते ! अणतराहारा तओ निव्वत्तणया, तओ परियाइणया तओ परिणामणया तओ परियारणया, तओ पच्छा विउव्वणया ?

उ० हता गोयमा ! एव सव्व आहारपय भाणियव्व । सूत्र १५३ ।

५ प्र० कइविहे ण भते ! आउगबधे पण्णत्ते ?

उ० गोयमा ! छव्विहे आउगबधे पण्णत्ते, तजहा–
जाइनामनिहत्ताउए, गतिनामनिहत्ताउए ठिइनाम निहत्ताउए पएसनामनिहत्ताउए अणुभागनामनिहत्ताउए ओगाहणानामनिहत्ताउए ।

प्र० नेरइयाण भते ! कइविहे आउगबधे पण्णत्ते ?

उ० गोयमा ! छव्विहे पण्णत्ते, तजहा–
जातिनामनिहत्ताउए गइनामनिहत्ताउए ठिइनामनिहत्ता उए, पएसनामनिहत्ताउए, अणुभागनामनिहत्ताउए ओगा हणानामनिहत्ताउए । एव-जाव-वेमाणियाण ।

प्र० असुरकुमारा ण भते ! कि सघयणा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! छण्ह सघयणाण असघयणा । णेवट्ठी, णेव छिरा णेव ण्हारु । जे पोग्गला इट्ठा कता पिया मणुण्णा मणामा मणाभिरामा । ते तेसि असघयणत्ताए परिणमति । एव जाव थणियकुमाराण

प्र० पुढवीकाइया ण भते ! कि सघयणा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! छेवट्टसघयणा पण्णत्ता । एव-जाव समुच्छिम पचिदिय तिरिक्ख-जोणियत्ति ।
गब्भवक्कतिया छव्विहसघयणा, समुच्छिम-मणुस्सा छेवट्टसघयणा गब्भवक्कतियमणुस्सा छव्विहे सघयणा पण्णत्ता ।
जहा असुरकुमारा तहा वाणमतर जोइसिय-वेमाणियया य ।

२ प्र० कइविहे ण भते ! सठाणे पण्णत्ते ?

उ० गोयमा ! छव्विहे सठाणे पण्णत्ते तजहा–समचउरसे १ णिग्गोहपरिमण्डले २ साइए ३ वामणे ४ खुज्जे ५ हुडे ६।

प्र० णेरइया ण भते ! कि सठाणा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! हुडसठाणा पण्णत्ता ।

प्र० असुरकुमारा ण भते ! कि सठाणा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! समचउरससठाणसठिया पण्णत्ता ।
एव जाव थणियकुमारा
पुढवी मसूरसठाणा पण्णत्ता
आऊ थिवुयसठाणा पण्णत्ता
तेऊ सूइकलावसठाणा पण्णत्ता
वाऊ पडागासठाणा पण्णत्ता

पण्णत्ताई नाणासंठाणसंठिया पण्णत्ता,
बेइंदिय तेइंदिय-चउरिंदिय-संमुच्छिम-पंचेंदिय तिरिक्खा
हुंडसंठाणा पण्णत्ता
गब्भवक्कंतिया छव्विहसंठाणा पण्णत्ता,
संमुच्छिममणुस्सा हुंडसंठाणसंठिया पण्णत्ता
गब्भवक्कंतियाणं मणुस्साणं छव्विहा संठाणा पण्णत्ता
जहा असुरकुमारा तहा वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया
वि। सूत्र १५५।

१ प्र० कइविहे णं भंते ! वेए पण्णत्ते ?
उ० गोयमा ! तिविहे वेए पण्णत्ते, तंजहा–
इत्थीवेए पुरिसवेए नपुंसवेए ।
प्र० नेरइया णं भंते ! किं इत्थीवेया पुरिसवेया नपुंसगवेया
पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! णो इत्थिवेए, णो पुंवेए णपुंसगवेया पण्णत्ता।
प्र० असुरकुमारा णं भंते ! किं इत्थीवेया पुरिसवेया
नपुंसगवेया ?
उ० गोयमा ! इत्थीवेया पुरिसवेया। णो णपुंसगवेया जाव
थणियकुमारा
पुढवी आऊ तेऊ वाऊ वणस्सई बि ति चउरिंदिय
संमुच्छिम-पंचिंदिय तिरिक्ख-संमुच्छिममणुस्सा णपुंसगवेया,
गब्भवक्कंतियमणुस्सा पंचिंदियतिरिया य तिवेया।
जहा असुरकुमारा तहा वाणमंतरा जोइसिय वेमाणिया
वि। सूत्र १५६।

१ तेणं काले णं तेणं समएणं कप्पस्स समोसरणं णेयव्वं
-जाव गणहरा सावच्चा निरवच्चा वोच्छिण्णा।

सीया सुदंसणा सुप्पभा, य सिद्धत्थ सुप्पसिद्धा य ।
विजया य वेजयंती जयंती, अपराजिया चेव ॥
अरुणप्पभ चंदप्पभ, सूरप्पह अग्गि सुप्पभा चेव ।
विमला य पंचवण्णा, सागरदत्ता य णागदत्ता य ॥
अभयकर निव्वुइकरा, मणोरमा तह मणोहरा चेव ।
देवकुरुत्तरकुरा विसाल चंदप्पभा सीया ॥
एआओ सीआओ सव्वेसिं चेव जिणवरिंदाणं ।
सव्वजगवच्छलाणं सव्वोउगसुभाए छायाए ॥
पुव्वि ओक्खित्ता, माणुसेहिं साहट्टु रोमकूवेहिं ।
पच्छा वहंति सीअं, असुरिंदसुरिंदनागिंदा ॥
चलचवलकुंडलधरा सच्छंदविउव्वियाभरणधारी ।
सुरअसुरवंदिआणं वहंति सीअं जिणिंदाणं ॥
पुरओ वहंति देवा नागा पुण दाहिणम्मि पासम्मि ।
पच्चत्थिमेण असुरा, गरुला पुण उत्तरे पासे ॥

१० दीक्षा-नगर

उसभो अ विणीयाए बारवईए अरिट्ठवरणेमी ।
अवसेसा तित्थयरा निक्खंता जम्मभूमीसु ॥

११ दीक्षा-वस्त्र

सव्वे वि एगदूसेण णिग्गया जिणवरा चउव्वीसं ।

१२ दीक्षा समय का तप

ण य णाम अण्णलिंगे, ण य गिहिलिंगे कुलिंगे य ॥

१३ दीक्षा परिवार

एक्को भगवं वीरो पासो मल्ली य तिहि तिहि सएहिं ।
भगवं पि वासुपुज्जो छहिं पुरिससएहिं निक्खंतो ॥

उग्गाण भोगाण राइण्णाण य खत्तियाण च ।
चउहिं सहस्सेहिं उसभो सेसा उ सहस्सपरिवारा ॥

१४ दीक्षा-तप

सुमइत्थ णिच्चभत्तेण णिग्गओ वासुपुज्ज चउत्थेण ।
पासो मल्ली य अट्ठमेण सेसा उ छट्ठेण ॥

१५ एएसि ण चउव्वीसाए तित्थगराण चउव्वीस पढमभिक्खादायारो होत्था तजहा गाहाओ–

सिज्जस बभदत्त सुरिंददत्त य इदत्त य ।
पउमे य सोमदेवे माहिंदे तह सोमदत्त य ।
पुस्स पुणव्वसू पुण्णणद सुणदे जये य विजये य ।
तत्तो य धम्मसीह सुमित्त तह वग्गसीह य ॥
अपराजिय विस्ससेणे वीसइमे होइ उसभसेणे य ।
दिण्णे वरदत्त धणे बहुले य आणुपुव्वीए ॥
एए विसुद्धलेसा जिणवरभत्तीए पजलिउडा उ ।
त काल त समय पडिलाभेई जिणवरिंदे ॥

१६ प्रथम भिक्षा-काल

सवच्छरेण भिक्खा लद्धा उसभेण लोय णाहेण ।
ससेहिं बीयदिवसे लद्धाओ पढमभिक्खाओ ॥

१७ प्रथम भिक्षा द्रव्य

उसभस्स पढमभिक्खा, खोयरसो आसि लोगणाहस्स ।
सेसाण परमण्ण अमियरसरसोवम आसि ॥
सव्वेसिपि जिणाण जहिय लद्धाउ पढमभिक्खाउ ।

१८ वसुधारा की वृष्टि

तहिय वसुधाराओ सरीरमत्तीओ वुट्ठाओ ॥

१९ एएसि चउव्वीसाए तित्थगराण चउवीस चेइयरुक्खा होत्था

दसखाजीहू अहे केवलाइ उप्पण्णाइ ति होत्या तजहा गाहाओ-

णग्गोह सत्तिवण्णे, साले पियए पियगु छत्ताहे ।
सिरिसे य णागरुक्खे माली य पिलक्खुरुक्खे य ॥
तिदुग पाडल जवू, आसत्थे सणु तहेव दहिवण्णे ।
णदीरुक्खे तिलए, अवयरुक्खे असोगे य ॥
चपय बउले य तहा वेडसरुक्खे य धायईरुक्खे ।
साले य वद्धमाणस्स चेइयरुक्खा जिणवराण ॥
बत्तीस धणुयाइ चेइयरुक्खो य वद्धमाणस्स ।
णिच्चोउगो असोगो ओच्छण्णो सालरुक्खेण ॥
तिण्णेव गाउआइ चेइयरुक्खो जिणस्स उसभस्स ।
सेसाण पुण रुक्खा, सरीरओ बारसगुणा उ ॥
सच्छत्ता सपडागा, सवेइया तोरणेहि उववेया ।
सुरअसुरगरुलमहिया चेइयरुक्खा जिणवराण ॥

२० एएसि चउवीसाए तित्थगराण चउवीस पढमसीसा होत्था तजहा गाहाओ-

पढमेत्थ उसभसेणे बीइए पुण होइ सीहसेणे य ।
चारू य वज्जणाभे चमरे तह सुव्वय विदब्भे ॥
दिण्णे य वराहे पुण आणदे गोथुभे सुहम्मे य ।
मदर जसे अरिट्ठे चक्काह सयभु कुभे य ॥
इदे कुभे य सुभे वरदत्ते दिण्ण इदभूई य ।
उदितोदितकुलवसा विसुद्धवसा गुणेहि उववेया ।
तित्थप्पवत्तयाण पढमा सिस्सा जिणवराण ॥

२१ एएसि ण चउवीसाए तित्थगराण चउवीस पढमसिस्सिणी होत्था तजहा गाहाओ-

वभी य कग्गु गामा अजिया कामवीरई सोमा ।
सुमण्ण वारणि सनसा धारणि धरणी य धरणिधरा ।।
पउमा सिवा सुयी सह अजुया भाविअप्पा य रक्ली य ।
वधुवता पुप्फन्तो अज्जा अमिना य अहिया य ।।
जक्सिनी पुप्फचूला य चदण-ज्जा य आहियाउ ।
उदितोदितकुलवसा विसुद्धवमा गुर्हि उत्तवया ।।
तित्यप्पवत्तयाण, पम्मा सिस्सी जिणवराण ।।

सूत्र १५७ ।।

१ जबुद्दीवे ण दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए बारस चक्कवट्टिपियरो होत्या तजहा गाहाओ–
उसभे सुमित्त विजए समुद्दविजए य अस्ससेणे य ।
विस्ससेणे य सूरे सुदसणे कत्तवीरिए चेव ।।
पउमुत्तरे महाहरी विजए राया तहेव य ।
बभे बारसमे उत्त पिउनामा चक्कवट्टीण ।।
२ जबुद्दीवे ण दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए बारस चक्कवट्टिमायरो होत्या तजहा गाहाओ–
सुमगला जसवती भद्दा सहदेवी अइरा सिरिदेवी ।
तारा जाला मेरा वप्पा चुल्लणि अपच्छिमा ।।
३ जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए बारस चक्कवट्टी होत्या तजहा गाहाओ–
भरहो सगरो मघव सणकुमारो य रायसद्दूलो ।
सती कुथू य अरो हवइ सुभूमो य कोरव्वो ।।
नवमो य महापउमो हरिसेणो चेव रायसद्दूलो ।
जयनामो य नरवई बारसमो बभदत्तो य ।।

पुण्ण-सच्च वयणा, अब्भुवगय-वच्छला, सरण्णा लक्खण-वंजण गुणोववेया, माणुम्माण-पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंग सदरंगा ससि-सोमागार-कंत पिय दंसणा अमरिसणा पयंड दंडप्पयारागंभीर दर सणिज्जा तालद्धओव्विद्ध-गरुल धऊ महाधणविकड्ढया महासत्त-सायरा, दुद्धरा धणुद्धरा धीरपुरिसा जुद्धकित्तिपुरिसा विउल-कुल-समुब्भवा महारयणविहाडगा अद्धभरहसामी सोमा रायकुल-वंसतिलया अजिया अजियरहा, हल-मुसल-कणक-पाणी संख-चक्क-गय सत्ति-नंदग धरा पवर उज्जल सुक्कंत विमल-गोत्थुभ तिरीड-धारी कुंडल उज्जोइया णणा पुंडरीय-णयणा एकावलि कंठ-लइय वच्छा, सिरिवच्छ सुलंछणा, वरजसा सव्वोउय-सुरभि-कुसुम रचित-पलंब-सोभंत कंत विकसंत विचित्त-वरमाल रइय-वच्छा अट्ठसय विभत्त लक्खण पसत्य सुंदर विरइयगमंगा मत्त गयवरिंद-ललिय विक्कम विलसिय-गई सारय-नव थणिय महुर-गंभीर-कुंच निग्घोस दुंदुभि-सरा कडिसुत्तग-नील पीय कोसेज्ज-वाससा, पवर दित्त तेया नरसीहा नरवई नरिंदा नरवसहा मरुय-वसभ कप्पा अब्भहिय राय-तेय-लच्छीए दिप्पमाणा नीलग-पीयग वसणा दुवे दुवे राम केसवा भायरो होत्या तंजहा—

तिविट्ठू य दुविट्ठू य, सयंभू पुरिसुत्तमे पुरिससीहे य।
तह पुरिसपुंडरीए दत्ते नारायणे कण्हे॥
अयले विजये भद्दे सुप्पभे य सुदंसणे।
आणंद नंदणे पउमे राम यावि अपच्छिमे॥

६ एएसि णं णवण्हं बलदेव-वासुदेवाणं पुव्वभवियाणं नामधेज्जा होत्था तंजहा गाहाओ—

विस्सभूई पव्वयए धणदत्त समुद्दत्त इसिवाले।
पियमित्त ललियमित्ते पुणव्वसू गंगदत्त य॥
एयाइं नामाइं, पुव्वभवे आसि वासुदेवाणं।
एत्तो बलदेवाणं, जहक्कमं कित्तइस्सामि॥
विसनंदी य सुबंधू सागरदत्ते असोगललिए य।
वाराह धम्मसेणे अपराइय रायललिए य॥

१० एएसि नवण्हं बलदेव-वासुदेवाणं पुव्वभवियां नव धम्मायरिया होत्था तंजहा गाहाओ—

संभूय सुभद्द सुदंसणे य सेयंस कण्ह गंगदत्त य।
सागरसमुद्दनामे दुमसेणे य णवमए॥
एए धम्मायरिया कित्तीपुरिसाण वासुदेवाणं।
पुव्वभवे आसि, जत्थ नियाणाइं कासी य॥

११ एएसि नवण्हं वासुदेवाणं पुव्वभवे नव नियाणभूमिओ होत्था तंजहा—

महुरा य कणगवत्थू सावत्थी पोयणं च रायगिहं।
कायंदि कासिव मिहिलपुरी हत्थिणपुरं च॥

१२ एएसि णं नवण्हं वासुदेवाणं नव नियाणकारणा होत्था तंजहा—

गावी जुए संगामे तह इत्थी पराइओ रंगे।
भज्जाणुराग गोट्ठी परइड्ढी माउआ इ य॥

१३ एएसि नवण्हं वासुदेवाणं नव पडिसत्तू होत्था तंजहा गाहाओ—

अस्सग्गीव तारए मेरए महुकेढवे निसुंभे य।
बलि पहराए तह रावणे य नवमे जरासिंधु॥
एए खलु पडिसत्तू कित्तीपुरिसाण वासुदेवाणं।
सव्वे अचक्कजोही, सव्वे य हया सचक्केहिं॥

एक्को य सत्तमीए, पंच य छट्ठीए पंचमी एक्को।
एक्को य चउत्थीए, कण्हो पुण तच्चपुढवीए॥
अणियाणकडा रामा सव्वे वि य केसवा नियाणकडा।
उड्ढंगामी रामा केसव सव्वे अहोगामी॥
अट्ठंतकडा रामा एगो पुण बंभलोयकप्पम्मि।
एक्का से गब्भवसही सिज्झिस्सइ आगमिस्सेण॥

सूत्र १५८॥

१ जंबुद्दीवे णं दीवे एरवए वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउव्वीसं तित्थगरा होत्था तंजहा गाहाओ–

चंदाणणं सुचंदं अग्गीसेणं च नंदिसेणं च।
इसिदिण्णं वयहारिं वंदिमो सोमचंदं च॥
वंदामि जुत्तिसेणं अजियसेणं तहेव सिवसेणं।
बुद्धं च देवसम्मं सययं निक्खित्तसत्थं च॥
असंजलं जिणवसहं वंदे य अणंतयं अमियणाणिं।
उवसंतं च धुयरयं, वंदे खलु गुत्तिसेणं च॥
अतिपासं च सुपासं देवेसरवंदियं च मरुदेवं।
निव्वाणगयं च धरं खीणदुहं सामकोट्ठं च॥
जियरागमग्गिसेणं वंदे खीणरायमग्गिउत्तं च।
वोक्कसियपिज्जदोसं वारिसेणं गयं सिद्धिं॥

२ जंबुद्दीवे णं दीवे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए भारहे वासे सत्त कुलगरा भविस्संति तंजहा गाहा–

मियवाहणे सुभूमे य सुप्पभे य सयंपभे।
दत्ते सुहुमे सुबंधू य आगमिस्साण होक्खंति॥

३ जंबुद्दीवे णं दीवे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए एरवए वासे दस कुलगरा भविस्संति तंजहा–

> वियड्डवाहणे सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे
> दढधणू दसधणू सयधणू पडिसूई सम्मइ त्ति ॥

४ जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउवीसं तित्थगरा भविस्संति तंजहा गाहाओ

> महापउमे सूरदेवे सुपासे य सयंपभे ।
> सव्वाणुभूई अरहा देवस्सुए य होक्खई ॥
> उदए पेढालपुत्ते य पोट्टिले सत्तकित्ति य ।
> मुणिसुव्वए य अरहा सव्वभावविऊ जिणे ॥
> अममे णिक्कसाए य निप्पुलाए य निम्ममे ।
> चित्तउत्ते समाही य आगमिस्सेण होक्खई ॥
> संवर अणियट्टी य विजए विमलेत्ति य ।
> देवोववाए अरहा अणंतविजए इ य ॥
> एए वुत्ता चउव्वीसं भरहे वासम्मि केवली ।
> आगमिस्सेण होक्खंति धम्मतित्थस्स देसगा ॥

५ एएसि णं चउवीसाए तित्थयराणं पुव्वभविया चउव्वीसं नामधेज्जा भविस्संति तंजहा गाहाओ–

> सेणिय सुपास उदए पोट्टिल्ल अणगार तह दढाऊ य ।
> कत्तिय संखे य तहा नंद सुनंदे य सतए य ॥
> बोद्धव्वा देवई य सच्चइ तह वासुदेव बलदेवे ।
> रोहिणी सुलसा चेव, तत्तो खलु रेवई चेव ॥
> तत्तो हवइ सयाली बोद्धव्वे खलु तहा भयाली य ।
> दीवायणे य कण्हे तत्तो खलु नारए चेव ॥
> अंबड दारुमडे य साईबुद्धे य होइ बोद्धव्वे ।
> भावीतित्थयराणं णामाइं पुव्वभवियाइं ॥

६ एएसि णं चउव्वीसाए तित्थगराणं–
चउव्वीसं पियरो भविस्संति।
चउव्वीसं मायरो भविस्संति।
चउव्वीसं पढमसीसा भविस्संति।
चउव्वीसं पढमसिस्सणीओ भविस्संति।
चउव्वीसं पढमभिक्खादायगा भविस्संति।
चउव्वीसं चेइयरुक्खा भविस्संति।

७ जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए बारस चक्कवट्टिणो भविस्संति तं जहा गाहाओ–

भरहे य दीहदंते गूढदंते य सुद्धदंते य।
सिरिउत्त सिरिभूई सिरिसोमे य सत्तमे॥
पउमे य महापउमे विमलवाहणे विपुलवाहणे चेव।
रिट्ठे बारसमे वुत्ते आगमिस्सा भरहाहिवा॥

८ एएसि णं बारसण्हं चक्कवट्टीणं–
बारस पियरो भविस्संति।
बारस मायरो भविस्संति।
बारस इत्थीरयणा भविस्संति।

९ जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए–
नव बलदेव-वासुदेवपियरो भविस्संति।
नव वासुदेवमायरो भविस्संति।
नव बलदेवमायरो भविस्संति।
नव दसारमंडला भविस्संति तं जहा–
उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा। ओयंसी तेयंसी॰
एवं सो चेव वण्णओ भाणियव्वो जाव नीलग पीतगवसणा
दुवे दुवे राम-केसवा भायरो भविस्संति, तं जहा गाहाओ

नंदे य नंदमित्ते, दोहबाहू तहा महाबाहू ।
अइबले महाबले, बलभद्दे य सत्तमे ॥
दुविट्ठू य तिविट्ठू य आगमिस्साण विण्हुणो ।
जयंते विजय भद्दे, सुप्पभे य सुदंसणे ॥
आणंदे नंदणे पउमे संकरिसणे य अपच्छिमे ॥

१० एएसि णं नवण्ह बलदेव वासुदेवाण—
पुव्वभविया नव नामधेज्जा भविस्संति ।
नव धम्मायरिया भविस्संति ।
नव नियाणभूमीओ भविस्संति ।
नव नियाणकारणा भविस्संति ।
नव पडिसत्तू भविस्संति तंजहा गाहाओ—

तिलए य लोहजंघे वइरजंघे, य केसरी पहराए ।
अपराइए य भीमे, महाभीमे य सुग्गीवे ॥
एए खलु पडिसत्तू कित्तीपुरिसाण वासुदेवाण ।
सव्वे वि चक्कजोही हम्मिहिंति सचक्केहिं ॥

११ जंबुद्दीवे णं दीवे एरवए वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउव्वीसं तित्थयरा भविस्संति, तंजहा गाहाओ—

सुमंगले य सिद्धत्थे निव्वाणे य महाजसे ।
धम्मज्झए य अरहा आगमिस्साण होक्खई ॥
सिरिचंदे पुप्फकेऊ महाचंदे य केवली ।
सुयसागरे य अरहा, आगमिस्साण होक्खई ॥
सिद्धत्थे पुण्णघोसे य, महाघोसे य केवली ।
सच्चसेणे य अरहा आगमिस्साण होक्खई ॥
सूरसेणे य अरहा महासेणे य केवली ।
सव्वाणंदे य अरहा देवउत्ते य होक्खई ॥

सुपासे सुव्वए अरहा अरहे य सुकोसले ।
अरहा अणंतविजए आगमिस्साण होक्खई ॥
विमले उत्तरे अरहा अरहा य महाबले ।
देवाणंदे य अरहा आगमिस्साण होक्खई ॥
एए वुत्ता चउव्वीसं एरवयम्मि केवली ।
आगमिस्साण होक्खंति धम्मतित्थस्स देसगा ॥

बारस चक्कवट्टिणो भविस्संति ।
बारस चक्कवट्टिपियरो भविस्संति ।
बारस चक्कवट्टिमायरो भविस्संति ।
बारस इत्थीरयणा भविस्संति ।
णव बलदेव-वासुदेवपियरो भविस्संति ।
णव वासुदेवमायरो भविस्संति ।
णव बलदेवमायरो भविस्संति ।
णव दसारमंडला भविस्संति तं जहा–
उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा जाव दुवे दुवे राम केसवा भायरो भविस्संति ।
णव य इसत्तू भविस्संति ।
णव पुव्वभवणामधेज्जा ।
णव धम्मायरिया ।
णव णियाणभूमीओ ।
णव णियाणकारणा ।
आयाए एरवए आगमिस्साए भाणियव्वा ॥
एवं दोसुवि आगमिस्साए भाणियव्वा ॥ सत्र १५९ ।
इच्चेयं एवमाहिज्जंति तंजहा– कुलगरवंसेइ य ।
एवं तित्थगरवंसेइ य, चक्कवट्टिवंसेइ य दसारवंसेइ य,

गणधरयसेइ य इसियसेइ य जइयसेइ य मुणिवसेइ य, सुएइ था, सअगेइ था, सुयसमासेइ था, सयवखथेइ था, समवाएइ या सलेइ था।

सम्मत्तमगमवखाय अज्भयण त्ति बेमि ॥ सूत्र १६० ।

इति समवाय चउत्थमग समत्त

समवाया

द गुणागम

म नाथनाथ

मागध-न्ना

व न्तावरा।

इक चक्रवर्ती

ओरग्रान्त

गमइ न्गाल

और मागध

पना अनुर

राव वे ना

नगरअजि

कानगर।

।

गा

३ अप्रशस्त यागो का प्रवृत्तिरूप व्यापार (हिंसा) एक होने से दण्ड एक है।
४ प्रशस्त योगो का प्रवृत्तिरूप व्यापार अदड (अहिंसा) एक है।
५ योगो (मन वचन काया) की प्रवृत्तिरूप क्रिया एक है।
६ योगनिरोधरूप अक्रिया एक है।
७ धर्मास्तिकाय आदि द्रव्यो का आधारभूत लोकाकाश एक है।
८ धर्मास्तिकाय आदि द्रव्यो का अभावरूप आलोकाकाश एक है।
९ पदार्थों की गति म सहायक रूप स्वभाव से धर्मास्तिकाय एक है।
१० पदार्थों की स्थिति म सहायकरूप स्वभाव से अधर्मास्तिकाय एक है।
११ शुभयोगरूप प्रवृत्ति के एक होने से पुण्य एक है।
१२ अशुभयोगरूप प्रवृत्ति के एक होने से पाप एक है।
१३ कर्मबद्ध आत्माओ की सामान्य विवक्षा से बन्ध एक है।
१४ कर्ममुक्त आत्माओ की सामान्य विवक्षा से मोक्ष एक है।
१५ जीवरूप नौका मे इन्द्रियरूप छिद्रो से कर्मरूप जल का सचय आश्रव है वह सामान्य विवक्षा से एक है।
१६ जीवरूप नौका म इन्द्रियरूप छिद्रो से आते हुये कर्मरूप जल को रोकना सवर है वह सामान्य विवक्षा से एक है।
१७ अशुभ कर्मोदय जन्य मानसिक कायिक पीडा वेदना है, वह सामान्य विवक्षा से एक है।
१८ कर्मक्षयरूप निर्जरा सामान्यतया एक है।
१९ जम्बुद्वीप का आयाम विष्कम्भ (लम्बाई चौडाई) एक लाख योजन का है।
२० सातवी नरक के मध्य अप्रतिष्ठान नरकावास का आयाम

विष्कम्भ एक लाख योजन का है।

२१ सौधर्मेन्द्र के आभियोगिक पालक देव द्वारा विकुर्वित पालक यान विमान का आयाम विष्कम्भ एक लाख योजन का है।

२२ सर्वार्थसिद्ध विमान का आयाम विष्कम्भ एक लाख योजन का है।

२३ आर्द्रा नक्षत्र का एक तारा है।

२४ चित्रा नक्षत्र का एक तारा है।

२५ स्वाति नक्षत्र का एक तारा है।

२६ इस रत्नप्रभा नामक पृथ्वी में कुछ नारकों की स्थिति एक पल्योपम की है।

२७ इस रत्नप्रभा नामक पृथ्वी में नारकों की उत्कृष्ट स्थिति एक सागरोपम की है।

२८ शर्कराप्रभा नामक पृथ्वी में नारकों की जघन्य स्थिति एक सागरोपम की है।

२९ असुरकुमार देवों में से कुछ देवों की स्थिति एक पल्योपम की है।

३० असुरकुमार देवों की उत्कृष्ट स्थिति कुछ अधिक एक सागरोपम की है।

३१ असुरेन्द्र को छोड़कर कुछ भवनवासि देवों की स्थिति एक पल्योपम की है।

३२ असंख्यवर्षों की आयुवाले कुछ गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रियों की स्थिति एक पल्योपम की है।

३३ असंख्यवर्षों की आयु वाले कुछ गर्भज मनुष्यों की स्थिति एक पल्योपम की है।

३४ वाणव्यन्तर देवों की उत्कृष्ट स्थिति एक पल्योपम की है।

३५ ज्योतिषी देवों की उत्कृष्ट स्थिति एक पल्योपम अधिक एक लाख वर्ष की है।

३६ सौधर्म कल्प के देवों की जघन्य स्थिति एक पल्योपम की है।

३७ सौधर्म कल्प के कुछ देवों की स्थिति एक सागरोपम की है।

३८ ईशान कल्प के देवों की जघन्य स्थिति कुछ अधिक एक पल्योपम की है।

३९ ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति एक सागरोपम की है।

४० सागर सुसागर सागरकान्त भव मनु मानुषोत्तर और लोकहित विमानों में जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी उत्कृष्ट स्थिति एक सागरोपम की होती है।

४१ सागर यावत् लोकहित विमानों में जो देव उत्पन्न होते हैं वे एक पक्ष में श्वासोच्छ्वास लेते हैं।

४२ सागर-यावत् लोकहित विमानों में जो देव उत्पन्न होते हैं उनको आहार लेने की इच्छा एक हजार वर्ष में होती है।

४३ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो एक भव ग्रहण करके सिद्ध बुद्ध और सर्वथा निवृत्त होंगे सब दुखों का अन्त करेंगे।

दूसरा समवाय

१ दण्ड दो प्रकार का है यथा
स्व पर निमित्त के लिए की जाने वाली हिंसा अर्थदण्ड है।
स्व पर अहित के लिए की जानेवाली अथवा व्यर्थ की जानेवाली हिंसा अनर्थदण्ड है।

२ राशि दो प्रकार की है यथा जीव राशि अजीव राशि।

३ बन्धन दो प्रकार है यथा राग बन्धन द्वेष बन्धन।

४ पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र के २ तारे हैं।

मावतसक विमान म जो देव उत्पन होते हैं उनकी उत्कृष्ट स्थिति दो सागरोपम की होती है।

२१ शुभ यावत सौधर्मावतसक विमानो म जो देव उत्पन्न होते हैं वे दो पक्ष से श्वासोच्छवास लेते हैं।

२२ शुभ-यावत्-सौधर्मावतसक विमानो म जो देव उत्पन्न होते है उनको आहार लेने की इच्छा दो हजार वर्ष से होती है।

२३ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे है जो दो भव करके सिद्ध-यावत सब दुखो का अन्त करेंगे।

तीसरा समवाय

१ दड तीन (हिंसा) प्रकार के हैं यथा
मनन्ड वचनदड कायदड।

२ तीन गुप्तिया है यथा मनगुप्ति वचनगुप्ति कायगुप्ति।

३ शल्य तीन प्रकार के हैं, यथा
माया शल्य निदान शल्य मिथ्या दर्शन शल्य।

४ गर्व तीन प्रकार के हैं, यथा ऋद्धि गर्व रस गर्व साता गर्व।

५ विराधना तीन प्रकार की है यथा
ज्ञान विराधना दर्शन विराधना चारित्र विराधना।

६ मृगशिर नक्षत्र के तीन तारे हैं।

७ पुष्य नक्षत्र के तीन तारे हैं।

८ ज्येष्ठा नक्षत्र के तीन तारे है।

९ अभिजित नक्षत्र के तीन तारे हैं।

१० श्रवण नक्षत्र के तीन तारे हैं।

११ अश्विनी नक्षत्र के तीन तारे हैं।

१२ भरणी नक्षत्र के तीन तारे हैं।

सब दुखों का अंत करेंगे ।

चौथा समवाय

१ कषाय चार प्रकार के हैं यथा क्रोध मान माया लोभ ।
२ ध्यान चार प्रकार के हैं यथा
आर्तध्यान रौद्रध्यान धर्मध्यान शुक्लध्यान ।
३ विकथा चार प्रकार की हैं यथा
स्त्री कथा भक्त कथा देश कथा राज कथा ।
४ संज्ञा चार प्रकार की है यथा
आहार संज्ञा भय संज्ञा मैथुन संज्ञा परिग्रह संज्ञा ।
५ बंध चार प्रकार का है यथा
प्रकृति बंध स्थिति बंध अनुभाग बंध प्रदेश बंध ।
६ योजन चार गाउ का कहा गया है ।
७ अनुराधा नक्षत्र के चार तारे हैं ।
८ पूर्वाषाढा नक्षत्र के चार तारे हैं ।
९ उत्तराषाढा नक्षत्र के चार तारे हैं ।
१० इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नरयिकों की स्थिति चार पल्योपम की है ।
११ वालुकाप्रभा पृथ्वी के कुछ नरयिकों की स्थिति चार सागरोपम की है ।
१२ कुछ असुरकुमार देवों की स्थिति चार पल्योपम की है ।
१३ सौधर्म और ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति चार पल्योपम की है ।
१४ सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्प के कुछ देवों की स्थिति चार सागरोपम की है ।

१५ कृष्टि मुकृष्टि कृष्टिकावत कृष्टिप्रभ कृष्टियुक्त कृष्टिवर्ण कृष्टिलेश्य कृष्टिध्वज कृष्टिशृंग कृष्टिश्रेष्ठ कृष्टिकूट व कृष्टियुत्तरावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी उत्कृष्ट स्थिति चार सागरोपम की होती है।

१६ कृष्टि-यावत्-कृष्टयुत्तरावतंसक विमान म जो देव उत्पन्न होते हैं वे चार प १ से श्वासोच्छ्वास लेते हैं।

१७ कृष्टि-यावत्-कृष्टयुत्तरावतंसक विमान म जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी आहार की इच्छा चार हजार वष से होती है।

१८ कुछ भवसिद्धिक जीव एस हैं जो चार भव करके सिद्ध-यावत् सब दुःखों का अन्त करेंगे।

पांचवां समवाय

१ क्रिया पांच प्रकार की हैं यथा—कायिकी आधिकरणिकी प्राद्वेषिकी पारितापनिकी प्राणातिपातिकी।

२ महाव्रत पांच प्रकार के हैं यथा—सर्वथा प्राणातिपात विरमण सर्वथा मृषावाद विरमण सर्वथा अदत्तादान विरमण सर्वथा मैथुन विरमण सर्वथा परिग्रह विरमण।

३ कामगुण पांच प्रकार के हैं यथा—
शब्द रूप रस गंध स्पर्श।

४ आश्रवद्वार पांच प्रकार के हैं यथा—
मिथ्यात्व अविरति प्रमाद कषाय योग।

५ संवर पांच प्रकार के हैं यथा—
सम्यक्त्व विरति अप्रमाद अकषाय अयोग।

६ निर्जरा स्थान पांच प्रकार के हैं यथा प्राणातिपात विरति

ध्वज सुरध्वज सुरध्वट सुरकूट सुरोत्तरावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी उत्कृष्ट स्थिति पाँच सागरोपम की होती है।

२० वात-यावत्-सुरोत्तरावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं वे पाँच पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते हैं।

२१ वात-यावत्-सुरोत्तरावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं उनको आहार लेने की इच्छा पाँच हजार वर्ष से होती है।

२२ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो पाँच भव करके सिद्ध-यावत् सब दुःखों का अन्त करेंगे।

छठा समवाय

१ लेश्या छः प्रकार की है यथा—कृष्णलेश्या नीललेश्या कापोतलेश्या तेजोलेश्या पद्मलेश्या शुक्ललेश्या।

२ जीवनिकाय छः प्रकार के हैं यथा—पृथ्वीकाय अप्काय तेजस्काय वायुकाय वनस्पतिकाय त्रसकाय।

३ बाह्य तप छः प्रकार के हैं यथा—अनशन ऊनोदरिका वृत्तिसंक्षेप रसपरित्याग कायक्लेश संलीनता।

४ आभ्यन्तर तप छः प्रकार के हैं यथा—प्रायश्चित्त विनय वैयावृत्य स्वाध्याय ध्यान उत्सर्ग।

५ छाद्मस्थिक समुद्घात छः प्रकार के हैं यथा—वेदना समुद्घात कषायसमुद्घात मारणान्तिकसमुद्घात वैक्रिय समुद्घात, तैजससमुद्घात आहारकसमुद्घात।

६ अर्थावग्रह छः प्रकार के हैं यथा—श्रोत्रेन्द्रिय अर्थावग्रह चक्षु इन्द्रिय अर्थावग्रह, घ्राणेन्द्रिय अर्थावग्रह रसनेन्द्रिय

७ कृत्तिका नक्षत्र के छ तारे हैं।
८ अश्लेषा नक्षत्र के छ तारे हैं।
९ रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नरयिकों की स्थिति छ पल्योपम की है।
१० वालुकाप्रभा पृथ्वी के कुछ नरयिकों की स्थिति छ सागरोपम की है।
११ कुछ असुरकुमार देवों की स्थिति छ पल्योपम की है।
१२ सौधर्म और ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति छ पल्योपम की है।
१३ सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्प के कुछ देवों की स्थिति छ सागरोपम की है।
१४ स्वयभू स्वयभूरमण घोष सुघोष महाघोष कृष्टिघोष वीर सुवीर वीरगति वीरश्रेणिक वीरावर्त वीरप्रभ वीरकान्त वीरवर्ण वीरलेश्य वीरध्वज वीरशृंग वीरसृष्ट वीरकूट वीरोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी उत्कृष्ट स्थिति छ सागरोपम की होती है।
१५ स्वयभू-यावत् वीरोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते हैं वे छ पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते हैं।
१६ स्वयभू-यावत्-वीरोत्तरावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी आहार लेने की इच्छा छ हजार वर्ष से होती है।
१७ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो छ भव करके सिद्ध यावत् सब दुखों का अन्त करेंगे।

सातवा समवाय

१ भयस्थान सात प्रकार के हैं यथा—इहलोक भय, परलोक भय आदान भय अकस्मात् भय आजीविका भय मरण भय अपयश भय।

२ समुद्घात सात प्रकार के हैं यथा—वेदनासमुद्घात कषाय समुद्घात मारणान्तिक समुद्घात वैक्रिय समुद्घात तैजस समुद्घात आहारक समुद्घात केवली समुद्घात।

३ श्रमण भगवान महावीर सात हाथ के ऊचे थे।

४ इस जम्बूद्वीप म सात वर्षधर पर्वत हैं यथा लघु हिमवन्त महा हिमवन्त निषध नीलवन्त रुक्मी शिखरी मन्दराचल।

५ इस जम्बूद्वीप म सात क्षेत्र हैं यथा भरत हैमवत हरिवर्ष महाविदेह रम्यक्वर्ष ऐरण्यवत एरवत।

६ क्षीणमोह वीतराग मोहनीय को छोडकर सात कर्म प्रकृतियो का वेदन करते हैं।

७ मघा नक्षत्र के सात तारे हैं।

८ कृत्तिका आदि सात नक्षत्र पूर्वदिशा म द्वारवाले है।

९ मघा आदि सात नक्षत्र दक्षिण दिशा म द्वारवाले है।

१० अनुराधा आदि सात नक्षत्र पश्चिम दिशा म द्वारवाले हैं।

११ धनिष्ठा आदि सात नक्षत्र उत्तरदिशा म द्वारवाले है।

१२ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नरयिको की स्थिति सात पल्योपम की है।

१३ वालुकाप्रभा पृथ्वी के कुछ नरयिको की स्थिति सात सागरोपम की है।

१४ पकप्रभा पृथ्वी के नरयिको की जघन्य स्थिति सात सागरो-

पम की है।

१५ कुछ असुरकुमार देवा की स्थिति सात पल्योपम की है।

१६ सौधर्म और ईशान कल्प के कुछ देवा की स्थिति सात पल्योपम की है।

१७ सनत्कुमारकल्प मे देवा की उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपम की है।

१८ माहेन्द्र कल्प के देवा की उत्कृष्ट स्थिति कुछ अधिक सात सागरोपम की है।

१९ ब्रह्मलोक कल्प के कुछ देवा की स्थिति कुछ अधिक सात सागरोपम की है।

२० सम समप्रभ महाप्रभ प्रभास भासुर विमल वचनकूट और सनत्कुमारावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है उनकी उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपम की होती है।

२१ सम-यावत् सनत्कुमारावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है वे सात पक्ष से श्वासोच्छवास लेते हैं।

२२ सम यावत् सनत्कुमारावतसक विमान मे जो देव उत्पन्न होते है उनको आहार करने की इच्छा सात हजार वर्ष मे होती है।

२३ कुछ ऐसे भवसिद्धिक जीव हैं जो सात भव करके सिद्ध यावत्-सर्व दुखा का अन्त करेंगे।

आठवाँ समवाय

१ मदस्थान आठ है यथा जातिमद, कुलमद बलमद रूपमद तपमद श्रुतमद लाभमद ऐश्वर्यमद।

२ प्रवचनमाता आठ हैं यथा ईर्या समिति भाषा समिति, एषणा समिति आदान भाड मात्र निक्षेपणा समिति,

उच्चार प्रस्रवण-श्लेष्म जल्ल सिंघाण-परिष्ठापनिका समिति।
मन गुप्ति वचन गुप्ति काय गुप्ति।

३ व्यन्तर देवों के चैत्य वृक्ष आठ योजन के ऊँचे हैं।
४ जंबूद्वीप के सुदर्शन वृक्ष आठ योजन के ऊँचे हैं।
५ गरुडावास कूटशाल्मली वृक्ष आठ योजन के ऊँचे हैं।
६ जंबूद्वीप की जगती आठ योजन ऊंची है।
७ केवलीसमुद्घात के आठ समय होते हैं यथा
प्रथम समय में आत्मप्रदेशों की दण्ड रचना।
द्वितीय समय में आत्मप्रदेशों की कपाट रचना।
तृतीय समय में आत्मप्रदेशों की मथानी रचना।
चतुर्थ समय में मथानी के अन्तरालों की पूर्ति।
पंचम समय में मथानी के अन्तरालों का संहरण।
षष्ठ समय में मथानी का संहरण।
सप्तम समय में कपाट का संहरण।
अष्टम समय में दण्ड का संहरण।
पश्चात् आत्मा शरीरस्थ होता है।

८ पुरुषादानीय अरहंत पार्श्वनाथ के आठ गण और गणधर थे
यथा शुभ शुभघोष वशिष्ठ ब्रह्मचारी सोम श्रीधर वीरभद्र यश।

९ चन्द्र के साथ प्रमर्द योग करनेवाले आठ नक्षत्र यथा कृत्तिका
रोहिणी पुनर्वसु मघा चित्रा विशाखा अनुराधा ज्येष्ठा।

१० इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नरयिकों की स्थिति आठ पल्यो
पम की है।

११ पंकप्रभा पृथ्वी के कुछ नरयिकों की स्थिति आठ सागरोपम
की है।

१२ कुछ असुरकुमार देवों की स्थिति आठ पल्योपम की है।

१३ सौधम और ईशान कल्प म कुछ देवो की स्थिति आठ पल्यो-
पम की है।
१४ ब्रह्मलोक कल्प म कुछ दवो की स्थिति आठ सागरोपम की
है।
१५ अचि अचिमाली वरोचन प्रभकर चद्राभ सूर्याभ सुप्रतिष्ठाभ
अग्न्याभ रिष्टाभ अरुणाभ अरुणोत्तरावतसक विमान म
जो देव उत्पन्न होते है उनकी उत्कृष्ट स्थिति आठ सागरोपम
की होती है।
१६ अचि यावत्-अरुणोत्तरावतसक विमान म जो दव उत्पन्न होते
है व आठ पक्ष म श्वासोच्छ्वास लेते हैं।
१७ अचि-यावत् अरुणोत्तरावतसक विमान म जो देव उत्पन्न होते
है उनकी आहार की इच्छा आठ हजार वर्ष म होती है।
१८ कुछ भवसिद्धिक जीव एसे है जो आठ भव करके सिद्ध-
यावत्-सब दुखो का अत करेंगे।

नौवा समवाय

१ ब्रह्मचय की गुप्तियाँ नौ है यथा
   १ स्त्री पशु और नपुसक के ससग स युक्त स्थान या आसन
   के उपयोग करने का निषेध।
   २ स्त्रीकथा करने का निषेध।
   ३ स्त्रीसमूह म बठने का निषेध।
   ४ स्त्री की मनोहर मनोरम इन्द्रियो को देखने का तथा
   चिन्तन का निषेध।
   ५ प्रचुर घृतादि युक्त विकार वधक आहार करने का निषेध।
   ६ अधिक भोजन करने का निषेध।

७ स्त्री के साथ की हुई कामक्रीड़ा के स्मरण का निषेध।
८ स्त्री के शब्द रूप गंध रस और स्पर्श की प्रशंसा करने का निषेध।
९ सात्विक गुणों में आसक्त होने का निषेध।
२ ब्रह्मचर्य अगुप्तियाँ नौ हैं यथा
पूर्व कथित नौ गुप्तियों से विपरीत आचरण करना।
३ आचारांग के प्रथम ब्रह्मचर्य श्रुतस्कंध के नौ अध्ययन हैं यथा
शस्त्र-परिज्ञा लोकविजय शीतोष्णीय सम्यक्त्व आवंति, धूत विमोहायतन उपधान-श्रुत महापरिज्ञा।
४ पुरुषादानीय पुरुष अरहंत पार्श्वनाथ नौ हाथ के ऊँचे थे।
५ अभिजित् नक्षत्र का चन्द्र के साथ योगकाल कुछ अधिक नव मुहूर्त का है।
६ अभिजित् आदि नौ नक्षत्रों का चन्द्र के साथ उत्तर दिशा से योग होता है यथा अभिजित् श्रवण-यावत् भरणी।
७ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के अति सम रमणीय भूभाग से नौ सौ योजन की अव्यवहित ऊँचाई पर तारा गति करते हैं।
८ जंबूद्वीप में नौ योजन प्रमाणवाले मत्स्य प्रवेश करते थे करते हैं और करेंगे।
९ विजयद्वार के प्रत्येक पार्श्वभाग में नौ नौ भौम नगर हैं।
१० व्यंतर देवों की सुधर्मा सभा नौ योजन की ऊँची है।
११ दर्शनावरणकर्म की नौ प्रकृतियाँ हैं यथा निद्रा प्रचला निद्रा निद्रा प्रचला प्रचला स्त्यानर्द्धि चक्षु दर्शनावरण अचक्षु दर्शनावरण अवधि दर्शनावरण केवल दर्शनावरण।
१२ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नरयिकों की स्थिति नौ पल्योपम

१३ पद्मप्रभा पृथ्वी के कुछ नरयिकों की स्थिति नौ सागरोपम की है।
१४ कुछ असुरकुमार देवों की स्थिति नौ पल्योपम की है।
१५ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवों की स्थिति नौ पल्योपम की है।
१६ ब्रह्मलोककल्प के कुछ देवों की स्थिति नौ सागरोपम की है।
१७ पक्ष्म सुपक्ष्म पक्ष्मावर्त पक्ष्मप्रभ पक्ष्मकान्त पक्ष्मवर्ण पक्ष्मलेश्य पक्ष्मध्वज पक्ष्मशृंग पक्ष्मसृष्ट पक्ष्मकूट पक्ष्मोत्तरावतंसक सूर्य सुसूर्य सूर्यावर्त सूर्यप्रभ सूर्यकान्त सूर्यवर्ण सूर्यलेश्य सूर्यध्वज सूर्यशृंग सूर्यसृष्ट सूर्यकूट सूर्योत्तरावतंसक। रुचिर रुचिरावर्त रुचिरप्रभ रुचिरकान्त रुचिरवर्ण रुचिरलेश्य रुचिरध्वज रुचिरशृंग रुचिरसृष्ट रुचिरकूट रुचिरोत्तरावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी उत्कृष्ट स्थिति नौ सागरोपम की होती है।
१८ पक्ष्म यावत् रुचिरोत्तरावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं वे नौ पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते हैं।
१९ पक्ष्म-यावत् रुचिरोत्तरावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं उनको आहार लेने की इच्छा नौ हजार वर्ष से होती है।
२० कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो नौ भव करके सिद्ध यावत् सब दुःखों का अन्त करेंगे।

दसवां समवाय

१ श्रमण धर्म दस प्रकार के हैं यथा क्षांति मुक्ति आर्जव मार्दव लाघव सत्य संयम तप त्याग ब्रह्मचर्यवास।

की है ।

११ पकप्रभा पृथ्वी म ८स लाख नरकावास हैं ।

१२ पकप्रभा पृथ्वी क नरयिका की उत्कृष्ट स्थिति दस सागरोपम की है ।

१३ धूमप्रभा पथ्वी क नयिका की जघन्य स्थिति दस सागरोपम की है ।

१४ असुरकुमार देवा की जघन्य स्थिति दस हजार वप की है ।

१५ असुरेन्द्र को छोडकर नाप भवनपति देवा की जघन्य स्थिति ८स हजार वप की है ।

१६ कुछ असुरकमार देवा की स्थिति दस पल्योपम की है ।

१७ प्रत्यक वनस्पतिकाय का उत्कृष्ट स्थिति दस हजार वप की है ।

१८ व्यन्तर ८वा की जघन्य स्थिति दस हजार वप की है ।

१९ सौधम और ईशानकल्प क कुछ ८वा की स्थिति दस पल्योपम की है ।

२० ब्रह्मलोककल्प क देवा की उत्कृष्ट स्थिति दस सागरोपम की है ।

२१ लान्तककल्प क ८वा की जघन्य स्थिति ८स सागरोपम की है ।

२२ घोप सुघाप महाघाप नन्दाघाप सुस्वर मनोरम रम्य रम्यक रमणीय मगलावन और ब्रह्मलोकावतसक विमान म जो देव उत्पन्न होते है उनकी उत्कृष्ट स्थिति दस सागरोपम की होती है ।

२३ घाप यावत् ब्रह्मलोकावतसक विमान म जो ८व उत्पन्न होते हैं व दस पक्ष स ८वासाच्छवास लेते है ।

२४ घाप-यावत् ब्रह्मलाकावतसक विमान म जा देव उत्पन्न हाते है उनकी आहार ८न की ८च्छा दस हजार वप स होती है ।

२५ कुछ भवसिद्धिक जीव एस हैं जा ८स भव पकरक सिद्ध

यावत्-सब दुःखों का अन्त करेंगे।

इग्यारहवाँ समवाय

१ उपासक की इग्यारह प्रतिमाएं हैं यथा

१ दर्शन श्रावक।
२ कृत व्रतकर्म।
३ कृत सामायिक।
४ पौषधोपवास निरत।
५ दिन में ब्रह्मचर्य का पालन और रात्रि में मैथुन सेवन का परिमाण।
६ दिन और रात्रि में ब्रह्मचर्य का पालन अस्नान रात्रि भोजन विरति कच्छ परिधान परित्याग। मुकुट त्याग।
७ सचित्त परित्याग।
८ आरम्भ परित्याग।
९ प्रैष्य परित्याग।
१० उद्दिष्ट भक्त परित्याग।
११ श्रमणभूत।

२ लोकान्त से अव्यवहित इग्यारह सौ इग्यारह योजन दूरी पर ज्योतिष चक्र प्रारम्भ होता है।

३ जम्बूद्वीप में मेरुपर्वत से अव्यवहित इग्यारह सौ इक्कीस योजन दूरी पर ज्योतिष चक्र प्रारम्भ होता है।

४ श्रमण भगवान महावीर के इग्यारह गणधर थे यथा इन्द्रभूति अग्निभूति वायुभूति व्यक्त, सुधर्मा मण्डितपुत्र मौर्यपुत्र अकंपित अचलभ्राता मेतार्य प्रभास।

५ मूल नक्षत्र के इग्यारह तारे हैं।

६ नीचे के तीन ग्रवेयक देवों के एकसौ इग्यारह विमान हैं।

७ मेरु पर्वत के पृथ्वीतल के विष्कम्भ से शिखरतल का विष्कम्भ ऊंचाई की अपेक्षा ग्यारहवें भाग हीन है।

८ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिकों की स्थिति इग्यारह पल्योपम की है।

९ धूमप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिकों की स्थिति इग्यारह सागरोपम की है।

१० कुछ असुरकुमार देवों की स्थिति इग्यारह पल्योपम की है।

११ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवों की स्थिति इग्यारह पल्योपम की है।

१२ लान्तककल्प के कुछ देवों की स्थिति इग्यारह सागरोपम की है।

१३ ब्रह्म सुब्रह्म ब्रह्मावर्त ब्रह्मप्रभ ब्रह्मकान्त ब्रह्मवर्ण ब्रह्मलेश्य ब्रह्मध्वज ब्रह्मशृंग ब्रह्मसृष्ट ब्रह्मकूट ब्रह्मोत्तरावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी उत्कृष्ट स्थिति इग्यारह सागरोपम की कही है।

१४ ब्रह्म यावत्-ब्रह्मोत्तरावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं वे इग्यारह पक्ष में श्वासोच्छ्वास लेते हैं।

१५ ब्रह्म-यावत्-ब्रह्मोत्तरावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं उनको आहार करने की इच्छा इग्यारह हजार वर्ष से होती है।

१६ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो इग्यारह भव करके सिद्ध यावत्-सब दुःखों का अन्त करेंगे।

बारहवां समवाय

१ भिक्षु प्रतिमाएं बारह हैं यथा
  १ एक मासिकी भिक्षुप्रतिमा । २ द्विमासिकी भिक्षुप्रतिमा ।
  ३ त्रिमासिकी भिक्षुप्रतिमा । ४ चतुर्मासिकी भिक्षुप्रतिमा ।
  ५ पंचमासिकी भिक्षुप्रतिमा । ६ छ मासिकी भिक्षुप्रतिमा ।
  ७ सप्तमासिकी भिक्षुप्रतिमा ।
  ८ प्रथमा सप्त अहोरात्रिकी भिक्षुप्रतिमा ।
  ९ द्वितीया सप्त अहोरात्रिकी भिक्षुप्रतिमा ।
  १० तृतीया सप्त अहोरात्रिकी भिक्षुप्रतिमा ।
  ११ एक अहोरात्रिकी भिक्षुप्रतिमा ।
  १२ एक रात्रिकी भिक्षुप्रतिमा ।

२ श्रमणों के बारह व्यवहार हैं यथा
उपधि श्रुत भक्त-पान अंजलिप्रग्रह दान निमंत्रण अभ्युत्थान कृतिकर्म वैयावृत्य समवसरण-सन्निषद्या कथाप्रबंध।

३ द्वादशावर्त वन्दना यथा
दो बार अध नमन चार बार मस्तक नमन त्रिगुप्त द्विप्रवेश एक निष्क्रमण ।

४ विजया राजधानी का आयाम विष्कम्भ बारह लाख योजन का है ।

५ राम बलदेव बारह सौ वर्ष का आयु पूर्ण करके स्वर्ग को प्राप्त हुए ।

६ मेरु पर्वत की चूलिका के मूल का विष्कम्भ बारह योजन का है ।

७ जम्बूद्वीप की वेदिका के मूल का विष्कम्भ बारह योजन का है ।

८ सब जघन्य रात्रि बारह मुहूर्त की होती है।
९ सब जघन्य दिन बारह मुहूर्त का होता है।
१० सर्वार्थसिद्ध महा विमान की ऊपर की स्तूपिका के अग्रभाग से बारह योजन ऊपर जाने पर ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी है।
११ ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी के बारह नाम हैं, यथा ईषत् ईषत् प्राग्भारा तनु तनुतरा, सिद्धि सिद्धालय मुक्ति मुक्तालय ब्रह्म ब्रह्मावतंसक लोकप्रतिपूरणा लोकाग्रचूलिका।
१२ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नरयिकों की स्थिति बारह पल्योपम की है।
१३ धूमप्रभा पृथ्वी के कुछ नरयिकों की स्थिति बारह सागरोपम की है।
१४ कुछ असुरकुमार देवों की स्थिति बारह पल्योपम की है।
१५ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवों की स्थिति बारह पल्योपम की है।
१६ लान्तककल्प के कुछ देवों की स्थिति बारह सागरोपम की है।
१७ माहेन्द्र माहेन्द्र ध्वज कंबु कंबुग्रीव पुख सुपुख महापुख पुंड सुपुंड महापुंड नरेन्द्र नरेन्द्रकान्त नरेन्द्रावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी उत्कृष्ट स्थिति बारह सागरोपम की होती है।
१८ माहेन्द्र-यावत् नरेन्द्रावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं वे बारह पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते हैं।
१९ माहेन्द्र यावत्-नरेन्द्रावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं उनको आहार लेने की इच्छा बारह हजार वर्ष से होती है।
२० कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो बारह भव करके सिद्ध -यावत् सर्व दुखों का अन्त करेंगे।

तेरहवां समवाय

१ तेरह क्रिया स्थान हैं यथा अर्थदण्ड अनर्थादण्ड हिंसादण्ड अकस्मात् दण्ड दृष्टिविपर्यास दण्ड मृषावाद हेतुक दण्ड, अदत्तादान हेतुक दण्ड आध्यात्मिक दण्ड मित्रद्वेष हेतुक दण्ड माया हेतुक दण्ड लोभ हेतुक दण्ड ईर्यापथ हेतुक दण्ड।

२ सौधर्म और ईशानकल्प में तेरह विमान प्रस्तर हैं।

३ सौधर्मावतंसक विमान का आयाम विष्कम्भ साढे तेरह लाख योजन का है।

४ ईशानावतंसक विमान का आयाम-विष्कम्भ साढे तेरह लाख योजन का है।

५ जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय की साढे तेरह लाख कुलकोटी है।

६ प्राणायु पूर्व के तेरह वस्तु हैं।

७ गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय के तेरह योग हैं यथा
सत्य मन प्रयोग मृषा मन प्रयोग
सत्यामृषा मन प्रयोग असत्यामृषा मन प्रयोग।
सत्य वचन प्रयोग मृषा वचन प्रयोग
सत्य मृषा वचन प्रयोग असत्यामृषा वचन प्रयोग
औदारिक शरीर काय प्रयोग औदारिक मिश्र शरीर काय प्रयोग वैक्रिय शरीर काय प्रयोग वैक्रिय मिश्र शरीर काय प्रयोग कार्मण शरीर काय प्रयोग।

८ एक योजन के इकसठ भाग में से तेरह भाग कम करने पर जितना रहे उतना सूर्य मण्डल है।

९ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कितनेक नैरयिकों की स्थिति तेरह पल्योपम की है।

१० धूमप्रभा पृथ्वी के कुछ नरयिकों की स्थिति तेरह सागरोपम की है।

११ कुछ असुरकुमार देवों की स्थिति तेरह पल्योपम की है।

१२ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवों की स्थिति तेरह पल्योपम की है।

१३ लान्तककल्प के कुछ देवों की स्थिति तेरह सागरोपम की है।

१४ वज्र सवज्र वज्रावर्त वज्रप्रभ वज्रकान्त वज्रवर्ण वज्रलेश्य वज्ररूप वज्रशृंग वज्रसृष्ट वज्रकूट वज्रोत्तरावतंसक वइर वइरावर्त वइरकान्त वइरवर्ण वइरलेश्य वइररूप वइरशृंग वइरसृष्ट वइरकूट वइरोत्तरावतंसक लोक लोकावर्त लोकप्रभ लोककान्त लोकवर्ण लोकलेश्य लोकरूप लोकशृंग लोकसृष्ट लोककूट लोकोत्तरावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी उत्कृष्ट स्थिति तेरह सागरोपम की होती है।

१५ वज्र यावत् लोकोत्तरावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं वे तेरह पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते हैं।

१६ वज्र यावत् लोकोत्तरावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं उनको आहार लेने की इच्छा तेरह हजार वर्ष से होती है।

१७ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो तेरह भव करके सिद्ध यावत् सब दुःखों का अन्त करेंगे।

चौदहवां समवाय

१ चौदह भूतग्राम हैं यथा-सूक्ष्म अपर्याप्त सूक्ष्म पर्याप्त बादर अपर्याप्त बादर पर्याप्त द्वीन्द्रिय अपर्याप्त द्वीन्द्रिय पर्याप्त त्रीन्द्रिय अपर्याप्त त्रीन्द्रिय पर्याप्त चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त चतुरिन्द्रिय पर्याप्त असंज्ञीपंचेन्द्रिय अपर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय

पर्याप्त सन्नी पचेन्द्रिय अपर्याप्त सन्नी पचेन्द्रिय पर्याप्त ।

२ चौदह पूर्व हैं यथा उत्पाद पूर्व अग्रायणीय पूर्व वीर्यप्रवाद पूर्व अस्ति नास्ति प्रवाद पूर्व ज्ञान प्रवाद पूर्व सत्य प्रवाद पूर्व आत्म प्रवाद पूर्व कर्म प्रवाद पूर्व प्रत्याख्यान पूर्व विद्यानुप्रवाद पूर्व अवध्य पूर्व प्राणायु पूर्व क्रियाविशाल पूर्व बिन्दुसार पूर्व ।

३ अग्रायणीय पूर्व के चौदह वस्तु है ।

४ श्रमण भगवान महावीर के चौदह हजार श्रमणो की सपदा है।

५ कर्मविशुद्धि मार्गणा की अपेक्षा चौदह जीवस्थान हैं यथा मिथ्यादृष्टि सास्वादन सम्यग दृष्टि सम्यग मिथ्या दृष्टि अविरत सम्यग दृष्टि विरताविरत प्रमत्तसयत अप्रमत्तसयत निवृत्ति बादर अनिवृत्ति बादर सूक्ष्म सपराय उपशात मोह क्षीण मोह सयोगी केवली अयोगी केवली ।

६ भरत और ऐरवत की जीवा का आयाम चौदह हजार चार सौ इकहत्तर एक योजन के उन्नीस भागो में से छह भाग का है।

७ प्रत्येक चक्रवर्ती के चौदह रत्न है यथा
स्त्री रत्न सेनापति रत्न गाथापति रत्न पुरोहित रत्न वाधकी रत्न अश्व रत्न हस्ति रत्न ।
खड्ग रत्न दड रत्न चक्र रत्न छत्र रत्न चर्म रत्न मणि रत्न काकणी रत्न ।

८ जबूद्वीप में चौदह मोटी नदियां पूर्व पश्चिम से लवण समुद्र में मिलती है यथा गगा सिन्धु रोहिता रोहितांशा हरि हरिकांता सीता सीतोदा नरकांता नारीकांता सुवर्णकूला रूप्यकूला रक्ता रक्तवती ।

९ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नरयिकों की स्थिति चौदह पल्यो-

पम की है ।

१० धूमप्रभा पृथ्वी के कुछ नरयिकों की स्थिति चौदह सागरोपम की है ।

११ कुछ असुरकुमार देवों की स्थिति चौदह पल्योपम की है ।

१२ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवों की स्थिति चौदह पल्योपम की है ।

१३ लान्तककल्प के देवों की उत्कृष्ट स्थिति चौदह सागरोपम की है ।

१४ महाशुक्रकल्प के देवों की जघन्य स्थिति चौदह सागरोपम की है ।

१५ श्रीकांत श्रीमहित श्रीसोमनस लांतक कापिष्ठ महेन्द्र महेन्द्रकांत महेन्द्रोत्तरावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी उत्कृष्ट स्थिति चौदह सागरोपम की होती है ।

१६ श्रीकांत-यावत् महेन्द्रोत्तरावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं वे चौदह पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते हैं ।

१७ श्रीकांत-यावत् महेन्द्रोत्तरावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं उनको आहार लेने की इच्छा चौदह हजार वर्ष में होती है ।

१८ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो चौदह भव करके सिद्ध यावत्-सब दुःखों का अंत करेंगे ।

पन्द्रहवां समवाय

१ पन्द्रह परमाधार्मिक देव हैं यथा
अंब अंबरिस श्याम शबल रुद्र उपरुद्र काल महाकाल असिपत्र धनु कुंभ वालुक वैतरिणी खरस्वर महाघोष ।

२ भगवान नमिनाथ पद्रह धनुप के ऊच थ ।
३ ध्रुवराहु कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से प्रतिदिन चद्रकला के पद्रहवें भाग को आवृत करता है । यथा
प्रतिपदा को एक पद्रहवा भाग आवत करता है
द्वितीया को दो पन्द्रहवा भाग आवत करता है
तृतीया को तीन पद्रहवें भाग आवत करता है
-यावत-अमावास्या को पद्रह भाग आवत करता है ।
४ ध्रुवराहु शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से प्रतिदिन चद्रकला के पद्रहवें भाग को अनावत करता है ।यथा
प्रतिपदा को एक पद्रहवा भाग अनावत करता है
द्वितीया को दो पन्द्रहवें भाग अनावत करता है
ततीया को तीन पन्द्रहवें भाग अनावत करता है
यावत् पूर्णिमा को पन्द्रहभागों को अनावत करता है ।
५ छ नक्षत्र चन्द्र के साथ पद्रह मुहूर्त पयत योग करते हैं यथा-
शतभिषक भरणि आर्द्रा अश्लेषा स्वाति ज्येष्ठा ।
६ चैत्र तथा आश्विन में पद्रह मुहूर्त का दिन होता है और पद्रह मुहूर्त की रात्रि होती है ।
७ विद्यानुप्रवाद पूर्व के पद्रह वस्तु हैं ।
८ मनुष्य के पद्रह योग है । यथा
सत्य मन प्रयोग मृषा मन प्रयोग सत्य-मृषा मन प्रयोग
असत्यामृषा मन प्रयोग सत्य वचन प्रयोग असत्य वचन प्रयोग
सत्य मृषा वचन प्रयोग असत्यामृषा वचन प्रयोग औदारिक
शरीर काय प्रयोग औदारिक मिश्र शरीर काय प्रयोग वैक्रिय
शरीर काय प्रयोग वैक्रिय मिश्र शरीर काय प्रयोग
आहारक शरीर काय प्रयोग, आहारक मिश्र शरीर काय प्रयोग

सामण शरीर काय प्रयोग ।

९ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नरयिकों की स्थिति पद्रह पल्योपम की है।

१० धूमप्रभा पृथ्वी के कुछ नरयिकों की स्थिति पद्रह सागरोपम की है।

११ कुछ असुरकुमार देवों की स्थिति पन्द्रह पल्योपम की है।

१२ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवों की स्थिति पन्द्रह पल्योपम की है।

१३ महाशुक्रकल्प के कुछ देवों की स्थिति पन्द्रह सागरोपम की है।

१४ नद सुनद नन्दावर्त नन्दप्रभ नन्दकात नन्दवण नन्दलेश्य नदध्वज नन्दशृग नन्दसृष्ट नन्दकूट नन्दोत्तरावतसक विमान म जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी उत्कृष्ट स्थिति पद्रह सागरोपम की होती है।

१५ नद यावत्-नन्दोत्तरावतसक विमान म जो देव उत्पन्न होते हैं वे पद्रह पक्ष म श्वासोच्छ्वास लेते हैं।

१६ नद-यावत् नन्दोत्तरावतसक विमान म जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी आहार इच्छा पन्द्रह हजार वर्ष म होती है।

१७ कुछ भवसिद्धिक जीव एस हैं जो पन्द्रह भव करके सिद्ध-यावत् सब दुखों का अत करेंगे।

सोलहवा समवाय

१ सूत्रकृताग के सोलह अध्ययन का नाम गाथा षोडशक है यथा समय वतालीय उपसर्ग परिज्ञा स्त्री-परिज्ञा नरक विभक्ति महावीर स्तुति कुशील परिभाषित वीर्य धर्म समाधि मार्ग समवसरण याथातथ्य ग्रथ यमकीय गाथा षोडशक।

२ कषाय सोलह हैं यथा
अनन्तानुबंधी क्रोध मान माया लोभ।
अप्रत्याख्यान क्रोध मान माया लोभ।
प्रत्याख्यान क्रोध मान माया लोभ।
संज्वलन क्रोध मान माया लोभ।

३ मन्दर पर्वत के सोलह नाम हैं यथा मन्दर मेरु मनोरम सुदर्शन स्वयप्रभ गिरिराज रत्नोच्चय प्रियदर्शन लोक मध्य लोकनाभि अथ सूर्यावर्त सूर्यावरण उत्तर दिगादि अवतंसक।

४ पुरुषो मे प्रधान पार्श्वनाथ अरिहंत की उत्कृष्ट श्रमण सम्पदा सोलह हजार थी।

५ आत्मप्रवाद पूर्व के सोलह वस्तु हैं।

६ चमरेन्द्र और बलेन्द्र के अवतारिकालयनों का आयाम विष्कम्भ सोलह हजार योजन का है।

७ लवण समुद्र के मध्यभाग मे वेला की वृद्धि सोलह हजार योजन की है।

८ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिकों की स्थिति सोलह पल्योपम की है।

९ धूमप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिकों की स्थिति सोलह सागरोपम की है।

१० कुछ असुरकुमार देवों की स्थिति सोलह पल्योपम की है।

११ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवों की स्थिति सोलह पल्योपम की है।

१२ महाशुक्रकल्प के कुछ देवों की स्थिति सोलह सागरोपम की है।

१ आवर्त व्यावर्त नन्द्यावर्त महानन्द्यावर्त अंकुश अंकुशप्रलम्ब भद्र सुभद्र महाभद्र सर्वतोभद्र भद्रोत्तरावतंसक विमान में जो देव

उत्पन्न होते हैं उनकी उत्कृष्ट स्थिति सोलह सागरोपम की होती है।

१४ आवत यावत् भद्रोत्तरावतसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं वे सोलह पक्ष से श्वासोच्छवास लेते हैं।

१५ आवत-यावत् भद्रोत्तरावतसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी आहार लेने की इच्छा सोलह हजार वर्ष से होती है।

१६ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो सोलह भव करके सिद्ध-यावत् सब दुखों का अंत करेंगे।

सत्तरहवां समवाय

१ सत्तरह प्रकार के असयम हैं यथा
पृथ्वीकाय असयम अप्काय असयम तेजस्काय असयम वायुकाय असयम वनस्पतिकाय असयम द्वीन्द्रिय असयम त्रीन्द्रिय असयम चतुरिन्द्रिय असयम पचेन्द्रिय असयम अजीवकाय असयम प्रेक्षा असयम उपेक्षा असयम अपहृत्य असयम अप्रमार्जना असयम मन असयम वचन असयम काय असयम।

२ सत्तरह प्रकार का सयम है यथा
पृथ्वीकाय सयम अप्काय सयम तेजस्काय सयम वायुकाय सयम वनस्पतिकाय सयम, द्वीन्द्रिय सयम त्रीन्द्रिय सयम चतुरिन्द्रिय सयम पचेन्द्रिय सयम अजीवकाय सयम प्रेक्षा सयम उपेक्षा सयम अपहृत्य सयम प्रमार्जना सयम मन सयम वचन सयम काय सयम।

३ मानुषोत्तर पर्वत की ऊंचाई सत्तरहसो इक्कीस योजन की है।

४ सब वेलंधर और अनुवेलंधर नागराजा के आवास पर्वतों की ऊंचाई सतरहसौ इक्कीस योजन की है।

५ लवणसमुद्र के पेंदे से ऊपर की सतह की ऊंचाई सतरह हजार योजन की है।

६ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के सम भूभाग से कुछ अधिक सतरह हजार योजन की ऊंचाई पर जंघा चारण और विद्या चारण मुनियों की तिरछी गति कही है।

७ चमर असुरेन्द्र के तिगिच्छकूट उत्पात पर्वत की ऊंचाई सतरह सौ इक्कीस योजन की है।

८ बलि असुरेन्द्र के रुचकेन्द्र उत्पात पर्वत की ऊंचाई सतरहसौ इक्कीस योजन की है।

९ मरण सतरह प्रकार का है-यथा आवीचि मरण अवधि मरण आत्यन्तिक मरण वलाय मरण वशार्त मरण अन्तःशल्य मरण तद्भव मरण बाल मरण पंडित मरण बाल पंडित मरण छद्मस्थ मरण केवली मरण वैहायस मरण गृद्धपृष्ठ मरण भक्तप्रत्याख्यान मरण इंगिनी मरण पादपोपगमन मरण।

१० सूक्ष्म संपराय भाव में वर्तमान सूक्ष्म सांपरायिक भगवान के सतरह कर्मप्रकृतियों का बंध होता है, यथा
आभिनिबोधिक ज्ञानावरण श्रुतज्ञानावरण अवधिज्ञानावरण मनःपर्यवज्ञानावरण केवलज्ञानावरण चक्षुदर्शनावरण अचक्षुदर्शनावरण अवधिदर्शनावरण, केवलदर्शनावरण साता वेदनीय यशःकीर्ति नाम उच्च गोत्र दानान्तराय लाभान्तराय भोगान्तराय उपभोगान्तराय, वीर्यान्तराय।

उत्पन्न होते हैं उनकी उत्कृष्ट स्थिति सोलह सागरोपम की होती है।

१४ आवत-यावत् भन्तरावतसक विमान म जो देव उत्पन्न होते हैं वे सोलह प ा से श्वासोच्छवास लेते है।

१५ आवत-यावत् भन्तरावतसक विमान म जो देव उत्पन्न होते ह उनकी आ ार ने की इच्छा सोलह हजार वष स होती है।

१६ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐस हैं जो सोलह भव करके सिद्ध-यावत् सब दुखो का अत करेंगे।

सत्तरहवा समवाय

१ सत्तरह प्रकार के असयम ह यथा
पृथ्वीकाय असयम अप्काय असयम तेजस्काय असयम वायुकाय असयम वनस्पतिकाय असयम द्वीन्द्रिय असयम त्रीन्द्रिय असयम चतुरिन्द्रिय असयम पचेन्द्रिय असयम अजीवकाय असयम प्रेक्षा असयम उपेक्षा असयम अपहृत्य असयम अप्रमार्जना असयम मन असयम वचन असयम काय असयम।

२ सत्तरह प्रकार का सयम है, यथा
पृथ्वीकाय सयम अप्काय सयम तेजस्काय सयम वायुकाय सयम वनस्पतिकाय सयम द्वीन्द्रिय सयम त्रीन्द्रिय सयम चतुरिन्द्रिय सयम पचेन्द्रिय सयम अजीवकाय सयम प्रेक्षा सयम उपेक्षा सयम अपहृत्य सयम प्रमार्जना सयम मन सयम वचन सयम काय सयम।

३ [illegible]

४ सब वलधर और अनुवेलघर नागराजा के आवास पर्वतों की ऊंचाई सतरहसौ इक्कीस योजन की है।

५ लवणसमुद्र के पैंदे से ऊपर की सतह की ऊंचाई सतरह हजार योजन की है।

६ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के सम भूभाग से कुछ अधिक सतरह हजार योजन की ऊंचाई पर जंघा चारण और विद्या चारण मुनियों की तिरछी गति कही है।

७ चमर असुरेन्द्र के तिगिच्छकूट उत्पात पर्वत की ऊंचाई सतरह सौ इक्कीस योजन की है।

८ बलि असुरेन्द्र के रुचकेन्द्र उत्पात पर्वत की ऊंचाई सतरहसौ इक्कीस योजन की है।

९ मरण सतरह प्रकार का है-यथा आवीचि मरण, अवधि मरण, आत्यन्तिक मरण, वलाय मरण, वशार्त मरण, अन्तःशल्य मरण, तद्भव मरण, बाल मरण, पण्डित मरण, बाल पण्डित मरण, छद्मस्थ मरण, केवली मरण, वैहायस मरण, गृद्धपृष्ठ मरण, भक्तप्रत्याख्यान मरण, इंगिनी मरण, पादपोपगमन मरण।

१० सूक्ष्म संपराय भाव में वर्तमान सूक्ष्म सांपरायिक भगवान के सतरह कर्मप्रकृतियों का बन्ध होता है यथा आभिनिबोधिक ज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, मनपर्यवज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण, केवलदर्शनावरण, साता वेदनीय, यशःकीर्ति, नाम, उच्च गोत्र, दानान्तराय, लाभान्तराय, भोगान्तराय, उपभोगान्तराय, वीर्यान्तराय।

११ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नरयिकों की स्थिति सतरह पल्योपम की है।
१२ धूमप्रभा पृथ्वी के नरयिकों की उत्कृष्ट स्थिति सतरह सागरोपम की है।
१३ तम प्रभा पृथ्वी के नैरयिकों की जघन्य स्थिति सतरह सागरोपम की है।
१४ कुछ असुरकुमार देवों की स्थिति सतरह पल्योपम की है।
१५ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवों की स्थिति सतरह पल्योपम की है।
१६ महाशुक्रकल्प के देवों की उत्कृष्ट स्थिति सतरह सागरोपम की है।
१७ सहस्रारकल्प के देवों की जघन्य स्थिति सतरह सागरोपम की है।
१८ सामान सुसामान महासामान पद्म महापद्म कुमुद महाकुमुद नलिन महानलिन पौंडरीक महापौंडरीक शुक्ल महाशुक्र सिंह सिंहकांत सिंहवीय भाविय विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी स्थिति सतरह सागरोपम की होती है।
१९ सामान यावत [illegible] में उत्पन्न होते हैं वे सतरह पक्ष [illegible]
२० सामान यावत [illegible] आहार लेने [illegible]
२१ कुछ भवसिद्धि[illegible] प्राप्त [illegible]

अठारहवां समवाय

१ ब्रह्मचर्य अठारह प्रकार का है यथा
औदारिक मनुष्य तिर्यच सम्बन्धी काम भोगों का
स्वयं मन से सेवन न करना
मन से अन्यद्वारा सेवन न करवाना
सेवन करते हुए का मन से अनुमोदन न करना
स्वयं वचन से सेवन न करना
वचन से अन्यद्वारा सेवन न करवाना
सेवन करते हुए का वचन से अनुमोदन न करना
स्वयं काया से सेवन न करना
काया से अन्य द्वारा सेवन न करवाना
सेवन करते हुए का काया से अनुमोदन न करना

देव सम्बन्धी काम भोगों का स्वयं मन से सेवन न करना
मन से अन्यद्वारा सेवन न करवाना
सेवन करते हुए का मन से अनुमोदन न करना
स्वयं वचन से सेवन न करना
वचन से अन्य द्वारा सेवन न करवाना
सेवन करते हुए का वचन से अनुमोदन न करना
स्वयं काया से सेवन न करना
काया से अन्य द्वारा सेवन न करवाना
सेवन करते हुए का काया से अनुमोदन न करना ।

२ अरहन्त अरिष्ठनेमि की उत्कृष्ट श्रमण सम्पदा अठारह हजार थी।

३ श्रमण भगवान महावीर के अनुयायी बाल वृद्ध श्रमणों के

आचार स्थान अठारह हैं। यथा
छ व्रतों का पालन छ काय की रक्षा अकल्प्य वस्त्र पात्र आदि का निषेध गृहस्थ का भाजन पल्यङ्क निषद्या स्नान और शरीर की शुश्रूषा का त्याग।

४ चूलिका सहित आचाराग भगवत में अठारह हजार पद हैं।

५ ब्राह्मी लिपी का लेखन अठारह प्रकार का है। यथा
ब्राह्मी यावनी दोषपुरिका खराष्ट्री खरशाविका पहारातिका उच्चतरिका अक्षरपृष्टिका भोगवतिका वनयिका निह्नविका अकलिपि गणितलिपि गधर्वलिपि, आदर्शलिपि माहेश्वरीलिपी दामलिपि बोलिन्दिलिपि

६ अस्ति-नास्ति प्रवाद पूर्व में अठारह वस्तु है।

७ धूमप्रभा पृथ्वी का विस्तार एक लाख अठारह हजार योजन का है।

८ पौष और आषाढ मास म एक दिन उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का होता है। तथा एक रात्रि अठारह मुहूर्त की होती है।

९ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिकों की स्थिति अठारह पल्योपम की है।

१० तम प्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिकों की स्थिति अठारह सागरोपम की है।

११ कुछ असुरकुमार देवों की स्थिति अठारह पल्योपम की है।

१२ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवों की स्थिति अठारह पल्योपम की है।

१३ सहस्रारकल्प के देवों की उत्कृष्ट स्थिति अठारह सागरोपम की है।

१४ प्राणत कल्प के देवों की जघन्य स्थिति अठारह सागरोपम की है।

१५ काल सुकाल महाकाल अंजन रिष्ट साल समान द्रुम महाद्रुम विशाल सुशाल पद्म पद्मगुल्म कुमुद कुमुदगुल्म नलिन नलिनगुल्म पौण्डरीक पौण्डरीकगुल्म सहस्रारावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी स्थिति अठारह सागरोपम की होती है।

१६ काल यावत् सहस्रारावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं वे अठारह पक्ष में श्वासोच्छ्वास लेते हैं।

१७ काल यावत् सहस्रारावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं उनको आहार लेने की इच्छा अठारह हजार वर्ष से होती है।

१८ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो अठारह भव करके सिद्ध यावत् सब दुःखों का अन्त करेंगे।

उन्नीसवां समवाय

१ ज्ञाताधर्मकथा के उन्नीस अध्ययन हैं यथा
उत्क्षिप्तज्ञात संघाटक अंड कूर्म शैलक तुंब रोहिणी मल्ली माकंदी चंद्रिका दावद्रव उदकज्ञात मंडूक तेतली नंदीफल अवरकंका आकीर्ण सुसुमा पुंडरीकज्ञात।

२ जम्बूद्वीप में सूर्य ऊंचे तथा नीचे उन्नीस सौ योजन ताप पहुंचाते हैं।

३ शुक्रमहाग्रह पश्चिम दिशा में उदय होकर उन्नीस नक्षत्रों के साथ योग करके पश्चिम दिशा में अस्त होता है।

४ जम्बूद्वीप के गणित में कला का परिमाण एक योजन का

उन्नीसवा भाग है।

५ उन्नीस तीर्थंकर गृहवास को छोड़कर मुंडित हुए अर्थात्-उन्होंने राज्यभोग कर अनगार प्रव्रज्या स्वीकार की।

६ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिकों की स्थिति उन्नीस पल्योपम की है।

७ तम प्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिकों की स्थिति उन्नीस सागरोपम की है।

८ कुछ असुरकुमार देवों की स्थिति उन्नीस पल्योपम की है।

९ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवों की स्थिति उन्नीस पल्योपम की है।

१० आनतकल्प के देवों की उत्कृष्ट स्थिति उन्नीस सागरोपम की है।

११ प्राणतकल्प के देवों की जघन्य स्थिति उन्नीस सागरोपम की है।

१२ आनत प्राणत नत विनत घन सुसिर इन्द्र इन्द्रकान्त इन्द्रोत्तरावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी स्थिति उन्नीस सागरोपम की होती है।

१३ आनत यावत् इन्द्रोत्तरावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं वे उन्नीस पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते हैं।

१४ आनत यावत् इन्द्रोत्तरावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं उनको आहार लेने की इच्छा उन्नीस हजार वर्ष से होती है।

१५ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो उन्नीस भव करके सिद्ध यावत् सब दुखों का अंत करेंगे।

बीसवां समवाय

१ बीस असमाधिस्थान हैं, यथा—
शीघ्र शीघ्र चलना, प्रमार्जन किए बिना चलना,
अच्छी तरह प्रमार्जन किए बिना चलना
बहुत बड़े स्थान में ठहरना तथा बहुत बड़े आसन पर बैठना,
अधिक ज्ञानादि गुण सम्पन्न श्रमण का तिरस्कार करना
स्थविर श्रमणों को पीड़ा पहुँचाना
प्राणीमात्र को पीड़ा पहुँचाना
क्षण क्षण में क्रोध करना, अत्यंत क्रोध करना
पीठ पीछे निन्दा करना
बारबार निश्चयकारी भाषा बोलना
नया कलह उत्पन्न करना, उपशान्त कलह को पुनः उभारना।
सचित्त हाथ पैरों से भिक्षा ग्रहण करना
अथवा भिक्षा के लिए जाना
अकाल में स्वाध्याय करना, कलह करना
रात्रि में उच्चस्वर से बोलना
कलह करके गच्छ में फूट डालना
सूर्यास्त समय तक भोजन करना
एषणा किए बिना आहार लेना

२ भगवान मुनिसुव्रत बीस धनुष ऊँचे थे।

३ सब घनोदधि का विस्तार बीस हजार योजन का है।

४ प्राणत कल्पेन्द्र के बीस हजार सामानिक देव हैं।

५ नपुंसकवेदनीय कर्म की बंध स्थिति बीस सागरोपम कोटा-
कोटी की है।

६ प्रत्याख्यान पूर्व के बीस वस्तु हैं।
७ उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी मिलकर बीस सागरोपम कोटा कोटी का कालचक्र है।
८ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिकों की स्थिति बीस पल्योपम की है।
९ तमःप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिकों की स्थिति बीस सागरोपम की है।
१० कुछ असुरकुमार देवों की स्थिति बीस पल्योपम की है।
११ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवों की स्थिति बीस पल्योपम की है।
१२ प्राणतकल्प के देवों की उत्कृष्ट स्थिति बीस सागरोपम की है।
१३ आरणकल्प के देवों की जघन्य स्थिति बीस सागरोपम की है।
१४ सात विमान सुविमान सिद्धार्थ उत्पल भित्तिल तिगिच्छ दिशासौवस्तिक प्रलंब रुचिर पुष्प सुपुष्प पुष्पावर्त पुष्पप्रभ पुष्पकांत पुष्पवर्ण पुष्पलेश्य पुष्पध्वज पुष्पशृंग पुष्पश्रेष्ठ पुष्पोत्तरावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी स्थिति बीस सागरोपम की होती है।
१५ सात यावत् पुष्पोत्तरावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं वे बीस पक्ष में श्वासोच्छ्वास लेते हैं।
१६ सात यावत् पुष्पोत्तरावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं उनको आहार लेने की इच्छा बीस हजार वर्ष से होती है।
१७ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो बीस भव करके सिद्ध

बादर गुणस्थान में वर्तमान श्रमण के मोहनीय कर्म की इक्कीस प्रकृतियों की सत्ता रहती है यथा
अप्रत्याख्यान क्रोध मान माया लोभ।
प्रत्याख्यान क्रोध मान माया लोभ।
संज्वलन क्रोध मान माया लोभ।
स्त्री वेद पुरुष वेद नपुंसक वेद
हास्य अरति रति भय शोक जुगुप्सा।

३ प्रत्येक अवसर्पिणी का पांचवां दुषमा और छठा दुषम-दुषमा आरा इक्कीस इक्कीस हजार वर्ष का है।
४ प्रत्येक उत्सर्पिणी का पहला दुषमा और दूसरा दुषम-दुषमा आरा इक्कीस इक्कीस हजार वर्ष का है।
५ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नरयिकों की स्थिति इक्कीस पल्योपम की है।
६ तमःप्रभा पृथ्वी के कुछ नरयिकों की स्थिति इक्कीस सागरोपम की है।
७ कुछ असुरकुमार देवों की स्थिति इक्कीस पल्योपम की है।
८ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवों की स्थिति इक्कीस पल्योपम की है।
९ आरणकल्प के देवों की उत्कृष्ट स्थिति इक्कीस सागरोपम की है।
१० अच्युतकल्प के देवों की जघन्य स्थिति इक्कीस सागरोपम की है।
११ श्रीवत्स श्रीदामगंड माल्य कृष्टि चापोन्नत आरणावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी स्थिति इक्कीस सागरोपम की होती है।

१२ श्रीवत्स यावत् आरणावतसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं वे इक्कीस पक्ष से श्वासोच्छवास लेते हैं।
१३ श्रीवत्स यावत् आरणावतसक विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं उनको आहार लेने की इच्छा इक्कीस हजार वर्ष से होती है।
१४ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो इक्कीस भव करके सिद्ध-यावत् सब दुखों का अंत करेंगे।

बावीसवां समवाय

१ परीषह बावीस हैं यथा
क्षुधा परीषह पिपासा परीषह शीत परीषह उष्ण परीषह,
दंश मशक परीषह अचेल परीषह अरतिपरीषह
स्त्री परीषह चर्या परीषह निषद्या परीषह शय्या परीषह
आक्रोश परीषह वध परीषह याचना परीषह
अलाभ परीषह रोग परीषह तृणस्पर्श परीषह
जल्ल परीषह सत्कार-पुरस्कार परीषह प्रज्ञा परीषह
अज्ञान परीषह दर्शन परीषह।
२ दृष्टिवाद के बाईस सूत्र छिन्न छेद नयवाले हैं और वे स्वसमय के सूत्रों की परिपाटी में हैं।
३ दृष्टिवाद के बाईस सूत्र अछिन्न छेद नयवाले हैं और वे आजीविक सूत्रों की परिपाटी में हैं।
४ दृष्टिवाद के बाईस सूत्र तीन नयवाले हैं और वे त्रैराशिक सूत्रों की परिपाटी में हैं।
५ दृष्टिवाद के बाईस सूत्र चार नयवाले हैं और वे स्वसमय के सूत्रों की परिपाटी में हैं।

६ पुद्गल परिणाम बाईस प्रकार का है यथा
कृष्ण नील रक्त पीत शुक्लवर्ण परिणाम।
सुगंध दुर्गंध परिणाम।
तिक्त कटुक कषाय अम्ल मधुर रस परिणाम।
कर्कश मृदु गुरु लघु शीत उष्ण स्निग्ध रूक्ष, अगुरुलघु
गुरुलघु स्पर्श परिणाम।
७ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नरयिकों की स्थिति बाईस
पल्योपम की है।
८ तमःप्रभा पृथ्वी के नरयिकों की उत्कृष्ट स्थिति बाईस
सागरोपम की है।
९ तमस्तमा पृथ्वी के कुछ नरयिकों की जघन्य स्थिति बाईस
सागरोपम की है।
१० कुछ असुरकुमार देवों की स्थिति बाईस पल्योपम की है।
११ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवों की स्थिति बाईस
पल्योपम की है।
१२ अच्युतकल्प के देवों की उत्कृष्ट स्थिति बाईस सागरोपम
की है।
१३ प्रथम ग्रैवेयक देवों की जघन्य स्थिति बाईस सागरोपम
की है।
१४ महित विश्रुत विमल प्रभास वनमाल अच्युतावतंसक विमान
में जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी स्थिति बाईस सागरोपम
की होती है।
१५ महित यावत् अच्युतावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न
होते हैं बाईस पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते हैं।
१६ महित यावत् अच्युतावतंसक विमान में जो देव उत्पन्न होते

है उनको आहार लेने की इच्छा बाईस हजार वर्ष से होती है।

१७ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो बाईस भव करके सिद्ध यावत् सब दुखों का अंत करेंगे।

तेईसवां समवाय

१ सूत्रकृतांग के तेईस अध्ययन हैं यथा
समय वैतालिक उपसर्ग परिज्ञा स्त्री परिज्ञा नरक विभक्ति महावीर स्तुति कुशील परिभाषित वीर्य धर्म समाधि मार्ग समवसरण आख्यातहित ग्रंथ यमतीत गाथा पुण्डरीक क्रियास्थान आहार परिज्ञा अप्रत्याख्यान क्रिया अनगारश्रुत आर्द्रकीय नालन्दीय।

२ जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में इस अवसर्पिणी में तेईस जिन भगवान् को सूर्योदय के समय केवल ज्ञान केवल दर्शन उत्पन्न हुआ था।

३ जम्बूद्वीप में इस अवसर्पिणी में तेईस तीर्थंकर पूर्वभव में ग्यारह अंग के ज्ञाता थे यथा अजित यावत् वर्धमान अरहन्त ऋषभदेव चौदह पूर्व के ज्ञाता थे।

४ जम्बूद्वीप में इस अवसर्पिणी में तेईस तीर्थंकर पूर्वभव में माण्डलिक राजा थे अरहन्त ऋषभ कौशलिक पूर्वभव में चक्रवर्ती थे।

५ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नरयिकों की स्थिति तेईस पल्योपम की है।

६ तमस्तमा पृथ्वी के कुछ नैरयिकों की स्थिति तेईस सागरोपम की है।

७ कुछ असुरकुमार देवो की स्थिति तेईस पल्योपम की है।
८ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवो की स्थिति तेईस पल्योपम की है।
९ नीचे के मध्यम ग्रैवेयक देवो की जघन्य स्थिति तेईस सागरोपम की है।
१० सबसे नीचे के ग्रैवेयक विमानो में जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी स्थिति तेईस सागरोपम की होती है।
११ वे ग्रैवेयक देव तेईस पक्ष से श्वासोच्छवास लेते हैं।
१२ उन ग्रैवेयक देवो को आहार लेने की इच्छा तेईस हजार वर्ष से होती है।
१३ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो तेईस भव करके सिद्ध यावत् सब दुखो का अन्त करेंगे।

चोवीसवां समवाय

१ देवाधिदेव चोवीस हैं यथा
ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन सुमति पद्मप्रभ
सुपार्श्व चन्द्रप्रभ सुविधि शीतल श्रेयास वासुपूज्य
विमल अनन्त धर्म शान्ति कुंथु अर मल्ली
मुनिसुव्रत नमि नेमी पार्श्व वर्धमान।
२ लघु हिमवत और शिखरी वर्षधर पर्वतो की जीवा का आयाम चोवीस हजार नौ सो बत्तीस योजन तथा एक योजन के अडतीसवें भाग से कुछ अधिक है।
३ देवताओ के चोवीस स्थान इन्द्रवाले हैं शेष अहमिन्द्र अर्थात् इन्द्र और पुरोहित रहित हैं।

४ उत्तरायण में रहा हुआ सूर्य चौबीस अगुल प्रमाण प्रथम प्रहर की छाया करके पीछे मुडता है।
५ महानदी गगा और सिंधु का प्रवाह कुछ अधिक चौबीस कोश का चाडा है।
६ महानदी रक्ता और रक्तवती का प्रवाह कुछ अधिक चौबीस कोश का चौडा है।
७ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नरयिका की स्थिति चौबीस पल्योपम की है।
८ तमस्तमा पृथ्वी के कुछ नरयिकों की स्थिति चौबीस सागरोपम की है।
९ कुछ असुरकुमार देवों की स्थिति चौबीस पल्योपम की है।
१० सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवों की स्थिति चौबीस पल्योपम की है।
११ उपर के प्रथम ग्रैवेयक देवों की स्थिति चौबीस सागरोपम की है।
१२ नीचे के मध्यम ग्रैवेयक विमानों में जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी स्थिति चौबीस सागरोपम की होती है।
१३ वे देव चौबीस पक्ष से श्वासोच्छवास लेते हैं।
१४ उन देवों को आहार लेने की इच्छा चौबीस हजार वर्ष से होती है।
१५ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो चौबीस भव करके सिद्ध [यावत्] सब दुखों का अंत करेंगे।

पचीसवा समवाय

१ प्रथम और अंतिम तीर्थंकरों के पाच महाव्रतों की पचीस

भावनाएं हैं यथा
प्रथम महाव्रत की पाच भावनाएं--
ईर्या समिति मन गुप्ति वचन गुप्ति प्रकाश वाले पात्र में भोजन करना आदान भाड मात्र निक्षेपण समिति।५।
द्वितीय महाव्रत की पाच भावनाएं--
विवेकपूर्वक बोलना क्रोध लोभ भय और हास्य का त्याग।५।
तृतीय महाव्रत की पांच भावनाएं
आवास की आज्ञा लेना आवास की सीमा जानना
आवास की आज्ञा स्वयं लेना
साधर्मिक के आवास का परिभोग की आज्ञा स्वीकार करना,
सबके लिए लाये हुए आहार का परिभोग गुरु आदि की आज्ञा स्वीकार करना।५।
चतुर्थ महाव्रत की पाच भावनाएं
स्त्री पशु या नपुंसक अधिष्ठित शय्या या आसन का त्याग करना स्त्री कथा न करना स्त्री की इन्द्रियां न देखना,
पूर्वकृत कामक्रीड़ा का स्मरण न करना विकार वर्धक आहार न करना।५।
पचम महाव्रत की पाच भावनाएं--
पाचो इन्द्रियों के विषयों पर ममत्व न करना।५।

२ मल्लिनाथ अरिहन्त पच्चीस धनुष ऊचे थे।
३ सब दीर्घ वैताढ्य पर्वत पचीस योजन ऊचे हैं
तथा भूमि में पच्चीस कोश ऊडे हैं।
४ शर्करा प्रभा पृथ्वी में पचीस लाख नरकावास हैं।
५ चूलिका सहित आचाराग भगवत के पचीस अध्ययन हैं।

यथा शस्त्र-परिज्ञा लोक विजय शीतोष्णीय सम्यक्त्व
आवंति धूत विमोह उपधान श्रुत महा परिज्ञा।
पिंडषणा, शय्या ईर्या भाषा अध्ययन वस्त्रषणा पात्रैषणा
अवग्रह प्रतिमा सप्त सप्तकका भावना विमुक्ति।
(अंतिम विमुक्ति अध्ययन निशीथ अध्ययन सहित पचीसवां है।)

६ संक्लिष्ट परिणाम वाले अपर्याप्त मिथ्यादृष्टि विकलेन्द्रिय नामकर्म की उत्कृष्ट पचीस प्रकृतियां का बंध करता है।
यथा—
तिर्यचगतिनाम विकलेन्द्रिय जातिनाम औदारिक शरीरनाम
तैजसशरीरनाम कार्मणशरीरनाम हुण्डकसंस्थान नाम
औदारिकशरीरांगोपांग नाम सेवार्तसंघयणनाम वर्णनाम
गंधनाम रसनाम स्पर्शनाम तिर्यंच आनुपूर्वीनाम
अगुरुलघुनाम उपघातनाम त्रसनाम बादरनाम
अपर्याप्तनाम प्रत्येक शरीरनाम अस्थिरनाम अशुभनाम
दुर्भगनाम अनादेयनाम अयशःकीर्तिनाम निर्माण नामकर्म।

७ महानदी गंगा सिंधु का मुक्तावली हार की आकृतिवाला पचीस कोश का विस्तृत प्रवाह पूर्व पश्चिम दिशा में घटमुख से अपने अपने कुंड में पडता है।

८ महानदी रक्ता रक्तवती का मुक्तावली हार की आकृतिवाला पचीस कोश का विस्तृत प्रवाह पूर्व पश्चिम दिशा में घटमुख से अपने अपने कुंड में पडता है।

९ लोकबिंदुसार पूर्व की पचीस वस्तु हैं।

१० इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नरयिकों की स्थिति पचीस पल्योपम की है।

११ तमस्तमा पृथ्वी मे कुछ नरयिको का स्थिति पचीस सागरोप
　मो है ।
१२ कुछ असुरकुमार देवा की स्थिति पचीस पल्योपम की है ।
१३ सौधम और ईशानकल्प मे कुछ देवा की स्थिति पची
　पल्योपम की है ।
१४ नीचे क मध्यम ग्रवेयक देवा की जघन्य स्थिति पचा
　सागरोपम की है ।
१५ ऊपर के प्रथम ग्रवेयक विमाना में जो देव उत्पन्न होते
　उनकी स्थिति पचीस सागरोपम की होती है ।
१६ वे देव पचीस पक्ष से श्वासोच्छवास लेते हैं ।
१७ उन देवो की आहार लेने की इच्छा पचीस हजार वष
　होती है ।
१८ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे है जो पचीस भव करके सिद्ध
　यावत् सव दुखो का अत करेंगे ।

छब्बीसवा समवाय

१ दशाश्रुतस्कध बृहत्कल्प और व्यवहार क छब्बीस उद्देशन
　काल है ।
२ अभवसिद्धिक जीवा क मोहनीय कम की छब्बीस प्रकृतियां
　सत्ता म होता है यथा
　मिथ्यात्वमोहनीय सोलह कषाय स्त्री वेद पुरुष वेद
　नपुसक वेद हास्य रति अरति भय शोक जुगुप्सा ।
३ इस रत्नप्रभा पृथ्वी क कुछ नरयिको की स्थिति छब्बीस
　पल्योपम की है ।
४ तमस्तमा पृथ्वी के कुछ नरयिको की स्थिति छब्बीस

सागरोपम की है।

५ कुछ असुरकुमार देवों की स्थिति छब्बीस पल्योपम की है।

६ सौधर्म और ईशानकल्प में कुछ देवों की स्थिति छब्बीस पल्योपम की है।

७ मध्यम मध्यम ग्रैवेयक देवों की जघन्य स्थिति छब्बीस सागरोपम की है।

८ नीचे के मध्यम ग्रैवेयक विमानों में जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी स्थिति छब्बीस सागरोपम की होती है।

९ वे देव छब्बीस पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते हैं।

० उन देवों को आहार लेने की इच्छा छब्बीस हजार वर्ष से होती है।

१ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो छब्बीस भव करके सिद्ध यावत् सब दुखों का अन्त करेंगे।

सत्ताईसवां समवाय

१ अनगार के सत्ताईस गुण हैं यथा
प्राणातिपात विरमण मृषावाद विरमण अदत्तादान विरमण
मैथुन विरमण परिग्रह विरमण श्रोत्रेन्द्रिय निग्रह
चक्षु इन्द्रिय निग्रह घ्राणेन्द्रिय निग्रह रसनेन्द्रिय निग्रह
स्पर्शेन्द्रिय निग्रह क्रोध मान माया और लोभ का त्याग
भाव सत्य करण सत्य योग सत्य क्षमा विरागता
मन वचन और काया का निरोध
ज्ञान दर्शन और चारित्र से सम्पन्नता
वेदना सहन करना मरणान्त कष्ट सहन करना।

२ जम्बूद्वीप में अभिजित् को छोडकर सत्ताईस नक्षत्रों से

व्यवहार होता है।

३ नक्षत्रमास सत्ताबीस अहोरात्रि का होता है।

४ सौधर्म और ईशानकल्प के विमानों की भूमी सत्ताबीस योजन की मोटी है।

५ वेदक सम्यक्त्व के बंध से विरत जीव के सत्ता में मोहनीयकर्म की सत्ताबीस उत्तर प्रकृतियां रहती है।

६ श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन सूर्य सत्ताबीस अंगुल प्रमाण से पोरसी छाया करके दिन को छोटा और रात्रि को बड़ी करता हुआ गति करता है।

७ इस रत्नप्रभा पृथ्वी में कुछ नरयिकों की स्थिति सत्ताबीस पल्योपम की है।

८ तमस्तमा पृथ्वी में कुछ नरयिकों की स्थिति सत्ताबीस सागरोपम की है।

९ कुछ असुरकुमार देवों की स्थिति सत्ताबीस पल्योपम की है।

१० सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवों की स्थिति सत्ताबीस पल्योपम की है।

११ ऊपर के मध्यम ग्रैवेयक देवों की जघन्य स्थिति सत्ताबीस सागरोपम की है।

१२ मध्यम मध्यम ग्रैवेयक विमानों में जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी स्थिति सत्ताबीस सागरोपम की होती है।

१३ वे देव सत्ताबीस पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते हैं।

१४ उन देवों को आहार लेने की इच्छा सत्ताबीस हजार वर्ष से होती है।

१५ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो सत्ताबीस भव करके सिद्ध यावत् सर्व दुःखों का अंत करेंगे।

अठाईसवाँ समवाय

१ आचार प्रकल्प अट्ठाईस प्रकार का है यथा
एक मास की आरोपणा
एक मास और पांच दिन की आरोपणा
एक मास और दस दिन की आरोपणा
एक मास और पन्द्रह दिन की आरोपणा
एक मास और बीस दिन की आरोपणा
एक मास और पच्चीस दिन की आरोपणा
इसी प्रकार दो तीन और चार मास की आरोपणा
उपघातिका आरोपणा अनुपघातिका आरोपणा
कृत्स्ना आरोपणा अकृत्स्ना आरोपणा ।

२ कुछ भवसिद्धिक जीवों के सत्ता में मोहनीय कर्म की अट्ठाईस प्रकृतियां रहती हैं यथा
सम्यक्त्व वेदनीय मिथ्यात्व वेदनीय सम्यग्मिथ्यात्व वेदनीय
सोलह कषाय नव नो कषाय ।

आभिनिबोधिक ज्ञान अट्ठाईस प्रकार का है यथा
६—श्रोत्रेन्द्रिय अर्थावग्रह चक्षु इन्द्रिय अर्थावग्रह
घ्राणेन्द्रिय अर्थावग्रह रसनेन्द्रिय अर्थावग्रह
स्पर्शनेन्द्रिय अर्थावग्रह नोइन्द्रिय अर्थावग्रह ।
४—श्रोत्रेन्द्रिय व्यंजनावग्रह घ्राणेन्द्रिय व्यंजनावग्रह
रसनेन्द्रिय व्यंजनावग्रह स्पर्शनेन्द्रिय व्यंजनावग्रह ।
६—श्रोत्रेन्द्रिय ईहा चक्षु इन्द्रिय ईहा घ्राणेन्द्रिय ईहा
रसनेन्द्रिय ईहा स्पर्शनेन्द्रिय ईहा नोइन्द्रिय ईहा ।
६—श्रोत्रेन्द्रिय अवाय चक्षु इन्द्रिय अवाय घ्राणेन्द्रिय अवाय

रसनेन्द्रिय अवाय स्पर्शनेन्द्रिय अवाय नो इन्द्रिय अवाय।
३—श्रोत्रेन्द्रिय धारणा चक्षु इन्द्रिय धारणा घ्राणेन्द्रिय धारणा रसनेन्द्रिय धारणा स्पर्शनेन्द्रिय धारणा नो इन्द्रिय धारणा।
४ ईशान कल्प में अठावीस लाख विमान हैं।
५ देवगति बांधनेवाले जीव के नामकर्म की अठावीस उत्तर प्रकृतियों का बन्ध होता है यथा
देवगति पचेन्द्रिय जाति वैक्रिय शरीर, तैजस शरीर कार्मण शरीर समचतुरस्रसंस्थान वैक्रिय शरीरांगोपांग वर्ण गंध रस स्पर्श देवानुपूर्वी अगुरुलघु उपघात पराघात उच्छ्वास प्रशस्त विहायोगति त्रस बादर पर्याप्त प्रत्येक शरीर (स्थिर अस्थिर शुभ अशुभ आदेय अनादेय) इनमें से एक एक का बन्ध
सुभग सुस्वर यशःकीर्ति निर्माण नामकर्म।
इसी प्रकार नरकगति बांधनेवाले जीव के भी नामकर्म की अठावीस उत्तर कर्मप्रकृतियों का बन्ध होता है यथा
अप्रशस्त विहायोगति हुण्ड संस्थान अस्थिर दुर्भग दुस्वर अशुभ अनादेय अयशःकीर्ति। शेष पूर्वोक्त प्रकृतियाँ।
६ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नरयिकों की स्थिति अठावीस पल्योपम की है।
७ तमस्तमा पृथ्वी के कुछ नरयिकों की स्थिति अठावीस सागरोपम की है।
८ कुछ असुरकुमार देवों की स्थिति अठावीस पल्योपम की है।
९ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवों की स्थिति अठावीस पल्योपम की है।
१० ... के प्रथम ग्रैवेयक देवों की जघन्य स्थिति अठावीस

सागरोपम की है।

११ ऊपर के मध्यम प्रवयक विमानो म जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी स्थिति अठावीस सागरापम की होती है।

१२ वे दव अठावीस पक्ष स श्वासाच्छवास लेते हैं।

१३ उन देवो की आहार लेने की इच्छा अठावीस हजार वष से होती है।

१४ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो अठावीस भव करके सिद्ध यावत् सव दुखो का अत करेंगे।

उनत्तीसवा समवाय

१ पापश्रुत उनत्तीस प्रकार का है यथा
भूमि उत्पात स्वप्न आकाश शरीर स्वर व्यजन लक्षण।
य आठ निमित्त शास्त्र हैं।
भूमि शास्त्र तीन प्रकार का है यथा
सूत्र वत्ति वार्तिक।
इस प्रकार प्रत्येक शास्त्र तीन प्रकार का है।
विकथानुयोग विद्यानुयोग मत्रानुयाग यागानुयोग।
अन्यतीर्थिका द्वारा प्रवर्तित योग।

२ आषाढ मास उनत्तीस अहारात्रि का होता है।

३ इसी प्रकार भाद्रपद मास

४ कार्तिक मास

५ पौष मास

६ फाल्गुन मास

७ वैशाख मास।

८ चद्रमास का एक दिन उनत्तीस मुहूत का होता है।

९ प्रशस्त अध्यवसायवाला सम्यग् दृष्टि भव्यजीव तीर्थंकर नाम सहित नामकर्म की उनतीस उत्तर कर्मप्रकृतियों का बंध करके अवश्य वैमानिक देवों में उत्पन्न होता है।

१० इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नरयिकों की स्थिति उनतीस पल्योपम की है।

११ तमस्तमा पृथ्वी के कुछ नरयिकों की स्थिति उनतीस सागरोपम की है।

१२ कुछ असुरकुमार देवों की स्थिति उनतीस पल्योपम की है।

१३ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवों की स्थिति उनतीस पल्योपम की है।

१४ ऊपर के मध्यम ग्रैवेयक देवों की जघन्य स्थिति उनतीस सागरोपम की है।

१५ ऊपर के प्रथम ग्रैवेयक विमानों में जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी स्थिति उनतीस सागरोपम की होती है।

१६ वे देव उनतीस पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते हैं।

१७ उन देवों को आहार लेने की इच्छा उनतीस हजार वर्ष से होती है।

१८ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो उनतीस भव करके सिद्ध यावत् सब दुःखों का अन्त करेंगे।

तीसवाँ समवाय

१ महामोह स्थान तीस हैं यथा

१ जो किसी त्रस प्राणी को पानी में डुबाकर मारता है वह महामोहनीय कर्म बांधता है।

२ जो किसी त्रस प्राणी को तीव्र अशुभ अध्यवसाय से

मस्तक में गीला चमड़ा बांधकर मारता है वह महा-
मोहनीय कर्म बांधता है।

३ जो किसी त्रस प्राणी का मुंह बांध करके मारता है वह
महामोहनीय कर्म बांधता है।

४ जो किसी त्रस प्राणी को अग्नि के धुएं से मारता है वह
महामोहनीय कर्म बांधता है।

५ जो किसी त्रस प्राणी के मस्तक का छेदन करके मारता
है वह महामोहनीय कर्म बांधता है।

६ जो किसी त्रस प्राणी को छल से मारकर हंसता है वह
महामोहनीयकर्म बांधता है।

७ जो मायाचार करके तथा असत्य बोलकर अपने अना-
चार को छिपाता है वह महामोहनीय कर्म बांधता है।

८ जो अपने दुराचार को छिपाकर दूसरे पर कलंक देता
है वह महामोहनीयकर्म बांधता है।

९ जो कलह बढ़ाने के लिए जानता हुआ मिश्रभाषा बोलता
है वह महामोहनीय कर्म बांधता है।

१० जो पति पत्नि में मतभेद पैदा करता है तथा उन्हें
मार्मिक वचनों से झेंपा देता है वह महामोहनीय कर्म
बांधता है।

११ स्त्री में आसक्त व्यक्ति यदि अपने आपको कुंवारा कहे
तो महामोहनीय कर्म बांधता है।

१२ अत्यंत कामुक व्यक्ति यदि अपने आपको ब्रह्मचारी कहे
तो महामोहनीय कर्म बांधता है।

१३ जो चापलूसी करके अपने स्वामी को ठगता है वह
महामोहनीय कर्म बांधता है।

१४ जो जिनकी कृपा से समृद्ध बना है वह यदि ईर्ष्या से उनके ही कार्यों म विघ्न डालता है तो महामोहनीय कम बाधता है।

१५ जो अपने उपकारी की हत्या करता है वह महामोहनीय कम बाधता है।

१६ जो प्रसिद्ध पुरुष की हत्या करता है वह महामोहनीय कम बाधता है।

१७ जो प्रमुख पुरुष की हत्या करता है वह महामोहनीय कम बाधता है।

१८ जो सयमी को पथभ्रष्ट करता है वह महामोहनीय कम बाधता है।

१९ जो महान् पुरुषो की निन्दा करता है वह महामोहनीय कम बाधता है।

२० जो न्यायमार्ग की निन्दा करता है वह महामोहनीय कम बाधता है।

२१ जो आचाय उपाध्याय एव गुरु की निन्दा करता है वह महामोहनीय कम बाधता है।

२२ जो आचाय उपाध्याय एव गुरु का अविनय करता है वह महामोहनीय कम बांधता है।

२३ जो अबहुश्रुत होते हुए भी अपने-आपको बहुश्रुत कहता है वह महामोहनीय कम बाधता है।

२४ जो तपस्वी न होते हुए भी अपने-आपको तपस्वी कहता है वह महामोहनीय कम बाधता है।

२५ जो अस्वस्थ आचाय आदि की सेवा नहीं करता है वह महामोहनीय कम बाधता है।

९ ईस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नरयिकों की स्थिति तीस पल्योपम की है।

१० तमस्तमा पृथ्वी के कुछ नरयिकों की स्थिति तीस सागरोपम की है।

११ कुछ असुरकुमार देवों की स्थिति तीस पल्योपम की है।

१२ सबसे ऊपरवाले ग्रैवेयक देवों की जघन्य स्थिति तीस सागरोपम की है।

१३ ऊपर के मध्यम ग्रैवेयक विमानों में जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी स्थिति तीस सागरोपम की होती है।

१४ वे देव तीस पक्ष से श्वासोच्छ्वास लेते हैं।

१५ उन देवों को आहार लेने की इच्छा तीस हजार वर्ष से होती है।

१६ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो तीस भव करके सिद्ध यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे।

इगतीसवां समवाय

१ सिद्धों के इगतीस गुण हैं यथा
आभिनिबोधिक ज्ञानावरण का क्षय श्रुतज्ञानावरण का क्षय
अवधिज्ञानावरण का क्षय मनःपर्यवज्ञानावरण का क्षय
केवलज्ञानावरण का क्षय चक्षुदर्शनावरण का क्षय
अचक्षुदर्शनावरण का क्षय अवधिदर्शनावरण का क्षय
केवलदर्शनावरण का क्षय निद्रा का क्षय गाढ निद्रा का क्षय,
प्रचला का क्षय प्रचला प्रचला का क्षय
स्त्यानर्धि निद्रा का क्षय साता वेदनीय का क्षय
वेदनीय का क्षय दर्शन मोहनीय का क्षय

उनकी स्थिति इगतीस सागरोपम की होती है।

१२ वे इगतीस पक्ष मे श्वासोच्छ्वास लेते हैं।

१३ उनको आहार लेने की इच्छा इगतीस हजार वर्ष से होती है।

१४ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो इगतीस भव करके सिद्ध यावत् सब दुखो का अन्त करेंगे।

बत्तीसवा समवाय

१ योग संग्रह बत्तीस हैं यथा
आलोचना करना आलोचना का अन्य से कथन न करना
आपत्ति आने पर भी धर्म मे दृढ़ रहना,
सहायता की अपेक्षा किए बिना निस्पृह होकर तप करना
शिक्षा ग्रहण करना शृंगार न करना
किसी को अपने तप की जानकारी न देना
तथा पूजा प्रतिष्ठा की कामना न करना लोभ न करना,
परीषह सहन करना सरलता रखना पवित्र विचार रखना
सम्यग्दृष्टि रखना प्रसन्न रहना
पंचाचार का पालन करना विनम्र होना, धैर्य रखना
वैराग्यभाव रखना छल कपट का त्याग करना
प्रत्येक धार्मिक क्रिया विधिपूर्वक करना
नवीन कर्मों का बन्ध न होने देना
अपने दोषो की शुद्धि करना सब कामनाओ से विरत होना,
मूलगुण विषयक प्रत्याख्यान करना
उत्तरगुण विषयक प्रत्याख्यान करना
द्रव्य एव भाव से व्युत्सर्ग करना प्रमाद छोड़ना
शास्त्रोक्त समाचारी का पालन करना शुभ ध्यान करना,

मरणान्त कष्ट आने पर भी धर्म में दृढ़ रहना
सब विषय वासनाओं का त्याग करना
दोषों का प्रायश्चित्त करके शुद्ध होना
अंतिम समय में सलेखना करके पंडित मरण से मरना।

२ देवेन्द्र बत्तीस हैं यथा
भवनपति देवों के बीस ज्योतिषी देवों के दो वैमानिक देवों में दस।

३ कुंथुनाथ अरहंत के बत्तीस सौ बत्तीस सामान्य केवली थे।

४ सौधर्मकल्प में बत्तीस लाख विमान हैं।

५ रेवती नक्षत्र के बत्तीस तारे हैं।

६ नृत्य बत्तीस प्रकार का है।

७ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नैरयिकों की स्थिति बत्तीस पल्योपम की है।

८ तमस्तमा पृथ्वी के कुछ नैरयिकों की स्थिति बत्तीस सागरोपम की है।

९ कुछ असुरकुमार देवों की स्थिति बत्तीस पल्योपम की है।

१० सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवों की स्थिति बत्तीस पल्योपम की है।

११ विजय वैजयंत जयंत और अपराजित विमान में जो देव उत्पन्न होते हैं उनकी स्थिति बत्तीस सागरोपम की होती है।

१२ वे देव बत्तीस पक्ष में श्वासोच्छवास लेते हैं।

१३ उन देवों को आहार लेने की इच्छा बत्तीस हजार वर्ष से होती है।

१४ कुछ भवसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो बत्तीस भव करके सिद्ध यावत् सब दुखों का अंत करेंगे।

तेतीसवा समवाय

१ आशातना तेतीस हैं यथा
रत्नादि गुणो में जो अधिक हो उनसे आगे चलना
उनके बराबर चलना
उनके पीछे भिडकर चलना
उनके आगे खडे होना
उनके बराबर खडे होना
उनके पीछे भिडकर खडे होना
उनके आगे बठना
उनके बराबर बठना
उनके पीछे भिडकर बठना,
उनके पहले शौच करना
उनके पहले आलोचना करना
उनके वचन अनसुने कर देना
तथा उत्तर न देना
उनके पूर्व किसी से बातचीत करना
उनसे पहले किसी अन्य के सामने अशनादि की आलोचना करना
उनसे पहले किसी अन्य को अशनादि दिखाना
उनसे पहले किसी अन्य को अशनादि का निमत्रण देना,

स्थाना
रत्नादि गुणो मे जो अधिक हो उनके शय्या संस्तारक पर खडे
होना बठना या गमन करना
उनके आसन से ऊंचे आसन
पर खडे होना बठना या
गमन करना
उनके बराबर आसन पर खडे
होना बठना या गमन करना

२ चमरेन्द्र की चमरचचा राजधानी के प्रत्येक द्वार के बाहर तेतीस-तेतीस भौम नगर हैं।

३ महाविदेह क्षेत्र का विष्कम्भ कुछ अधिक तेतीस हजार योजन का है।

४ सूर्य बाह्य अंतिम मडल से जब पूर्व तृतीय मंडल मे गति करता है तब जम्बूद्वीप मे रहे हुए मनुष्य को कुछ न्यून तेतीस हजार योजन दूर से सूर्य-दर्शन होता है।

५ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कुछ नरयिकों की स्थिति तेतीस पल्योपम की है।

६ तमस्तमा पृथ्वी के काल महाकाल रौर और महारौर नरकावासो मे उत्कृष्ट स्थिति तेतीस सागरोपम की है।

७ अप्रतिष्ठान नरकावास मे नरयिकों की अजघन्योत्कृष्ट स्थिति तेतीस सागरोपम की है।

८ कुछ असुरकुमार देवो की स्थिति तेतीस पल्योपम की है।

९ सौधर्म और ईशानकल्प के कुछ देवो की स्थिति तेतीस पल्योपम की है।

१० विजय वजयत जयत और अपराजित विमान मे जो देव

वहा उसी क्षण पत्र पुष्प और पल्लव से सुशोभित छत्र ध्वा घट एव पताका सहित अशोक वृक्ष का उत्पन्न होना

१२ कुछ पीछे मुकुट के स्थान पर तेजोमडल का होना तथा अधकार होने पर दस दिशाओ म प्रकाश होना

१३ जहा जहा पधारें वहा वहा के भूभाग का समतल होना

१४ जहा जहा पधारें वहा वहा कण्टको का अधोमुख होना

१५ जहा जहा पधारें वहा वहा ऋतुओ का अनुकूल होना

१६ जहा जहा पधारें वहा वहा सवर्तक वायु द्वारा एक योजन पर्यन्त क्षेत्र का शुद्ध हो जाना

१७ मेघ द्वारा रज का उपशान्त होना

१८ जानुप्रमाण देवकृत पुष्पो की वृष्टि होना एव पुष्पो के डठलो का अधोमुख होना

१९ अमनोज्ञ शब्द रूप रस गध एव स्पर्श का न रहना

२० मनोज्ञ शब्द रूप रस गध एव स्पर्श का प्रगट होना

२१ योजन पर्यन्त सुनाई देनेवाला हृदयस्पर्शी स्वर होना

२२ अर्धमागधी भाषा म उपदेश करना

२३ उस अर्धमागधी भाषा का उपस्थित आर्य अनार्य द्विपद चतुष्पद मृग पशु पक्षी और सरिसृपो की भाषा में परिणत होना तथा उन्हे हितकारी सुखकारी एव कल्याण कारी प्रतीत होना

२४ पूर्वभव के वैरानुबध से बद्ध देव असुर नाग सुपर्ण यक्ष राक्षस किन्नर किंपुरुष गरुड गधर्व और महोरग का अरहत के समीप प्रसन्नचित्त होकर धर्म सुनना

२५ अन्यतीर्थिको का नत मस्तक होकर वदना करना

२६ अरहत के समीप आकर अन्यतीर्थिको का निरुत्तर होना,

७ अल्पार्थ और अधिक अर्थ
८ पूर्वापर विरोध रहित
९ शिष्ट भाषा
१० असंदिग्ध भाषा
११ स्पष्ट भाषा
१२ हृदयग्राह्य भाषा
१३ देश कालानुरूप अर्थ
१४ तत्वानुरूप व्याख्या
१५ सम्बद्ध व्याख्या
१६ पद और वाक्यों का सापेक्ष होना
१७ विषय का यथार्थ प्रतिपादन
१८ भाषा माधुर्य
१९ मर्म का कथन न करना
२० धर्म सम्बद्ध प्रतिपादन
२१ विशिष्ट शब्दार्थ का प्रतिपादन
२२ परनिन्दा और आत्मप्रशंसा रहित कथन
२३ श्लाघनीय भाषा
२४ कारक काल वचन लिंग आदि के विपर्यास रहित भाषा
२५ आकर्षक भाषा
२६ अद्भुतपूर्व व्याख्या
२७ धाराप्रवाह कथन
२८ विभ्रम विक्षेप रोष भय लोभ आदि दोष रहित भाषा
२९ एक ही विषय का विविध प्रकार से प्रतिपादन
३० विशिष्टतायुक्त भाषा
३१ वर्ण

४ चैत्र तथा आश्विन मास मे एक दिन पौरुषी छाया का प्रमाण छत्तीस अगुल का होता है।

सैंतीसवां समवाय

१ अरहत कुंथुनाथ के सैंतीस गणधर थे।
२ हेमवत और हरण्यवत की जीवा का आयाम सैंतीस हजार छ सौ चौहत्तर योजन तथा एक योजन के उन्नीस भागों मे से कुछ अधिक सोलह भाग का है।
३ विजय वैजयंत जयंत और अपराजिता इन सब राजधानियों के प्राकारों की ऊंचाई सैंतीस योजन की है।
४ क्षुद्रिका विमान प्रविभक्ति के प्रथम वर्ग मे सैंतीस उद्देशन काल हैं।
५ कार्तिक कृष्णा सप्तमी के दिन सूर्य सैंतीस अगुल प्रमाण पौरुषी छाया करके गति करता है

अड़तीसवां समवाय

१ प्रसिद्ध पुरुष अरहत पार्श्वनाथ के उत्कृष्ट अड़तीस हजार आर्या थी।
२ हैमवत और हैरण्यवत की जीवा के धनुपृष्ठ की परिधि अड़तीस हजार सात सौ चालीस योजन तथा एक योजन के उन्नीस भागों मे से कुछ न्यून दसभाग की है।
३ मेरुपर्वत के द्वितीय कांड की ऊंचाई अड़तीस हजार योजन की है।
४ क्षुद्रिका विमान प्रविभक्ति के द्वितीय वर्ग मे अड़तीस उद्देशन काल है।

उनचालीसवां समवाय

१ अरहन्त नमिनाथ के उनचालीस सौ अवधिज्ञानी थे।
२ समय क्षेत्र में उनचालीस कुलपर्वत हैं यथा
तीस वर्षधर पर्वत पांच मेरु पर्वत चार इषुकार पर्वत।
३ दूसरी चौथी पांचवी छट्ठी और सातवी—इन पांच पृथ्वियों में उनचालीस लाख नरकावास हैं।
४ ज्ञानावरणीय मोहनीय गोत्र और आयु—इन चार मूलकर्म प्रकृतियों की उनचालीस उत्तरकर्मप्रकृतियां हैं।

चालीसवां समवाय

१ अरहन्त अरिष्टनेमिनाथ की चालीस हजार आर्याएं थी।
२ मेरु चूलिका चालीस योजन ऊंची है।
३ अरहन्त शान्तिनाथ चालीस धनुष ऊंचे थे।
४ भूतानन्द नागकुमारेन्द्र के चालीस लाख भवनावास हैं।
५ क्षुल्लिका विमान प्रविभक्ति के तृतीय वर्ग में चालीस उद्देशन काल हैं।
६ फाल्गुन पूर्णिमा के दिन सूर्य चालीस अंगुल प्रमाण पौरुषी छाया करके गति करता है।
७ इसी प्रकार कार्तिक पूर्णिमा के दिन भी।
८ महाशुक्र कल्प में चालीस हजार विमानावास हैं।

इगतालीसवां समवाय

१ अरहन्त नमिनाथ की इगतालीस हजार आर्याएं थी।
२ चार पृथ्वियों में इगतालीस हजार नरकावास हैं यथा

रत्नप्रभा पकप्रभा तम प्रभा तमस्तमाप्रभा ।

३ महालिकाविमानप्रविभक्ति के प्रथम वर्ग में इकतालीस उद्देशनकाल हैं ।

बियालीसवा समवाय

१ श्रमण भगवान महावीर न कुछ अधिक बियालीस वर्ष का श्रामण्य पर्याय पालकर सिद्ध यावत् सब दुखो से रहित हुए ।

२ जम्बूद्वीप के पूर्वी चरमान्त से गोस्तूप आवास पर्वत के चरमान्त का अव्यवहित अतर बियालीस हजार योजन का है ।

३ इसी प्रकार दकभास शख और दकसीम पर्वत का अतर भी है ।

४ कालोद समुद्र म बियालीस चद्र और बियालीस सूर्य प्रकाशवर्ती हैं ।

५ सम्मूर्छिम भुजपरिसर्प की उत्कृष्ट स्थिति बियालीस हजार वर्ष की है ।

६ नामकर्म बियालीस प्रकार का है यथा
गति नाम जाति नाम शरीर नाम शरीरागोपाग नाम
शरीरबधन नाम शरीर सघातन नाम सघयण नाम
सस्थान नाम वर्ण नाम, गध नाम रस नाम स्पर्श नाम
अगुरुलघु नाम उपघात नाम पराघात नाम आनुपूर्वी नाम,
उच्छवास नाम आतप नाम उद्योत नाम विहग गति नाम
त्रस नाम स्थावर नाम सूक्ष्म नाम बादर नाम
पर्याप्त नाम अपर्याप्त नाम साधारण शरीर नाम
प्रत्येक शरीर नाम स्थिर नाम अस्थिर नाम शुभ नाम

अशुभ नाम सुभग नाम दुभग नाम सुस्वर नाम
दुस्वर नाम आदेय नाम अनादेय नाम यश-कीर्ति नाम
अयश कीर्ति नाम निर्माण नाम तीर्थंकर नाम।

७ लवण समुद्र की आभ्यंतर वेला को बियालीस हजार नाग देवता धारण करते हैं।

८ महाविमानप्रविभक्ति के द्वितीय वर्ग में बियालीस उद्देशन काल हैं।

६ प्रत्येक अवसर्पिणी के पांचवें छठे आरे का काल बियालीस हजार वर्ष का है।

१० प्रत्येक उत्सर्पिणी के पहले दूसरे आरे का काल बियालीस हजार वर्ष का है।

तेयालीसवां समवाय

१ कर्मविपाक के तेयालीस अध्ययन हैं।

२ पहली चौथी और पांचवीं इन तीन पृथ्वियों में तेयालीस लाख नरकावास हैं।

३ जम्बूद्वीप के पूर्वी चरमान्त से गोस्तूप आवास पर्वत के पूर्वी चरमान्त का अव्यवहित अन्तर तेयालीस हजार योजन का है।

४ इसी प्रकार दकभास शंख और दकसीम पर्वत के चरमान्त का अन्तर है।

५ महालिकाविमानप्रविभक्ति के तृतीय वर्ग में तेयालीस उद्देशनकाल हैं।

पचासवा समवाय

१ अरहत मुनिसुव्रत का पचास हजार आया थी।
२ अरन्त अनन्तनाथ पचास धनुष ऊचे थे।
३ पुरुषोत्तम वासुदेव पचास धनुप ऊचे थे।
४ सब दीघ वताढय पवता के मूल का विष्कम्भ पचास योजन का है।
५ लान्तक कल्प म पचास हजार विमान है।
६ सव तिमिश्र गुफा और खडप्रपात गुफाओ का आयाम पचास पचास योजन का है।
७ सब कांचनग पवतो के शिखर का विष्कम्भ पचास पचास योजन का है।

इकावनवा समवाय

१ नव ब्रह्मचय अध्ययनो के इक्यावन उद्देशनकाल है।
२ चमरेन्द्र की सुधर्मा सभा मे इक्यावन सो स्तम्भ है।
३ बलेन्द्र की सुधर्मा सभा के इक्यावन सो स्तम्भ हैं।
४ सुप्रभ बलदेव इक्यावन लाख वर्ष का आयु पूर्ण करके सिद्ध यावत् सब दु खो से मुक्त हुए।
५ दर्शनावरण और नामकर्म इन दो कर्मों की इक्यावन उत्तर कर्म प्रकृतियां हैं।

बावनवा समवाय

१ मोहनीयकर्म के बावन नाम हैं यथा
क्रोध कोप रोष द्वेष अक्षमा सज्वलन, कलह चाण्डिक्य भडन विवाद। मान, मद दर्प स्तम्भ आत्मोत्कर्ष गर्व

पर परिवाद आत्रा‍ा अपक्ष उनत उनाम माया उपधि निकृति वल्य ग्रहण नूम क क करव म कूट जिह्म किल्बिष अनादरता गूहनता वचनता परिकुचनता सातियोग लोभ इच्छा मूर्छा कांक्षा गृद्धि तृष्णा भिध्या अभिध्या कामाशा भोगाशा जीविताशा मरणाशा नन्दी राग।

२ गास्तूप आवासपर्वत के पूर्वी चरमान्त से वडवामुख पाताल कलश के पश्चिमी चरमान्त का अव्यवहित अन्तर बावन हजार योजन का है।

३ इसी प्रकार दकभास और केतुक शंख और यूपक दकसीम और ईश्वर का अन्तर जानना।

४ ज्ञानावरणीय नाम और अन्तराय इन तीन मूलकर्मप्रकृतियों की बावन उत्तरकर्मप्रकृतियाँ हैं।

५ सौधर्म सनत्कुमार और माहेन्द्र इन तीन देवलोकों में बावन लाख विमानावास हैं।

त्रेपनवाँ समवाय

१ देवकुरु और उत्तरकुरु की जीवा का आयाम त्रेपन हजार योजन का है।

२ महाहिमवन्त और रुक्मी वर्षधर पर्वत की जीवा का आयाम त्रेपन हजार नौ सौ इकतीस योजन तथा एक योजन के उन्नीस भागों में से छ भाग जितना है।

३ श्रमण भगवान महावीर के त्रेपन साधु एक वर्ष का दीक्षा पर्याय वाले होकर अनुत्तर विमान में देव हुए।

४ सम्मूर्छिम उरपरिसर्प की उत्कृष्ट स्थिति त्रेपन हजार वर्ष की है

वलश के मध्यभाग का अ यवहित अतर अन्यावन हजार योजन का है।

४ ५ ६ इसी प्रकार नाय तीन दिशाओं का अतर है।

उनसठवा समवाय

१ चद्र सवत्सर की प्रत्येक ऋतु उनसठ अहोरात्रि की होती है।

२ अरहत सभवनाथ उनसठ हजार पूर्व गृहवास म रहकर मुडित यावत् प्रव्रजित हुए।

३ अरहत मल्लिनाथ क उनसठ सौ अवधिज्ञानी मुनि थ।

साठवा समवाय

१ प्रत्येक मडल म सूय साठ साठ मुहूत पूरे करता है।

२ लवणसमुद्र क अग्रोदक को साठ हजार नागदव धारण करते हैं।

३ अरहत विमलनाथ साठ धनुप ऊचे थे।

४ बलेन्द्र क साठ हजार सामानिक दव हैं।

५ ब्रह्म देवेन्द्र के साठ हजार सामानिक देव हैं।

६ सौधम और ईशान इन दो कल्पो म साठ लाख विमानावास हैं।

इकसठवा समवाय

१ पाच सवत्सरवाले युग के इकसठ ऋतुमास हैं।

२ मरुपवत क प्रथम काड की ऊचाई इकसठ हजार योजन की है।

३ चद्र मडल का समाश एक याजन के इकसठ विभाग करने

पर (४५ समान) होता है।

४ इसी प्रकार सूय मन्डल के समाश भी होते हैं।

बासठवा समवाय

१ पाच सवत्सरवाले युग की बासठ पूर्णिमाए और बासठ अमावास्याए होती हैं।

२ अरहत वासुपूज्य के बासठ गण और बासठ गणधर थे।

३ शुक्लपक्ष म चन्द्र बासठ भाग प्रतिदिन बढता है। कृष्णपक्ष म चन्द्र उतना ही प्रतिदिन घटता है।

४ सौधम और ईशान कल्प के प्रथम प्रस्तर की प्रथम आवलिका एव प्रत्येक दिशा म बासठ बासठ विमान हैं।

५ सब वमानिक देवो के बासठ विमान प्रस्तट हैं।

त्रेसठवा समवाय

१ अरहत ऋषभ कौमारिक त्रेसठ लाख पूर्व राज्यपद भोगकर मुण्डित एव प्रव्रजित हुए।

२ हरिवर्ष और रम्यक वर्ष के मनुष्य त्रेसठ अहोरात्रि म युवा हो जाते हैं।

३ निषध पवत पर त्रेसठवा सूय मडल है।

४ इसी प्रकार नीलवन्त पवत पर भी उतने ही सूय मण्डल हैं।

चौसठवा समवाय

१ अष्ट-अष्टमिका भिक्षुप्रतिमा चौसठ अहोरात्रि म दो सौ अट्ठासी दात आहार की लेकर सूत्रानुसार पूर्ण की जाती है।

२ चौसठ लाख असुरकुमारावास हैं।

३ चमरेन्द्र के चौसठ हजार सामानिक देव हैं ।
४ सभी दधिमुख पर्वत पाल्य के आकार वाले हैं अत उनका विष्कम्भ सर्वत्र समान है उनकी ऊंचाई चौसठ हजार योजन की है ।
५ सौधर्म ईशान और ब्रह्मलोक इन तीन कल्पों मे चौसठ लाख विमानावास हैं ।
६ सभी चक्रवर्तियों का मुक्ता मणिमय हार महा मूल्यवान एव चौसठ लडियावाला होता है ।

पसठवां समवाय

१ जम्बूद्वीप मे सूर्य के पैंसठ मडल हैं ।
२ स्थविर मौर्यपुत्र पसठ वर्ष गृहवास मे रहकर मडित यावत प्रव्रजित हुए ।
३ सौधर्मावतसक विमान की प्रत्येक दिशा मे पसठ पसठ भौम नगर हैं ।

छासठवा समवाय

१ दक्षिणार्ध मनुष्यक्षेत्र मे छासठ चद्र प्रकाश करते थे, प्रकाश करते है और प्रकाश करेंगे ।
२ दक्षिणार्ध मनुष्यक्षेत्र मे छासठ सूर्य तपते थे तपते है और तपेंगे ।
३ उत्तरार्ध मनुष्यक्षेत्र मे छासठ चद्र प्रकाश करते थे प्रकाश करते है और प्रकाश करेंगे ।
४ उत्तरार्ध मनुष्यक्षेत्र मे छासठ सूर्य तपते थे तपते है और तपेंगे ।

पवत हैं यथा
पतीस वप तीस वपधर पवत चार इपुकार पवत।

२ मरु पवत के पश्चिमी चरमान्त से गौतमद्वीप के पश्चिमी चरमान्त का अव्यवहित अन्तर उनहत्तर हजार योजन का है।

३ मोहनीयकम को छोड़कर शेष सात मूलकमप्रकृतियों की उनहत्तर उत्तरकमप्रकृतियाँ हैं।

सित्तरवां समवाय

१ श्रमण भगवान महावीर वर्षा ऋतु का एक मास और बीस रात्रि व्यतीत होने पर और सित्तर दिन रात शेष रहने पर वर्षावास रहे।

२ प्रसिद्ध पुरुष अरहन्त पार्श्वनाथ सित्तर वर्ष का श्रामण्य पर्याय पालकर सिद्ध यावत् सब दुःखों से मुक्त हुए।

३ अरहन्त वासुपूज्य सित्तर धनुष ऊँचे थे।

४ मोहनीय कर्म की स्थिति अबाधा काल सात हजार वर्ष छोड़कर सित्तर कोटा कोटी सागरोपम की है।

५ माहेन्द्र देवेन्द्र के सित्तर हजार सामानिक देव हैं।

इकहत्तरवां समवाय

१ चौथे चन्द्र संवत्सर की हेमन्त ऋतु के इकहत्तर अहोरात्रि व्यतीत होने पर सब बाह्य मण्डल से सूर्य पुनरावृत्ति करता है।

२ वीर्यप्रवाद पूर्व के इकहत्तर प्राभृत हैं।

३ अरहन्त अजितनाथ इकहत्तर लाख पूर्व गृहवास में रहकर मुंडित हुए यावत् प्रव्रजित हुए।

४ इसीप्रकार सगर चक्रवर्ती भी इकहत्तर लाख पूर्व गृहवास में रहकर मुण्डित हुए यावत् प्रव्रजित हुए ।

बहत्तरवां समवाय

१ सुवर्णकुमारावास बहत्तर लाख हैं ।
२ लवणसमुद्र की बाह्यवेला को बहत्तर हजार नागेन्द्र धारण करते हैं ।
३ श्रमण भगवान महावीर बहत्तर वर्ष की आयु पूर्ण करके सिद्ध यावत् सब दुःखों से मुक्त हुए ।
४ स्थविर अचलभ्राता बहत्तर वर्ष की आयु पूर्ण करके सिद्ध यावत् सब दुःखों से मुक्त हुए ।
५ पुष्कराध द्वीप में बहत्तर चन्द्र प्रकाश करते थे करते हैं और करेंगे तथा बहत्तर सूर्य तपते थे तपते हैं और तपेंगे ।
६ प्रत्येक चक्रवर्ती के बहत्तर हजार श्रेष्ठ पुर हैं ।
७ कलाएं बहत्तर हैं यथा
लेख गणित रूप नाट्य गीत वाद्य स्वर विज्ञान
पुष्कर विज्ञान ताल विज्ञान द्यूत वार्ता विज्ञान
सुरक्षा विज्ञान पाशा क्रीडा कुम्भ-कला अन्न विधि
पान विधि वस्त्र-विधि शयन विधि छन्द रचना प्रहेलिका,
मागधिका गाथा रचना श्लोक रचना गंधयुक्ति मधुसिक्थ,
आभरण विधि तरुणी प्रतिकर्म स्त्री-लक्षण पुरुष लक्षण
हय-लक्षण गज-लक्षण गोण-लक्षण कुक्कट-लक्षण
मेढा-लक्षण चक्र-लक्षण छत्र-लक्षण दण्ड-लक्षण
असि लक्षण मणि-लक्षण काकिणी-लक्षण चर्म-लक्षण,
चन्द्र-लक्षण सूर्य चरित राहु चरित ग्रह-चरित

सौभाग्यकर दौर्भाग्यकर विद्या विज्ञान, मन्त्र विज्ञान,
रहस्य विज्ञान वस्तु विज्ञान साम विज्ञान युद्धविद्या
व्यूह रचना प्रतिव्यूह रचना स्कंधावार विज्ञान
नगर निर्माणकला वस्तुप्रमाण स्कंधावार निर्माणकला
वास्तु विधि नगर निवास इष्वस्त्र असि कला
अश्व शिक्षा हस्ती शिक्षा धनुर्वेद हिरण्य पाक
सुवर्ण पाक मणि पाक धातु पाक बाहुयुद्ध दण्डयुद्ध,
मुष्टियुद्ध यष्टियुद्ध युद्ध नियुद्ध, युद्धातियुद्ध सूत्रखेड
नालिकाखेड वतखेड धमखेड चर्मखेड पत्रछेदनकला,
कटक छेदनकला सजीवनी विद्या शकुनरुत ।

८ सम्मूर्छिम खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय की उत्कृष्ट स्थिति बहत्तर हजार वर्ष की है ।

तिहत्तरवां समवाय

१ हरिवर्ष और रम्यकवर्ष की जीवा का आयाम तिहत्तर हजार नौ सौ एक योजन तथा एक योजन के उन्नीस भागों में से साढ़े सत्रह भाग जितना है ।

२ विजय बलदेव तिहत्तर हजार वर्ष की आयु पूर्ण करके सिद्ध यावत् सब दुखों से मुक्त हुए ।

चौहत्तरवां समवाय

१ स्थविर अग्निभूति गणधर चौहत्तर वर्ष की आयु पूर्ण करके सिद्ध यावत् सब दुखों से मुक्त हुए ।

२ निषध पर्वत के तिगिञ्छ द्रह से सीतोदा महानदी उत्तर दिशा की ओर चौहत्तर सौ योजन बहत्तर चार योजन लम्बी

२ अग वश के सतहत्तर राजा मुण्डित यावत् प्रव्रजित हुए ।
३ गन्तीय और तुषित देवों का सतहत्तर हजार देवों का परिवार है ।
४ प्रत्येक मुहूर्त के सतहत्तर लव होते हैं ।

अठहत्तरवाँ समवाय

१ शक्र देवेन्द्र के वैश्रमण लोकपाल सुवर्णकुमार और द्वीपकुमार के अठहत्तर लाख भवनावासों का आधिपत्य अग्रसरत्व स्वामित्व भर्तृत्व महाराजत्व एवं सेना-नायक के रूप में रहकर आज्ञा का पालन करवाते रहते हैं ।
२ स्थविर अकंपित अठहत्तर वर्ष का आयु पूर्ण करके सिद्ध यावत् सर्व दुःखों से मुक्त हुए ।
३ उत्तरायण से लौटता हुआ सूर्य प्रथम मंडल से उनचालीसवें मंडल पर्यन्त एक मुहूर्त के इकसठिया अठहत्तर भाग प्रमाण दिन तथा रात्रि को बढ़ाकर गति करता है ।
४ इसी प्रकार दक्षिणायन से लौटता हुआ सूर्य भी दिन और रात्रि के प्रमाण को बढ़ाकर गति करता है ।

उनासीवाँ समवाय

१ वडवामुख पाताल कलश के नीचे के चरमान्त से रत्नप्रभा पृथ्वी के नीचे के चरमान्त का अव्यवहित अंतर उनासी हजार योजन का है ।
२ इसी प्रकार केतुक यूपक और ईश्वर पाताल कलशों का अंतर भी है ।
३ छठी पृथ्वी के मध्यभाग से छठे घनोदधि के नीचे के

२ श्रमण भगवान महावीर का बियासी अहोरात्रि के पश्चात् एक गर्भ से दूसरे गर्भ में सन्हरण हुआ।
३ महा हिमवन्त वर्षधर पर्वत के ऊपर के चरमान्त से सौगंधिक काण्ड के नीचे के चरमान्त का अव्यवहित अन्तर बियासी सो योजन का है।
४ इसीप्रकार रुक्मी पर्वत के ऊपरी चरमान्त से सौगंधिक काण्ड के नीचे के चरमान्त का अंतर है।

तियासीवां समवाय

१ श्रमण भगवान महावीर तियासी अहोरात्रि बीतने पर तियासीवी रात्रि में देवानन्दा की कुक्षी से त्रिशला की कुक्षी में सन्हरण हुआ।
२ अरहन्त शीतलनाथ के तियासी गण और तियासी गणधर थे।
३ स्थविर मंडितपुत्र तियासी वर्ष की आयु पूर्ण करके सिद्ध यावत सब दुखों से मुक्त हुए।
४ अरहन्त कौसलिक ऋषभदेव तियासी लाख पूर्व गृहवास में रहकर मण्डित यावत् प्रव्रजित हुए।
५ भरत चक्रवर्ती तियासी लाख पूर्व गृहवास में रहकर जिन हुए यावत सर्वज्ञ सर्वदर्शी हुए।

चौरासीवां समवाय

१ नरकावास चौरासी लाख हैं।
२ अरहन्त कौसलिक ऋषभदेव चौरासी लाख पूर्व की आयु पूर्ण करके सिद्ध यावत सब दुखों से मुक्त हुए।
३ इसी प्रकार भरत बाहुबली ब्राह्मी और सुन्दरी भी सिद्ध

पचासीवाँ समवाय

१ चूलिका सहित आचारांग भगवत के पचासी उद्देशनकाल हैं।

२ धातकी खण्ड के मरुपर्वत पचासी हजार योजन ऊँचे हैं।

३ रुचक माण्डलिक पर्वत पचासी हजार योजन ऊँचे हैं।

४ नन्दनवन के नीचे के चरमान्त से सौगंधिक काण्ड के नीचे के चरमान्त का अव्यवहित अन्तर पचासी सौ योजन का है।

छियासीवाँ समवाय

१ अरहंत सुविधिनाथ (पुष्पदन्त) के छियासी गण और छियासी गणधर थे।

२ अरहंत सुपार्श्वनाथ के छियासी सौ वादी मुनि थे।
दूसरी पृथ्वी के मध्यभाग से दूसरे घनोदधि के नीचे के चरमान्त का अव्यवहित अंतर छियासी हजार योजन का है।

सत्तासीवाँ समवाय

१ मरुपर्वत के पूर्वी चरमान्त से गोस्तूप आवासपर्वत के पश्चिमी चरमान्त का अव्यवहित अन्तर सत्तासी हजार योजन का है।

२ मरुपर्वत के दक्षिणी चरमान्त से दगभास आवासपर्वत के उत्तरी चरमान्त का अव्यवहित अन्तर सत्तासी हजार योजन का है।

३ इसीप्रकार मरुपर्वत के पश्चिमी चरमान्त से शंख आवास पर्वत के पूर्वी चरमान्त का अव्यवहित अन्तर सत्तासी हजार योजन का है।

४ इसीप्रकार मरुपर्वत के उत्तरी चरमान्त से दगसीम आवास पर्वत के दक्षिणी चरमान्त का अव्यवहित अन्तर सत्तासी

नवासीवां समवाय

१ अरहंत कौशलिक ऋषभदेव इस अवसर्पिणी के तृतीय सुषम-दुषमा काल के अन्तिम भाग में नवासी पक्ष शेष रहने पर काल धर्म को प्राप्त हुए-यावत्-सब दुःखों से मुक्त हुए।

२ श्रमण भगवान महावीर इस अवसर्पिणी के चतुर्थ दुषम सुषमा काल के अंतिम भाग में नवासी पक्ष शेष रहने पर काल धर्म को प्राप्त हुए यावत् सब दुःखों से मुक्त हुए।

३ हरिषेण चक्रवर्ती नवासी सौ वर्ष महाराजा रहे।

४ अरहंत शान्तिनाथ की आर्या उत्कृष्ट नवासी हजार थी।

नब्बेवां समवाय

१ अरहंत शीतलनाथ की ऊँचाई नब्बे धनुष की थी।

२ अरहंत अजितनाथ के नब्बे गण और नब्बे गणधर थे।

३ इसी प्रकार अरहंत शान्तिनाथ के गण और गणधर थे।

४ स्वयम्भू वासुदेव का दिग्विजयकाल नब्बे वर्ष का था।

५ सर्ववृत्तवैताढ्य पर्वतों के शिखर के ऊपर से सौगंधिक काण्ड के नीचे के चरमान्त का अव्यवहित अंतर नब्बे सौ योजन का है।

एक्कानबेवां समवाय

१ दूसरे की वैयावृत्य करने की प्रतिमाएं एक्कानबे हैं।

२ कालोदसमुद्र की परिधि कुछ अधिक एक्कानबे लाख योजन की है।

३ अरहंत कुंथुनाथ के एक्कानबे सौ अवधिज्ञानी मुनि थे।

४ आयु और गोत्र को छोड़कर शेष छ मूल कर्मप्रकृतियों की

एक्यानवे उत्तर कर्मप्रकृतियां हैं।

बानवेवां समवाय

१ पडिमाएं बानवे हैं।
२ स्थविर इन्द्रभूति बानवे वर्ष की आयु पूर्ण करके सिद्ध-यावत् सब दुःखों से मुक्त हुए।
३ मेरुपर्वत के मध्यभाग से गोस्तूप आवासपर्वत के पश्चिमी चरमान्त का अव्यवहित अंतर बानवे हजार योजन का है।
४ इसी प्रकार चार आवासपर्वतों का अन्तर भी है।

तिरानवेवां समवाय

१ अरहन्त चन्द्रप्रभ के तिरानवे गण और तिरानवे गणधर थे।
२ अरहन्त शान्तिनाथ के तिरानवे सौ चौदह पूर्वी मुनि थे।
३ तिरानवेवें मंडल में रहा हुआ सूर्य आभ्यन्तर मंडल की ओर जाता हुआ तथा बाह्य मंडल की ओर जाता हुआ समान अहोरात्र का विषम करता है।

चौरानवेवां समवाय

१ निषध और नीलवन्त पर्वत की जीवा का आयाम चौरानवे हजार एक सौ छप्पन योजन तथा एक योजन के उन्नीस भागों में से दो भाग जितना है।
२ अरहन्त अजितनाथ के चौरानवे सौ अवधिज्ञानी मुनि थे।

पचानवेवां समवाय

१ अरहन्त सुपार्श्वनाथ के पचानवे गण और पचानवे गणधर थे।

हित अन्तर निनानवे सा योजन का है।

३ इसीप्रकार दक्षिण चरमान्त म उत्तरी चरमान्त का अव्यवहित अन्तर निनानवे सो योजन का है।

४ उत्तरदिशा के प्रथम सूय मडल का आयाम विष्कम्भ निनानवे हजार योजन का है।

५ दूसर सूय मण्डल का आयाम विष्कम्भ कुछ अधिक निनानवे हजार योजन का है।

६ तृतीय सूयमडल का आयाम विष्कम्भ कुछ अधिक निनानवे हजार योजन का है।

७ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के अजनकाण्ड के नीचे के चरमान्त से व्यन्तरा के भौमयविहारों के ऊपरि चरमान्त का अव्यवहित अन्तर निनानवे सो योजन का है।

सोवा समवाय

१ दस दसमिका भिक्षुप्रतिमा ११ एक सा अहोरात्रि म पाँच सो दात आहार लेकर सूत्रानुसार आराधना की जाती है।

२ शतभिषा नक्षत्र के एक सा तारे हैं।

३ अरहन्त सुविधिनाथ (पुष्पदन्त) एक सा धनुष ऊचे थे।

४ प्रसिद्ध पुरुष अरिहन्त पार्श्वनाथ एकसा वर्ष का आयु पूर्ण करके सिद्ध यावत् सब दुखा से मुक्त हुए।

५ इसी प्रकार स्थविर सुधर्मा भी मुक्त हुए।

६ सर्व दीर्घ वैताढ्यपर्वत सो सो कोस ऊचे हैं।

७ सब लघु हिमवत और शिखरी वर्षधर पर्वत सो सो योजन ऊचे हैं तथा सो सो कोस जमीन मे गहरे हैं।

८ सब काचनग पर्वत सो सो योजन ऊचे हैं सो सो कोश

पृथ्वी में रहते हैं और उनके मूल की स्थिति भी भी योजन की है।

इक्कीसवां समवाय

१ अरहन्त चन्द्रप्रभ डेढ़ सौ धनुष ऊंचे थे।
२ आरण कल्प में डेढ़ सौ विमान हैं।
इसी प्रकार अच्युतकल्प में भी हैं।

दोसौवां समवाय

१ अरहन्त सुपार्श्वनाथ दो सौ धनुष ऊंचे थे।
२ सब महा हिमवन्त और रुक्मी वर्षधर पर्वत दो दो सौ योजन ऊंचे हैं और दो दो सौ कोस जमीन में गहरे हैं।
जम्बूद्वीप में दो सौ कांचनक पर्वत हैं।

ढाइसौवां समवाय

१ अरहन्त पद्मप्रभ ढाई सौ धनुष ऊंचे थे।
२ असुरकुमारों के प्रासाद ढाई सौ योजन ऊंचे हैं।

तीनसौवां समवाय

१ अरहन्त सुमतिनाथ तीन सौ धनुष ऊंचे थे।
२ अरहन्त अरिष्टनेमिनाथ तीन सौ वर्ष के बाद गृहवास से मुक्त होकर प्रव्रजित हुए।
३ वैमानिक देवों के विमानों के प्राकार तीन तीन सौ योजन ऊंचे हैं।
४ श्रमण भगवान महावीर के तीन सौ चौदह पूर्वी मुनि थे।

५ सिद्धगति प्राप्त पांचसो धनुष की अवगाहनावाले चरमशरीरी जीवों के आत्मप्रदेशों की अवगाहना कुछ अधिक तीन सौ धनुष की है।

साढेतीनसोवां समवाय

१ प्रसिद्ध पुरुष अरहन्त पार्श्वनाथ के साढ़े तीन सौ चौदह पूर्वी मुनि थे।
२ अरहंत अभिनन्दन साढ़े तीन सौ धनुष ऊंचे थे।

चारसोवां समवाय

१ अरहंत संभवनाथ चारसौ धनुष ऊंचे थे।
२ सब निषध और नीलवन्त वर्षधर पर्वत चारसौ योजन ऊंचे तथा चारसौ कोस भूमि में गहरे हैं।
३ निषध और नीलवन्त वर्षधर पर्वत के समीप सभी वक्षस्कार पर्वत चारसौ योजन ऊंचे तथा चारसौ कोस भूमि में गहरे हैं।

४ आनत और प्राणत इन दो कल्पों में चारसौ विमान हैं।
५ देव मनुष्य और असुरलोक में वाद में पराजित न होनेवाले चारसौ वादी मुनि श्रमण भगवान महावीर के थे।

साढेचारसोवां समवाय

१ अरहन्त अजितनाथ साढ़े चारसौ धनुष ऊंचे थे।
२ सगर चक्रवर्ती साढ़े चारसौ धनुष ऊंचे थे।

पांचसोवां समवाय

वक्षस्कार पर्वत पाचसो पाचसो योजन ऊंचे और पाचसो पाचसो कोस भूमि में गहरे हैं।

२ सभी वर्षधरकूट पर्वत पाचसो पाचसो योजन ऊंचे तथा उनके मूल का विष्कम्भ पाचसो पाचसो योजन का है।

३ अरहन्त कौशलिक ऋषभदेव पाचसो धनुष ऊंचे थे।

४ भरत चक्रवर्ती पाचसो धनुष ऊंचे थे।

५ मेरु पर्वत के समीप सोमनस गंधमादन विद्युत्प्रभ और माल्यवन्त पर्वतों की ऊंचाई पाचसो पाचसो योजन की है तथा पाचसो पाचसो कोस भूमि में गहरे हैं।

६ हरि हरिस्सहकूट के अतिरिक्त सभी वक्षस्कार पर्वतकूट पाचसो पाचसो योजन ऊंचे तथा उनके मूल का आयाम विष्कम्भ पाचसो पाचसो योजन का है।

७ बलकूट पर्वत के अतिरिक्त सभी नन्दनकूट पर्वत पाचसो पाचसो योजन ऊंचे तथा उनके मूल का आयाम विष्कम्भ पाचसो पाचसो योजन का है।

८ सौधर्म और ईशानकल्प में सभी विमान पाचसो पाचसो योजन ऊंचे हैं।

छसोवां समवाय

१ सनत्कुमार और माहेन्द्रकल्प में सभी विमान छ सौ योजन ऊंचे हैं।

२ लघु हिमवन्तकूट के उपर के चरमान्त से लघु हिमवन्त वर्षधर पर्वत के समभूमितल का अव्यवहित अन्तर छ सौ योजन का है।

३ इसी प्रकार शिखरीकूट से उसके समभूमितल का अन्तर है।

४ देव मनुष्य और असुरलोक से वाद म पराजित न होनेवाले छ सो वादी मुनिया की उत्कृष्ट सपदा अरहत पार्श्वनाथ म थी।
५ अभिचद्र कुलकर छ सो धनुष ऊचे थे।
६ अरहत वासुपूज्य छ सो पुरुषा के साथ मुडित यावत् प्रव्रजित हुए।

सातसोवा समवाय

१ ब्रह्म और लान्तकल्प म सभी विमान सात सा योजन ऊचे हैं।
२ श्रमण भगवान महावीर के सात सो शिष्य केवली हुए थे।
३ श्रमण भगवान महावीर के सात सो वक्रियलब्धि सपन्न मुनि थ।
४ अरहत अरिष्टनेमि कुछ कम सात सो वर्ष केवली पर्याय म रहकर सिद्ध यावत्-सब दुखा स मुक्त हुए।
५ महा हिमवतकूट के उपर के चरमात स महाहिमवत वर्षधर पवत के समभूभागका अन्तर्वत्ति अतर सात सो योजन का है।
६ इसी प्रकार रुक्मीकूट के ऊपर के चरमात स रुक्मी वर्षधर पवत के समभूभाग का अतर है।

आठसोवा समवाय

१ महाशुक्र और सहस्रार इन दो कल्पो म सभी विमान आठसो योजन ऊचे है।

व्यन्तर देवों के भौमेय विहार हैं।

३ श्रमण भगवान महावीर के अनुत्तर विमानों में उत्पन्न होने वाले कल्याणकारी गति स्थिति वाले एवं भविष्य में निर्वाण प्राप्त करनेवाले अनुत्तरोपपातिक मुनियों की संपदा थी।

४ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के अति सम रमणीय भूभाग से आठ सौ योजन की ऊंचाई पर सूर्य गति करता है।

५ अर्हत् अरिष्टनेमि के मनुष्य और असुरों की सभा में पराजित न होनेवाले आत्मा वादी मुनियों की उत्कृष्ट संपदा थी।

नौसौवां समवाय

१ आनत प्राणत आरण और अच्युत इन चार कल्पों में सभी विमान नौसौ नौसौ योजन के ऊंचे हैं।

२ निषधकूट के शिखर से ऊपर में निषध वर्षधर पर्वत के सम भूभाग का अव्यवहित अन्तर नौसौ योजन का है।

३ इसी प्रकार नीलवन्तकूट के शिखर से नीलवंत वर्षधर पर्वत के सम भूभाग का अंतर है।

४ विमलवाहन कुलकर नौसौ धनुष ऊंचे थे।

५ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के अति सम रमणीय भूभाग से नौसौ योजन की ऊंचाई पर सर्वोच्च तारा गति करता है।

६ निषध पर्वत के शिखर से इस रत्नप्रभा पृथ्वी के प्रथम काण्ड के मध्यभाग का अव्यवहित अन्तर नौसौ योजन का है।

७ इसी प्रकार नीलवन्त वर्षधर पर्वत के शिखर से इस रत्नप्रभा पृथ्वी के प्रथम काण्ड के मध्यभाग का अंतर है।

एकहजारवां समवाय

१ सभी ग्रैवेयक विमान एक एक हजार योजन ऊंचे हैं।

२ सभी यमकपर्वत एक एक हजार योजन ऊंचे एक एक हजार कोश भूमि में गहरे हैं और उनके मूल का आयाम विष्कम्भ एक एक हजार योजन का है।

३ इसी प्रकार चित्र विचित्रकूट पर्वतों का परिमाण है।

४ वृत्तवैताढ्य पर्वत एक एक हजार योजन ऊंचे एक एक हजार कोश भूमि में गहरे और उनके मूल का विष्कम्भ एक एक हजार योजन का है तथा वे पल्य के आकार में स्थित है।

५ वक्षस्कारकूटों को छोड़कर सभी हरि हरिस्सह कूटपर्वत एक एक हजार योजन ऊंचे हैं और उनके मूल का विष्कम्भ एक एक हजार योजन का है।

६ इसी प्रकार नंदनकूट को छोड़कर सभी बलकूट पर्वतों का परिमाण है।

७ अरहंत अरिष्टनेमी एक हजार वर्ष की आयु पूर्ण करके सिद्ध यावत सब दुःखों से मुक्त हुए थे।

८ अरहन्त पार्श्वनाथ के एक हजार शिष्य केवलज्ञानी हुए थे।

९ अरहन्त पार्श्वनाथ के एक हजार अंतेवासी कालधर्म को प्राप्त होकर सब दुःखों से मुक्त हुए थे।

१० पद्मद्रह और पुंडरीकद्रह का आयाम एक एक हजार योजन का है।

इग्यारहसौवां समवाय

१ अनुत्तरोपपातिक देवों के विमान इग्यारहसौ योजन ऊंचे है।

२ अरहंत पार्श्वनाथ के इग्यारहसौ निष्य वैक्रियलब्धिवाले थे।

दोहजारवां समवाय

१ महापद्म और महापुडरीकद्रह का आयाम दो दो हजार योजन का है।

तीनहजारवां समवाय

१ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के वज्रकाण्ड के ऊपर के चरमान्त से लोहिताक्षकाण्ड के नीचे चरमान्त का अव्यवहित अन्तर तीन हजार योजन का है।

चारहजारवां समवाय

१ तिगिच्छद्रह और केसरीद्रह का आयाम चार चार हजार योजन का है।

पांचहजारवां समवाय

१ भूतल में मन्दरपर्वत के मध्यभाग में रुचकनाभी से चारों दिशाओं में मन्दरपर्वत का अव्यवहित अन्तर पांच पांच हजार योजन का है।

छः हजारवां समवाय

१ सहस्रार कल्प में छः हजार विमान हैं।

सातहजारवां समवाय

१ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के रत्नकाण्ड के ऊपर के चरमान्त से पुलककाण्ड के नीचे के चरमान्त का अव्यवहित अंतर सात हजार योजन का है

अनुवाद के सम्बन्ध में—

(क) समवायांग का यह अनुवाद सरल संक्षिप्त एवं अधिक से अधिक मूलानुगामी है।

(ख) एकोत्तरिका वृद्धिवाले एक से सौ स्थानों का तथा अनेकोत्तरिका वृद्धिवाले डेढसौ से एक कोटा-कोटी पर्यन्त स्थानों का यहाँ अनुवाद किया है शेष अंश का अनुवाद न करने के कई कारण हैं उनमें एक प्रमुख कारण यह है कि विस्तृत विषय-सूची एवं विशिष्ट परिशिष्टों से पुस्तक कल्पना से अधिक पुष्ट बन गई है अतः शेष अंश का अनुवाद नहीं किया है इसके लिए पाठक क्षमा करें।

मंत्री—

आगम-अनुयोग प्रकाशन दिल्ली।

परिष्कार की प्रतीक्षा में--

१ (क) इस अवसर्पिणी (जम्बूद्वीप के इस भरत में) में सात कुलकर हुए थे यथा विमलवाहन, चक्षुष्मान, यशस्वान, अभिचन्द्र, प्रसेनजित्, मरुदेव और नाभि।

-स्थानांग अ० ७ सूत्र ५५६।

-समवायांग सूत्र १५७।

(ख) इस अवसर्पिणी (जम्बूद्वीप के इस भरत में) में पन्द्रह कुलकर हुए थे। यथा-सुमति, प्रतिश्रुति, सीमंकर, सीमंधर, क्षेमंकर, क्षेमंधर, विमलवाहन, चक्षुष्मान, यशस्वान, अभिचन्द्र, चन्द्राभ, प्रसेनजित्, मरुदेव, नाभि और ऋषभ। -जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्षस्कार २ सूत्र २८।

(ग) प्रथम और द्वितीय कुलकर की हकार दण्डनीति
तृतीय और चतुर्थ कुलकर की मकार दण्डनीति
पंचम षष्ठ और सप्तम कुलकर की धिक्कार दण्डनीति।

-स्थानांग अ० ७, सूत्र ५५७ टीका।

(घ) सुमति आदि पांच कुलकरों की हकार दण्डनीति
क्षेमंधर आदि पांच कुलकरों की मकार दण्डनीति
चक्षुष्मान आदि पांच कुलकरों की धिक्कार दण्डनीति।

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्षस्कार २, सूत्र २९।

(ङ) अनागत उत्सर्पिणी (जम्बूद्वीप के इस भरत में) में सात कुलकर हुए थे। यथा मित्रदाम, सुदाम, सुपार्श्व, स्वयंप्रभ, विमलघोष, सुघोष और महाघोष।

-स्थानांग अ० ७ सूत्र ५५६। -समवायांग सूत्र १५७।

(च) अतीत उत्सर्पिणी (जम्बूद्वीप के इस भरत म) म ऐसा कुलकर हुए थे, यथा सतजल शतायु, अनतसेन तवसेन भीमसेन महाभीमसेन दृढरथ दशरथ शतरथ।
एक ही अग म नामा की विभिन्नता विचारणीय है।

स्थानांग अ० १०, सूत्र ७६७।

२ (क) पुरुषसिंह वासुदेव दस लाख वष का आयुष्य पूण करके छठी नरक म उत्पन्न हुआ था।

स्थानांग अ० १०, सूत्र ७३५।

(ख) पुरुषसिंह वासुदेव दस लाख वष का आयुष्य पूण करके पाचवी नरक म उत्पन्न हुआ था।

समवायांग सूत्र १३३।

स्थानांग और समवायांग दोनों अग आगम है, किन्तु एक ही व्यक्ति का दो भिन्न भिन्न नरकों म गमन का उल्लेख इनकी प्रामाणिकता को चुनौती दे रहा है।

३ (क) राम बलभद्र बारहसौ वष की आयु पूण करके दिव्य देवगति को प्राप्त हुए थ।

समवायांग १२वां सूत्र ५।

(ख) राम बलभद्र पन्द्रह हजार वष की आयु पूण करके मुक्त हुए। त्रिषष्ठि शलाका पुरुष चरित्र पव ७, सग १०।

हमारे बहुश्रुत श्रमण श्रेष्ठ मुनिवर इस प्रकार की अनेक विप्रतिपत्तियों म पूर्वापर अविरोध सिद्ध करके श्रुतसेवा का पुण्योपाजन करें।

समवायाङ्ग का अनुयोग-वर्गीकरण

परिशिष्ट

१
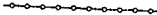
चरणानुयोग-सूत्राङ्क

समवाय	१	म	सूत्र ४। ६। १६। १८
	३	,	, २। ३। ४। ५
	४	,	२।
	५		२।
	६		, ३। ४
	८		२।
	९		१। ५
	१०		१। २
,	११		१।
	१२		१। २। ३
	१७		२।
	१८		१। ३
	२०		१।
	२१		१।
	२२		, १।
	२५		१।
	२७		१।
	२८		१।
	३२		१।
	३३		१।
	४९		१।

६४	१ ।
८१	१ ।
६१	१ ।
६२	१ ।
१००	१ ।

चरणानुयोग-वर्गीकरण

मवर

मवर	मम०	१ सू०	१६ ।
मवरद्वार	सम०	५ सू०	५ ।
अश्रव	मम०	१	८ ।
अक्रिया		१	६ ।
प्रवचनमाता	मम०	८ सू०	२ ।
समिति	सम०	५ सू०	७ ।
गुप्ति	मम०	३ सू०	२ ।
ब्रह्मचय की गुप्ति	सम०	६ सू०	१ ।
ब्रह्मचय के भद		१८ सू०	१ ।
महाव्रत	सम०	५ सू०	२ ।
महाव्रता की भावना	मम०	२५ सू०	१ ।
श्रमण धम	सम०	१० सू०	१ ।
चित्तसमाधिस्थान	मम०	१० सू०	२ ।
योगसग्रह	सम०	३२ सू०	१ ।
सयम		१७ सू०	२ ।

परीषह	सम०	२२ सू०	११

निजरा

निजरा	सम०	१ सू०	१८।
निजरास्थान	,,	५	६।
बाह्य तप	,	६ ,	३।
आभ्यंतर तप		, ,	४।
आचार प्रकल्प(आरोपणा प्रायश्चित्त के भेद)	,	२८	१।
कृतिकर्म के आवर्तन	,	१२	३।
ध्यान	,	४ ,	२।
उपासक पडिमा		११	१।
भिक्षु		१२	१।
सप्त सप्तमिका पडिमा की आराधना काल	सम०	४९ सू०	१।
अष्ट अष्टमिका	,	६४	१।
नव नवमिका	,	८१	१।
दस दसमिका	,	१००	१।
वैयावृत्य	,	९१	१।
सत्र	,	९२ ,,	१।

संघ व्यवस्था

आचार स्थान	सम०	१८ सू०	३।
आशातना		३३	१।
संभोग—श्रमणों के व्यवहार		१२	२।

अणगार

अणगार के गुण	सम०	२७ सू०	१।
शबलदोष (अणगार के दोष)		२१	१।

समवाय		सूत्र
१३	म	१७
१४		१८
१५		१६
१६		१६
१७		२१
१८		१८
१६		१५
२०		१७
२१		१४
२२		१७
२३		१३
२४		१५
२५		१८
२६		११
२७		१५
२८		१४
२६		१०
३०		१६
३१		१४
३२		१४
३३		१४

धर्म-कथानुयोग सूत्राङ्क

समवाय ७ म सूत्र ३ । समवाय ८ म सूत्र ८ ।
" ६ " ४ । " १० " ४ ५ ६ ।
" ११ " ४ । " १२ " ५ ।

समवाय १४ मे सूत्र ४ । ७ । सम० १५ म सूत्र २ ।
१६ , ४ । १८ २ ।
१९ , ५ । २० २ ।
२३ २ ३ ४ । २४ १ ।
२५ २ । ३० , २।४।६ ७।
३२ ३ । , ३४ १ ।
३५ १—४ । ३६ ३ ।
३७ १ । ३८ १ ।
३९ १ । ४० १ ।
, ४१ १ । ४२ १ ।
४४ २ । ४५ ५ ।
४७ २ । ४८ १ २ ।
, ५० १ २ ३ । ५१ ४ ।
५३ ३ । ५४ १—४ ।
५५ , १—४ । ५६ २ ।
५७ , ४ । ५९ २ ३ ।
, ६० , ३ । ६२ २ ।
६३ , १ । ६४ ६ ।
६५ , २ । ६६ ५ ।
६८ ५ । ७० १ २ ३ ।
७१ , ४ । ७२ ३ ४ ६ ।
, ७३ २ । , ७४ १ ।
७५ १ २ ३ । ७७ १ २ ।
७८ २ । ८० १—४ ।
८१ २ । ८२ २ ।

म० ८३ मं सूत्र १—५ सम० ८४ में सूत्र २—५।११
" ८६ , १२। " ८६ " १—४।
९० १—४। ९१ , , ३।
" ९२ २ । " ९३ , , १२ ।
, ९४ २ । ९५ , १४,५।
९६ , १ । ९७ , , ४।
१०० ३४५। १५० , , १।
, २०० , १ । २५० , , १।
, ३०० , १२,४ । , ३५० १२।
, ४०० , १५। ४५० , १२।
, ५०० , ३४। ६०० ४,५६।
७०० २,३४। ८०० ३५।
९०० ४ । १००० " " ७८९।

समवाय ११०० म सूत्र २ ।
४ लाख १ ।
, ६ लाख १ ।
, १० लाख , " १ ।
, १ क्रोड० , , १ ।
१ क्रोडा क्रोडी १ ।
सूत्र १५७ , १—२१।
सूत्र १५८ , , १—१५।
सूत्र १५९ " १—३९।

धर्मकथानुयोग-वर्गीकरण

कुलकर

अतीत उत्सर्पिणी में (भरत में) हुये कुलकरों के नाम
समं०—सूत्र १५७

अवसर्पिणी में (भरत में) हुये कुलकरों के नाम
समं०—सू० १५७

वर्तमान

आगामी उत्सर्पिणी में (भरत में) होनेवाले कुलकरों के नाम
(एरवत में)
समं० सू० १५८

विमलवाहन कुलकर की ऊंचाई समं० १०० सू० ४।

अभिचन्द्र १०० सू० ५।

महापुरुष

भरत और एरवत क्षेत्र में होनेवाले महापुरुष
समं० ५४ सू० १।

धातकी खंड में अधिक से अधिक होनेवाले तीर्थंकर
चक्रवर्ती बलदेव और वासुदेव समं० ६८ सू० २।३।

पुष्करवरार्ध द्वीप में अधिक से अधिक होनेवाले
तीर्थंकर चक्रवर्ती बलदेव और वासुदेव समं० ६८ सू० ४।

तीर्थंकर

जम्बूद्वीप में एक साथ अधिक से अधिक होनेवाले तीर्थंकर
समं० ३४ सू० ४।

देवाधिदेव (चौबीस तीर्थंकरों के नाम) समं० २४

वर्तमान अवसर्पिणी में (भरत क्षेत्र में) हुये चौबीस तीर्थकरों के नाम　　समं० सू० १५७ ७
वर्तमान अवसर्पिणी में (एरवत क्षेत्र में) हुये चौबीस तीर्थकरों के नाम　　समं० सू० १५६।

अतिशय —

बुद्धातिशय	(तीर्थकरों के अतिशय) समं० ३४	सू०	१।
सत्यवचनातिशय (	) , ३५	सू०	१।

तीर्थकरों का पूर्वभव —
वर्तमान अवसर्पिणी के तीर्थकरों का—

पूर्वभव का—राज्यपद	समं० २३ सू०	४
पूर्वभव का—नाम		३
पूर्वभव के—नाम	समवाय सू०	१५७ ८

श्रमण भगवान महावीर के पूर्वभव
(पोटिटलभव में) का श्रमण पर्याय　　समं० एग कोड सू० १।

तीर्थकरों का वर्तमान भव —
वर्तमान अवसर्पिणी में (भरत में) हुए
तीर्थकरों की माताओं के नाम　　समं०　　सूत्र　१५७
　　के पिताओं के नाम

तीर्थकरों का गृहवास काल —

१	भगवान ऋषभदेव का गृहवास काल समं०	८३	सूत्र	४।
२	अजितनाथ का	७१	,,	३।
३	संभवनाथ का	५९	,	२।
१०	शीतलनाथ का	७८	,	२।
१६	शांतिनाथ का	७५	,	३।
२२	अरिष्टनेमी का	३००	,	२।

२३ भगवान पार्श्वनाथ का गृहवासकाल समः ३० सूत्र० ६।
२४ महावीर का ३० ७।

तीर्थंकरों का राज्यकाल —

१ भगवान् ऋषभदेव का राज्य काल समः ६३ सू० १।

राज्यपद भोगकर दीक्षित होनेवाले तीर्थंकर समः १९ सूत्र २।

चौबीस तीर्थंकरों के साथ दीक्षित होनेवालों की संख्या
समः सूत्र १५७—

चौबीस तीर्थंकरों के साथ प्रव्रज्या ग्रहण करने का स्थान
समः सूत्र १५७—

चौबीस तीर्थंकरों के साथ प्रव्रज्या ग्रहण समय का तप
समः सूत्र १५७—

चौबीस तीर्थंकरों के प्रथम भिक्षा ग्रहण काल
प्रथम भिक्षा न
प्रथम भिक्षा देनेवालों के नाम
प्रथम भिक्षा ग्रहण काल में हुई
सुवर्ण वृष्टि का परिमाण
के प्रथम शिष्यों के नाम
की प्रथम शिष्याओं के नाम
की पालखियों के नाम
के चैत्य वृक्षों के नाम
के की ऊंचाई
का देवदूष्य

तीर्थंकरों की अवगाहना शरीर की ऊंचाई —

१ भगवान ऋषभदेव की उंचाई समः ५०० सूत्र ३।
२ अजितनाथ ४५० १।

३	भगवान संभवनाथ की ऊंचाई सम०	४०० सूत्र०	१।
४	,, अभिनन्दन ,, ,,	३५० ,,	१।
५	,, सुमतिनाथ ,,	३०० ,,	१।
६	पद्मप्रभु ,,	२५० ,,	१।
७	सुपार्श्वनाथ ,,	२०० ,,	१।
८	चन्द्रप्रभ ,, ,,	१५० ,,	१।
९	सुविधिनाथ ,,	१००	३।
१०	,, शीतलनाथ	९० ,,	१।
११	श्रेयांसनाथ	८०	१।
१२	वासुपूज्य ,,	७० ,,	३।
१३	,, विमलनाथ	६०	३।
१४	अनन्तनाथ	५० ,,	२।
१५	धर्मनाथ	४५ ,,	५।
१६	शांतिनाथ ,,	४० ,,	३।
१७	कुन्थुनाथ	३५	२।
१८	अरहनाथ ,,	३०	४।
१९	मल्लिनाथ	२५	२।
२०	मुनिसुव्रत	२०	२।
२१	नमिनाथ	१५	२।
२२	अरिष्टनेमि	१०	४।
२३	,, पार्श्वनाथ ,,	९	४।
२४	,, महावीर	७ ,,	३।

तीर्थंकरों का सर्वायु —

१	भगवान् ऋषभदेव की सर्वायु	सम० ८४ सूत्र	२।
११	श्रेयांसनाथ की	,, ,,	४।

, महावीर द्वारा (एक दिन में एक आसन से) दिये गये प्रश्नों के उत्तर ५४ ,, ३।
भग० महावीर की अंतिम धर्म देशना ,, ५५ ४।
महावीर के समवसरण का वर्णन सम० सूत्र १५७

तीर्थकरों के गण और गणधर

१ भगवान ऋषभदेव के गण और गणधर सम० ८४ सू० १५
२ भगवान अजितनाथ के गण और गणधर ९० २।
७ सुपार्श्वनाथ के ९५ १।
८ चन्द्रप्रभ के ९३ १।
९ सुविधिनाथ के ८६ १।
१० शीतलनाथ के ८३ , २।
११ श्रेयांसनाथ के ६६ ५।
१२ , वासुपूज्य के , ६२ २।
१३ विमलनाथ के ५६ २।
१४ अनंतनाथ के ५४ ४।
१५ धर्मनाथ के ४८ २।
१६ शांतिनाथ के ९० ३।
१७ कुंथुनाथ के ३७ १।
२३ पार्श्वनाथ के ८ ८।
२४ महावीर के गणधर ११ ४।

भगवान महावीर के गणधर

१ स्थविर इन्द्रभूति का सर्वायु सम० ९२ सूत्र० २।
२ अग्निभूति का ७४ १।
५ सुधर्मा का १०० ५।
मंडितपुत्र का ८३ ३।

७ स्थविर मौर्यपुत्र का सर्वायु सम० ६५ , ।
८ अकम्पित का ७८ ।
६ अचलभ्राता का ७२ , ।

२ स्थविर अग्निभूति का गृहवासकाल सम० ४७ सूत्र० २।
७ मौर्यपुत्र का ६५ २।

स्थविर मण्डितपुत्रका श्रमणपर्याय सम०३० सू० २।

तीर्थङ्करों की स्मरण —

१	भगवान ऋषभदेव के श्रमण सम०	८४ सूत्र		१६।
१३	,, विमलनाथ के	६८		४।
२३	पार्श्वनाथ के	१६		४।
२४	महावीर के	१४		४।
१६	भगवान शान्तिनाथ की श्रमणियां सम०	८६ सूत्र०		४।
२०	मुनिसुव्रत की	५०		१।
२१	नमिनाथ की	४१		१।
२२	अरिष्टनेमि की	४		१।
२३	पार्श्वनाथ की	३८		१।
२४	महावीर की	३६		।

२३ भगवान पार्श्वनाथ की श्राविकाएं सम० तीनलाख सूत्र०१।

७	भगवान सुपार्श्वनाथ के वादी (श्रमण) सम०	८६	सूत्र०२।
२२	अरिष्टनेमि के	८००	४।
२३	पार्श्वनाथ के	६००	४।

२४	महावीर के	’ ४००	५।

९ भगवान सुविधिनाथ के	केवली	सम० ७५ सूत्र०	१।
१७	कुंथुनाथ के	३२ ’	३।
२३	पार्श्वनाथ के	’ १००० ’	८।
२४	महावीर के	’ ७००	२।
२ भगवान अजितनाथ के	अवधिज्ञानी	सम० ९४ सूत्र०	२।
		९००० ’	१।
१७	कुंथुनाथ के	८१ ’	३।
१९	मल्लिनाथ के	५९ ’	३।
२१	नमिनाथ के	३९ ’	१।

१७ भगवान कुंथुनाथ के	मन पर्यवज्ञानी	सम० ८१ सूत्र०	२।
१९	मल्लिनाथ के	५७	४।
२१	नमिनाथ के	३९	१।

१६ भगवान शांतिनाथ के	चतुर्दशपूर्वी	सम० ९३ सूत्र०	२।
२३	पार्श्वनाथ के	३५०	१।
२४	महावीर के	३००	४।

२३ भगवान पार्श्वनाथ के वक्रियजी धवाल श्रमण सम० ११०० सूत्र० २।

२४	महावीर के	७०० ’	३।

२४ भगवान महावीर के एक वर्ष की श्रमणपर्याय वाले अनुत्तरो

भरत चक्रवर्ती का राज्य काल	सम० ६लाख सूत्र०	१।
का गृहवास काल	' ८३	१।
का सर्वायु	' ८४ '	३।
की उचाई	" ५०० '	४।
२ सगर चक्रवर्ती का राज्यकाल	सम० ७१ सूत्र०	४।
की ऊचाई	४५० '	५।
१० हरिषेण चक्रवर्ती का राज्यकाल	सम० ८६ सूत्र०	३।
का गृहवास काल	' ८७ '	४।
चक्रवर्तियो के एकेन्द्रिय और पचेन्द्रिय रत्न	सम० १४ सूत्र	७।
चक्रवर्तियो के हार का परिमाण	सम० ६४ सूत्र०	६।
प्रत्येक चक्रवर्ती के पट्टन	सम० ४८ सूत्र०	१।
अष्ठपुर	७२	६।
ग्राम	९६	१।
जम्बूद्वीप म चक्रवर्तियो क विजय	सम० ३४ सूत्र	२।

बलदेव, वासुदेव, प्रतिवासुदेव

पूर्वभव —

वर्तमान अवसर्पिणी मे (भरत म) हुए

बलदेवो के पूवभव के नाम

वासुदेवो के नाम

बलदेव और वासुदेवो के पूवभव के धर्माचार्यों के नाम

वासुदेवो के पूवभव की निदानभूमियों के नाम

वासुदेवों के पूवभव म किये गये निदानो के कारण

सम०—सूत्र१५८।

वर्तमान मय —

वर्तमान अवसर्पिणी मे (भरतमे) हुए

बलदेवो के नाम

वासुदेवो के

प्रतिवासुदेवो के

बलदेवो और वासुदेवो के पिताओ के नाम

बलदेवो की माताओ के नाम

वासुदेवो की माताओ के नाम समo सूत्र १५८।

नव दसार मडलों का वर्णन

बलदेवो का पूर्णायु —

२ विजय बलदेव का	पूर्णायु	समo ७३	सूत्रo २।
४ सुप्रभ		५१	४।
८ राम		१२	५।

वासुदेवो का पूर्णायु —

१ त्रिपृष्ट वासुदेव का	पूर्णायु	८४	५।
५ पुरुषसिंह		दसस्थान	१।

बलदेवो की अवगाहना —

१ अचल बलदेव की	ऊचाई	समo ८०	सूत्रo ३।
७ नन्दन		३५	४।
९ राम		१०	६।

वासुदेवों की अवगाहना —

१ त्रिपृष्ठ वासुदेव की	ऊंचाई	सम० ८०	सूत्र० २।
४ पुरुषोत्तम ,		५०	३।
७ दत्त	,	,, ३८ ,	४।
९ कृष्ण		, १० ,	५।

१ त्रिपृष्ठ वासुदेव का	राज्यकाल	सम० ८०	सूत्र० ४।
३ स्वयम्भू	विजयकाल	सम० ९०	सूत्र० ४।

२ विजय बलदेव की	गति	सम० ७३	सूत्र० २।
४ सुप्रभ		५१	४।
९ राम		१२ ,,	५।
१ त्रिपृष्ठ वासुदेव की		८४ ,,	५।
५ पुरुषसिंह		दसलाख	१।

भविष्य में होने वाले बलदेव और वासुदेवों का संक्षिप्त परिचय —

आगामी उत्सर्पिणी में (भरत में होने वाले) बलदेवों के नाम
वासुदेवों के नाम
प्रति वासुदेवों के नाम
बलदेव और वासुदेवों के पिता
बलदेवों की माता वासुदेवों की माता, इनके पूर्वभव पूर्वभव में आचार्य पूर्वभव की निदानभूमियाँ और निदान के कारण होंगे।

सम० सूत्र० १५८

समवाय ३६ मे सूत्र १
३८ ४
, ४० ५
, ४२ ५ ६ ८
४४ १, ४
४६ १, २
५१ १, ५
५३ ४
५७ १
६६ ६
७० ४
,, ७२ ७ ८
८४ ११
८७ , ५
९१ , ४
३०० ५
समवाय सूत्र १३६ से १४९
१५३— ४
१५५— २

समवाय ३७ म सूत्र ४
३९ , ४
४१ , ३
४३ १, ५
४५ ८
४९ २ ३
५२ १ ४
५५ ६
५८ २
६९ ३
७१ २
८१ ३
८५ १
८८ २
९० ३
समवाय सूत्र १५१—१५२
१५४— ४
१५६

द्रव्यानुयोग वर्गीकरण

राशि के प्रकार सम० २ सूत्र २।
, १४८—१।
अस्तिकाय के प्रकार सम० ५ सूत्र ८।
जीवद्रव्य —
आत्मा (द्रव्यार्थिकनय की अपेक्षा से) सम० १ सूत्र १।
भूतग्राम (जीव समूह) सम० १४ सूत्र १।
जीवनिकाय (जीव समूह) ६ २।
नारक आदि चौबीस दण्डकों में जीवों के विशेष भेद—
सम० सूत्र १४६ १
परमाधार्मिकदेव सम० १५ सूत्र १।
देवेन्द्र ३२ २।
जीव परिणाम —
कषाय (प्रज्ञापना का चौदहवां कषाय पद देखें) सम० ४ सूत्र १।
लेश्या सम० ६ १।
लेश्या का विस्तृतवर्णन (चौबीस दण्डक में) प्रज्ञापना के १७ वें
लेश्या पद में देखें सम० १५३ सूत्र ३।
ज्ञान—उपयोग —
मतिज्ञान
अर्थावग्रह सम० ६ सूत्र ६।
अभिनिबोधिकज्ञान (मतिज्ञान के) भेद २८ , ३।
अभिनिबोधिकज्ञान (मतिज्ञान) की उत्कृष्टस्थिति
सम० ६६ सूत्र ६।

श्रुतज्ञान

द्वादशाङ्ग गणिपिटक (अङ्ग प्रविष्ट)	समः आदि वाक्य		
आचाराङ्ग परिचय	सम	सूत्र	१३५।
आचाराङ्ग के अध्ययन (मूलम ब्रह्मचर्य के अध्ययन)			
	सम० ६		३।
आचाराङ्ग के चूलिका सहित अध्ययन	२५		५।
आचाराङ्ग के उद्देशन (अध्ययन) काल	५१		१।
आचाराङ्ग (चूलिका सहित) के उद्देशनकाल	८५		१।
आचाराङ्ग (चूलिका सहित) के पद	१८		४।
सूत्रकृताङ्ग परिचय	सम०	सूत्र	१३७।
(प्रथम श्रुतस्कंध) के अध्ययन	१६		१।
के अध्ययन	सम० २३		१।
स्थानाङ्ग परिचय	सम	सूत्र	१३८।
समवायाग			१३६।
व्याख्याप्रज्ञप्ति			१४०।
के अध्ययन (महायुग्मशतक)	८१		३।
पद	८४		११।
ज्ञाताधर्मकथा परिचय	सम०		१४१।
के अध्ययन	१६		१।
उपासकदशा परिचय	सम०	सूत्र	१४२।
अन्तकृद्दशा			१४३।
अनुत्तरोपपातिकदशा			१४४।
प्रश्न व्याकरण			१४५।
विपाकश्रुत			१४६।
कर्मविपाक के अध्ययन	४३		१।

अध्ययनों की संयुक्त संख्या —

आचाराङ्ग सूत्रकृताङ्ग और स्थानाङ्ग के अध्ययन[1]

समः ५७ सूत्र १।

अङ्ग बाह्यश्रुत

उत्तराध्ययन के अध्ययन समः ३६ सूत्र १।

दशा कल्प और व्यवहार के उद्देशनकाल २६ १।

ऋषिभाषिता के अध्ययन ४४ १।

क्षुल्लिका विमान प्रविभक्ति के प्रथम वर्ग के उद्देशन काल

३७ ४।

„ द्वितीय वर्ग ३८ ४।

तृतीय वर्ग ४० ४।

महाविमान प्रविभक्ति के प्रथमवर्ग के उद्देशनकाल

समः ४१ सूत्र ३।

„ द्वितीय समः ४२ ८।

„ तृतीय ४३ ५।

चतुर्थ ४४ ४।

पंचम ४५ ८।

प्रकीर्णक (ग्रन्थ) ८४ १३।

पापश्रुत —

पापश्रुत समः २९ सूत्र १।

---

[1] आचाराङ्ग की चूलिकाएं न गिने तो ५७ की संख्या होती है।

अवधिज्ञान —

अवधिज्ञान का वर्णन (चौबीस दण्डक में प्रज्ञापना के ३३वें अवधि पद में देखें) सम० सूत्र १५३ ।।

वेद और वेदक —

वेद और वेदकों (चौबीस दण्डक में) का विस्तृत वर्णन प्रज्ञापना के १३ वें परिणाम पद में देखें सम० सूत्र १५६ ११

वेदना —

वेदना (द्रव्यार्थिकनय की अपेक्षा से) सम० १ सूत्र १७

जीवों की (चौबीस दण्डकों में) वेदना प्रज्ञापना के ३५वें वेदना पद में देखें— सम० सूत्र १५२ २।

आहार —

जीवों के आहार लेने का विस्तृत वर्णन (चौबीस दण्डक में) प्रज्ञापना के २८वें आहारपद में और ३४वें परिचारणा पद में देखें सम० × सूत्र १५३ ८१

सागर आदि विमानवासी देव	सम० १	सूत्र०	४२
शुभ	२		२२
आभंकर	३		२३
वृष्टि	४		१७
वात	५		२१
स्वयम्भू	६		१६
सम	७		२२
अर्चि	८		१७
पद्म	९		१६

घाप आदि विमानवासा देव	सम० १०	सूत्र २४
ब्रह्मोत्तर	११	१५
माहेंद्र	१२	१९
वज्र	१३	१६
श्रीकान्त	१४	१७
नन्द	१५	१८
आवत	१६	१५
सामान	१७	२०
कात	१८	१७
आणत	१९	१४
मान	२०	१६
श्रीवत्स	२१	१३
महित	२२	१६
मान व प्रवयिक	२३	१२
मध्यम प्रवयक	२४	१८
ऊपर	२५	१७
मध्यम व प्रथम	२६	१०
मध्यम व मध्यम प्रवयक	२७	१४
ऊपर	२८	१४
ऊपरव प्रथम	२९	१७
मध्यम	३०	१५
ऊपर	३१	१३
जय त आदि	३२	१३
सर्वार्थसिद्ध	३३	१२

श्वासोच्छ्वास —

जीवों के श्वासोच्छ्वास लेने का विस्तृत वर्णन (चौवीस दण्डक में) प्रज्ञापना के ७ वें उच्छ्वासपद में देखें।

सागर—आदि विमानवासी देव	सम०	१ सूत्र०	४२
सुभ		२	२१
आभकर		३	२२
कृष्टि		४	१६
वात		५	२०
स्वयम्भू		६	१५
सम		७	२१
अर्चि		८	१६
पद्म		९	१८
घोष		१०	२३
ब्रह्मोत्तर		११	१४
माहेन्द्र		१२	१८
वज्र		१३	१५
श्रीकान्त		१४	१६
नन्द		१५	१४
आवर्त		१६	१४
सामान		१७	१९
काल		१८	१६
आणत		१९	१३
सात		२०	१५
श्रीवत्स		२१	१२

सम० २६ सूत्र ३। सम० २७ सूत्र ७। सम० २८ सूत्र ६।
सम० २६ सूत्र १०। सम० ३० सूत्र ६। सम० ३१ सूत्र६।
सम० ३२ सूत्र ७। सम० ३३ सूत्र ५।
उत्कृष्टस्थिति सम० १ सूत्र २७।
शर्कराप्रभा के नारकों की जघन्य स्थिति सम० १ सूत्र २८।
कुछ नारकों की स्थिति सम० २ सूत्र ६।
उत्कृष्ट स्थिति सम० ३ सू० १८।
वालुकाप्रभा के नारकों की जघन्यस्थिति सम०३ सूत्र १८
कुछ नारकों की स्थिति सम० ४ सूत्र ११। स० ५ सू० १५
स० ६ सू० १०
उत्कृष्ट स्थिति सम० ७ सूत्र १३।
पंकप्रभा के नारकों की जघन्य स्थिति सम० ७ सूत्र १४।
कुछ नारकों की स्थिति सम०८ सूत्र ११। सम०६ सूत्र १३।
उत्कृष्ट स्थिति सम० १० सूत्र १२।
धूमप्रभा के नारकों की जघन्य स्थिति सम० १० सूत्र १३।
कुछ नारकों की स्थिति सम०११। सूत्र ६। सम० १२ सू०
१३ सम० १३ सू० १०
सम० १४सूत्र १०। सम०१५ सू० ६। सम० १६ सू० ६।
उत्कृष्टस्थिति सम० १७ सूत्र १३।
तमप्रभा के नारकों की जघन्य स्थिति सम० १७ सूत्र १३।
कुछ नारकों की स्थिति सम० १८ सूत्र १०। सम० १६
सू० ७। सम० २० स० ६। स० २१ सूत्र ६।
उत्कृष्टस्थिति सम० २२ सूत्र ८।
तमस्तमप्रभा के नारकों की जघन्यस्थिति सम० २२ सूत्र ६।
कुछ नारकों की स्थिति सम० २३ सूत्र ६। सम० २४

सूत्र ८। सम० २५ सू० ११। सम०२६ सू० ४। सम० २७ सू० ८। सम० २८ सू० ७। सम० २९ सू० ११। सम० ३० सू० १०। सम० ३१ सू० ७। सम० ३२ सू० ८। उत्कृष्ट स्थिति सम० ३३ सूत्र ६ ७।

तिर्यचों की स्थिति —

बादर वनस्पतिकाय की उत्कृष्ट स्थिति सम० १० सूत्र १७।
त्रीन्द्रिय की ४९ ३।
सम्मूर्छिम खेचर तिर्यच पंचेन्द्रिय की उत्कृष्ट स्थिति
सम० ७२ सूत्र ८।
उरपरिसर्प " ५३ सूत्र ४।
भुजपरिसर्प ४२ ५।
असंख्यवर्षायुषी कुछ सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रियों की स्थिति
सम० १ सूत्र ३२। सम० २ सूत्र १२।
उत्कृष्ट स्थिति सम० ३ सूत्र १७

मनुष्यों की स्थिति —

असंख्यवर्षायुषी कुछ गर्भज मनुष्यों की स्थिति
सम० १ सूत्र ३३। सम० २ सूत्र १३।
उत्कृष्ट स्थिति सम० ३ सूत्र १८।

भवनवासी देवों की स्थिति —

असुरकुमारों की जघन्य स्थिति सम० १० सूत्र १४।
कुछ असुरकुमारों की स्थिति
सम० १ सूत्र २६। सम० २ सूत्र १ । सम० ३ सूत्र १६।
सम ४ सू० १२। सम० ५ सू १६। सम० ६ सू ११।

सम० ७ सू० १५। सम० ८ सू० १२। सम० ६ सू० १६।
सम० १० सू० १६। सम० ११ सू० १०। सम० १२ सू० १४।
सम० १३ सू० ११। सम० १४ सूत्र ११। सम० १५ सू० १०।
सम० १६ सू० १०। सम० १७ सू० १४। सम० १८ सू० ११।
सम० १९ सू० ८। सम० २० सू० १०। सम० २१ सू० ७।
सम० २२ सू० १०। सम० २३ सू० ७। सम० २४ सू० ६।
सम० २५ सू० १२। सम० २६ सू० ५। सम० २७ सू० ६।
सम० २८ सू० ८। सम० २९ सू० १२। सम० ३० सू० ११।
सम० ३२ सू० ९। सम० ३३ सू० ८।

असुरकुमारों की उत्कृष्ट स्थिति — सम० १ सूत्र ३०।

नागकुमार आदि (नवनिकाय) के भवनवासी देवों की जघन्य स्थिति सम० १० सूत्र १५।

कुछ देवोंकी स्थिति सम० १ सूत्र ३१।

भवनवासी देवों की उत्कृष्ट स्थिति सम० २ सूत्र ११।

व्यन्तर देवों की स्थिति —

व्यन्तर देवों की जघन्य स्थिति — सम० १० सूत्र० १८।

उत्कृष्ट स्थिति — सम० १ सूत्र ३४।

ज्योतिषी देवों की स्थिति —

ज्योतिषी देवों की उत्कृष्ट स्थिति — सम० १ सूत्र ३५।

विमानवासी देवों की स्थिति —

सौधर्मकल्प के देवों की जघन्य स्थिति — सम० १ सूत्र० ३६।

कुछ देवों की स्थिति —

सम० १ सूत्र ३७। सम० २ सू० १४। सम० ३ सूत्र १६।

समम० ४ सूत्र १० । समम० ५ सूत्र १७ । सम० ६ सूत्र १२ ।
समम० ७ सूत्र १६ । समम० सूत्र १३ । समम० ६ सूत्र १५ ।
समम० १०सूत्र १६ । म० ११ सूत्र ११ । समम० १२ सूत्र १५ ।
समम० १३ सूत्र १२ । स० १४ सूत्र १२ । समम० १५ सूत्र ११ ।
समम० १६ सू० ११ । म० १७ सू० १५ । समम० १८ सूत्र १२ ।
समम० १६ सूत्र ६ । स० २० सूत्र ११ । समम० २१ सूत्र ८ ।
समम० २२सूत्र११ । स० २३ सूत्र ८ । समम० २४ सूत्र १० ।
समम० २५सूत्र१० । स० २६ सूत्र ६ । समम० २७ सूत्र १० ।
समम० २८सूत्र ६ । समम०२६ सूत्र १५ । सम ३१ सूत्र ६ ।
समम० ३२सूत्र १० । समम० सूत्र ६ ।

सौधमकल्प के देवों की उत्कृष्ट स्थिति समम० २ सूत्र १६ ।
ईशानकल्प के देवों की जघन्य स्थिति —समम० १ सूत्र ३८ ।
कुछ देवों की स्थिति —समम० १ सूत्र ३६ ।

समम० २ सूत्र १५ आगे १६ तक — ६ तक सौधम कल्प के समान समवायाङ्ग और सूत्राङ्ग जाने ।
ईशानकल्प के देवों की उत्कृष्ट स्थिति समम० ७ सूत्र० १७ ।
माहेन्द्रकल्प के देवों की जघन्य स्थिति समम० २ सूत्र १६ ।
कुछ देवों की स्थिति के समवायाङ्ग और सूत्राङ्ग सनत्कुमार कल्प के समान है ।
देवों की उत्कृष्टस्थिति समम० ७ सूत्र० १८ ।

ब्रह्मकल्प के कुछ देवों की स्थिति — समम० ७ सूत्र १६ । समम० ८ सूत्र १४ । समम ६ सूत्र० १६ ।
देवों की उत्कृष्ट स्थिति —समम० १० सूत्र ९

लांतककल्प के देवों की जघन्य स्थिति —सम० १० सूत्र २१।
कुछ देवों की स्थिति।—सम० ११ सू० १२।
सम० १२ सूत्र १६। सम० १३ सूत्र १३।
देवों की उत्कृष्टस्थिति —सम० १४ सू० १३।

महाशुक्रकल्प के देवों की जघन्य स्थिति —सम० १४ सूत्र १४।
कुछ देवों की स्थिति —सम० १५ सू० १२। सम० १६ सूत्र १२।
देवों की उत्कृष्ट स्थिति —सम० १७ सूत्र १६।

सहस्रारकल्प के देवों की जघन्य स्थिति — १७ सूत्र १७।
उत्कृष्ट स्थिति — १८ १३।

आनतकल्प के देवों की जघन्य स्थिति —सम० १८ सूत्र १४।
उत्कृष्ट स्थिति — १९ १।

प्राणतकल्प के देवों की जघन्य स्थिति —सम० १९ सूत्र ११।
उत्कृष्ट स्थिति — २० १२।

आरणकल्प के देवों की जघन्य स्थिति —सम० २० सूत्र १३।
उत्कृष्ट स्थिति — २१ „ ९।

अच्युतकल्प के देवों की जघन्य स्थिति —सम० २१ सूत्र १०।
उत्कृष्ट स्थिति — २२ १२।

ग्रैवेयक देवों की स्थिति —

प्रथम प्रस्तट के प्रथम ग्रैवेयक देवों की जघन्यस्थिति —
सम० २२ सूत्र १३।

सागर आदि विमानवासी देवा की उत्कृष्ट
स्थिति —सम १ सूत्र ४०

सुभ ,	२	२०
खामङ्कर , ,	३ ,	२१
सुष्ट	४	१५ ।
वात	५	१६ ।
स्वयम्भू	६	१४ ।
सम	७	२० ।
अर्ची	८ ,,	१५ ।
पद्म	९	१७ ।
घोष	१०	२२ ।
ब्रह्म ,	११	१३ ।
माहेन्द्र	१२	१७ ।
वज्र	१३	१४ ।
श्रीकान्त	१४	१५ ।
नन्द	१५	१३ ।
आवर्त ,	१६	१३ ।
सामान	१७	१८ ।
काल	१८	१५ ।
आनत	१९	१२ ।
सात	२०	१४ ।
श्रीवत्स	२१	११ ।
महिम	२२	१४ ।

नारकों की यावत् विमानवासी देवो की स्थिति—
सम० सूत्र १५१ ।

मरण —
मरण के प्रकार सम० १७ सूत्र ९।
समुद्घात —
समुग्घात विषयक विस्तृत वणन (चौवीसदण्डक म) प्रज्ञापना का ३६वा पद देखें।
समुद्घातो के नाम सम० ७ सूत्र० २।
छाद्मस्थिक समुग्घात ६ ५।
केवली समुदघात के समय ८ ७।
योनि —(जीवा के उत्पत्तिस्थान)
योनि विषयक विस्तृत वणन (चौवीसदण्डक मे) प्रज्ञापना का ९वा योनिपद देखें
जीवा की सवयोनिया सम० ८४ सूत्र० १४।
कुल कोटी —
कुलकोटी विषयक विस्तृत वणन—प्रज्ञापना के प्रथम पद में देखें
जलचर तिर्यच पञ्चेन्द्रिय की कुलकोटी सम १३ सूत्र ५।
उपपात —(उत्पन्न होना) और उद्वतन (मरण)
उपपात और उद्वतन का विषय प्रज्ञापना के व्युत्क्रान्तिपद म देखें
सम० सूत्र० १५४ २ ३।
शरीर और अवगाहना —
शरीर और अवगाहना के सबध मे प्रज्ञापना के बारहवें शरीरपद और इक्कीसवें अवगाहना पद मे देखें सम० × सूत्र० १५२।
जम्बूद्वीप मे प्रवेश करने वाले मत्स्यो की लम्बाई
सम० ९ सूत्र० ८।

ग्रयण —
प्रयण (चौबीस दण्डकों में) सम० × सूत्र० १५५ १
गाण —
ठाण (चौबीस दण्डकों में) प्रज्ञापना का इक्कीसवां अवगाहना
द देखें। सम० × सूत्र १५५ २
ज्ञा —
रूप जानने के लिए प्रज्ञापना का आठवां संज्ञापद देखें
ज्ञा के प्रकार सम० ४ सूत्र ४।
ायस्थान ७ १।
ोग —गर्भज तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय के योग सम० १३ ७।
मनुष्य के १५ ७।
ुण्य —
ुण्य सम० १ सूत्र० ११।
ाप —
ाप सम० १ सूत्र० १२।
आश्रव —
आश्रव सम० १ सूत्र०१५।
आश्रवद्वार सम० ५ सूत्र० ४।
दण्ड १२३ ३,१,११
विकथा ४ , ३।
ब्रह्मचर्य की अगुप्ति , ९ २।
क्रिया १ ५।
क्रिया , ५ १।
क्रियास्थान १३ १।

बंध —
बंध — सम० १ सूत्र १३।
४ ८।
बंधन — २ ३।
कर्म —
कर्मों की उत्तरप्रकृतियाँ —
ज्ञानावरणीय कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ — सम० ६ सूत्र० ११।
नाम — १२ ६।
कर्मों की उत्तरप्रकृतियों की संयुक्त संख्या
ज्ञानावरणीय मोहनीय गोत्र और आयुकर्म की उत्तर प्रकृतियाँ — ३६ ४।
ज्ञानावरणीय और नामकर्म ,, — ५१ ५।
ज्ञानावरणीय नाम और आयुकर्म की — ५५ ६।
ज्ञानावरणीय वेदनीय आयु नाम और अंतरायकर्म की
उत्तर प्रकृतियाँ — सम० ५८ सूत्र० २।
मोहनीय कर्म को छोड़कर शेष सात कर्मों की उत्तर प्रकृतियाँ — सम० ६९ सूत्र० ३।
ज्ञानावरणीय और अंतराय को छोड़कर शेष ६ कर्मों की
उत्तर प्रकृतियाँ — सम० ८७ सूत्र० ५।
आयु और गोत्र कर्म को छोड़कर शेष ६ कर्मों की उत्तर
प्रकृतियाँ — ९१ ४।
आठों कर्मों की उत्तर प्रकृतियाँ — ९७ ३।
कर्मप्रकृतियों का बंध —
नरकगति तथा देवगति का बंध करते हुए जीव के नाम

कर्म की उत्तर प्रकृतियों का बन्ध । समा० २८ सूत्र ५ ।
प्रशस्त अध्यवसायी भव्य सम्यग् दृष्टि जीव यदि पंचेन्द्रिय म उत्पन्न न होनेवाले हों और तीर्थंकर नाम कर्म बांध लिया हो तो उनके नाम कर्म की उत्तर प्रकृतियों का बंधसमा० २९ सूत्र ६ ।
संक्लिष्ट अध्यवसायी मिथ्यादृष्टि अपर्याप्त विकलेन्द्रिय के नाम कर्म की उत्तर प्रकृतियों का बंध । २५ ६ ।
आयुबंध (२४ दण्डकों मे—देखें प्रज्ञापना ६ व्युत्क्रान्तिपद) १५४ १ ।
आयुबंध के आकर्ष(२४ दण्डकों मे देखें प्रज्ञापना ६ व्युत्क्रान्तिपद) १५४ ४ ।

कर्म प्रकृतियों का वेदन —
क्षीणमोह भगवान् द्वारा मोहनीय कर्म को छोड़कर शेष सात कर्म प्रकृतियों का किया जानेवाला वेदन । समा० ७ सूत्र० ६ ।

कर्मप्रकृतियों की स्थिति —
नपुंसक वेदनीय की (बंध समय से मानी गई) बंध स्थिति समा० २० सूत्र० ५ ।
मोहनीय कर्म की (अबाधाकाल बीतने पर शेष रही हुई) स्थिति समा० ७० सूत्र० ४ ।

कर्मप्रकृतियों की सत्ता —
कतिपय भव्यजीवों के मोहनीय कर्म की उत्तर प्रकृतियों की सत्ता समा० २८ सूत्र० २ ।
अभव्य जीवों के २६ , २ ।
वेदक सम्यक्त्व के बंध से विरत जीवों के , २७ , ५ ।
निवृत्त बादर गुणस्थानवर्ती जीवों के २१ २ ।

मोहकर्म —
मोह के नाम समo ५२ सूत्रo १।
मदस्थान „ ८ १।
कषाय के भेद १६ २।

पुद्गल —
पुद्गल—परिणाम —
स्पर्श—परिणाम समo २२ सूत्रo ६।
कामगुण समo ५ सूत्रo ३।

अनात्मद्रव्य —
अनात्मा (द्रव्यार्थिक नय की अपेक्षा) समo १ सूत्रo २।
अजीवराशि १४९ १।
धर्म १ ९।
अधर्म १ १०।

गणितानुयोग-सूत्राङ्क

समवाय १ में सूत्र १९—२५
२ ४—७
३ ६—१२
४ ६—९
५ ९—१३
६ ७८
७ ४५ ७—११
८ ३ ६—९
९ ५—१०

समवाय	१०	सूत्र	३ ७ ८
,	११		२ ३ ५ ६ ७
,	१२	,	४ ६—११
	१३		२ ३ ४ ८ ।
	१४		६ ८ ।
,	१५		१ ३ ४ ५ ।
,	१६		३ ६ ७
	१७		३—८
	१८		७ ८
	१९		२ ३ ४
	२०		३ ४ ७
	२१		३ ४
	२४		२—६
	२५		३ ४ ७ ८ ।
	२७		२ ३ ४ ६ ।
	२८		४ ।
	२९		२—८
	३०		३ ४ ८ ।
	३१		२—५
	३२		२ ४ ५ ।
	३३		२ ३, ४ ।
,	३४		२—६
	३५		५ ६ ।
	३६		२ ४ ।
	३७		२ ३ ५ ।

समवाय ३८। सूत्र २ ३।
३९ २ ३।
४० २।४।६ ७ ८।
४१ २।
४२ २ ३ ४,७।९।१०।
४३ २,३ ४।
४४ ३।
४५ १—४
४६ ३।
४७ १।
४८ ३।
५० ४—७।
५१ २ ३।
५२ २ ३ ५।
५४ १ २।
५५ २ ४ ५।
५६ १।
५७ २ ३ ५।
५८ १ ३—६
५९ १।
६० १ २। ४ ५ ६।
६१ १—४
६२ १।३। ४ ५
६३ २ ३ ४।
६४ २—५

समवाय	६५	सूत्र	१।३ ।
	६६		१—४ ।
	६७		१—४ ।
	६८		१—४ ।
	६९		१ २ ।
	७		५ ।
	७१		१ ।
	७२		१ २ ५
	७३		१ ।
	७४		२ ३ ४ ।
	७६		१ २ ।
	७७		३ ८ ।
	७८		१।३ ४ ।
	७९		१—४
	८०		५ ६ ७ ।
	८२		१ ३ ४ ।
	८४		१ ६—१०।१२।१५।१७ ।
	८५		२ ३ ४ ।
	८६		३ ।
	८७		१—४।६।७ ।
	८८		१ ३—६ ।
	९०		५ ।
	९१		२ ।
	९२		३—६ ।
	९३		३ ।

समवाय	सूत्र
९४	१।
९५	२ ३।
९६	२—५।
९७	१ २।
९८	१—७।
९९	१—७।
१००	२।६ ७ ८।
१५०	३।
२००	२ ३।
२५०	२।
३००	३।
४००	२ ४।
५००	१ २ ५—८
६००	१ २ ३।
७००	१ ५ ६।
८००	१ ४।
९००	१ २ ३। ५ ६ ७।
१ ००	१—६।
११ ०	१।
२० ०	१।
३०००	१।
४ ००	१।
५० ०	१।
६०००	१।
७०००	१।

समवाय ८००० सूत्र १।
९००० १।
१०००० १।
१००००० १।
२००००० १।
३००००० १।
४ ०००० १।
५००००० १।
६००००० १।
७००००० १।
८००००० १।
सूत्र १४६ २—५।
सूत्र १५० १—५।

गणितानुयोग वर्गीकरण

दण्ड का प्रमाण समवा० ९६ सूत्र० ३।
धनु का " " ६।
नालिका का " " ।
युग का " ।
अक्ष का " ।
मूसल का " ।
योजन का समवा० ४ सूत्र० ६।
कला (योजन का उन्नीसवां भाग) समवा० १९ सूत्र० ४।
नरक काण्ड —(स्थान)
रत्नप्रभा के वज्र काण्ड के ऊपर के अन्तिम प्रदेश से

भवनवासी देवों के आवास —

१ असुरकुमारों के भवनावास सम० ६४ सूत्र २।
३ सुवर्ण , ७२ , १।
४ विद्युत युगल के ७६ १।
५ अग्नि २।
६ द्वीप ।
७ उदधि , ।
८ दिशा ।
९ वायु ।
१० स्तनित ।
सब भवनवासी देवों के १४९ ३।
१८० १।

भवनेन्द्रों के आवास —

१ चमरेन्द्र के आवास सम० ३८ सूत्र ५।
२ धरणेन्द्र (नागकुमारेन्द्र के) आवास ४४ ३।
भूतानन्द ( ) ४० ४।
९ प्रभंजन (वायुकुमारेन्द्र के) के ४६ ३।

भवनपति देवों के आवासों का आयाम विष्कम्भ —

चमरेन्द्र और बलेन्द्र के अवतारिकालयनों का आयाम विष्कम्भ
सम० १६ सूत्र ६।

भवनपति देवों के आवासों की ऊंचाई —

असुरकुमारों के प्रासादों की ऊंचाई सम० २५ सूत्र २।

भवनपति देवेन्द्रों की सभा के स्तम्भ —

चमरेन्द्र और बलेन्द्र की सुधर्मा सभाओं के स्तम्भ
सम० ५१ सूत्र २ ३।

भवनपति दवन्द्रा का सभा की ऊचाइ —
चमर द्र की सुधर्मा सभा की ऊचाई समः ३६ सूत्र २।
भवनपति न्द्रा क भूमिगृह —
चमरचचा राजधानी की प्रत्यक दिशा क भूमिगृह
समः ३३ सूत्र २।
चमर द्र और बल न्द्र क उत्पात पवता का वणन पवत विभाग म
समः १७ सूत्र ७८।
वाणव्यन्तर दवा क भौमयविहार
र नप्रभा पृथ्वी क प्रथम काण्ड मे वाणव्य तर दवा के भौमय
विहार समः ८०० सूत्र २।
रत्नप्रभा के अजन काण्ड क नीच क प्रदश स वाण य तर देवों के
भौमय विहारा का अ तर समः ९९ सूत्र ७।
व्य तरावास समः × १५० ३।
व्य तर दवन्द्रा की सभा की ऊचाइ —
व्य तर देव द्रा की सुधर्मा सभा की ऊचाई समः ९ सूत्र १०।
ज्योतिषी दवां क आवास —
ज्योतिषी देवा क आवास समः ┼सूत्र १५० ४।
अन्तर —
तारा त स और मरु मे ज्योतिषचक्र का अ तर
समः ११ सूत्र २३।
सूय का स्थान ८०० ४।
सर्वोपरि ताराओ का स्थान ९०० ५।
विमानवासी दवां क विमान —

ब्रह्मलोक और लान्तक कल्पके विमानों की ऊंचाई ७०० ११।
महाशुक्र सहस्रार ' ८०० ११।
आनत प्राणत आरण अच्युत ' ९०० ' ११।
ग्रैवेयक देवों के ' '१००० ' ११।
अनुत्तरोपपातिक देवों के ११०० ११।

विमानों के प्राकारों की ऊंचाई —

विमानों के प्राकारों की ऊंचाई सम० ३०० सूत्र ३।

विमानों के प्रस्तट —

सौधर्म और ईशान कल्प के प्रस्तट सम० १३ सूत्र २।
विमानवासी देवों के विमानों के प्रस्तट ६२ ५।

प्रस्तट में विमान —

सौधर्म और ईशान कल्प के प्रथम प्रस्तट में प्रथम आवलिकाकी प्रत्येक दिशा के विमान सम० ६२ सूत्र ४।

भूमिगृह —

सौधर्मावतंसक विमान की प्रत्येक दिशा के भूमिगृह सम० ६५ सूत्र ३।

कल्पों का पृथ्वीपिंड —

सौधर्म और ईशान कल्प का पृथ्वी पिंड सम० २७ सूत्र ४।
ईषत् प्राग्भारा के नाम १२ ११।
ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी का आयाम विष्कम्भ ४५ ४।
सर्वार्थ सिद्धविमान से ईषत् प्राग्भारा का अंतर १२ १।
अनीक सम० १ सूत्र ८।

काल परिमाण

काल —

उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी का (संयुक्त) परिमाण
सम० २० सूत्र ७।

प्रत्येक उत्सर्पिणी के पहले और दूसरे आरे का तथा प्रत्येक अवसर्पिणी के पांचवें और छट्ठे आरे का (संयुक्त) परिमाण।
सम० ४२ सूत्र ६ १०।

प्रत्येक उत्सर्पिणी के पहले और दूसरे आरे का (असंयुक्त) परिमाण।
सम० २१ सूत्र ४।

प्रत्येक अवसर्पिणी के पांचवें और छट्ठे आरे का (असंयुक्त) परिमाण। सम० २१ सूत्र ३।

एक मुहूर्त के लव सम० ७७ सूत्र ४।

एक दिवस और एक रात्रि के मुहूर्त (मुहूर्तों के नाम)
सम० ३० सूत्र ३।

सबसे छोटे दिन के और सबसे छोटी रात्रि के मुहूर्त
सम० १२ सूत्र ८ ६।

चैत्र और आश्विन में दिन के और रात्रि के मुहूर्त
सम० १५ सूत्र ५।

पौष में सबसे बड़ी रात्रि के और आषाढ़ में सबसे बड़े दिन के मुहूर्त। सम० १८ सूत्र ८।

चन्द्रदिवस के मुहूर्त २६ , ८।

आषाढ़ भाद्रपद कार्तिक पौष फाल्गुन और वैशाख मास के रात्रि दिवस। सम० २६ सूत्र २ से ७।

अभिवर्धित मास के रात्रि दिवस ३१ ४ ।

आदित्य मास के रात्रि दिवस — सम० ३१ सूत्र ८।
चन्द्र संवत्सर की प्रत्येक ऋतु के रात्रि दिवस — सम० ५६ सूत्र १।
पाच संवत्सर (एक युग) की पूर्णिमा और अमावास्या — सम० ६२ सूत्र १।
( ) के नक्षत्रमास — सम० ६७ सूत्र १।
( ) के ऋतु — सम० ६३ सूत्र १।
पूर्व से शीर्षप्रहेलिका पर्यन्त प्रत्येक संख्या का गुणन — सम० ८४ सूत्र १८।

पौरुषी छाया प्रमाण
उत्तरायण के अन्त में (आषाढ पूर्णिमा के दिन) — सम० २४ सूत्र ४।
श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन — सम० २७ सूत्र ६।
कार्तिक कृष्णा — सम० ३७ सूत्र ८।
चैत्र तथा आश्विन में (पूर्णिमा के दिन) — सम० ३६ सूत्र ४।
फाल्गुन तथा कार्तिक में — सम०४० सू० ६ ७।

शंकु छाया —
आभ्यन्तर मण्डल मे सूर्य के आने पर प्रथम दिवस के प्रथम मुहूर्त में शंकु की छाया[1] — सम० ९६ सूत्र ७।

१—शंकु छाया माप की प्रक्रिया—
जिस दिन सर्वाभ्यन्तरमण्डल मे सूर्य प्रवेश करता है उस दिन दिन के अठारह मुहूर्त होते हैं अतः उसदिन दिन का अठारहवाँ भाग एक मुहूर्त हुआ।
बारह अंगुल के शंकु को अठारह गुणा करने पर २१६ होते हैं और इनके आधे १०८ मे ... के १२ अंगुल

भूगोल वर्णन

पर्वत —

सब अनुवेलधर आवासपर्वतों की ऊंचाई	सम० १७ सूत्र० ४।	
सब कचनग पर्वतों की	८४	८।
इषुकार वर्षधर पर्वत (वैताढ्य नामी सद्दश)	३६	३।
	६६	९।
सब कचनग पर्वतो में शिखरतल का विष्कम्भ	५०	७।
की ऊचाई उद्वेध (भूतल में गहरा) और मूल का विष्कम्भ	१०	८।
जम्बूद्वीप में सब कचनग पर्वत	२००	१
गधमादन पर्वत की ऊंचाई और उद्वेध अतर	४००	३।

जम्बूद्वीप के पूर्वान्त से गोस्तुपआवासपर्वत के पश्चिमान्त का अन्तर। सम० ४२ सूत्र० २।

जम्बूद्वीप के पूर्वान्त से गोस्तुपआवासपर्वत के पूर्वान्त का अन्तर ४३ ५।

गोस्तुप आवास पर्वत के पूर्वान्त से वडवामुख पाताल कलश के पश्चिमान्त का अन्तर। सम० ५२ सूत्र २।

गोस्तुप आवास पर्वत के पूर्वान्त से वडवामुख पाताल कलश के मध्यभाग का अन्तर सम० ५७ सूत्र २।

निकालने पर ८४ अंगुल शेष रहते हैं। इस प्रकार सर्वाभ्यन्तर मण्डल में जिस दिन सूर्य प्रवेश करता है उस दिन दिनके प्रथम मुहूर्त में शकु की छाया ९६ अंगुल होती है।

सम० टीका

गोस्तूप आवास पर्वत के पश्चिमान्त से वड़वामुख पाताल कलश के मध्यभाग का अन्तर समं० ५८ सूत्र ३।

चमरेन्द्र के तिगिच्छकूट उत्पात पर्वत की ऊंचाई।
समं० १७ सूत्र ७।

जम्बूद्वीप के पूर्वान्त से दकभास आवास पर्वत के पश्चिमान्त का अन्तर समं० ४२ सूत्र ३।

जम्बूद्वीप के पूर्वान्त से दकभास आवास पर्वत के पूर्वान्त का अन्तर समं० ४३ सूत्र ४।

दकभास आवास पर्वत के पूर्वान्त से यूप पाताल कलश के अन्तर।
सम ५२ सूत्र ५।

दकभास आवास पर्वत के पूर्वान्त के यूप पाताल कलश के मध्य भाग का अन्तर समं० ५७ सूत्र १।

दकभास आवास पर्वत के उत्तरान्त से केयूप पाताल कलश के मध्यभाग का अन्तर समं० ५८ सूत्र ४।

जम्बूद्वीप के पूर्वान्त से दकसीम आवास पर्वत के पश्चिमान्त का अन्तर समं० ४२ सूत्र ३।

जम्बूद्वीप के पूर्वान्त से दकसीम आवास पर्वत के पूर्वान्त का अन्तर समं० ४३ सूत्र ४।

दकसीम आवास पर्वत के पूर्वान्त से ईश्वर पातालकलश के पश्चिमान्त का अन्तर समं० ५२ सूत्र ३।

दकसीम आवास पर्वत के पूर्वान्त से ईश्वर पाताल कलश के मध्यभाग का अन्तर समं० ५७ सूत्र ३।

दकसीम आवास पर्वत के पूर्वान्त से ईश्वर पाताल कलश के दक्षिणान्त से उत्तरान्त का अन्तर समं० ५८ सूत्र ६।

सब दधिमुख पर्वतों का आकार विष्कम्भ और ऊंचाई
समं० ६४ सूत्र ४।

निषध वर्षधर पर्वत (केवल नामोल्लेख) सम० ७ सूत्र ४ ।
( ) , ३६ ३ ।
निषध वर्षधर पर्वत की जीवा का आयाम ६४ १ ।
सब निषध वर्षधर पर्वत की उचाई और उद्वेध ४०० २ ।
नीलवन्त वर्षधर पर्वत के समवायाङ्क और सूत्राङ्क निषध वर्षधर पर्वत के समान है ।
मानुषोत्तर पर्वत की ऊचाई सम० १७ सूत्र ३ ।
माल्यवन्त वर्षधर पर्वत की उचाई और उद्वेध ५०० ५ ।
मेरु पर्वत (केवल नामोल्लेख) ७ ४ ।
( ) ३६ २ ।
( ) ८६ १ ।
मेरु पर्वत के नाम १६ ३ ।
मेरु पर्वत के भूतल के विष्कम्भ से शिखरतल के विष्कम्भ
का हीनता का परिमाण सम० ११ सूत्र ७ ।
मेरु पर्वत के मूल का विष्कम्भ[1] १०००० ? ।
के मूल का विष्कम्भ १० १ ।
के मूल की परिधि ३१ ३ ।
की चूलिका के मूल का विष्कम्भ १२ ६ ।
की चूलिका की ऊचाई ४० २ ।
, भूतल से उपर की ६६ , १ ।
के प्रथम काण्ड की ६१ २ ।
धातकीखण्ड के मेरु पर्वत की ८५ २ ।

१—समवाय दस और समवाय दस हजार में मेरु पर्वत के मूल के विष्कम्भ का निर्देश है ।

धग्गाइ द्वीप के बाहर मेरुपवता की ८४ ७।
मरु पवत के पूर्वा त से गोस्तुप आवास पवत के पश्चिमा त का अ तर समा० ८७ सूत्र० १
मरु पवत के दक्षिणा त से दकभास आवास पवत के उत्तरा त का अन्तर समा० ८७ सूत्र २।
मरु पवत के पश्चिमा त से शख आवास पवत के पूर्वा त का अतर समा० ८७ सूत्र ३।
मरु पवत के उत्तरा त से दकसीक आवास पवत के दक्षिणा त का अन्तर समा० ८७ सूत्र ४।
मरुपवत के मूल के मध्यभाग में स्थित रुचक नाभि से चारो दिशाओ में मरु के अ तिम प्रदेशो का अन्तर समा० ४०० सूत्र १।
मरु पवत पूर्वा त से गौतम द्वीप के पूर्वा त का अन्तर समा० ६७ सूत्र० ३।
मरु पवत के पश्चिमा त से गौतम द्वीप के पश्चिमान्त का अन्तर समा० ६६ सूत्र २।
सब यमक पवतो की ऊचाई उद्व ध और आयाम—विष्कम्भ समा० १००० सूत्र २।
रुक्मी वर्षधर पव त (कचन नामोल्लेख) ७ ४।
( ) ३६ २।
( ) ६६ १।
की जीवा का आयाम ५३ २।
के धनुपृष्ठ का ५७ ८।
की ऊचाई और उद्वध २०० २।
रत्न द्व म रुचकन्द्र उत्पात पर्वत की ऊचाई १७ ८।
रुचक मण्डलीक पर्वत की ८५ ३।

वक्षस्कार पर्वतों की ऊंचाई और उद्वेध ८० ३ ।
शीता और शीतोदा महानदियों के पास में सब वक्षस्कार पर्वतों की ऊंचाई और उद्वेध ५०० १ ।
विद्युत्प्रभ वक्षस्कार पर्वत की ऊंचाई और उद्वेध
समः ५०० सूत्र ५ ।
सब वर्षधर आवास पर्वतों की ऊंचाई समः १७ सूत्र ४ ।
जम्बूद्वीप में दीर्घ वैताढ्य पर्वत ३४ ३ ।
जम्बूद्वीप बाह्य दीर्घ वैताढ्य पर्वतों की ऊंचाई और उद्वेध
समः २५ सूत्र
म सब वैताढ्य पर्वतों की ऊंचाई और उद्वेध समः १०० सूत्र ६
सब वृत्तवैताढ्य पर्वतों की ऊंचाई उद्वेध विष्कम्भ तथा उनका आकार समः १००० सूत्र ४ ।
गिरसी वर्षधर पर्वत (केवल नामा जल) समः ७ सूत्र ४ ।
( ) ३६ २ ।
( ) ६६ १ ।
की ऊंचाई और उद्वेध १०० ७ ।
की जीवा का आयाम २८ २ ।
जम्बूद्वीप के पूर्वान्त से शबआयाम पर्वत के पश्चिमान्त का अन्तर
समः ४२ सूत्र ३ ।
पूर्वान्त का अन्तर ४३ ४ ।
गोस्तूभ आवास पर्वत के पूर्वान्त से यूपक पाताल कलश के पश्चिमान्त का अन्तर सम ५२ सूत्र ३ ।
गोस्तूभ आवास पर्वत के पूर्वान्त से यूपक पाताल कलश के मध्य भाग का अन्तर समः ५७ सूत्र ३
गोस्तूभ आवास पर्वत के पश्चिमान्त से यूपक पाताल कलश के मध्य भाग का अन्तर समः ५८ सूत्र ५ ।

समय क्षेत्र मे कुलपवत ३६ २।
वषधर पवत ६६ १।
सौमनस वक्षस्कार पवत की ऊचाई और उद्वध सम० ५०० सूत्र ५।
चुल्ल (छोटा) हिमवत वषधर पवत (केवल नामोल्लेख) सम० ७ सूत्र ४।
( ) ३६ २।
( ) ६६ १।
का उचाई और उदवेध १०० ७।
की जीवा का आयाम २४ २।
महाहिमवत वषधर पवत (केवल नामोल्लेख) सम० ७ सूत्र ४।
( ) ३६ २।
( ) ६६ १।
की ऊचाई और उदवेध २०० २।
की जीवा का आयाम ५३ २।
के धनुपृष्ठ का ५७ ८।
कूट (पवत शिखर) —
विभिन्न कूटो की उचाई उद्वेध और आयाम विष्कम्भ सम० १००० सूत्र ३।
चुल्लहिमवान कूट के उपरि भाग से चुल्ल हिमवान वषधर की समतल भूमि का अन्तर सम० ६०० सूत्र २
नन्दन वन के अन्य कूटो को छोडकर बलकूटो की ऊचाई और विष्कम्भ सम० १००० सूत्र ६।
नन्दनवन के अन्य कूटो को छोडकर शेषकूटो की उचाई और आयाम विष्कम्भ सम० ५०० सूत्र ७।
निषधकूट के उपरि भाग से निषधवषधर की समतल भूमि का अन्तर सम० ९०० सूत्र २।

नीलवत कूट के उपरिभाग से नीलवत वर्षधर पर्वत की समतलभूमि का अन्तर समम० ६०० सूत्र ५।
महाहिमवन्त कूट के उपरि भाग से महा हिमवन्त वर्षधर की समतल भूमी का अन्तर समम० ७० सूत्र ५।
सौगंधिक काण्ड के नीचे के भाग का अन्तर समम० ८७ सूत्र ६।
रुक्मी वर्षधर कूट के उपरी भाग से रुक्मी वर्षधर की समतल भूमी का अन्तर समम० ७०० सूत्र ६।
रुक्मी(वर्षधर)कूटों के उपरि भाग से सौगंधिक काण्ड के नीचे के भाग का अंतर समम० ८७ सूत्र० ७।
सब वर्षधर कूटों की ऊंचाई और विष्कम्भ ५०० २।
सब वक्षस्कार कूटों (हरि हरिस्सह कूटों को छोड़कर) की ऊंचाई और आयाम विष्कम्भ समम० ५०० सूत्र ७।
सब वृत्तवैताढ्य पर्वत शिखरों (कूटों) के उपरिभाग से सौगंधिक काण्ड के नीचे के चरमान्त प्रदेश का अन्तर।
समम० ९० सूत्र ५।
शिखरी कूट के उपरि भागसे शिखरी वर्षधर की समतल भूमि का अन्तर समम० ६० सूत्र ।
हरि हरिस्सह कूटों (वक्षस्कार कूटों को छोड़कर)
की ऊंचाई और मूल का विष्कम्भ समम० १० ० सूत्र ५।
गुफा —
खण्ड प्रपात गुफा का आयाम समम० ५० सूत्र ६।
तमिस्रा गुफा का
वन —
नन्दन वन के उपरिभाग से पंडग वन के नीचेके भाग का अंतर

न न्न पन क उपरिभाग से सौगंधिक काण्ड के नीचे क भाग का अ तर समः ८५ सूत्र ४।

पूवा त स पश्चिमा त का अतर ९९ २।

दक्षिणान्त स उत्तरात का अ तर , ३।

वृक्ष —

तीथकरा क चत्य वृक्षा की ऊचाई समः सूत्र १४७ १९।

वाण य तरा क चत्य वृक्षा की ऊचाई ३।

तीथकरा क चत्य वृक्षा क नाम १५७ १८।

चत्य वृक्ष १५९ ११।

जबूद्वीप के सुदर्शन वृक्ष की ऊचाई समः ८ सूत्र ४।

गरुडावास क कूट शाल्मली वृक्ष की ऊचाई ८ ५।

अकमभूमिज मनुष्यों की इच्छा पूरी करने वाले कल्प वृक्षों क नाम समः १० सूत्र ८।

द्रह —

कसरी द्रह का आयाम समः ४००० सूत्र १।

तिगिच्छ , ।

पद्म १००० १०।

पुण्डरीक , ।

महापद्म २००० , १।

महापौण्डरीक , ।

नदियाँ —

गगा आदि महानदियाँ लवण समुद्र मे मिलती हैं।

समः १४ सूत्र ८।

गगादि क प्रवाह का विस्तार २४ ५।

अपने प्रपात कुण्ड मे गिरते समय गगानदी के प्रवाह का विस्तार समः २५ सूत्र ७।

रक्तानदी के प्रवाह का विस्तार	सम०	२४ सूत्र ६।
अपने प्रपात कुण्ड में गिरते समय रक्तानदी के प्रवाह का विस्तार		२५ ,, ८।
रक्तावती नदी के प्रवाह का विस्तार		२४ ६।
अपने प्रपात कुण्डों में गिरते समय रक्तावती नदी के प्रवाह का विस्तार		२५ ८।
सिन्धुनदी के प्रवाह का विस्तार		२४ ५।
अपने प्रपात कुण्ड में गिरते समय सिन्धुनदी के प्रवाह का विस्तार		२५ ७।
शीतानदी के प्रवाह की लम्बाई		७४ ३।
शीतोदानदी के प्रवाह की लम्बाई		७४ २।

देखें सम० ५०० सूत्र १ में शीता और शीतोदा का उल्लेख है।

समुद्र

कालोद समुद्र की परिधि	सम०	६१ सूत्र २।
लवण समुद्र का चक्रवाल विष्कम्भ		दोलाख १।
लवण समुद्र के पूर्वान्त से पश्चिमान्त का अंतर		पांचलाख सूत्र २।
लवण समुद्र के मध्यभाग में पानी की गहराई		१७ ५।
लवण समुद्र के पानी की ऊंची चढ़ाई का परिमाण		१६ ७।
लवण समुद्र के मध्यभाग से दोनों ओर ऊंडाई कम होने का परिमाण		६५ ,, ३।

लवणसमुद्र की बाह्यवेला का धारण करनेवाले नागराज — सम० ७२ सूत्र २।
लवणसमुद्र की आभ्यन्तरवेला का धारण करनेवाले नागराज — ४२, ७।
लवणसमुद्र की उध्ववेला को धारण करनेवाले नागराज — ६० २।
देखें—सम० १४ सूत्र ८ में लवणसमुद्र का उल्लेख।

द्वीप

जम्बूद्वीप का आयाम विष्कम्भ — सम० १ सू० १६।
, — एकलाख, १।
, की जगती की ऊंचाई — ,, ८ ६।
वेदिका का विष्कम्भ — १२ ७।
के एक द्वार से दूसरे द्वार का अन्तर — ७६ ४।
जम्बूद्वीप विजयद्वार के प्रत्येक पार्श्व में भूमिगृह — ६ ८।
जम्बूद्वीप के पूर्वान्त से धातकी खण्ड के पश्चिमान्त का अन्तर — सातलाख १।
धातकी खण्ड (द्वीप) का चक्रवाल विष्कम्भ — चारलाख १।

क्षेत्र

उत्तरकुरु के मनुष्यों के यौवन प्राप्ति के दिन — सम० ४६ सूत्र २।
उत्तरकुरु की जीवा का आयाम — ५३ १।

ऐरवत क्षेत्र की जीवा का आयाम सम० १४ सूत्र ६।
देवकुरु के मनुष्यों के यौवन प्राप्ति के दिन ४९ २।
देवकुरु की जीवा का आयाम ५३ १।
भरतक्षेत्र (दक्षिणार्ध) की जीवा का आयाम ९००० १।
भरतक्षेत्र (दक्षिणार्ध) के धनुपृष्ठ का आयाम ९८ ४।
भरतक्षेत्र (दक्षिणार्ध) की जीवा का आयाम १४ ६।
महाविदेह का विष्कम्भ ३३ ३।
रम्यक वर्ष के मनुष्यों के यौवन प्राप्ति के दिन ६३ २।
रम्यक की जीवा का आयाम ७३ १।
की जीवा के धनुपृष्ठ का आयाम ८४ ९।
का विस्तार ८००० १।
समयक्षेत्र का आयाम विष्कम्भ ४५ १।
हरिवर्ष के मनुष्यों के यौवन प्राप्ति के दिन ६३ २।
हरिवर्ष की जीवा का आयाम ७३ १।
की जीवा के धनुपृष्ठ का आयाम ८४ ९।
का विस्तार ८ ०० १।
हेमवय की जीवा का आयाम ७ २।
की जीवा के धनुपृष्ठ का आयाम २८ २।

हमवय की प्रत्येक पाश्व ( )
का आयाम सम० ६७ सूत्र २।
हेरण्णवय व ऐमवय के समान समवायांक और सूत्रांक है।
विजया राजधानी का आयाम विष्कम्भ सम० १२ सूत्र ४।
विजय वजयत जयत और अपराजयत
राजधानियों के प्राकारों की ऊंचाई ३७ ३।
धातकी खण्ड म राजधानियाँ ६८ , १।
पुष्करवर द्वीपार्ध म राजधानियाँ ६८ ४।

खगोल वर्णन

चन्द्र सूर्य

मनुष्यक्षेत्र के दक्षिणार्ध भाग म चन्द्र-सूर्य सम० ६६ सूत्र १२।
उत्तरार्ध भाग म ६६ ३४।
कालोद समुद्र म ४२ , ४।
पुष्कराध द्वीप म ७२ , ५।
चन्द्र सूर्य का ग्रह परिवार सम० ८८ सूत्र १।

चन्द्र

शुक्ल पक्ष म चन्द्र की वृद्धि और
कृष्णपक्ष म चन्द्र का ह्रास सम० ६२ सूत्र ३।
चन्द्रमण्डल म योजन के समांश सम० ६१ सूत्र ३।

चन्द्र के साथ योग करनेवाले नक्षत्र

जम्बूद्वीप म दो चन्द्र के साथ योग करते
वाले नक्षत्र सम० ५६ सूत्र १।

चन्द्र के साथ प्रमर्द योग करनेवाले नक्षत्र सम० ८ सूत्र ९।

उत्तर दिशा में योग करने
वाले नक्षत्र सम० ९ सूत्र ६।

चन्द्र के साथ नक्षत्रों का योगकाल

चन्द्र के साथ अभिजित् का योगकाल सम० ९ सूत्र ५।

चन्द्र के साथ शतभिषा भरणि आर्द्रा अश्लेषा स्वाति और ज्येष्ठा इन छ नक्षत्रों का योगकाल सम० १५ सूत्र ४।

चन्द्र के साथ उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढा उत्तराभाद्रपद पुनर्वसु रोहिणी और विशाखा इन छ नक्षत्रों का योगकाल सम० ४५ सूत्र ३।

भरतक्षेत्र के मनुष्यों को सूर्यदर्शन

सर्वाभ्यन्तर मण्डल से सूर्यदर्शन सम० ४७ सूत्र [illegible]

सर्वबाह्य मण्डल में सम० ३१ सूत्र [illegible]

तृतीय मण्डल में सम० ३[illegible] सूत्र [illegible]

सूर्यमण्डलों में होनेवाली दिवस और रात्रि की हानि-वृद्धि

सर्वाभ्यन्तर मण्डल से सर्व बाह्यमण्डल में सूर्य के जाते समय तथा सर्व बाह्यमण्डल से सर्वाभ्यन्तर मण्डल में सूर्य के आते समय जिस मण्डल में दिवस और रात्री की विषमता प्रारम्भ होती है वह मंडल सम० [illegible]

दक्षिणायन में ४४वें मण्डल में सूर्य के आने पर होने वाली दिवस की हानि और रात्रि की वृद्धि का परिमाण

उत्तरायण मे ४४वें मण्डल म सूय के आने पर होनेवाली दिवस की वृद्धि रात्रि की हानि का परिमाण — सम० ८८ सूत्र ६।

दक्षिणायन म सव बाह्यमण्डल से ४६वें मण्डल म सूय के आने पर होनेवाली दिवस की वृद्धि और रात्री की हानि का परिमाण — सम० ८८ सूत्र ६।

उत्तरायण म सर्वाभ्यन्तर मण्डल से ४६वें मण्डल म सूय के आने पर होनेवाली दिवस की हानि और रात्री की वृद्धि का परिमाण — सम० ८८ सूत्र ५।

सूयमण्डल कहाँ–कितने ?

जम्बूद्वीप म सूयमण्डल — सम० ६५ सूत्र १।
निषधपवत पर — सम० ६३ सूत्र ३।
नीलवन्तपवत पर — सम० ६३ सूत्र ४।

सूयमण्डलों का परिमाण

एक योजन के ६१ भागा म से १३ भागहीन सूय मण्डल — सम० १३ सूत्र ६।
सूय मण्डल म योजन के समान भाग — सम० ६१ सूत्र ४।
सूय मण्डल का विष्कम्भ — सम० ४८ सूत्र ३।
उत्तरदिशा में प्रथम द्वितीय और तृतीय सूयमण्डल का आयाम विष्कम्भ — सम० ९९ सूत्र ४ ५ ६।
सूय का ताप क्षेत्र — सम० १६ सूत्र २।
प्रत्येक मण्डल म सूय के रहने के मुहूर्त — सम० ६० सूत्र १।

सूय द्वारा दो बार अवगाहन किये जाने
वाले सूय मण्डल समि० ८२ सूत्र १।
सर्वाभ्यन्तर मण्डल में सूर्योदय के समय
सूय द्वारा अवगाहित किये जाने वाला
जम्बूद्वीप का क्षेत्र समि० ८० सूत्र ७।
सर्व बाह्यमण्डल से सूर्य की आवृत्ति
(लौटने) करने का समय समि० ७१ सूत्र १।

ग्रह

शुक्र महाग्रह के साथ नक्षत्रों का योग
और उदयास्त समि० १९ सूत्र ३।
जम्बूद्वीप में नक्षत्रों का व्यवहार समि० २७ सूत्र २।
ज्ञानवृद्धि करनेवाले नक्षत्र समि० १० सूत्र ७।
नक्षत्रों का सीमा विष्कम्भ समि० ६७ सूत्र ४।
नक्षत्रों के द्वार
पूर्व द्वारिक नक्षत्र समि० ७ सूत्र ८।
दक्षिण द्वारिक समि० ७ सूत्र ९।
पश्चिम द्वारिक समि० ७ सूत्र १०।
उत्तर द्वारिक समि० ७ सूत्र ११।

नक्षत्रों के नाम नक्षत्रों के तारे

अश्विनी के तारे समि० ३ सूत्र ११।
भरणी समि० ३ सूत्र १२।
कृत्तिका समि० ६ सूत्र ७।

रोहिणी के तारे	सम० ५ सूत्र ९ ।
मृगशिर	सम० ३ सूत्र ६ ।
आर्द्रा	सम० १ सूत्र २३ ।
पुनर्वसु	सम० ५ सूत्र १० ।
पुष्य	सम० ३ सूत्र ७ ।
अश्लेषा	सम० ६ सूत्र ८ ।
मघा	सम० ७ सूत्र ७ ।
पूर्वाफाल्गुनी	सम० २ सूत्र ४ ।
उत्तराफाल्गुनी	सम० २ सूत्र ५ ।
हस्त	सम० ५ सूत्र ११ ।
चित्रा	सम० १ सूत्र २४ ।
स्वाति	सम० १ सूत्र २५ ।
विशाखा	सम० ५ सूत्र १२ ।
अनुराधा	सम० ४ सूत्र ७ ।
ज्येष्ठा	सम० ३ सूत्र ८ ।
मूल	सम० ११ सूत्र ५ ।
पूर्वाषाढा	सम० ४ सूत्र ८ ।
उत्तराषाढा	सम० ४ सूत्र ९ ।
अभिजित्	सम० ३ सूत्र ९ ।
श्रवण	सम० ३ सूत्र १० ।
धनिष्ठा	सम० ५ सूत्र १३ ।
शतभिषा	सम० १०० सूत्र २ ।
पूर्वाभाद्रपद	सम० २ सूत्र ६ ।

निम्नांकित समवायो में चरणानुयोग का विषयनहीं है -

समवाय २।७।१३ १६।१६।२३ २४।२६।२६ ३१
३४ ४८।५० ६३।६८ ८०।८२ ९०।९३
६६।१५० आडा औडी पयत तथा सूत्र
१३६ १८६ पयत ।

निम्नांकित समवायों में गणितानुयोग का विषय नहीं है -

समवाय २२ २३।२६।४६।५४।७४।८१।८३।
८६।१५०।४५०। ३ लाख। ६०००
२ लाख। ६ लाख। १० लाख।
१ करोड़। एक कोटा-कोटि।
सूत्र १३६ से १५६ पर्यन्त।

निम्नांकित समवायों में धर्मकथानुयोग का विषय नहीं है

समवाय १ ६।१३।१७।२१ २२।२६ २६।३१।
३।५५।३८।४३।४६।४६।५२।५८।
६१।६७।६६।७६।७६।८५।८७ ८८।
६८ ६६।२०० से २ लाख तक।
४ लाख से ८ लाख तक।
सूत्र १३६ से १४६ तक।

निम्नांकित समवायों में द्रव्यानुयोग का विषय नहीं है -

समवाय १४ ४।४७ ४८।५०।५४।५६।५६

६५।६७ ६८।७३ ८०।८२ ८३।८६।

८६ ९०।९२ ९६।९८ ९९ १००।

१५० २०० २५०।१५०-गा धारा धारा तक।

सूत्र १५०।

सूत्र १५७-१५६।

समवायाग के सूत्रों की अन्य आगमों में शोध

परिशिष्ट

१

मुनि कन्हैयालाल "कमल'

समवायाग-समन्वय

पहला समवाय

सूत्र १ स्थानाग अ० १ सू० २। भगवती श० १२ उ० १०।

सूत्र २ भगवती श० १ उ० ४।

सूत्र ३ आचाराग श्रु० १ अ० १ उ० ४।

सूत्र ४ भगवती श० ११ उ० ११।

सूत्र ५ स्थानाग अ० १ सूत्र ४। भगवती श० १ उ० ६। प्रज्ञापना पद २२।

सूत्र ६ स्थानाग अ० ७ उ० ३ सू० ५८८। भगवती श० २५। उ० ७। औपपातिक सूत्र २०।

सूत्र ७ स्थानाग अ० १ सू० ५। भगवती श० १२ उ० ७। औपपातिक सूत्र ५६।

सूत्र ८ स्थानाग अ० १ सू० ५। भगवती श० १२ उ० ७। औपपातिक सूत्र ५६।

सूत्र ९ सूत्रकृताग श्रु० २ अ० ५। स्थानाग अ० १ सू० ७। भगवती श० २० उ० २।

सूत्र १० सूत्रकृताग श्रु० २ अ० ५। स्थानाग अ० १ सू० ८। भगवती श० २० उ० २।

सूत्र ११ सूत्रकृताग श्रु० २ अ० ५। स्थानाग अ० १ सू० ११। औपपातिक सू० ५४।

सूत्र १२ सूत्रकृताग श्रु० २ अ० ५। स्थानाग अ० १ सू० १२। औपपातिक सू० ३४।

सूत्र १३ सूत्रकृताग श्रु० २ अ० ५ । स्थानाग अ० १ सू० ६ ।
औपपातिक सू० ३४ ।
सूत्र १४ सूत्रकृताग श्रु० २ अ० ५ । स्थानाग अ० १ सू० १० ।
औपपातिक सू० ३४ ।
सूत्र १५ सूत्रकृताग श्रु० २ अ० ५ । स्थानाग अ० १ सू० १३ ।
औपपातिक सू० ३४ ।
सूत्र १६ सूत्रकृताग श्रु० २ अ० ५ । स्थानाग अ० १ सू० १४ ।
औपपातिक सू० ३४ ।
सूत्र १७ सूत्रकृताग श्रु० २ अ० ५ । स्थानाग अ० १ सू० १५ ।
औपपातिक सू० ३४ ।
सूत्र १८ सूत्रकृताग श्रु० २ अ० ५ । स्थानाग अ० १ सू० १६ ।
औपपातिक सू० ३४ ।
सूत्र १९ स्थानाग अ० ४ उ० ३ सू० ३२८ । जम्बद्वीपप्रज्ञप्ति
वक्ष० १ सू० ३ ।
सूत्र २० स्थानाग अ० ४ उ० ३ सू० ३२८ । प्रज्ञापना पद २ ।
सूत्र २१ स्थानाग अ० ४ उ० ३ सू० ३२८ ।
सूत्र २२ स्थानाग अ० ४ उ० ३ सू० ३२८ । प्रज्ञापना पद २ ।
सूत्र २३ स्थानाग अ० १ सू० ५५ । सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६
सू० ४२ ।
सूत्र २४ स्थानाग अ० १ सू० ५५ । सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६
सू० ४२ ।
सूत्र २५ स्थानाग अ० १ सू० ५५ । सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६
सू० ४२ ।
सूत्र २६ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र २७ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १[illegible]९।

सूत्र २८ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र २९ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र ३० भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र ३१ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५।
अनुयोगद्वार सू० १ ९।

सूत्र ३२ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० [illegible]८।
अनुयोगद्वार सू० १ ९।

सूत्र ३३ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९९।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र ३४ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १००।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र ३५ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०१।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र ३६ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १ ९।

सूत्र ३७ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र ३८ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र ३६ भगवती श० १ उ० ९ । प्रज्ञापना प० ४ सू० १०२ । अनुयोगद्वार सू० १३६ ।

सूत्र ४० प्रज्ञापना प० ४ सू० १०३ । अनुयोगद्वार सू० १३६ ।

सूत्र ४१ प्रज्ञापना प० ७ सू १४६ ।

सूत्र ४२ प्रज्ञापना प० २८ सू० ३०४ ।

सूत्र ४३ भगवती श० ६ उ० १० । स्थानांग अ० १ सू० ५१ ।
१२ , २ अ० १ सू० ५१ ।

दूसरा समवाय

सूत्र १ सूत्रकृतांग श्रु० २ अ० २ । स्थानांग अ० २ उ० १ सू० ६६ ।

सूत्र २ स्थानांग अ० ४ उ० ४ सू० ६८ । समवायांग सू० १४६ । प्रज्ञापना प० १ सू० १ । जीवाभिगम प्रति० १ सू० १ । उत्तराध्ययन अ० ६ ।

सूत्र ३ स्थानांग अ० २ उ० ४ सू० ६६ । प्रश्नव्याकरण ५वाँ संवरद्वार । प्रज्ञापना प० २३ । उत्तराध्ययन अ० ३१ ।

सूत्र ४ स्थानांग अ० २ उ० ४ सू० ११० सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६ सू० ४२ ।

सूत्र ५ स्थानांग अ० २ उ० ४ सू० ११० । सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६ सू० ४२ ।

सूत्र ६ स्थानांग अ० २ उ० ४ सू० ११० । सूर्य प्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६ सू० ४२ ।

सूत्र ७ स्थानांग अ० २ उ० ४ सू० ११० । सूर्य प्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६ सू० ४२ ।

सूत्र ८ प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ । अनुयोगद्वार सूत्र १३९ ।
सूत्र ९ प्रज्ञापना पद ४ सू ९४ ।
सूत्र १० प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५ ।
सूत्र ११ प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५ ।
सूत्र १२ प्रज्ञापना पद ४ सू ९८ ।
सूत्र १३ प्रज्ञापना पद ४ सू० ९९ ।
सूत्र १४ प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
सूत्र १५ प्रज्ञापना पद ४ सू० १०४ ।
सूत्र १६ प्रज्ञापना पद ४ सू १०२ ।
सूत्र १७ प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
सूत्र १८ प्रज्ञापना पद ४ सू १०२ ।
सूत्र १९ प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
सूत्र २० प्रज्ञापना पद ४ सू० १०३ ।
सूत्र २१ प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६ ।
सूत्र २२ प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०६ ।
सूत्र २ भगवती श० १२ उ० २ । श० श० ६ उ० १० ।
स्थानांग अ० १ सू० ५१ ।

तीसरा समवाय

सूत्र १ स्थानांग अ० ३ उ० १ सू० १२६ । प्रश्नव्याकरण ५वाँ संवरद्वार । उत्तराध्ययन अ० ३१ । आवश्यक अ० ४ ।
सूत्र २ स्थानांग अ० ३ उ १ सू० १२६ । प्रश्नव्याकरण ५वाँ संवरद्वार । उत्तराध्ययन अ० २४ । आवश्यक अ० ४ ।

सूत्र ४ स्थानांग अ० ३ उ० ४ सू० २१४। प्रश्नव्याकरण ५वाँ संवरद्वार।

सूत्र ५ प्रश्नव्याकरण ५वाँ संवरद्वार।

सूत्र ६ स्थानांग अ० ३ उ० ४ सू० २२७। सूयप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६ सू० ४२।

सूत्र ७ स्थानांग अ० ३ उ० ४ सू० २२७। सूयप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६ सू० ४२।

सूत्र ८ स्थानांग अ० ३ उ० ४ सू० २२७। सूयप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६ सू० ४२।

सूत्र ९ स्थानांग अ० ३ उ० ४ सू० २२७। सूयप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६ सू० ४२।

सूत्र १० स्थानांग अ० ३ उ० ४ सू० २२७। सूयप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६ सू० ४२।

सूत्र ११ स्थानांग अ० ३ उ० ४ सू० २२७। सूयप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६ सू० ४२।

सूत्र १२ स्थानांग अ० ३ उ० ४ सू० २२७। सूयप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६ सू० ४२।

सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४। अनुयोगद्वार सू० १३९ ४०।

सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४। अनुयोगद्वार सू० १३९ ४०।

सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४। अनुयोगद्वार सू० १३९ ४०।

सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४। अनुयोगद्वार सू० १३९ ४०।

सूत्र ६ स्थानांग अ० ८ उ० १ सूत्र ६३४।
सूत्र ७ स्थानांग अ० ४ उ० ४ सूत्र ३८६।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ९ सूत्र ४२।
सूत्र ८ स्थानांग अ० ४ उ० ४ सूत्र ३८६।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ९ सूत्र ४२।
सूत्र ९ स्थानांग अ० ४ उ० ४ सूत्र ३८६।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ९ सूत्र ४२।
सूत्र १० भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९५।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९५।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १६ प्रज्ञापना पद ७ सूत्र १४६ अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १७ प्रज्ञापना पद २८ सूत्र ३०६ अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १८ भगवती श० ६ उ० १०। श० १२ उ० २।
स्थानांग अ० १ सूत्र ५१।

पांचवां समवाय

सूत्र १ स्थानांग अ० ५ उ० २ सू० ४१६।
प्रज्ञापना पद २२ सूत्र २३६।

सूत्र २ आचारांग चू० ३ सूत्र १७६।
स्थानांग अ० ५ उ० १ सूत्र ३८६।
प्रश्नव्याकरण ५वां संवरद्वार।

सूत्र ३ आचारांग श्रु० १ अ० २ उ० १ सूत्र ६८।
स्थानांग अ० ५ उ० १ सूत्र ३९०।

सूत्र ४ स्थानांग अ० ५ उ० २ सूत्र ४१८।
प्रश्नव्याकरण आश्रवद्वार।

सूत्र ५ स्थानांग अ० ५ उ० २ सूत्र ४१८।
प्रश्नव्याकरण ५वां संवरद्वार।

सूत्र ६ आचारांग चू० ३ सूत्र १७६।
स्थानांग अ० ५ उ० १ सूत्र ३८६।
भगवती श० ७ उ० १०।

सूत्र ७ स्थानांग अ० ५ उ० ३ सूत्र ४५७।
उत्तराध्ययन अ० २४।

सूत्र ८ स्थानांग अ० ५ उ० ३ सूत्र ४४१।
भगवती श० २ उ० १०।

सूत्र ९ स्थानांग अ० ५ उ० ३ सूत्र ४७३।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ९ सूत्र ४२।

सूत्र १० स्थानांग अ० ५ उ० ३ सूत्र ४७३।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ९ सूत्र ४२।

सूत्र ११ स्थानांग अ० ५ उ० ३ सूत्र ४७३ ।
　　सूयप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६ सूत्र ४२ ।

सूत्र १२ स्थानांग अ० ५ उ० ३ सूत्र ४७५ ।
　　सूयप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६ सूत्र ४२ ।

सूत्र १३ स्थानांग अ० ५ उ० ३ सूत्र ४७३ ।
　　सूयप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६ सूत्र ४२ ।

सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४ ।
　　अनुयोगद्वार सू० १३६ ।

सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४ ।
　　अनुयोगद्वार सूत्र १३६ ।

सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९५ ।
　　अनुयोगद्वार सूत्र १३६ ।

सूत्र १७ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
　　अनुयोगद्वार सू० १३६ ।

सूत्र १८ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
　　अनुयोगद्वार सू० १३६ ।

सूत्र १९ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
　　अनुयोगद्वार सूत्र १३६ ।

सूत्र २० प्रज्ञापना पद ७ सूत्र १४६ ।

सूत्र २१ प्रज्ञापना पद २८ सूत्र ३०६ ।

सूत्र २२ भगवती श० ६ उ० १० । श० १२ उ० २ ।
　　स्थानांग अ० १ सूत्र ५१ ।

छठा समवाय

सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३६ ।
सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०३ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३६ ।
सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ७ सूत्र १४६ ।
सूत्र १७ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद २८ सूत्र ३०६ ।
सूत्र १८ भगवती श० ६ उ० १० । श० १२ उ० २ ।
स्थानांग अ० १ सूत्र ५१ ।

सातवां समवाय

सूत्र १ स्थानांग अ० ७ सूत्र ५४६ ।
प्रश्नव्याकरण ५वाँ संवरद्वार । उत्तराध्ययन अ० ३१ ।
सूत्र २ स्थानांग अ० ७ सूत्र ५८६ । भगवती श० २ उ० २ ।
प्रज्ञापना पद ३६ सूत्र ३३१ ।
सूत्र ३ आचारांग श्रु० २ अ० १५ उ० १ सूत्र १७६ ।
स्थानांग अ० ७ सूत्र ५६८ । भगवती श० १ उ० १ ।
औपपातिक सूत्र १० ।
सूत्र ४ स्थानांग अ ७ सूत्र ५५५ ।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ६ सूत्र १२५ ।
सूत्र ५ स्थानांग अ० ७ सूत्र ५५५ ।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ६ सूत्र १२५ ।
सूत्र ६ स्थानांग अ० ७ सूत्र ५६६ ।
सूत्र ७ स्थानांग अ० ७ सूत्र ५८६ ।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १ प्रा० ६ सूत्र ४२ ।

सूत्र २० भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०३ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३६ ।
सूत्र २१ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ७ सूत्र १४६ ।
सूत्र २२ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद २८ सूत्र ३०६ ।
सूत्र २३ भगवती श० ६ उ० १० । श० १२ उ० २ ।
स्थानांग अ० १ सूत्र ५१ ।

आठवां समवाय

सूत्र १ स्थानांग अ० ८ सूत्र ६०६ ।
प्रश्न व्याकरण ५वाँ संवरद्वार । उत्तराध्ययन अ० ३१ ।
सूत्र २ स्थानांग अ० ८ सूत्र ६०३ । उत्तराध्ययन अ० २४ ।
सूत्र ३ स्थानांग अ० ८ सूत्र ६५४ ।
जीवाभिगम प्र० ३ सूत्र ९ ।
सूत्र ४ स्थानांग अ० ८ सूत्र ६३५ ।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सूत्र ९० ।
सूत्र ५ स्थानांग अ० ८ सूत्र ६३५ ।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सूत्र १०० ।
सूत्र ६ स्थानांग अ० ८ सूत्र ६४२ ।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० १ सूत्र ४ ।
सूत्र ७ स्थानांग अ० ८ सूत्र ६४२ । औपपातिक सूत्र ४२ ।
प्रज्ञापना पद ३६ सूत्र ३२१ ।
सूत्र ८ स्थानांग अ० ८ सूत्र ६१७ । कल्पसूत्र सूत्र १६० ।
सूत्र ९ स्थानांग अ० ८ सूत्र ६२६ ।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १ प्रा० ११ सूत्र ४४ ।

सूत्र १ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।

सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।

सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९८।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।

सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।

सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।

सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०३।

सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ७ सूत्र १४६।

सूत्र १७ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद २८ सूत्र ३०४।

सूत्र १८ भगवती श० ६ उ० १०। श० १२ उ० २।
स्थानांग अ० १ सूत्र ५१।

नौवां समवाय

सूत्र १ स्थानांग अ० ९ सूत्र ६३। उत्तराध्ययन अ० ३६।
प्रश्नव्याकरण ५वाँ संवरद्वार।

सूत्र २ प्रश्नव्याकरण ४ आश्रव द्वार।

सूत्र ३ आचारांग श्रु० १ अ० ९।
स्थानांग अ० ९ सूत्र ६६२।

सूत्र ४ स्थानांग अ० ९ सूत्र ६६०।
कल्पसूत्र भ० पार्श्वनाथ वर्णन।

सूत्र ५ स्थानांग अ० ९ सूत्र ६६६।

सूयप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ११ सूत्र ४४।[1]

सूत्र ६ स्थानांग अ० ९ सूत्र ६६९।
सूयप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ११ सूत्र ४४।

सूत्र ७ स्थानांग अ० ९ सूत्र ६७०।
सूयप्रज्ञप्ति प्रा० १८ सूत्र ९६।
जीवाभिगम प्र० ३ सूत्र १९५।

सूत्र ८ स्थानांग अ० ९ सूत्र ६७१।

सूत्र ९ जीवाभिगम प्र० ३ सूत्र १३२।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० १ सूत्र ८।

सूत्र १० जीवाभिगम प्र० ३ सूत्र १३२।

सूत्र ११ भगवती श० १ उ० ४। प्रज्ञापना पद २३।
उत्तराध्ययन अ० ३३।

सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।

सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।

सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९५।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।

सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।

सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।

---

१ सूयप्रज्ञप्ति में अभिजित का चन्द्र के साथ योगकाल १२ मुहूर्त

सूत्र १७ भगवती श० ९ उ० ९। प्रज्ञापना पद ६ सूत्र १०३।
अनयोगद्वार सूत्र १३८।
सूत्र १८ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ७ सूत्र १४६।
सूत्र १९ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद २८ सूत्र ३०४।
सूत्र २० भगवती श० ६ उ० १०। श० १२ उ० २।
स्थानांग अ० १ सूत्र ५१।

दशम समवाय

सूत्र १ स्थानांग अ० २ सूत्र ९६।
स्थानांग अ० १० सूत्र ७१। उत्तराध्ययन अ० १।
प्रश्नव्याकरण ५वाँ संवरद्वार।
सूत्र २ दशाश्रुतस्कंध दशा० ५।
सूत्र ३ स्थानांग अ० १० सूत्र ७१९।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष २ सूत्र १०३।
सूत्र ४ स्थानांग अ० १० सूत्र ७ ४।
कल्पसूत्र भ० अरिष्टनेमि वर्णन।
सूत्र ५ स्थानांग अ० १० सूत्र ७ ।।
सूत्र ६ त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्र पर्व ७ सर्ग १०।
सूत्र ७ स्थानांग अ० १० सूत्र ७८१।
सूत्र ८ स्थानांग अ० १० सूत्र ७६६।
जीवाभिगम प्र सूत्र १११।
जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति वक्ष० २ सूत्र १३०।
सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ६ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १४९।

सूत्र १० भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ६४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।

सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ६४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।

सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ६४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।

सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ६४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।

सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ६५ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।

सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ६५ ।
अनुयोगद्वार सू० १४६ ।

सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ६५ ।
अनुयोगद्वार सू० १४६ ।

सूत्र १७ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ६६ ।
अनुयोगद्वार सू० १४६ ।

सूत्र १८ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०० ।
अनुयोगद्वार सू० १४६ ।

सूत्र १९ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।

सूत्र २० भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।

सूत्र २१ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।

सूत्र २२ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
जनुयोगद्वार सू० १३६।
सूत्र २३ भगवती श १ उ० १। प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६।
सूत्र २४ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०५।
सूत्र २५ भगवती श० ६ उ० १०। श० १२ उ० २।
स्थानांग अ० १ सू० ५१।

इग्यारहवां समवाय

सूत्र १ प्रश्नव्याकरण ५वाँ संवरद्वार। दशाश्रुतस्कंध दशा० ६।
उत्तराध्ययन अ० ३१।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७ सू० १६४।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १८ सू० ६२।
सूत्र ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७ सूत्र १६४।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १८ सू० ६२।
सूत्र ४ नन्दीसूत्र स्थविरावली।
सूत्र ५ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा १० प्रा० ६ सू० ४२।
सूत्र ६ प्रज्ञापना पद २ सू० ५३।
सूत्र ७ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० १०३।
सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३६।
सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३६।
सूत्र १० भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५।
अनुयोगद्वार सू० १३६।

सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १० ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।
सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।
सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३६ ।
सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६ ।
सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०६ ।
सूत्र १६ भगवती श० ६ उ० १०। श० १२ उ० २ ।
स्थानांग अ० १ सू० ५१ ।

बारहवां समवाय

सूत्र १ प्रश्नव्याकरण ४थां संवरद्वार ।
दशाश्रुतस्कंध दशा० ७। उत्तराध्ययन अ० ३१ ।
सूत्र २ व्यवहार सूत्र उ० ४ सू० १८ ।
सूत्र ३ आवश्यक अ० ३ ।
सूत्र ४ जीवाभिगम प्र० ३ सू० १३५ ।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० १ सू० ८ ।
सूत्र ५ त्रिषष्ठि शलाका पुरुष चरित्र पर्व ७ सर्ग १० ।
सूत्र ६ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० १०६ ।
सूत्र ७ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० १२५ ।
सूत्र ८ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १ प्रा० १ सू० ११ ।
सूत्र ९ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १ प्रा० १ सू० ११ ।
सूत्र १० औपपातिक सू० ४३ ।
सूत्र ११ औपपातिक

सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ६४।
अनुयोगद्वार सू० १ ६।
सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ६४।
अनुयोगद्वार सू १३६।
सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ६५।
अनुयोगद्वार सू० १३६।
सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
सूत्र १७ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
सूत्र १८ प्रज्ञापना पद ७ सूत्र १४६।
सूत्र १९ प्रज्ञापना पद २८ सूत्र ३०४।
सूत्र २ भगवती श० ६ उ० १०। श० १२ उ० २।
स्थानांग अ १ सू० ४१।

तेरहवां समवाय

सूत्र १ सूत्रकृतांग श्रु० २ अ० २।
सूत्र २ स्थानांग अ ६ सू ५१६ टीका।
सूत्र ३ प्रज्ञापना पद २ सू० ४८।
सूत्र ४ जीवाभिगम प्र० ३ सू० ९६।
सूत्र ५ जीवाभिगम प्र० ३ सू० ९७।
सूत्र ६ नन्दीसूत्र सू० ५६।
सूत्र ७ प्रज्ञापना पद १६ सू २०२।
सूत्र ८ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७ सू० १७०।
सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ६४।
अनुयोगद्वार सू १३६।

सूत्र १० भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६ ।
सूत्र १६ प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०६ ।
सूत्र १७ भगवती श० ६ उ० १० । श० १२ उ० २ ।
स्थानांग अ० १ सू० ५१ ।

चौदहवां समवाय

सूत्र १ भगवती श० २५ उ० १ ।
सूत्र २ नन्दीसूत्र सू० ५६ ।
सूत्र ३ नन्दीसूत्र सू० ५६ ।
सूत्र ४ कल्पसूत्र सू० १३४ ।
सूत्र ५ चतुर्थ कर्मग्रन्थ ।
सूत्र ६ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० १ सू० १६ ।
सूत्र ७ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ३ सू० ६८ ।
सूत्र ८ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ६ सू० १२५ ।

सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र १० भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६।

सूत्र १७ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०४।

सूत्र १८ भगवती श० ६ उ० १। श० १२ उ० २।
स्थानांग अ० १ सू० ५१।

पन्द्रहवां समवाय

सूत्र १ भगवती श० ३ उ० ७।

सूत्र २ प्रवचनसारोद्धार द्वार ३५।

सूत्र ३ भगवती श० १२ उ० ६।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० २० सू० १०५।

सूत्र ४ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० ३ सू० ३५।

सूत्र ५ भगवती श० ११ उ० ११।
सूत्र ६ नन्दीसूत्र सू० ५६।
सूत्र ७ प्रज्ञापना पद १६ सू० २०२। भगवती श० २५।
सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १० भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९६।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६
सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०४
सूत्र १७ भगवती श० ६ उ० १ । श० १२ उ० २।
स्थानांग अ० १ सू० ५१।

सोलहवां समवाय

सूत्र १ प्रश्न व्याकरण ५वां संवरद्वार। उत्तराध्ययन अ० ३१
सूत्र २ प्रज्ञापना पद १४ सू० १८८।

सूत्र ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति व० ४ सू० १०६ ।

सूत्र ४ वस्पसूत्र स० १६८ ।

सूत्र ५ नन्दीसूत्र सू० ५६ ।

सूत्र ६ भगवती श० ८ उ० ८ ।

सूत्र ७ जीवाभिगम प्र० सू० १७ ।

सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १ ९ ।

सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १ ९ ।

सूत्र १० भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५ ।
अनुयोगद्वार सू० १.९ ।

सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १ २ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६ ।

सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०४ ।

सूत्र १६ भगवती श० ६ उ० १० । श० १२ उ० २ ।
स्थानांग अ० १ सू० ५१ ।

सतरहवां समवाय

सूत्र १ प्रश्नव्याकरण ५वां संवरद्वार । उत्तराध्ययन अ० ३१ ।

सूत्र २ आवश्यक अ० ४ ।

सूत्र ३ जीवाभिगम प्र० ३ सू० १३८।
सूत्र ४ जीवाभिगम प्र० ३ सू० १५६।
सूत्र ५ जीवाभिगम प्र० सू० १७२।
सूत्र ६ भगवती श० २० उ० ९।
सूत्र ७ भगवती श० २ उ० ८।
सूत्र ८ भगवती श० ३ उ० १।
सूत्र ९ भगवती श० १३ उ० ७।
सूत्र १० कमग्रन्थ
सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सू० १२ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९६।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १७ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १८ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १९ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६।

सूत्र २ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना प० २८ सू० ३०४ ।
सूत्र २१ भगवती श० ६ उ० १० । श० १२ उ० २ ।
स्थानांग अ० ९ सू० ४१ ।

अठारहवाँ समवाय

सूत्र १ प्रश्नव्याकरण ४वाँ संवरद्वार । उत्तराध्ययन अ० ३१ ॥
आवश्यक अ० ४ ।
सूत्र २ कल्पसूत्र सू० १७६ ।
सूत्र ३ दशाश्रुतस्कन्ध अ० ६ ।
सूत्र ४ नन्दीसूत्र सू० ४४ ।
सूत्र ५ प्रज्ञापना पद १ सू० ३७ ।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति व १० २ सू० ४३ ।
सूत्र ६ नन्दीसूत्र सू० ४६ ।
सूत्र ७ जीवाभिगम प्र० ३ सू० ६८ ।
सूत्र ८ भगवती श० ११ उ० ११ ।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १ प्रा० ६ सू० १८ ।
सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १० भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १४९ ।

सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १ ९।
सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६।
सूत्र १७ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०४।
सूत्र १८ भगवती श० ६ उ० १०। श० १२ उ० २।
स्थानांग अ० १ सू० ५१।

उन्नीसवां समवाय

सूत्र १ ज्ञाता धर्मकथा अ० १ अ० १।
प्रश्नव्याकरण ५वां संवरद्वार। उत्तराध्ययन अ० ३१
सूत्र २ भगवती श० ८ उ० ८।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७ सू० १३९।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० ४ सू० २५।
सूत्र ३
सूत्र ४
सूत्र ५ त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र पर्व ९—सर्ग७।
सूत्र ६ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९६
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र ७ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४
अनुयोगद्वार सू० १ ९।

सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।
सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।
सूत्र १० भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।
सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।
सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।
सूत्र १ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।
सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।
सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ७ सूत्र १४६।
सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद २८ सूत्र २०४।
सूत्र १७ भगवती श० ६ उ० १०। श० १२ उ० २।
स्थानांग अ० १ सूत्र ५१।

इक्कीसवाँ समवाय

सूत्र १ दशाश्रुतस्कंध दशा २।
सूत्र २ ग्रन्थाग्र
सूत्र ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० २ सू० ३४, २६।
सूत्र ४ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० २ सू० ३७।

सूत्र ५ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र ६ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र ७ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९५ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १० भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९ ।
सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६ ।
सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद २८ सू० ०४ ।
सूत्र १४ भगवती श० ६ उ० १० । श० १२ उ० २ ।
स्थानांग अ० १ सूत्र ४१ ।

बावीसवां समवाय

सूत्र १ भगवती श० ८ उ० ८ । सूत्रकृतांग श्रु० २ अ० ३ ।
उत्तराध्ययन अ० २ ।
सूत्र २ से ५ नन्दीसूत्र सू० ५६ ।
सूत्र ६ भगवती श० ८ उ० १० ।

सूत्र ७ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १० भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ७ सूत्र १४६ ।
सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०४ ।
सूत्र १७ भगवती श० ६ उ० १० । श० १२ उ० २ ।
स्थानांग अ० १ सू० ४१ ।

तेईसवां समवाय

सूत्र १ प्रश्न व्याकरण ५वां संवरद्वार । उत्तराध्ययन अ० २१ ।
सूत्र २ प्रवचनसारोद्धार द्वार ४१ ।
सूत्र

सूत्र ४ प्रवचनसारोद्धार द्वार ३५।
सूत्र ५ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र ६ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र ७ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९५।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।
सूत्र १० भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ६ सूत्र १०२।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।
सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ७ सूत्र १४६।
सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद २८ सूत्र ३०६।
सूत्र १३ भगवती श० ६ उ० १०। श० १२ उ० २।
स्थानांग अ० १ सूत्र ११।

चौबीसवां समवाय

सूत्र १ भगवती श० २० उ० ८।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति व १० ४ सू० ७२।
सूत्र स्थानांग अ० २ उ० सूत्र ९४।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ५ सूत्र ११५।
सूत्र ४ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० सू० ४३। उत्तराध्ययन अ० २६।
सूत्र ५ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० ७४।

सूत्र ६ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० ७४।
सूत्र ७ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।
सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।
सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९५।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।
सूत्र १० भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।
सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।
सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ७ सूत्र १४६।
सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद २८ सूत्र ३०६।
सूत्र १५ भगवती श० ६ उ० १०। श० १२ उ० २।
स्थानांग अ० १ सूत्र ५१।

पच्चीसवां समवाय

सूत्र १ आचारांग श्रु० २ चु० ३ सू० १७९।
प्रश्नव्याकरण संवरद्वार।
सूत्र २ ज्ञाताधर्मकथा अ० ८।
सूत्र ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० १ सू० १२।
सूत्र ४ जीवाभिगम प्र० ३ सू० ७०।
सूत्र ५ आचारांग श्रु० १ अ० २। नन्दीसूत्र सू० ४५।

सूत्र ३ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४।
अनुयोगद्वार सूत्र १३६।

सूत्र ४ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९५।
अनुयोगद्वार सूत्र १३६।

सूत्र ५ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
अनुयोगद्वार सूत्र १३६।

सूत्र ६ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
अनुयोगद्वार सूत्र १३६।

सूत्र ७ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
अनुयोगद्वार सूत्र १३६।

सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र १०२।
अनुयोगद्वार सूत्र १३६।

सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६।

सूत्र १० भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०६।

सूत्र ११ भगवती श० ६ उ० १०। श० १२ उ० २।
स्थानांग अ० १ सू० ५१।

सत्तावीसवां समवाय

सूत्र १ प्रश्नव्याकरण ५वाँ संवरद्वार। उत्तराध्ययन अ० ३१।

सूत्र २ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० १ सूत्र ३२।

सूत्र ३ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १२ सू० ७२।

सूत्र ४ जीवाभिगम प्र० २ सू० २१।

सूत्र ५ कमग्रन्थ

सूत्र ६ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० १० सू० ६३।

सूत्र ७ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।

सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४।
अनुयोगद्वार सूत्र १३९।

सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ९४।
अनुयोगद्वार सूत्र १ ९।

सूत्र १० भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १ २।
अनुयोगद्वार सू० १ ९।

सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १ ९।

सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १ ९।

सूत्र १ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ७ सूत्र १४६।

सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ८ सूत्र ३०६।

सूत्र १५ भगवती श० ६ उ० १०। श० १२ उ० ७।
स्थानांग अ० १ सूत्र ५१।

अठाईसवाँ समवाय

सूत्र १ स्थानांग अ० ४ उ० २ सू० ४ ३।
प्रश्नव्याकरण ५वाँ संवरद्वार। उत्तराध्ययन अ० ३१।

सूत्र २ कर्मग्रंथ

सूत्र ३ स्थानांग अ० ६ सू० ५७५। भगवती श० ८ उ० २।
राजप्रश्नीय सू० ६८। नन्दीसूत्र सू० २६।

सूत्र ४ प्रज्ञापना पद २ सू० ५४।

सूत्र ५ कर्मग्रंथ

सूत्र ६ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र ७ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र १० भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६।

सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०६।

सूत्र १४ भगवती श० ६ उ० १०। श० १२ उ० २।
स्थानांग अ० १ सू० ५१।

उनतीसवां समवाय

सूत्र १ प्रश्न व्याकरण ५वाँ संवरद्वार। उत्तराध्ययन अ० ३१।

सूत्र २ उत्तराध्ययन अ० २९।

सूत्र ३ से ७ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १२ सू० ७५।

सूत्र ८ समग्रन्थ

सूत्र ९

सूत्र १० भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।

सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १ ९।

सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना प ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र १६ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ७ सू० १४९।

सूत्र १७ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ८ सू० ३०६।

सूत्र १८ भगवती श० ६ उ० १०। श ११ उ० २।
स्थानांग अ० १ सू० ५१।

तीसरा समवाय

सूत्र १ प्रवचनसारोद्धार ५वाँ सप्तद्वार। दशाश्रुतस्कन्ध दशा ६।
उत्तराध्ययन अ० ३१।

सूत्र २ आवश्यक निर्युक्ति।

सूत्र ३ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा १३ सू० ४७।

सूत्र ४ प्रवचनसारोद्धार द्वार ३५।

सूत्र ५ प्रज्ञापना पद २ सू० ५१।

सूत्र ६ कल्पसूत्र सू० १५५।

सूत्र ७ आचारांग श्रु० २ चू० ३ सू० १७९।
भगवती श० १५। कल्पसूत्र सू० १४६।

सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना प० ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना प० ४ सू० ९८ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १० भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना प० ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९८ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।
सूत्र १४ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६ ।
सूत्र १५ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना प० २८ सू० ३०६ ।
सूत्र १६ भगवती श० ६ उ० १० । श० १२ उ० २ ।
स्थानांग अ० १ सू० ५१ ।

इकतीसवां समवाय

सूत्र १ प्रश्नव्याकरण ५वां संवरद्वार । उत्तराध्ययन अ० ३१ ।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० १०३ ।
सूत्र ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७ सू० १३३ ।
सूत्र ४ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १२ सू० ७२ ।
सूत्र ५ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १२ सू० ७२ ।
सूत्र ६ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना प० ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र ७ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९८ ।
अनुयोगद्वार सू० १ ९ ।

सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९८ ।
अनुयोगद्वार सूत्र १ ९ ।

सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १ ९ ।

सूत्र १० भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १ ९ ।

सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६ ।

सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १ । प्रज्ञापना पद २८ सू ३०६ ।

सूत्र १४ भगवती श० ६ उ० १० । श० १२ उ० २ ।
स्थानांग अ० १ सू० ५१ ।

बत्तीसवाँ समवाय

सूत्र १ प्रश्नव्याकरण ५वाँ संवरद्वार । उत्तराध्ययन अ० ३१ ।

सूत्र २ स्थानांग अ २ उ० । भगवती श० ३ उ० ८ ।

सूत्र ३ प्रवचनसारोद्धार द्वार १ ।

सूत्र ४ प्रज्ञापना पद २ सूत्र ५२ ।

सूत्र ५ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १ प्रा ९ सू० ४२ ।

सूत्र ६ राजप्रश्नीय सू० ८४ । भगवती श० २ उ० १ ।

सूत्र ७ भगवती श १ उ १ । प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४ ।
अनुयोगद्वार सू० १३९ ।

सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९९।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९८।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र १० भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १ ९।
सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ७ सू० १४६।
सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद २८ सू० ३०६।
सूत्र १४ भगवती श० ६ उ० १०। श० १२ उ० २।
स्थानांग अ० १ सू० ५१।

तेतीसवां समवाय

सूत्र १ प्रश्नव्याकरण ५वां संवरद्वार। दशाश्रुतस्कंध दशा ३।
उत्तराध्ययन अ० ३१। आवश्यक अ० ४।
सूत्र २ भगवती श० ८ उ० २।
सूत्र जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० ८५।
सूत्र ४ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७ सू० १ ३।
सूत्र ५ भगवती श० १ उ १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९९।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र ६ भगवती श० १ उ १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।
सूत्र ७ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना पद ४ सू० ९४।
अनुयोगद्वार सू० १३९।

सूत्र ८ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना प० ४ सू० ९८।
अनुयोगद्वार सू० १४६।
सूत्र ९ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना प० ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १३६।
सूत्र १० भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना प० ४ सू० १०२।
अनुयोगद्वार सू० १ ६।
सूत्र ११ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना प० ४ सू० १०४।
अनुयोगद्वार सू ९ ६।
सूत्र १२ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना प० ७ सू० १४६।
सूत्र १३ भगवती श० १ उ० १। प्रज्ञापना प० २८ सू० ६।
सूत्र १४ भगवती श० ६ उ० १। श० १२ उ० २।
स्थानांग अ० १ सू० ५१।

चौतीसवां समवाय

सूत्र १ औपपातिक सू० १०।
सूत्र जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० ९८।
सूत्र ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ६ सू० १२५।
सूत्र ४ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७ सू० १३ ।
सूत्र ५ प्रज्ञापना प० २ सू० ४६।
सूत्र ६ जीवाभिगम प्र० ३ सू० ८१।

पैंतीसवां समवाय

सूत्र १ औपपातिक सू० १०।
सूत्र २ त्रिषष्टि शलाका पुरुषचरित्र पर्व ६

सूत्र ४ त्रिषष्ठि शलाका पुरुषचरित्र पर्व ६।
सूत्र ५ भगवती श० १ उ० ५।
सूत्र ६ जीवाभिगम प्रा० ३ सू० ८१।

छत्तीसवां समवाय

सूत्र १ उत्तराध्ययन अ० १ ३६।
सूत्र २ भगवती श० ८ उ० २।
सूत्र ३ कल्पसूत्र सू० १३४।
सूत्र ४ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० १० सू० ४३।

सेंतीसवां समवाय

सूत्र १ त्रिषष्ठि शलाका पुरुषचरित्र पर्व ६।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० ७६।
सूत्र जीवाभिगम प्रति० ३ सू० १३५।
सूत्र ४ जीवाभिगम प्र० ३ सू० १३७।
सूत्र ५ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० १० सू० ८५।

अड़तीसवां समवाय

सूत्र १ कल्पसूत्र सू० १६२।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० १११।
सूत्र ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० १०८।
सूत्र ४

उनचालीसवां समवाय

सूत्र १ प्रवचन सारोद्धार द्वार २०।

सूत्र ४ त्रिषष्ठि शलाका पुरुषचरित्र पर्व ६।
सूत्र ५ भगवती श० १ उ० ५।
सूत्र ६ जीवाभिगम प्रा० ३ सू० ८१।

छत्तीसवां समवाय

सूत्र १ उत्तराध्ययन अ० १ ३६।
सूत्र २ भगवती श० ८ उ० २।
सूत्र ३ कल्पसूत्र सू० १३४।
सूत्र ४ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० १० सू० ६३।

सैंतीसवां समवाय

सूत्र १ त्रिषष्ठि शलाका पुरुषचरित्र पर्व ६।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० ७६।
सूत्र ३ जीवाभिगम प्रति ३ सू० १३५।
सूत्र ४ जीवाभिगम प्र० ३ सू० १३७।
सूत्र ५ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० १० सू० ४३।

अड़तीसवां समवाय

सूत्र १ कल्पसूत्र सू १६२।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष ४ सू० १११।
सूत्र ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० १०८।
सूत्र ४

उनचालीसवां समवाय

सूत्र १ प्रवचन सारोद्धार द्वार २०।

सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ६ सू० १२५।
सूत्र ३ जीवाभिगम प्र० ३ सू० ८१।
सूत्र ४ प्रज्ञापना पद २३ सू० २९३।

चालीसवां समवाय

सूत्र १ कल्पसूत्र सू० १७७।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० १०६।
सूत्र ३ प्रवचनसारोद्धार द्वार २५।
सूत्र ४ प्रज्ञापना पद २ सू० १२२।
सूत्र ५
सूत्र ६ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० १ सू० ४।
सूत्र ७ उत्तराध्ययन अ० ३।
सूत्र ८ प्रज्ञापना पद २ सू० १३०।

इकतालीसवां समवाय

सूत्र १ प्रवचनसारोद्धार द्वार १७।
सूत्र २ जीवाभिगम प्र० ३ सू० ८१।
सूत्र ३

बियालीसवां समवाय

सूत्र १ कल्पसूत्र १४६।
सूत्र २ स्थानांग अ० ८ उ० २ सू० ३०७।
सूत्र ३
सूत्र ४ जीवाभिगम प्र० ३ सू० १७८।
सूत्र ५ प्रज्ञापना पद ४ सू०

सूत्र ६ प्रनापना पद २३ सू० २९३ ।
सूत्र ७ जीवाभिगम प्र० ३ सू० १८८ ।
सूत्र ८
सूत्र ९ भगवती श० ६ उ० ७ ।
सूत्र १० भगवती श० ६ उ० ७ ।

तेंयालीसवा समवाय

सूत्र १
सूत्र २ जीवाभिगम प्र० ३ सू० ८ ।
सूत्र ३ स्थानाग ठा० ४ उ० २ सू० ३०५ ।
सूत्र ४

चोवालीसवा समवाय

सूत्र १ ऋषिभाषित ।
सूत्र २
सूत्र ३ प्रनापना पद २ सू० १३२ ।
सूत्र ४

पेंतालीसवा समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सूत्र १७७ ।
सूत्र २ जीवाभिगम प्रति० सूत्र
सूत्र ३ जीवाभिगम प्रति० ३ सूत्र
सूत्र ४ औपपातिक सूत्र ४३ ।
प्रनापना पद २ सूत्र ।

सूत्र ५ आवश्यक नियुक्ति
प्रवचनसारोद्धार द्वार ३५।
सूत्र ६ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सूत्र १०३।
सूत्र ७ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा प्रा ३ सूत्र ३५।
सूत्र ८ नन्दीसूत्र सू० ४३।

छियालीसवां समवाय

सूत्र १ नन्दीसूत्र सू० ५६।
सूत्र २ भगवती सूत्र शत० १ उ० १।
सूत्र ३ प्रज्ञापना पद २ सू० १३२।

सैंतालीसवां समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७ सूत्र १२३।
सूत्र २ आवश्यकनियुक्ति-सम्भव म भगवान है।

अडतालीसवां समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति वक्ष० ३ सूत्र ६६।
सूत्र २ आवश्यकनियुक्ति प्रवचनसारोद्धार द्वार २८।
सूत्र ३ जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति वक्ष ७ सूत्र १३।

उनपचासवां समवाय

सूत्र १ दशाश्रुतस्कंध दशा ७ व्यवहार उ० ६।
सूत्र जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष २ सूत्र २८।
सूत्र ३ प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ६७।

पचासवां समवाय

सूत्र १ आवश्यकनिर्युक्ति प्रवचनसारोद्धार द्वार १७।
सूत्र २ ५५।
सूत्र ३ ३६।
सूत्र ४ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति व १० १ सूत्र १२।
सूत्र ५ प्रज्ञापना पद २ सूत्र ५३।
सूत्र ६ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति व १० १ सूत्र १२।
सूत्र ७ जीवाभिगम प्रति ३ सूत्र १५०।

एकावनवां समवाय

सूत्र १ आचाराग प्रथम श्रुतस्कध।
सूत्र २ भगवतीसूत्र शत० १५ उद्दे ६।
सूत्र ४ ।
सूत्र ६ विपाका पत्थाणा पुष्पाचिन्त पद ४।
सूत्र ५ प्रज्ञापना पद २३ सूत्र २९५।

बावनवां समवाय

सूत्र १ भगवती सूत्र शत० १२ उद्दे० ५।
सूत्र २ स्थानाग अ० ४ उद्दे० २।
सूत्र ३ स्थानाग अ० ४ उद्दे० २।
सूत्र ४ प्रज्ञापना पद २५ सूत्र २९३।
सूत्र ५ प्रज्ञापना पद २ सू० ४३।

त्रेपनवां समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सूत्र ८७।
सूत्र २ " " ७९।
सूत्र ३ आवश्यक नियुक्ति
सूत्र ४ प्रज्ञापना पद ४ सू० १०३।

चौपनवां समवाय

सूत्र १ आवश्यक नियुक्ति
प्रवचनसारोद्धार द्वार २०६ [illegible]
सूत्र २ आवश्यक नियुक्ति
सूत्र ३
सूत्र ४ आवश्यक नियुक्ति प्रवचनसारोद्धार [illegible]

पचपनवां समवाय

सूत्र १ ज्ञाताधर्मकथा अ० ८ सू० [illegible]
सूत्र २ जीवाभिगम प्रति० ३ सू० [illegible]
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० १ सूत्र [illegible]
सूत्र ३ "
सूत्र ४ कल्पसूत्र सू० १४७।
सूत्र ५ प्रज्ञापना पद २ सू० ८१।
सूत्र ६ प्रज्ञापना पद २३ सू० [illegible]

छप्पनवां समवाय

सत्तावनवां समवाय

सूत्र १ नन्दीसूत्र सू० ४५ ४६ ४७।
सूत्र २ स्थानांग अ० ४ उद्दे० २।
सूत्र ३
सूत्र ४ ज्ञाताधर्मकथा अ० ८।
सूत्र ५ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० ७६।

अठावनवां समवाय

सूत्र १ प्रज्ञापना पद २ सू० ८१।
सूत्र २ प्रज्ञापना पद २३ सू० ८१।
सूत्र ३ स्थानांग अ० ४ उद्दे० २।
सूत्र ४ ,
सूत्र ५ ,
सूत्र ६

उनसठवां समवाय

सूत्र १ सूर्यप्रज्ञप्ति प्राभ० १२ सू० ७२।
सूत्र २ आवश्यक निर्युक्ति, प्रवचनसारोद्धार द्वार ३५।
सूत्र ३ ज्ञाताधर्मकथा अ० ८।

साठवां समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ६ सू० १२७।
सूत्र २ जीवाभिगम प्रति० ३ सू० १५८।
सूत्र ३ आवश्यक निर्युक्ति, प्रवचनसारोद्धार द्वार २८।

सूत्र ४ प्रज्ञापना पद २ सू० ३१।
सूत्र ५ ४३।
सूत्र ६ ४३।

इगसठवां समवाय

सूत्र १ सूर्यप्रज्ञप्ति प्राभ० १२।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० १०८।
सूत्र ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७ सू० १४४ १४५।
सूत्र ४

बासठवां समवाय

सूत्र १ सूर्यप्रज्ञप्ति प्राभ० १३ सू० ८०।
सूत्र २ आवश्यक नियुक्ति प्रवचनसारोद्धार द्वार १५।
सूत्र ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७ सू० १३४।
सूत्र ४ प्रज्ञापना पद २ सू० ४७।
सूत्र ५

त्रेसठवां समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० २ सू० ३०।
सूत्र २ वक्ष० ४ सू० ८२।
सूत्र ३ वक्ष० ७ सू० १२७।
सूत्र ४

चोसठवां समवाय

सूत्र २ प्रज्ञापना पद २ सू० ४७।
सूत्र ३ सू० ४६।
सूत्र ४ जीवाभिगम प्रति० ३ सू० १८३।
सूत्र ५ प्रज्ञापना पद २ सू० ५३।
सूत्र ६ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ३ सू० ६८।

पेंसठवां समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७ सू० १२७।
सूत्र २ आवश्यक नियुक्ति।
सूत्र ३ राजप्रश्नीय सू० २७।

छासठवां समवाय

सूत्र १ जीवाभिगम प्रति० ३ सू० १७७।
सूत्र २
सूत्र ३
सूत्र ४
सूत्र ५ आवश्यक नियुक्ति प्रवचनसारोद्धार द्वार १५।
सूत्र ६ भगवती सूत्र शत० ८ उद्दे० २ सू० ११०।
प्रज्ञापना पद १८ सू० ११।

सड़सठवां समवाय

सूत्र १ सूर्यप्रज्ञप्ति प्राभृ० १२ सू० ७४।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० ७६।
सूत्र ३ जीवाभिगम प्रति० ३ सू० १६१।
सूत्र ४ सूर्यप्रज्ञप्ति प्राभृ० १० प्रा० २२ सू० ६१।

अडसठवां समवाय

सूत्र १ स्थानांग अ० ८।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७।
सूत्र ३
सूत्र ४
सूत्र ५ आवश्यक निर्युक्ति प्रवचनसारोद्धार द्वार १६।

उनहत्तरवां समवाय

सूत्र १ जीवाभिगम प्रति० ३ सूत्र १७७।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० १०३।
सूत्र ३ उत्तराध्ययन अ० ३३।

सित्तरवां समवाय

सूत्र १ निशीथ अ० १०।
सूत्र २ कल्पसूत्र सू० १६८।
सूत्र ३ प्रवचनसारोद्धार द्वार २८।
सूत्र ४ उत्तराध्ययन अ० ३३ गाथा २१।
सूत्र ५ प्रज्ञापना पद २ सू० ४५।

इकहत्तरवां समवाय

सूत्र १ सूर्यप्रज्ञप्ति प्राभृ० ११।
सूत्र २ नन्दीसूत्र सूत्र ५६।
सूत्र ३ प्रवचनसारोद्धार द्वार ३६।
सूत्र ४

सूत्र २ प्रज्ञापना पद २ सू० ४७।
सूत्र ३ सू० ४६।
सूत्र ४ जीवाभिगम प्रति० ३ सू० १८३।
सूत्र ५ प्रज्ञापना पद २ सू० ५३।
सूत्र ६ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ३ सू० ६८।

पैंसठवां समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७ सू० १२७।
सूत्र २ आवश्यक निर्युक्ति।
सूत्र ३ राजप्रश्नीय सू० २७।

छासठवां समवाय

सूत्र १ जीवाभिगम प्रति० ३ सू० १७७।
सूत्र २
सूत्र ३
सूत्र ४
सूत्र ५ आवश्यक निर्युक्ति प्रवचनसारोद्धार द्वार १५।
सूत्र ६ भगवती सूत्र शत० ८ उद्दे० २ सू० ३१०।
प्रज्ञापना पद १८ सू० ११।

सड़सठवां समवाय

सूत्र १ सूर्यप्रज्ञप्ति प्राभृ० १२ सू० ७४।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० ७६।
सूत्र ३ जीवाभिगम प्रति० ३ सू० १६१।
सूत्र ४ सूर्यप्रज्ञप्ति प्राभृ० १० प्रा० २२ सू० ६१।

अडसठवां समवाय

सूत्र १ स्थानांग अ० ८।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७।
सूत्र ३
सूत्र ४
सूत्र ५ आवश्यक नियुक्ति प्रवचनसारोद्धार द्वार १६।

उनहत्तरवां समवाय

सूत्र १ जीवाभिगम प्रति० ३ सूत्र १७७।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० १०३।
सूत्र ३ उत्तराध्ययन अ० ३३।

सित्तरवां समवाय

सूत्र १ निशीथ अ० १०।
सूत्र २ कल्पसूत्र सू० १६८।
सूत्र ३ प्रवचनसारोद्धार द्वार २८।
सूत्र ४ उत्तराध्ययन अ० ३३ गाथा २१।
सूत्र ५ प्रज्ञापना पद २ सू० ५३।

इकहत्तरवां समवाय

सूत्र १ सूर्यप्रज्ञप्ति प्राभ० ११।
सूत्र २ नन्दीसूत्र सूत्र ४६।
सूत्र ३ प्रवचनसारोद्धार द्वार ३६।
सूत्र ४

बहुत्तरवा समवाय

सूत्र १ प्रज्ञापना प० २ सूत्र ४६।
सूत्र २ जीवाभिगम प्रति० ३ उद्दे० २ सूत्र १५८।
सूत्र ३ कल्पसूत्र सूत्र १४७।
सूत्र ४ आवश्यक निर्युक्ति।
सूत्र ५ सूर्यप्रज्ञप्ति प्राभ० १९।
जीवाभिगम प्रति० ३ उद्दे० २ सूत्र १७६।
सूत्र ६ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ५ सूत्र ९९।
सूत्र ७ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ३ सूत्र ३०।
सूत्र ८ प्रज्ञापना प० ४ सूत्र ९८।

तिहत्तरवाँ समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सूत्र ८२।
सूत्र २ त्रिषष्ठि शलाका पुरुष चरित्र पर्व ४।

चोहत्तरवाँ समवाय

सूत्र १ आवश्यक निर्युक्ति
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सूत्र ८४।
सूत्र ३
सूत्र ४ प्रज्ञापना प० २।

पचहत्तरवा समवाय

सूत्र १ आवश्यकनिर्युक्ति प्रवचनसारोद्धार द्वार २१।
सूत्र २ , , ३६।
३ , , ३६।

छहत्तरवा समवाय

सूत्र १ प्रज्ञापना प॰ २ सूत्र ४६।
सूत्र २

सतहत्तरवा समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० २ सूत्र ७०।
सूत्र २
सूत्र ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० २ सूत्र १८।
सूत्र ४ अनुयोगद्वार कालप्रमाण निरूपण।

अठहत्तरवा समवाय

सूत्र १ भगवती सूत्र शत० ३ उद्दे० ७।
सूत्र २ आवश्यक नियुक्ति
सूत्र ३ सूर्यप्रज्ञप्ति प्राभ० १ प्राभ० १।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७ सूत्र १३१।
सूत्र ४

उनासीवां समवाय

सूत्र १ जीवाभिगम प्रति० ३ उद्द० २ सूत्र १५६।
सूत्र २
सूत्र ३ १ ७६।
सूत्र ४ २ १४५।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० १ सूत्र ६।

अस्सीवा समवाय

सूत्र १ आवश्यक नियुक्ति
सूत्र २
सूत्र ३ त्रिषष्ठि शलाका पुरुष चरित्र पर्व ४।
सूत्र ४
सूत्र ५ जीवाभिगम प्रति० ३ उद्दे० १ सूत्र ७२।
सूत्र ६ प्रज्ञापना पद २ सूत्र ४३।
सूत्र ७ सूर्यप्रज्ञप्ति प्राभृ० १ प्राभृ० ५।

इकासीवा समवाय

सूत्र १ दशाश्रुतस्कंध दशा ७ व्यवहार सूत्र उद्दे० ६।
सूत्र २ आवश्यक नियुक्ति प्रवचनसारोद्धार द्वार २२।
सूत्र ३ भगवती सूत्र सम्पूर्ण।

बियासीवां समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७ सूत्र १३४।
सूत्र २ आचाराग श्रुत० २ अ० २४।
कल्पसूत्र सूत्र २६।
सूत्र ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सूत्र ७६।
सूत्र ४

तियासीवा समवाय

सूत्र १ आचाराग श्रुत० २ अ० २४।
सूत्र २ आवश्यक नियुक्ति प्रवचनसारोद्धार द्वार १५।
सूत्र ३

सूत्र ४ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० २ सू० ४ ३३।
सूत्र ५ वक्ष० ५ सू० ७०।

चोरासीवा समवाय

सूत्र १ जीवाभिगम प्र० ३ उ० १ सू० ८१।
सूत्र २ जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति वक्ष २ सू० ३३।
सूत्र ३
सूत्र ४ आवश्यकनियुक्ति प्रवचनसारोद्धार द्वार ३६।
सूत्र ५ त्रिपष्टि शलाका पुरुष चरित्र पर्व ४।
सूत्र ६ प्रज्ञापना पद २ सूत्र ५२
सूत्र ७ जीवाभिगम प्रति ३ उद्दे० २ सूत्र।
सूत्र ८ सूत्र १८३।
सूत्र ९ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सूत्र ८२।
सूत्र १० जीवाभिगम प्रति० ३ उद्दे० १ सूत्र ७६।
सूत्र ११ नन्दीसूत्र सूत्र ४६ में ना लाख अठासी हजार पद हैं।
सूत्र १२ प्रज्ञापना पद २ सूत्र ४६।
सूत्र १३ नन्दीसूत्र सूत्र ४३।
सूत्र १४
सूत्र १५ जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति वक्ष ७ सूत्र १८।
सूत्र १६ वक्ष० ५ सूत्र ३१।
सूत्र १७
सूत्र १८* जीवाभिगम प्रति० ३ उद्दे० १ सूत्र २०८।

---

*एक प्रति में १७ सूत्र हैं और एक प्रति में १८ सूत्र हैं।

पचासीवां समवाय

सूत्र १ नन्दीसूत्र सूत्र ४४।
सूत्र २ जीवाभिगम प्रति० ३ उद्दे० सूत्र।
सूत्र ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सूत्र।
सूत्र ४ वक्ष० ४ सूत्र १०४।

छियासीवा समवाय

सूत्र १ आवश्यकनिर्युक्ति प्रवचनसारोद्धार द्वार १५।
सूत्र २ द्वार १६।
सूत्र ३ जीवाभिगम प्रति० ३ सूत्र ७६।

सतासीवां समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सूत्र १०३।
सूत्र २
सूत्र ३
सूत्र ४
सूत्र ५ उत्तराध्ययन अ० ३३।
सूत्र ६ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सूत्र ७६।
सूत्र ७

अठासीवा समवाय

सूत्र १ जीवाभिगम प्रति० ३ उद्दे० २ सूत्र १६४।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७ सूत्र १६३।
सूर्यप्रज्ञप्ति प्राभृ० १८ सूत्र ६१।
सूत्र २ नन्दीसूत्र सूत्र ५६।

सूत्र ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सूत्र १०३।
सूत्र ४
सूत्र ५ सूर्यप्रज्ञप्ति प्राभृ० १ सूत्र ।
सूत्र ६

नवासीवां समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० २ सूत्र ३१ ३३।
सूत्र २ कल्पसूत्र सूत्र १४७।
सूत्र ३ प्रवचनसारोद्धार द्वार ३६।
सूत्र ४ आवश्यक नियुक्ति प्रवचनसारोद्धार द्वार १७।

नव्वेवां समवाय

सूत्र १ आवश्यकनियुक्ति प्रवचन सारोद्धार द्वार ९६।
सूत्र २ द्वार १६।
सूत्र ३
सूत्र ४
सूत्र ५ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० ८२।

इक्कानवेवां समवाय

सूत्र १ औपपातिक सू० २०।
सूत्र २ जीवाभिगम प्रति ३ उद्दे० सूत्र १ १।
सूत्र ३ आवश्यक नियुक्ति प्रवचनसारोद्धार द्वार ५०।
सूत्र ४ उत्तराध्ययन अध्य० २३।

बानवेवां समवाय

सूत्र　१ दशाश्रुतस्कन्ध दशा ७, आचराग श्रुतस्व
　　　व्यवहार उद्दे०
सूत्र　२ आवश्यकनियुक्ति
सूत्र　३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० १०३ ।
सूत्र　४

तिरानवेवां समवाय

सूत्र　१ आवश्यकनियुक्ति प्रवचनसारोद्धार द्वार
सूत्र　२　　'　　　　　　　द्वार
सूत्र　३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७ सू० १३८ ।

चोरानवेवां समवाय

सूत्र　१ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० ८३ ।
　　　　　　　　　　　　सू० ११० ।
सूत्र　२ आवश्यक नियुक्ति प्रवचनसारोद्धार द्वार

पचानवेवां समवाय

सूत्र　१ आवश्यकनियुक्ति प्रवचनसारोद्धार द्वार
सूत्र　२ जीवाभिगम प्रति० ३ उद्दे० २ सू० १५
सूत्र　३　　'　　　　　　　सू० १७
सूत्र　४ आवश्यकनियुक्ति प्रवचनसारोद्धार द्वार ।
सूत्र　५

छियानवेवां समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ३ सू० ६६।
सूत्र २ प्रज्ञापना पद २ सू० २७।
सूत्र ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० २ सू० १६।
भगवती सूत्र शत० ६ उ० ७।
सूत्र ४
सूत्र ५ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७ सूत्र १३३।

सत्तानवेवां समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सूत्र १०४।
सूत्र २
सूत्र ३ उत्तराध्ययन अ० ३२।
सूत्र ४ त्रिषष्ठि शलाका पुरुषचरित्र पर्व ७ सर्ग १२।

अठानवेवां समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सूत्र १०६।
सूत्र २
सूत्र ३
सूत्र ४ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १
सूत्र ५
सूत्र ६
सूत्र ७ प्रा० १० प्रा० ६ सू० ४०।

निनानवेवां समवाय

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४, सूत्र १०३।
सूत्र २
सूत्र ३
सूत्र ४ वक्ष० ७ सू० १३४।
सूत्र ५
सूत्र ६
सूत्र ७ प्रज्ञापना पद २ सू० २८।

सोवा समवाय

सूत्र १ दशाश्रुतस्कंध दशा ७ व्यवहार उ० ६।
सूत्र २ सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा० १० प्रा० ६ सू० ४२।
सूत्र ३ आवश्यकनियुक्ति प्रवचनसारोद्धार द्वार ३५।
सूत्र ४ कल्पसूत्र सू० १६८।
सूत्र ५ आवश्यक नियुक्ति
सूत्र ६ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० १ सू० १।
सूत्र ७ ४ सू० ७२।
सूत्र ८ जीवाभिगम प्र० ३ उद्दे० २ सू० १५०।

डेढ़सोवां समवाय सूत्र १०१

सूत्र १ प्रवचनसारोद्धार द्वार ३६।
सूत्र २ प्रज्ञापना पद २ सूत्र ५३।
सूत्र ३

दोसोवा समवाय सूत्र १०२

सूत्र १ प्रवचनसारोद्धार द्वार ३६ ।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सूत्र ७६ ।
सूत्र ३ वक्ष० ६ सू० १२५ ।

ढाईसोवां समवाय सूत्र १०३

सूत्र १ प्रवचनसारोद्धार द्वार ३६ ।
सूत्र २ प्रज्ञापना पद २ सू० २८ ।

तीनसोवां समवाय सूत्र १०४

सूत्र १ प्रवचनसारोद्धार द्वार ३१ ।
सूत्र २ कल्पसूत्र सू० १७२ ।
सूत्र ३ प्रज्ञापना पद २ सूत्र ४३ ।
सूत्र ४ प्रवचनसारोद्धार द्वार २३ ।
सूत्र ५ औपपातिक सूत्र ४२ उत्तराध्ययन अ० ३६ ।

साढेतीनसोवा समवाय सूत्र १०५

सूत्र १ प्रवचनसारोद्धार द्वार २३ ।
सूत्र २ द्वार ३५ ।

चारसोवां समवाय सूत्र १०६

सूत्र १ प्रवचनसारोद्धार द्वार ३४ ।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सूत्र ८३ ।
सूत्र ११० ।

सूत्र ४

सूत्र ४ प्रज्ञापना पद २ सूत्र ५३।
सूत्र ५ त्रिषष्ठि शलाका पुरुषचरित्र
पर्व १०।

साढेचारसोवा समवाय सूत्र १०७

सूत्र १ आवश्यक प्रवचनसारोद्धार द्वार ३५।
सूत्र २

पाचसोवा समवाय सूत्र १०८

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० १२५।
सूत्र २
सूत्र ३ वक्ष० ३ सू० ५३।
सूत्र ४ वक्ष० ३ सू० ७०।
सूत्र ५ वक्ष० ४ सू० ८६ ९१ ९७।
सूत्र ६ सू० ७५।
सूत्र ७
सूत्र ८ जीवाभिगम प्रति० ३ उद्द० १ सू० २११।

छहसोवां समवाय सूत्र १०९

सूत्र १ जीवाभिगम प्रति० ३ उद्द० १ सू० २११।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० सूत्र।
सूत्र ३
सूत्र ४ कल्पसूत्र सू० १६६।
सूत्र ५ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० सू०।
सूत्र ६ प्रवचनसारोद्धार द्वार १।

सातसोवां समवाय सूत्र ११०

सूत्र १ जावाभिगम प्रति० ३ उद्द० १ सू० २११।
सूत्र २ कल्पसूत्र सू० १३६।
सूत्र ३ कल्पसूत्र सू० १४ ।
सूत्र ४ कल्पसूत्र सू० १८०।
सूत्र ५ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० सू० ।
सूत्र ६

आठसोवां समवाय सूत्र १११

सूत्र १ जावाभिगम प्रति ३ सू० २११।
सूत्र २ प्रज्ञापना प० २ सू० ४७।
सूत्र ३ कल्पसूत्र सू० १८५।
सूत्र ४ जावाभिगम प्रति० ३ उद्दे० १ सूत्र १६५।
सूत्र ५ कल्पसूत्र सू १८०।

नवसोवां समवाय सूत्र ११२

सूत्र १ जावाभिगम प्रति० ३ उद्द० १ सू० २११।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० सू० ।
सूत्र ३
सूत्र ४ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० २ सू० २८।
सूत्र ५ जीवाभिगम प्र० ३ उद्दे २ सू० १६५।
सूत्र ६ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू १०१।
सूत्र ७

हजारवां समवाय सूत्र ११३

सूत्र १ जीवाभिगम प्र० ३ उद्द० १ सू० २११।
सूत्र २ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० ८८।
सूत्र ३
सूत्र ४ सू० ८२।
सूत्र ५ सू० ।
सूत्र ६ सू० ।
सूत्र ७ कल्पसूत्र सू० १८३।
सूत्र ८ १६६।
सूत्र ९
सूत्र १० जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० ८०।

इग्यारहसोवां समवाय सूत्र ११४

सूत्र १ जीवाभिगम प्र० ३ उद्द० १ सू० २११।
सूत्र २ कल्पसूत्र सू० १६६।

दोहजारवां समवाय सूत्र ११५

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति व०४ सू० ८०।

तीनहजारवां समवाय सूत्र ११६

सूत्र १ जीवाभिगम प्रति० ५ उद्द० १।

चारहजारवां समवाय सूत्र ११७

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० ८५ सू० ११०।

पांचहजारवां समवाय सूत्र ११८

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सूत्र १०३।

छ हजारवां समवाय सूत्र ११६

सूत्र १ प्रज्ञापना प० २ सू० ५३।

सातहजारवां समवाय सूत्र १२०

सूत्र १ जीवाभिगम प्रति० ३ स ।

आठहजारवां समवाय सूत्र १२१

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ४ सू० ८२ १११।

नोहजारवां समवाय सूत्र १२२

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति व १० १ सू० ११।

दसहजारवां समवाय सूत्र १२३

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष ४ स० १०३।

एकलाखवां समवाय सूत्र १२४

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष ७ सू० १७५।

दोलाखवां समवाय सूत्र १२५

सूत्र १ जीवाभिगम प्रति० ३ स १७३।

तीनलाखवा समवाय सूत्र १२६

सूत्र १ व॰पमूत्र सू॰ १६४।

चारलाखवा समवाय सूत्र १२७

सूत्र १ जीवाभिगम प्रति॰ ३ उद्दे॰ २ सू॰ १७४।

पाचलाखवां समवाय सूत्र १२८

सूत्र १ जीवाभिगम प्रति॰ ३ उद्दे॰ २ सूत्र १५४।

छ लाखवा समवाय सूत्र १२६

सूत्र १ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष॰ ३ सू॰ ७०।

सातलाखवा समवाय सूत्र १३०

सूत्र १ जीवाभिगम प्रति॰ ३ उद्दे॰ १ सू॰ १२४।

आठलाखवां समवाय सूत्र १३१

सूत्र १ प्रज्ञापना पद २ सू॰ ८३।

नौहजारवा समवाय सूत्र १३२

सूत्र १ त्रिपष्टिशलाका पुरुष चरित्र पव २ सग ६।

दसलाखवा समवाय सूत्र १३३

सूत्र १ त्रिपष्टिशलाका पुरुष चरित्र पव ८ सग ६।

एकक्रोडवा समवाय सूत्र १३४

सूत्र १ त्रिशिष्टशलाका पुरुष चरित्र पर्व १० सर्ग १।

एकक्रोडाक्रोडया समवाय सूत्र १३५

सूत्र १ कल्पसूत्र सूत्र ८।

यहा से आगे केवल सूत्र संख्या है—

सूत्र १३६ से १४८ पर्यन्त

नन्दीसूत्र सूत्र ४४ से ५७।

सूत्र १४६

(क) प्रज्ञापना पद १ सू० ३८।
(ख) प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ।

सूत्र १५०

प्रज्ञापना पद सूत्र ।

सूत्र १५१

प्रज्ञापना पद ४ सूत्र ।

सूत्र १५२

(क) प्रज्ञापना पद १२ सूत्र ।
(ख) प्रज्ञापना पद २१ सूत्र ।

सूत्र १५३

(क) प्रज्ञापना पद ३३ सूत्र ।
(ख) पद ३५ सूत्र ।
(ग) पद १७ सूत्र ।
(घ) पद ३४ सूत्र ।
(ङ) पद २८ सूत्र ।

सूत्र १५४

(क) स्थानांग अ० ६ सूत्र ५३८ ।
(ख) प्रज्ञापना पद ६ सूत्र ।

सूत्र १५५

(क) प्रज्ञापना पद २३ सू० ।
स्थानांग अ० ६ सूत्र ४६४ ४६५ ।
(ख)

सूत्र १५६

प्रज्ञापना पद २३ उद्दे० २ सू० ।

सूत्र १५७

(क) कल्पसूत्रान्तर्गत समवसरण वर्णन
(ख) जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० सूत्र ।
(ग) आवश्यक सूत्र अ०
प्रवचनसारोद्धार द्वार ३५ ३६ ।

के उद्गमस्थलों का विवरण दिया है।

२ जिन सूत्रों का उद्गमस्थल नहीं मिला है उन सूत्रों के सूत्रांक दर्शाकर शेष स्थान रिक्त रख दिया है। स्वाध्यायशील महानुभाव इन रिक्त स्थानों की पूर्तियाँ भेजकर पुस्तक की पुनरावृत्ति द्वारा होनेवाली ज्ञानवृद्धि में सहयोगी बनें।

३ जहाँ सूत्रांक या अध्ययन उद्देशांक नहीं दिया है वहाँ निम्नांकित तीन विकल्पों में से एक की संभावना अवश्य है।

(क) समवायांग में और अन्य आगम में विवक्षा भेद है।

(ख) समवायांग में पूर्ण विवरण है किन्तु अन्य आगम में केवल नामांक है।

(ग) समवायांग में संक्षिप्त है और अन्य आगम में विस्तृत है।

४ अन्य आगमों में वाचना भेद या विवक्षा भेदवाले जितने सूत्र मिलते हैं उनके पूरे पाठ समवायांग के सूत्रों के साथ देना तुलनात्मक अध्ययन के लिए आवश्यक था किन्तु यह कार्य इस लघुकाय संस्करण के अनुरूप न होने से पूरे पाठ नहीं दिये हैं।

समवायाङ्ग-वर्णक

(समवाय एक से एक कोडा कोडी पय त)

परिशिष्ट

३

मुनि कन्हैयालाल

ये सत्य वचनातिशय आगमों में नहीं मिलते हैं।
यहां ग्रन्थान्तर से उद्धृत किए हैं।
(१) संस्कारवत् (२) उदात्त (३) उपचारोपेत,
(४) गम्भीरशब्द (५) अनुनादि (६) दक्षिण
(७) उपनीतराग (८) महार्थ (९) अव्याहतपौर्वापर्य
(१०) शिष्ट (११) असंदिग्ध (१२) अपहृतान्योत्तर
(१३) हृदयग्राहि (१४) देश कालाव्यतीत
(१५) तत्त्वानुरूप (१६) अप्रकीर्णप्रसृत
(१७) अन्योन्यप्रगृहीत (१८) अभिजात
(१९) अतिस्निग्धमधुर (२०) अपरमर्मविद्ध
(२१) अर्थधर्माभ्यासानपेत (२२) उदार
(२३) परनिन्दात्मोत्कर्षविप्रयुक्त, (२४) उपगतश्लाघ
(२५) अनपनीत (२६) उत्पादिताच्छिन्नकौतूहल
(२७) अद्भुत (२८) अनतिविलम्बित
(२९) विभ्रम विक्षेप किलिकिंचितादिवियुक्त
(३०) अनेकजातिसंश्रयाद्विचित्र (३१) आहितविशेष
(३२) साकार (३३) सत्वपरिग्रह (३४) अपरिखेदित
(३५) अव्युच्छेद वाणि। इनका अर्थ पैंतीसवें समवाय में
किया हुआ है।
सिद्ध जाव सव्वदुक्खप्पहीण।
सिद्ध बुद्ध मुत्त परिणिव्वुए, सव्वदुक्खप्पहीण। सम० ३०।
सिद्धाइं जाव सव्वदुक्खप्पहीणाइं।
सिद्धाइं बुद्धाइं मुत्ताइं परिणिव्वाणाइं सव्वदुक्खप्पहीणाइं।
—सम० ४४।

स सिज्झिस्सति जाव सव्वदुक्खाणामंत करिस्सति।
सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वास्सति सव्वदुक्खाणमंत करिस्संत। सम० १।

समवायाग में परिवधन।

भगवान महावीर के नाथप्रवतनकाल म श्री गौतम गणधर ने जिस समय द्वादशागी की सूत्ररूप म रचना की थी उस समय समवायाग म जितन सूत्रो का सकलन हुआ था उतन सूत्र तो इस समय उपलब्ध न ी है। किन्तु जितन सूत्र इस समय उपलब्ध ह उनम अधिक स अधिक सूत्र उसी समय के सक लित ह। यह मानने म कोई आपत्ति नहीं है। प्रारम्भ म स्थानाग स समवायाग दुगुना बडा था और वतमान म समवायाग स स्थानाग दुगुना बडा है। इसलिए समवायाग के बहुत अधिक सूत्र विछिन्न हो गये हैं इतना तो मानना ही पडेगा। समवायाग म समवायाग परिचय के अन्तगत दी हुई विषयसूची म नन्दीसूत्र गत समवायाग परिचय में दी हुई विषयसूची भिन्न है। अत समवायाग की सूत्र-संख्या म जो उत्तरोत्तर कमी आई है वह स्पष्ट हो जाता है।

उपलब्ध समवायाग में प्रथम समवाय स तेंतीसवें समवाय पयत सूत्रो के रचनाक्रम को देखते हुए ऐसा लगता है कि समवायाग का यह भाग काल चक्र के कुप्रभाव स सवथा सुरक्षित रहा है। सूत्रो की जो कुछ कमी हुई है अय समवायो में ही हुई है इनम नहीं। किस समवाय म कितने सूत्रो की कमी हुई यह जानने का कोई साधन नहीं है।

संकलन भ० भद्रबाहु के पूर्व समवायांग में हुआ है। क्योंकि दशाश्रुतस्कन्ध, बृहत्कल्प और व्यवहार सूत्र के संकलनकर्ता भ० भद्रबाहु हैं। सम० २६ सूत्र १ में दशाश्रुतस्कन्ध आदि तीनों आगमों के उद्देशनकालों की संख्या का निर्देश है। इसलिए इन तीन छेद सूत्रों की रचना के पूर्व इस सूत्र की संकलना कैसे सम्भव हो सकती थी ?

समवायांग के प्रारम्भ में दो प्रकार की उत्थानिकाएं प्रस्तुत संस्करण में दी हुई हैं। प्रथम उत्थानिका में भगवान् महावीर स्वयं समवायांग का कथन करते हैं और द्वितीय उत्थानिका में श्री सुधर्मा गणधर भ० महावीर से सुने हुए समवायांग का जम्बूस्वामी से कथन करते हैं। इन दोनों उत्थानिकाओं की ऊपर दी हुई सूची के सन्दर्भ में संगति नहीं बैठती। सुधी स्वाध्यायी इस रहस्य को सम्यक् प्रकार से समझने का प्रयत्न करें। जिन स्थविरों ने सूत्रों का परिवर्धन करके जहां संयोजन का अतिक्रम किया है वहां इतिहास की अमूल्य निधि को सुरक्षित रखने का पुण्योपार्जन भी किया है।